**स्मरण**

**के**

**पावन दिवस**

**बहाई पवित्र दिवसों के लिए**

**बहाउल्लाह**

**के लेखों का एक संकलन**

# विषय-सूची

**भूमिका 5**

**नवरोज 7**

1. “सर्वशक्तिमान है वह। स्तुति हो तेरी, हे मेरे ईश्वर...” 7

2. “मैं हूं परम पावन, परम महान, परम महिमाशाली...” 8

3. “वह है परम पावन, परम शक्तिमान, परम उदात्त...” 9

4. “वह है सर्वदा जीवन्त, सदा रहने वाला, स्वयंजीवी...” 12

5. “वह है सार्वभौम सम्राट, पवित्रतम पावन...” 15

**रिज़वान 17**

6. “उसके नाम पर जिसने अपनी आभा बिखेरी है...” 17

7. “वही है वो जो आसीन है इस ज्योतिर्मय सिंहासन पर...” 21

8. “वह है परम पावन, परम महिमाशाली, गुणगान हो तेरा, हे मेरे ईश्वर...” 23

9. “उस प्रथम दिन जब ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ ...” 23

10. “वह जो सभी नामों और विभूषणों का अधिपति है...” 24

11. “वह है प्रकट, निगूढ़, सर्व-महिमाशाली...” 30

12. हूर-ए-उजाब (अद्भुत परी की पाती) 34

13. “वह है परम पावन, परम महिमाशाली। स्तुति हो तेरी, हे हमारे प्रभो...” 36

14. “परमेश्वर के नाम पर जो है सर्वशक्तिशाली, सर्वदयालु!...” 37

15. “स्तुति हो तेरी, हे मेरे परमेश्वर...” 38

16. “ईश्वर के नाम पर जिसने अपनी आभा बिखेरी है...” 40

17. “ईश्वर के नाम पर जो है सर्वशक्तिशाली, अप्रतिबाधित!...” 46

18. “परम महिमाशाली परमात्मा के नाम पर...” 48

19. “वही है ईश्वर। महिमावंत है तू, हे प्रभो, मेरे परमेश्वर!...” 48

20. “वह है परम पावन, परम महिमाशाली। सर्व स्तुति हो तेरी...” 49

21. लौह-ए-आशिक व माशूक (प्रेमी और प्रियतम की पाती) 49

22. “तेरे नाम पर, तू जो है परम विलक्षण, परम महिमाशाली!...” 51

23. सूरा-ए-कलम (लेखनी का सूरा) 58

24. “वह है चिर शास्वत। यह है रिजवान का उत्सव...” 65

25. “तुम्हारा एक अन्य पत्र...” 65

**बाब की घोषणा 68**

26. लौह-ए-नाकूस (घंटी की पाती) 68

27. लौह-ए-गुलाम-उल-खुल्द (अमर युवा की पाती) 71

28. “वह है चिर शाश्वत, परम उदात्त, परम महान...” 76

**बहाउल्लाह का स्वर्गारोहण 78**

29. सूरा-ए-गुस्न (’शाखा’ की पाती) 78

30. लौह-ए-रसूल (रसूल की पाती) 81

31. लौह-ए-मरयम (मरयम के प्रति पाती) 82

32. किताब-ए-अहद (संविदा की पुस्तक) 86

33. तीर्थयात्रा की पाती 88

**बाब की शहादत 91**

34. “हे मेरे सेवक, सुनो उसे जो नीचे प्रेषित किया जा रहा है...” 91

35. सूरा-ए-नुश (परामर्श के सूरा) से एक अंश 93

36. सूरा-ए-मुलूक (राजाओं के सूरा) से एक अंश 95

37. लौह-ए-सलमान प् (सलमान प्रथम को पाती) से एक अंश 98

38. सूरा-ए-जिक्र (स्मरण के सूरा) से एक अंश 98

39. सूरा-ए-अहजान (दुखों के सूरा) से एक अंश 104

**बाब का जन्म-दिवस 107**

40. “उसके नाम पर जिसका आज के दिन जन्म हुआ था...” 107

41. “वह अनन्त है, एकल, एकमेव...” 108

**बहाउल्लाह का जन्मदिवस 110**

42. लौह-ए-मौलूद (जन्म की पाती) 110

43. “वह है परम पावन, परम उदात्त, परम महान...” 113

44. “वह परमेश्वर है। हे उत्कट प्रेमियों के समूह!...” 114

45. “वह है परम पावन, परम महान। यह वह महीना है....” 117

**टिप्पणियां 118**

**शोगी एफेन्दी द्वारा अनूदित अंशों की कुंजिका 122**

# भूमिका

पवित्र दिवसों का आयोजन प्रत्येक धर्म में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनका समारोह मनाने के माध्यम से, कैलेंडर वर्ष वह मंच बन जाता है जिसपर ईश्वर के दिव्य प्रकटावतारों के जीवन और धर्मनेतृत्व से जुड़ी प्रमुख घटनाओं को हर वर्ष याद किया जाता है और उनके प्रति सम्मान प्रकट किया जाता है। इस स्मरण के दो आयाम हैं -- व्यक्तिगत आयाम जबकि हमें इन घटनाओं के महत्व पर मनन करने का अवसर प्राप्त होता है, और सामाजिक आयाम जिससे समुदाय की पहचान को गहन बनाने और उसकी अखंडता बढ़ाने में मदद मिलती है।

ईश्वर के प्रत्येक अवतार का आगमन एक नवीनीकरण और पुनरूद्धार लाता हैः “जीर्ण वस्तुओं का अंत हो गया” और “हर चीज नई हो गई है।“1 उस अवतार के प्राधिकार से पुराने विधानों को समाप्त कर दिया गया है और विगत धर्मयुग के रीति-रिवाजों को नया स्वरूप दे दिया गया है। ’दिव्य प्रकटीकरण’ की रचनात्मक शक्ति के माध्यम से, हृदयों और आत्माओं में नए जीवन का संचार कर दिया गया हैः

तुम विचार करो कि किस तरह उसने एक ओर अपनी सुदृढ़ पकड़ से ज्ञान और समझ की पूर्व-प्रकटित धरती को मुट्ठीभर का बना दिया है और, दूसरी ओर, उसने लोगों के हृदयों में एक नई और अत्यंत महान धरती का विस्तार कर दिया है, और इस तरह मानव के प्रकाशित वक्षस्थल से उसने अधिकतम ताजगी भरी, सुमधुर बहार एवं अधिकतम उच्चतम और सुदृढ़तम वृक्षों को उगा डाला है।2

इस पुनर्सृजन और सभी वस्तुओं में नवजीवन की झलक एक नए पंचांग (कैलेंडर) के समारंभ और नए पवित्र दिवसों के निर्धारण से मिलती है जिनसे सामुदायिक जीवन की लय-ताल को एक नया स्पंदन प्राप्त होता है।

बहाई कैलेंडर, जिसे बदी पंचांग के नाम से जाना जाता है, दिव्यात्मा बाब द्वारा शुरू किया गया था और बाद में बहाउल्लाह द्वारा उसकी पुष्टि की गई थी। बहाउल्लाह ने ही बाब की घोषणा के वर्ष 1844 (हिजरी सन 1260) से इस पंचांग का आरंभ निर्धारित किया। चूंकि बहाई युग का समारंभ युगल ’संस्थापकों’ द्वारा हुआ था अतः बहाई पवित्र दिवसों के अंतर्गत बहाउल्लाह और बाब इन दोनों ही के जन्मदिवसों, घोषणा और निधन से सम्बंधित घटनाएं शामिल हैं। बहाउल्लाह के प्रकटीकरण द्वारा प्रणीत विधानों के मुख्य संग्रह-ग्रंथ ’किताब-ए-अकदस’ में बहाउल्लाह ने दो “परम महान उत्सवों” का निर्धारण किया हैः रिजवान “पर्वराज”, जो एक अवतार के रूप में उनके मिशन की घोषणा का स्मरण दिलाने वाला एक बारह-दिवसीय समारोह है जिनमें से तीन दिवस ’पवित्र दिवसों’ के रूप में मनाए जाते हैं, और दिव्यात्मा बाब की घोषणा का दिवस जिससे बहाई युग का आरंभ होता है। उसी ग्रंथ में नवरोज और बाब एवं बहाउल्लाह के जन्मोत्सवों के पर्वों का भी उल्लेख है। दिव्यात्मा बाब की शहादत की वार्षिकी का आयोजन एक ’पवित्र दिवस’ के रूप में स्वयं बहाउल्लाह के जीवन-काल में किया गया था, और अब्दुल-बहा ने बहाउल्लाह के स्वर्गारोहण को शामिल किया।

इस खंड में बहाउल्लाह के लेखों से पैंतालिस चयनिकाओं को शामिल किया गया है जो खास तौर पर इन नौ पवित्र दिवसों के लिए प्रकट की गई थीं या जो अन्यरूपेण उनसे सम्बंधित हैं। इन चयनिकाओं में भावोद्घाटन की विभिन्न विधाओं का प्रयोग किया गया है और प्रत्येक विधा में इस ’युग’ की महानता, मूल्यवत्ता और अनुपम प्रकृति को झलकाया गया है जिस ’युग’ में अतीत की सभी प्रतिज्ञाएं और भविष्यवाणियां पूरी कर दी गई हैं -- वह पावन ’युग’ “जिसमें परमेश्वर ने स्वयं अपने ’स्व’ को ज्ञात कराया है और उसे उन सबके समक्ष प्रकट कर दिया है जो स्वर्गों में और इस धरती पर हैं।“ इस खंड में प्रस्तुत कुछ पातियां और अंश बहाउल्लाह के अनुयायी-समूह को संबोधित हैं और उन्हें अनुष्ठानिक एवं उदात्त स्वर में व्यक्त किया गया है, कभी-कभी राग में दोहराने के शब्दों के साथ, जबकि कुछ ऐसे भी हैं जो कतिपय व्यक्तिगत अनुयायियों के लिए प्रकटित हैं और कभी-कभी उन्हें प्रकट किए जाने की खास परिस्थिति या उन प्राप्तकर्ता व्यक्तियों के नाम उनमें उल्लिखित हैं। इनमें से कई बहाउल्लाह की सर्वोत्तम कृतियों में से हैं और उनके लेखों के पाठक मूल भाषाओं में लंबे अरसे से उनसे सुपरिचित रहे हैं।

इनमें से आठ चयनिकाओं का पूर्व में शोगी एफेन्दी द्वारा अनुवाद किया जा चुका था और ’बहाउल्लाह की प्रार्थनाएं एवं ध्यान’ (Prayers and Meditations by Bahá’u’lláh) तथा ’बहाउल्लाह के लेखों से चयन’ (Gleanings from the Writings of Bahá’u’lláh) में उनका प्रकाशन भी हो चुका है। उनकी तथा शोगी एफेन्दी द्वारा अनूदित अन्य अंशों की सूची-तालिका इस पुस्तक के अंत में देखी जा सकती है। बाकी चयनिकाएं ज्यादातर यहां पहली बार अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित की जा रही हैं। वर्तमान अनुवादों में उन सुप्रसिद्ध पाठों की काव्यात्मक स्वर-शैली की झलक लाने का प्रयास किया गया है, हालांकि वे उनके पूर्ण सौन्दर्य को कदापि अभिव्यक्त नहीं कर सकते।

आशा की जाती है कि इस खंड की प्रस्तुति से पूरे विश्व में ’आशीर्वादित सौन्दर्य’ के अनुयायियों के हृदयों एवं आत्माओं का उन्नयन होगा और उनके (बहाउल्लाह) एवं उनके अग्रदूत (बाब) से जुड़े हुए इन विशिष्ट दिवसों के समारोह के लिए आयोजित सम्मिलनों को समृद्धि प्राप्त होगी।

# नवरोज

# 1

## सर्वशक्तिमान है वह

1. स्तुति हो तेरी, हे मेरे ईश्वर, कि उनके लिए जिन्होंने तेरे प्रेम के कारण उपवास किया है और जो कुछ भी तेरे लिए घृणित है उससे बचे हैं, तूने नवरोज़ को एक उत्सव के रूप में विहित किया है। वर दे, हे मेरे नाथ, कि तेरे प्रेम की ज्वाला और तेरे द्वारा आदिष्ट उपवास से उत्पन्न ताप उनमें तेरे धर्म के प्रति श्रद्धा की अग्नि प्रज्‍वलित कर दे और उन्हें तेरी स्तुति और तेरे स्मरण में निमग्न कर दे।

2. क्योंकि तूने, हे मेरे स्वामी, उन्हें तेरे द्वारा विहित उपवास के आभूषण से अलंकृत किया है, अपने अनुग्रह और अपनी असीम कृपा के द्वारा तू उन्हें अपनी स्वीकृति के अलंकार से भी विभूषित कर, क्योंकि मनुष्यों के कर्म तेरी सुप्रसन्नता पर निर्भर हैं और तेरी आज्ञा से प्रतिबंधित हैं। यदि तू उसे जिसने उपवास तोड़ा है उसका पालन करने वाले के समान ही समझे तो ऐसा व्यक्ति उन्हीं में गिना जाएगा जो चिरंतन काल से उपवास करते आ रहे हैं और यदि तू यह आदेश दे कि वह जिसने उपवास रखा है, उसने उसका पालन नहीं किया है तो वह व्यक्ति उनमें गिना जाएगा जिन्होंने तेरे ‘प्रकटीकरण’ के परिधान को धूल से कलुषित किया है और जो इस जीवन्त निर्झर-स्रोत की स्फटिक जलधाराओं से बहुत दूर कर दिया गया है।

3. तू वह है जिसके माध्यम से यह ध्वजा ‘‘तू अपनी कृतियों में स्तुति योग्य है’’ ऊँची लहराई गई है और यह पताका कि ‘‘तेरा आदेश पालन किया जाता है’’ फहराई गई है। अपना यह पद अपने सेवकों को ज्ञात करा, हे मेरे ईश्वर, जिससे कि वे जान सकें कि सभी पदार्थों की श्रेष्ठता तेरे आदेश और तेरे शब्द पर निर्भर है, एवं प्रत्येक कर्म की अच्छाई तेरी अनुमति और तेरी इच्छा की सुप्रसन्नता पर आश्रित है और ये पहचान सकें कि मनुष्यों के कर्मों की बागडोर तेरी स्वीकृति और तेरे आदेश की मुट्ठी में है। उन्हें अवगत करा कि कुछ भी उन्हें इन दिवसों में, तेरे सौन्दर्य से दूर नहीं रख सकता, (इन दिवसों में) जिनके विषय में ईसा ने पुकारा था, ‘‘सभी अधिराज्य तेरे हैं, हे तू चेतना (ईसा) के जन्मदाता!’’ और तेरा मित्र (मुहम्मद) पुकार उठा था, ‘‘महिमा हो तेरी, हे परम प्रियतम, क्योंकि तूने अपने सौन्दर्य को अनावृत किया है और अपने प्रियजनों के लिए वह लिख डाला है जो उन्हें तेरे उस परम महान नाम के प्रकटीकरण के सिंहासन तक पहुँचाएगा, जिसके माध्यम से उनके अतिरिक्त जिन्होंने सिवा तेरे अन्य सभी कुछ से स्वयं को अनासक्त कर लिया है और उसकी ओर उन्मुख हो गए हैं जो तेरे स्व का प्रकटकर्ता और तेरे गुणों का अवतार है, अन्य सभी लोगों ने विलाप किया है।’’

4. हे मेरे प्रभु, वह जो तेरी ’शाखा’ है, उसने और तेरे सभी संगियों ने तेरे दरबार की परिसीमा में इसका पालन करने के पश्चात और तुझे प्रसन्न करने की उत्कण्ठा से इस दिन अपने उपवास तोड़े हैं। तू ’उसके’ लिए और उन सबके लिए जो इन दिनों में तेरे दरबार में प्रविष्ट हुए हैं, अपने ग्रंथ में नियत सभी शुभ का आदेश कर। तब उन्हें वह प्रदान कर, जो उनके लिए इहलोक और परलोक के जीवन में लाभदायक हो।

5. वस्तुतः, तू सर्वज्ञ और सर्वप्रज्ञ है।

## 2

## मैं हूँ परम पावन, परम महान, परम महिमाशाली।

1. स्तुति हो तेरी, हे मेरे परमेश्वर! कि तूने इस दिन को अपने कृपापात्र सेवकों और निष्ठावान प्रियजनों के लिए एक उत्सव के रूप में विहित किया है। तूने इस दिन को उस ’नामालंकरण’ से अभिहित किया है जिसके द्वारा सभी रचित वस्तुओं को अधीन किया गया है और स्वर्ग तथा धरती के मध्य तेरे प्रकटीकरण की बयारें प्रवाहित की गई हैं - वह ’नामालंकरण’ जिसके माध्यम से जो कुछ भी तेरे पवित्र ग्रंथों और पावन पुस्तकों में अंकित हैं और जिनकी भविष्यवाणी तेरे धर्म-संदेशवाहकों और तेरे चुने हुए जनों द्वारा की गई थीं उन्हें प्रकट किया गया है, ताकि सभी मनुष्यों को तेरे दर्शन के लिए, तेरे पुनर्मिलन के महासिंधु की ओर उन्मुख होने, तेरी सिंहासन-स्थली के समक्ष खड़े होने और ‘‘तेरे अगोचर ’स्व’ के दिवास्रोत’’ एवं ‘‘तेरे सारतत्व के उदय-स्थल’’ से प्रतिगुंजित तेरे अद्भुत आह्वान को सुनने के लिए तैयार किया जा सके।

2. स्तुति करता हूँ तेरी, हे नाथ, मेरे परमेश्वर, कि तूने अपना प्रमाण पूरा कर दिया है, तेरा अनुग्रह सम्पूरित किया है, ’दिव्य प्रकटीकरण’ के सिंहासन पर ‘उसे’ विराजमान किया है जिसने तेरी एकमेवता और एकता की घोषणा की, और ’उसके’ समक्ष प्रस्तुत होने के लिए समस्त मानवजाति का आह्वान किया। इन लोगों के बीच वे हैं जो ’उसकी’ ओर उन्मुख हुए हैं, जिन्होंने ‘उसका’ सत्संग प्राप्त किया है और ‘उसके प्रकटीकरण’ की उत्तम मदिरा का आस्वाद ग्रहण किया है। सभी वस्तुओं पर प्रभुत्व रखने वाली तेरी सार्वभौम सम्प्रभुता के नाम पर और तेरी उस करुणा के नाम पर जिसने इस सम्पूर्ण सृष्टि को अच्छादित कर रखा है, मैं याचना करता हूँ तुझसे कि अपने प्रियजनों को तेरे सिवा अन्य सभी वस्तुओं से विमुक्त होने और तेरी कृपा के क्षितिज पर दृष्टि केन्द्रित करने में सक्षम बना। और फिर उन्हें तेरी सेवा के लिए उठ खड़े होने में सहायता दे ताकि तूने अपने साम्राज्य में जो कुछ भी चाहा है वे उसे झलका सकें और तेरी धरती पर तेरी विजय की पताका फहरा सकें। तू, वस्तुतः, सर्वशक्तिमान है, परम उदात्त, सार्वभौम संरक्षक, सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ।

3. गुणगान करता हूँ मैं तेरा, हे मेरे स्वामिन, मेरे परमेश्वर, कि तूने इस कारागार को अपने साम्राज्य के लिए एक सिंहासन बनाया है, तेरे स्वर्गों के लिए एक स्वर्ग, तेरे दिवास्रोतों के लिए एक दिवास्रोत, तेरे उषाकालों के लिए एक उदय-स्थल, तेरी कृपा की बरखा का एक स्रोत और तेरी समस्त रचित वस्तुओं पर उमड़ने वाली जीवन की चेतना। मैं प्रार्थना करता हूँ तुझसे कि अपने चुने हुए जनों को अपनी सत्कृपा के अनुसार कार्य करने में सहायता दे। तब फिर, हे मेरे ईश्वर, उन्हें उन सभी वस्तुओं से परिष्कृत कर दे जिनसे तेरे इन दिनों में उनके परिधानों के आंचल मैले हो सकते हों। तू देखता है, हे प्रभो, कि कैसे कुछ खास भूभागों में तेरी अभिलाषा के प्रतिकूल कार्य किए जा रहे हैं और तू उन्हें देखता है जो तुझसे प्रेम करने का दावा करते हैं वैसे ही कार्य करने में निरत हैं जो तेरे शत्रुओं ने किए हैं। हे ईश्वर! उन्हें उन जीवन्त जलों से पावन कर दे जिनसे तूने अपने लोगों के बीच अत्यंत प्रियजनों और अपने सेवकों के बीच निष्ठावानों को पावन बनाया है। और फिर, उन्हें उन सभी वस्तुओं से परिष्कृत कर दे जिनसे तेरे भूभागों में तेरे धर्म का निर्मल नाम धूमिल हो या तेरे नगरों में निवास करने वाले लोग तेरा अभिज्ञान प्राप्त करने से बाधित हों।

4. तेरे उस नाम से जो अन्य सभी नामों से बढ़कर महान है, मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे नाथ, कि स्वार्थ और लालसा के पथों का अनुगमन करने से उनकी रक्षा कर, ताकि सब लोग उसके चतुर्दिक एकत्र हो सकें जिसका आदेश तूने अपने ग्रंथ में दिया है। अतः उन्हें अपने धर्म की भुजाएँ बना ताकि उनके माध्यम से तेरे श्लोकों को तेरी इस समस्त धरती पर प्रसारित किया जा सके और तेरे लोगों के बीच तेरी पवित्रता के संकेत-चिह्नों को प्रकट किया जा सके। तू जैसा चाहे वैसा करने में समर्थ है। तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, संकटों में सहायक, स्वयंजीवी।

## 3

## वह है परम पावन, परम शक्तिमान, परम उदात्त

1. गुणगान हो तेरा, हे तू जो इस संसार का स्वामी और राष्ट्रों का अधिनायक है! मैं साक्षी देता हूँ कि तू अनादिकाल से सभी सृजित वस्तुओं के उल्लेख से परे पावन और अपने रचित जीवों के उच्चतम वर्णनों से भी उच्च रहा है। जब कभी तेरे समर्पित सेवकों ने तेरे अभिज्ञान के महान पद की ऊँचाइयों तक पहुँचने का प्रयत्न किया, तेरे ज्ञान के सेनानी उनके मार्ग में खड़े हो गए और जब कभी तेरे निकटस्थ जनों ने तेरी निकटता के स्वर्ग में प्रवेश करना चाहा, तेरी वाणी की प्रभुत्वकारी तेजस्विता ने उन्हें रोक दिया। हम साक्षी देते हैं कि उच्चतम दिव्य नामालंकरण तेरे द्वार के सेवक मात्र हैं, और यह कि उनके भव्यतम प्रकटीकरण भी तेरी मुखमुद्रा के आगे अवनत होते हैं और तेरी उपस्थिति में झुक जाते हैं। तू, वस्तुतः, वह है जिसका वर्णन न तो अक्षरों से किया जा सकता है, न ही जिसको शब्दों से पुकारा जा सकता है और न ही जो उनमें छिपे हुए निगूढ़ अर्थों में ही समाहित है। क्योंकि ये सब दुनिया के लोगों की वाणियों में निहित भाषा की सहज सीमाओं से प्रतिबाधित हैं।

2. उदात्त, अपरिमित रूप से उदात्त है तू, प्रत्येक आत्मा के उल्लेख से और हर हृदय की समझ से! उदात्त, अपरिमेय रूप से ’प्रकटीकरण’ के उदय-स्थल से जगमगाती प्रथम प्रभा को प्राप्त नहीं कर पाते। और यदि तेरी ’प्रभुसत्ता के व्याख्याकार’ उन अनवरत ऊँचाइयों तक उठ सकने में सक्षम होते जहाँ तक धरती और स्वर्ग के साम्राज्यों का अस्तित्व है तो भी वे तेरे सौन्दर्य के ’दिवानक्षत्र’ के निकट पहुंचने में सदा-सर्वदा असहाय होते।

3. धन्य है वह जिसे तेरे शाश्वत यथार्थ और तेरे सिवा अन्य सभी वस्तुओं की क्षणभंगुरता का बोध प्राप्त है और जो तेरी सार्वभौम प्रभुसत्ता और तेरे सिवा अन्य सभी वस्तुओं की शक्तिहीनता को मानता है। और जैसेकि तेरे स्मरण के गर्जमान सागर के समक्ष सभी वस्तुओं की क्षणभंगुरता निर्धारित है, हे सभी नामालंकरणों के सम्राट! उसी तरह यह भी स्पष्ट हो जाता है कि उनके द्वारा किया गया प्रत्येक उल्लेख और वर्णन तेरी शक्ति और प्रताप के समक्ष हेय और तेरी उच्चता और सामर्थ्‍य के समक्ष तुच्छ हैं। और इसके बावजूद, हे मेरे ईश्वर! अपनी अद्भुत करुणा और उदारता के कारण और अपनी दया एवं कृपालुता के चिह्न-स्वरूप उन सबको तूने अपना उल्लेख और गुणगान करने का आदेश दिया है और अपनी कृपा एवं उदारता से तूने उनके द्वारा तेरे महिमा-मण्डन को स्वीकार किया है। अतः तेरा अपना ही ’स्व’ तेरे ’स्व’ को पुकारता है और तेरा अपना ही ’सार-रूप’ तेरे ’सार-रूप’ का आवाह्न करता है, तेरे उन प्रेमियों की ओर से जिन्होंने तेरे पथ में सारी विपत्तियाँ सही हैं और तेरे प्रेम के निमित्त एवं तेरी सदिच्छा में संतोष रखते हुए हर आपदा को झेला है, इस आशीर्वादित दिवस में जिसे तूने तेरे साम्राज्य के अंतरंग निवासियों के लिए एक उत्सव बनाया है और उनके लिए भी जिन्होंने तेरी आज्ञा से उपवास धारण किया है और तेरे अबाधित निर्णय का अनुपालन किया है।

4. धन्य है यह आशीर्वादित और भव्य दिवस जिसे तूने उस प्रिय ’नाम’ से नामित किया है जो निगूढ़ भी है और प्रकट भी और जब वह अनंतता के क्षितिज पर जगमगाया तो ’दिव्य कल्पतरु’ पुकार उठा - ‘‘ईश्वर की सौगंध! सृष्टि के प्रभु का पदार्पण हुआ है जिसका वर्णन कोई भी नाम नहीं कर सकता।“ इस पर ’स्वर्ग’ आंदोलित हो उठा और उसने उल्लास एवं उत्कण्ठा से घोषणा की - ‘‘हे दुनिया के जनसमूहों, उसका पदार्पण हुआ है जिसके चारों ओर सर्वदयालु परमात्मा के ’दिवानक्षत्र’, उस सर्वप्रशंसित के ’प्रकटावतार’ और प्रेरणा के ’उदय-स्थल’ परिक्रमा करते हैं। और सभी वस्तुएँ पुकार उठीं: ‘‘यह वह पाती है जिससे सृष्टि के साम्राज्य को अलंकृत किया गया है और जिसके माध्यम से स्वर्ग और धरती के सभी निवासियों के लिए ’दिव्य उपस्थिति’ की ओर जाने वाला द्वार उन्मुक्त खोल दिया गया है।“ धन्य है वह जिसने प्रत्येक कामना त्याग दी है और जो ’उसके’ निकट आ पहुँचा है जिसके यथार्थ का बयान कोई भी शब्द या वाणी नहीं कर सकती।

5. ईश्वर की सौगंध! यह वह युग है जबकि जलधाराओं के कलरव से भी यह सुना जा सकता है - ‘‘उसके सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, वही है संकटों में सहायक, स्वयंजीवी’’ और जिसकी मृदुल बयारों की सनसनाहट से सुना जा सकता हैः ‘‘उसके सिवा अन्य कोई परमेश्वर नहीं है, वह जो है सर्वशक्तिमान, परम प्रियतम’’ और जिसके पेड़-पौधों की सरसराहट से यह सुना जा सकता है: “उस परम शक्तिमान, सदा-दातार, महिमाशाली, सर्वप्रेमी के सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है” और उनसे भी परे ’भव्यता की वाणी’ से यह सुना जा सकता है: “यह ’उसके’ प्रकटीकरण का युग है जो है प्रकट फिर भी निगूढ़, गोचर किन्तु फिर भी प्रच्छन्न। हे लोगों, तुम सब जो कि दिव्य नामों के दिवास्रोत हो, उसकी ओर शीघ्रता से बढ़ो और हे लोगों, तुम सब जो कि सृष्टि के साम्राज्य के निवासी हो, अंधविश्वासों और कपोल-कल्पनाओं तथा लोगों की निरर्थक बातों से मुक्त, पावन अंतःकरण के साथ उसके निकट पहुंचो।“

6. अपरिमित रूप से उदात्त है तेरे उन प्रेमियों का पद जिन्होंने तेरे आदेश का सूत्र पकड़ लिया है, तेरे विधानों का दामन थाम लिया है, जिन्होंने वह बोला है जिसके लिए तेरी पातियों में उन्हें अनुमति दी गई है, जिन्होंने तेरे ग्रंथ में निर्धारित मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं किया है और तेरे भूभागों में तेरी उदारता की सूचियों और तेरी करुणा के पत्रों में आदेशित किए गए अनुसार विवेकपूर्वक अपनी बात कही है। हे प्रभो! जो कुछ भी तूने अपनी परम महान लेखनी से उनके समक्ष विश्लेषित किया है और अपनी कतिपय पातियों में उन्हें जो निर्देश दिए हैं उनके माध्यम से अपने धर्म की विजय के लिए उठ खड़े होने में उनके सहायक बन। हे स्वामिन, उन्हें उनके अपने भरोसे न छोड़ बल्कि अपनी सार्वभौमिकता और शक्ति के माध्यम से उन्हें सुरक्षित रख और अपनी सामर्थ्‍य एवं कृपा से उन्हें सहायता दे।

7. हे स्वामी! ये तेरे ऐसे सेवक और दास हैं जिन्होंने तुझमें आस्था रखी है और जो तेरी कृपा के स्वर्ग के निकट पहुंचे हैं। उन्हें तेरे इन दिनों में अपनी मृदुल कृपाओं के संकेतों से वंचित न होने दे; न ही अपनी प्रज्ञा के गुलाबों की सुरभि उन तक पहुँचने से रोक। हे मेरे ईश्वर! उन्हें अपनी सत्कृपा के महासिंधु तक पहुँचने की राह दिखा, ताकि वे तेरे नाम पर उसमें निमज्जित हो सकें और वे उससे खिन्नता को प्राप्त न हों जिसकी संकल्पना स्वयं उनके मस्तिष्क ने की है, न ही उन बातों से दुःखी हों जिन्हें उन्होंने तेरे पथ पर देखा है। वस्तुतः, तू वह सर्वशक्तिमंत है जिसके सामर्थ्‍य को प्रत्येक शक्तिशाली व्यक्ति ने सम्मानित किया है, जिसकी सार्वभौमता हर गरिमा-सम्पन्न व्यक्ति ने स्वीकार की है, जिसके ज्ञान के महासागर की तरंगों के समक्ष प्रत्येक ज्ञानी ने अपना अज्ञान कबूल किया है और जिसकी शक्ति के प्रमाणों के समक्ष हर शक्ति-सम्पन्न आत्मा ने अपनी निःसहायता स्वीकारी है।

8. तू वह है, हे मेरे परमेश्वर! जिससे जुड़ने में हर नाम लज्जाशील है और जिसकी उपस्थिति में सभी वस्तुएँ उल्लेख किए जाने की शर्मिन्दगी से सिकुड़ जाती है। अनादिकाल से तू उन अगम्य ऊँचाइयों पर निवास करता आया है जो सभी वर्णनों और उल्लेखों से कहीं अधिक महान है। तेरी सम्प्रभुता और शक्ति कितनी महान है और कितनी सबल है तेरी भव्यता! हालाँकि सभी वस्तुएँ यह स्वीकार करती हैं कि तू स्वयं अपने सिवा अन्य सभी वस्तुओं से मुक्त और उन सबसे अपरिमेय रूप से उदात्त है। तूने एक ही शब्द से सम्पूर्ण विश्व पर अपनी प्रभुता कायम की है, उस शब्द से जिसका सम्बन्ध तेरी वाणी के साम्राज्य से है और जिससे तेरे आदेश के परिधान की सुरभि प्रवाहित की गई है।

9. अस्तित्व में जो कुछ भी है उन सबके स्वामी और हे दृश्य एवं अदृश्य सभी वस्तुओं के शिक्षक! हमें ऐसे कान दे जो पवित्र हों, ऐसे हृदय जो पावन हों और ऐसी आँखें जो देख सकती हों ताकि हम तेरी आह्लादकारी वाणी की मधुरता का अन्वेषण कर सकें, तेरे सर्वोच्च क्षितिज पर अपनी दृष्टि केन्द्रित कर सकें और वह जान सकें, हे तू जो नामालंकरणों का सम्राट है! जो तेरी कृपालुता के माध्यम से भेजा गया है। अतः अपने भूभागों में अपने प्रेम की अग्नि प्रज्‍वलित कर ताकि तेरे रचित जीवों के हृदय उससे प्रदीप्त हो सकें और वे तेरी ओर उन्मुख हो सकें, तेरी एकता को पहचान सकें और तेरी एकमेवता को स्वीकार कर सकें। हे सभी नामों के स्वामी! उनके मुखड़ों के समक्ष गौरव के आवरणों को छिन्न-भिन्न कर दे और उन्हें इस ’युग’ की उत्कृष्टता का ज्ञान करा जो तेरे नाम से अलंकृत है और जो प्रभासित है तेरी मुख-भंगिमा के प्रकाश से। तू, सत्य ही, वह है जिसे लोगों के शुभ कर्म कोई महानता प्रदान नहीं कर सकते और न ही उनके दुष्ट कर्म बाधक हो सकते हैं। जिसे शासकों की उन्नति झुका नहीं सकती और न ही शक्तिशाली की शक्ति उसे पराजित ही कर सकती है। अपनी सम्प्रभुता के माध्यम से तू जैसा चाहता है वैसा करता है। तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, सर्वशक्तिमान, सर्वोच्च, सर्वज्ञ एवं सर्वप्रज्ञ।

10 अतः, हे मेरे ईश्वर! अपने प्रियजनों पर अपनी उदार कृपा के स्वर्ग से वह भेज जो उन्हें तुझ पर अपनी दृष्टि केन्द्रित करने और तेरी इच्छा एवं आज्ञा के अनुसार कार्य करने में सहायता दे। तब उनके लिए वह निर्धारित कर जो उनके लिए लाभदायक हो और जिससे वे रक्षित हो सकें, जो उन्हें तेरे निकट ला सके और उन्हें मुक्त कर सके। तू, सत्य ही, उनका प्रभु है, उनका रचयिता और उनका सहायक है। तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, सदा क्षमाशील, परम उदार।

11. और फिर, हे ईश्वर! मैं याचना करता हूँ कि अपने प्रियजनों के हृदयों को एक कर दे और अपने धर्म में उन्हें प्रेम और बन्धुता से एकजुट कर ताकि उनसे ऐसा कुछ भी प्रकट न हो जो तेरे दिनों में उनके लिए अशोभनीय हो। वस्तुतः, तू सर्वशक्तिमान है, परम उदात्त, सर्वोच्च, परम महान। स्तुति हो परमेश्वर की, लोकों के स्वामी की!

## 4

## वह है सर्वदा जीवन्त, चिर स्थायी, स्वयंजीवी

1. ईश्वर अपने ईश्वरत्व की एकता और अपने स्वयं के अस्तित्व की एकलता का साक्षी है। अनन्तता के सिंहासन पर, उसके परम पद की अगम्य ऊँचाइयों से, उसकी वाणी यह घोषणा करती है कि उसके सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है। अन्य सभी से स्वतंत्र, वह स्वयं ही अपनी एकमेवता का साक्षी रहा है, अपनी प्रकृति का स्वयं ही प्रकटकर्ता, अपने सार-तत्व का स्वयं ही गौरव-दाता रहा है। वह, सत्य ही, सर्वशक्तिमान, सर्वसामर्थ्‍यवान, सर्वसौन्दर्यवान है।

2. वह अपने सेवकों का सर्वोच्च नियंता है और अपने सभी समस्त रचित जीवों से श्रेष्ठ आसन पर विराजमान है। उसके हाथ में है प्राधिकार और सत्य का स्रोत। अपने संकेत मात्र से वह लोगों को जीवन देता है और उसका कोप उनकी मृत्यु का कारक है। उससे उसके कर्मों का हिसाब नहीं पूछा जाएगा और उसकी सामर्थ्‍य के मुकाबले कुछ भी नहीं है। वह सर्वसक्षम है, वह है सर्वदमन। उसकी मुट्ठी में है सभी वस्तुओं का साम्राज्य और उसकी दाहिनी भुजा पर नियत है उसके ’प्रकटीकरण का सामाज्य’। वस्तुतः, उसकी शक्ति के दायरे में यह सम्पूर्ण सृष्टि है। वही है विजेता और सबका अधिनायक, सम्पूर्ण शक्ति और साम्राज्य उसी का है, समस्त गरिमा और महानता उसी की है। वह सत्य ही, सर्वगरिमावान है, परम शक्तिशाली, अप्रतिबंधित है।

3. स्तुति हो तेरी! तू वह है जिसका आह्वान सृष्टि की समस्त रचनाओं की जिह्वाएँ अनन्त काल से करती आ रही हैं और फिर भी वे तेरी शाश्वत पवित्रता और भव्यता के स्वर्ग तक कदापि नहीं पहुँच पाईं। तेरी प्रभासित मुखमुद्रा के सौन्दर्य को निहारने के लिये सभी रचित वस्तुओं के नेत्र खुले रहे हैं किन्तु फिर भी ऐसा कोई नहीं जो तेरे मुखड़े की ज्योति की प्रखरता पर अपनी दृष्टि टिकाने में सफल हो सका हो। तेरी महिमामय सम्प्रभुता की आधार-रचना और तेरे पवित्र साम्राज्य की स्थापना के समय से ही तेरे निकटस्थ जनों के हाथ तेरी ओर याचना से फैले रहे हैं लेकिन फिर भी तेरे दिव्य एवं परम ’सारतत्व’ को आवृत्त करने वाले परिधान के छोर को छू सकने में कोई भी सक्षम न हो सका। इसके बावजूद, कोई भी इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि तू सदा से ही, अपनी परम उदारता और कृपालुता की विलक्षणता के बल पर, सभी वस्तुओं से उच्च रहा है, तू सब कुछ करने में समर्थ है और हर वस्तु स्वयं जितना अपने निकट है तू उनसे उससे भी अधिक निकटतर है।

4. अतः, तेरे इस महिमा के दृष्टिगत, यह कल्पनातीत ही है कि तेरे नेत्र के सिवा अन्य किसी भी नेत्र से कोई तेरे अद्भुत सौन्दर्य को निहार सके, या तेरी श्रवणेन्द्रिय के सिवा अन्य किसी भी कान से तेरी सर्वशक्तिमान सम्प्रभुता की घोषणा करने वाले माधुर्य को सुन सके। तू किसी भी रचित जीव की आँखों द्वारा तेरा सौन्दर्य निहार सकने की क्षमता से अथवा किसी भी हृदय द्वारा तेरे अपरिमेय ज्ञान की ऊँचाइयों तक उड़ान भरने की समझ-शक्ति से परे कहीं अधिक उच्च, महान है। क्योंकि जो लोग तेरे निकट स्थित हैं उनके हृदय रूपी पंछियों को यदि कभी इतना समर्थ बना दिया जा सके कि वे उस विस्तार तक उड़ान भर सकें जहाँ तक तेरी सर्ववशकारी सम्प्रभुता है या वे उस ऊँचाई तक उठ सकें जहाँ तक तेरी स्वर्गिक पावनता का साम्राज्य प्रसारित है तो भी वे किसी तरह इस क्षणभंगुर संसार द्वारा आरोपित सीमाओं से परे नहीं जा सकते और न ही इसके दायरों को पार कर सकते हैं। तब फिर वह जिसकी सृष्टि ही ऐसी सीमाओं से बाधित है भला ’उसे’ कैसे प्राप्त कर सकता है जो ’सभी सृजित वस्तुओं के साम्राज्य का स्वामी’ है या कैसे उसके स्वर्ग की ऊँचाइयों तक पहुँच सकता है जो शासक है उच्चता और भव्यता के लोकों का?

5. महिमाशाली, अपरिमेय रूप से महिमाशाली है तू, हे मेरे परम प्रियतम! चूंकि तूने यह नियत किया है कि जो लोग अपने हृदयों को तेरी ओर उन्नत करते हैं उनके अभ्युत्थान की चरम सीमा है तेरी पावन और लोकोत्तर एकता के साम्राज्यों में प्रवेश कर सकने में अपनी असमर्थता की आत्म-स्वीकृति और यह कि जो तुझे जानने के अभिलाषी हैं उनके द्वारा प्राप्त किया जा सकने वाला सर्वोच्च पद है तेरे उत्कृष्ट ज्ञान के आश्रम तक पहुँच सकने में अपनी अशक्तता का बोध, अतः मैं याचना करता हूँ तुझसे इस शक्तिहीनता के नाम पर जो तुझे प्रिय है और जिसे तूने अपने दरबार तक पहुँचने वाले जनों का लक्ष्य निर्णीत किया है और तेरी मुख-भंगिमा की उन आभाओं के नाम पर जिन्होंने सभी वस्तुओं को आवृत्त कर रखा है और तेरी ’इच्छा’ की उन ऊर्जाओं के नाम पर जिनसे इस समस्त सृष्टि की रचना की गई है कि जिन्होंने तुझ पर अपनी आशा केन्द्रित की है उन्हें अपनी करुणा के चमत्कारों से वंचित न कर और जिन्होंने तुझे पाने का प्रयत्न किया है उन तक अपनी कृपा की निधियों को पहुँचने से न रोक। अतः उनके हृदयों में अपने प्रेम की मशाल जला ताकि इसकी ज्वाला तेरे अनुपमेय स्मरण के सिवा अन्य सबकुछ भस्मीभूत कर दे और उन हृदयों में तेरे परम पवित्र अधिराज्य के रत्न-तुल्य प्रमाणों के सिवा अन्य कोई प्रमाण न बचे, ताकि वे जिस भूमि में निवास करें वहाँ से तेरी दयालुता और शक्ति का गुणगान करने वाले स्वर के सिवा और कोई भी स्वर न सुनाई पड़े, कि वे जिस धरा पर विचरण करें वहाँ तेरे सौन्दर्य के प्रकाश के सिवा अन्य कोई भी प्रकाश प्रदीप्त न हो और यह कि प्रत्येक आत्मा में तेरी मुखमुद्रा के प्राकट्य और तेरी महिमा के संकेतों के सिवा अन्य कुछ भी दृष्टिगोचर न हो, ताकि कदाचित तेरे सेवक प्रसन्नतापूर्वक केवल वह दर्शा सकें जिससे तू प्रसन्न हो और जो पूर्णतः तेरी परम शक्तिमान इच्छा के अनुरूप हो।

6. महिमा हो तेरी, हे मेरे परमेश्वर! तेरी सामर्थ्‍य की शक्ति मेरी साक्षी है! मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि यदि सृष्टि की वस्तुओं पर तेरी स्नेहिल दया के पावन उच्छ्वास और तेरी उदार कृपा की मृदुल बयार का प्रवाह पलक झपकने से भी कम समय के लिए रूक जाये तो यह सम्पूर्ण सृष्टि विनष्ट हो जाएगी और स्वर्ग में एवं धरती पर जो भी वस्तुएँ हैं वे सब शून्य में विलीन हो जाएंगी। अतः, तेरी लोकातीत शक्ति के अद्भुत प्रमाणों का गौरव-गान हो! गुणगान हो तेरी असाधारण शक्ति की प्रभावशीलता का! गुणगान हो सभी वस्तुओं को अपने दायरे में समेट लेने वाली तेरी महानता की महिमा का और तेरी इच्छा के ऊर्जस्वी प्रभाव का! ऐसी है तेरी महानता कि यदि तू सभी लोगों की दृष्टियों को अपने किसी एक सेवक की दृष्टि में संकेन्द्रित कर दे और उन सबके हृदयों को उसके हृदय में घनीभूत कर दे और यदि तू उसे अपने ही भीतर उन सभी वस्तुओं को देख सकने की क्षमता प्रदान कर दे जिसे तूने अपनी शक्ति से सृजित और अपनी सामर्थ्‍य से रूपायित किया है और यदि वह (सेवक) अनन्त से अनन्तकाल तक तेरी सृष्टि के साम्राज्यों और तेरे हस्तशिल्प की व्यापकता पर ध्यान केन्द्रित करता रहे तो अचूक रूप से वह बस यही पाएगा कि ऐसी कोई भी सृजित वस्तु नहीं जो तेरी सर्वविजयी शक्ति से आच्छादित नहीं और जो सबको अपने दायरे में समेटने वाली तेरी सम्प्रभुता से जीवन्त नहीं।

7. अतः, मेरी ओर दृष्टि डाल, हे मेरे ईश्वर! जो तेरे समक्ष धूल पर साष्टांग पड़ा है, अपनी शक्तिहीनता और तेरी सर्वशक्तिमानता, अपनी दरिद्रता और तेरी सम्पन्नता, अपनी क्षणभंगुरता और तेरी चिरन्तनता, अपनी घोर अधमता और तेरी असीम महिमा स्वीकार करते हुए। मैं मानता हूँ कि तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, कि तेरा कोई संगी कोई साझेदार नहीं है, ऐसा कोई नहीं है जो तेरी बराबरी या तुझसे प्रतिद्वंद्विता कर सके। अपनी अगम्य उच्चता में तू अनन्तकाल से स्वयं अपने सिवा अन्य सभी की स्तुति से परे, उदात्त रहा है और तू सदासर्वदा अपनी सीमाओं से परे एकमेवता और महिमा में अक्षुण्ण रहेगा, स्वयं अपनी प्रशस्ति के सिवा अन्य किसी की भी प्रशस्ति से परे, पावन।

8. मैं तेरी शक्ति की सौगन्ध खाता हूँ, हे मेरे प्रियतम! किसी भी रचित वस्तु का उल्लेख करना तेरे परम उदात्त ’स्व’ के लिए उचित नहीं है और तेरे किसी भी सृजित जीव की प्रशंसा करना तेरी परम महान महिमा के कतई योग्य नहीं होगा। नहीं, बल्कि ऐसा कोई भी उल्लेख तेरी पवित्रता के दरबार में उच्चरित ईश-निंदा के सिवा और कुछ नहीं होगा और ऐसी प्रशंसा तेरी ईश्वरीय सम्प्रभुता के प्रमाणों के सम्मुख उल्लंघन से कम कुछ और नहीं होगा। क्योंकि तेरी रचनाओं के उल्लेख मात्र में भी स्वयं में तेरी एकता और एकमेवता के दरबार के समक्ष उनके अस्तित्व का अभिकथन निहित होगा। ऐसा अभिकथन खुली ईश-निंदा के सिवा और कुछ नहीं होगा, एक अधार्मिक कार्य, ईश्वर के अनादर का सारांश और एक धृष्टतापूर्ण अपराध।

9. अतः, अपनी आत्मा, अपनी चेतना, अपने सम्पूर्ण अस्तित्व के साथ, मैं साक्षी देता हूँ कि यदि ’वे’ जो तेरी परम पावन एकता के ’दिवास्रोत’ और तेरी परातीत एकमेवता के ’प्रकटावतार’ हैं वहाँ तक उड़ान भरने में सक्षम हो जाएँ जहाँ तक तेरा साम्राज्य विस्तृत है और तेरी सर्व-बाध्यकारी अधिकार-सत्ता विद्यमान है तो भी वे अंत में उस दरबार के परिसर तक भी पहुँचने में सफल नहीं हो सकेंगे जहाँ तूने अपने बलशाली ’नामालंकरणों’ में से एक की भी प्रभा प्रकट की है। अतः, महिमावंत हो, महिमावंत हो तेरा अद्भुत प्रताप। महिमावंत, महिमावंत हो तेरी अगम्य उच्चता। महिमावंत, बार-बार महिमावंत हो तेरे राजाधिराज पद की उत्कृष्टता और तेरी शक्ति एवं अधिकार-सत्ता की श्रेष्ठता।

10. ज्ञानियों ने जो उच्चतम योग्यताएँ अर्जित की हैं और तेरे ज्ञान के रत्नों की तलाश में उन्होंने जिन किन्हीं सत्यों की खोज की है, प्रज्ञावान लोग जिन प्रखरतम यथार्थों से आभूषित हुए हैं, और तेरी प्रज्ञा के रहस्यों की थाह पाने के प्रयास में उन्होंने जिन किन्हीं रहस्यों का उद्घाटन किया है, वे सब उस ’परम चेतना’ की सृजनात्मक शक्ति से रचे गए हैं जिसकी साँस उस ’लेखनी’ में फूँक दी गई थी जिसका तेरे ही हाथों ने सृजन किया है। तो फिर जिस वस्तु को तेरी ’लेखनी’ ने रचा है वह भला तेरे धर्म की उन निधियों को समझने में कैसे सक्षम हो सकती है जो, तेरे ही आदेशानुसार, उस ’लेखनी’ में समावेशित हैं? वह भला कभी उन ’अँगुलियों’ को कैसे जान सकती है जो तेरी ’लेखनी’ को थामे हुई है और तेरी उन दयामयी कृपाओं को जिनका अनुदान उसे प्राप्त हुआ है? इस उच्च पद को प्राप्त करने में असमर्थ, उसे उस ’भुजा’ के अस्तित्व के बारे में कैसे अवगत कराया जा सकता है जो तेरी ’शक्ति की अँगुलियों’ को नियंत्रित करती है? कैसे समझ सकती है वह ’तेरी इच्छा’ की प्रकृति को जो तेरी ’भुजा’ के संचालन को अनुप्रेरित करती है?

11. महिमावंत, महिमावंत हो तू, हे मेरे परमेश्वर! मैं भला कैसे कभी तेरी परम पवित्र इच्छा के स्वर्ग तक उठ सकने या तेरे दिव्य ज्ञान के मण्डप में प्रवेश कर सकने की आशा कर सकता हूँ, जबकि मैं जानता हूँ कि ज्ञानी और विवेकी जनों के मस्तिष्क तेरे हस्तशिल्प के रहस्यों की थाह पाने में अक्षम हैं-वह हस्तशिल्प जो स्वयं में तेरी ही इच्छा की रचना है?

12. गुणगान हो तेरा, हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर, मेरे स्वामी, मेरे मालिक, मेरे राजन! अब जबकि मैंने तेरे समक्ष अपनी शक्तिहीनता और सृष्टि की सभी वस्तुओं की शक्तिहीनता स्वीकार कर ली है और अपनी तथा सम्पूर्ण सृष्टि की दरिद्रता मान ली है, तो मैं अपनी वाणी और उन सबकी वाणियों से जो स्वर्ग में और धरती पर हैं, तेरा आह्वान करता हूँ और अपने हृदय एवं उन सबके हृदयों से जो तेरे नामों और तेरे गुणों की छत्रछाया में प्रवेश को प्राप्त हुए हैं, याचना करता हूँ कि अपनी स्नेहिल दयालुता और कृपा के द्वार से हमें दूर न कर, न तेरी उदारतापूर्ण देखभाल और कृपा की बयार को हमारी आत्माओं पर प्रवाहित होने से रोक, न ही ऐसा होने दे कि हमारे हृदय तेरे सिवा अन्य किसी भी वस्तु में आसक्त हों या हमारा मन तेरे ’आत्म’ के स्मरण के सिवा अन्य किसी भी स्मरण में व्यस्त होने पाए।

13. तेरी शक्ति की महिमा की सौगन्ध, हे मेरे ईश्वर! यदि तू मुझे अपने लोकों का राजा नियत कर दे और मुझे अपनी सम्प्रभुता के सिंहासन पर विराजमान कर दे और अपनी शक्ति के माध्यम से सम्पूर्ण सृष्टि की बागडोर मेरे हाथों में सौंप दे और यदि तू क्षण मात्र के लिए भी इन वस्तुओं में मुझे आसक्त होने दे और तेरे परम शक्तिशाली, परम पूर्ण और परम उदात्त ’नाम’ से जुड़ी अद्भुत स्मृतियों को भूल जाने दे तो मेरी आत्मा तब भी असंतुष्ट रहेगी और मेरे हृदय की वेदना शांत नहीं होगी। नहीं, बल्कि उस स्थिति में मैं स्वयं को अकिंचन से भी अकिंचन और खिन्न से भी सर्वाधिक खिन्न महसूस करूँगा।

14. महिमा हो तेरे नाम की, हे मेरे परमेश्वर! अब जबकि तूने मुझे इस सत्य को समझने की शक्ति दी है, मैं तेरे उस नाम से तुझसे याचना करता हूँ जो किसी सूची में समाहित नहीं हो सकता, जो किसी भी हृदय की कल्पना में नहीं समा सकता और कोई भी वाणी जिसका उच्चार नहीं कर सकती-वह ’नाम’ जो तब तक निगूढ़ रहेगा जब तक कि स्वयं तेरा ’सारतत्व’ निगूढ़ है और जिसकी महिमा तब तक रहेगी जब तक कि स्वयं तेरा ’अस्तित्व’ प्रशंसित रहेगा-कि इसके पूर्व कि यह वर्तमान वर्ष समाप्त हो जाए, तू अपनी असंदिग्ध उच्चता और विजय की पताकाएँ फहरा दे, ताकि यह सम्पूर्ण सृष्टि तेरी सम्पदा से धनवान हो जाए और तेरी अलौकिक सम्प्रभुता के शुभंकर प्रभाव से महान बन जाए और यह कि सब लोग उठें और तेरे धर्म को आगे बढ़ाएँ।

15. वस्तुतः, तू है सर्वशक्तिमान, सर्वोच्च, सर्व-महिमाशाली, सर्ववशकारी, सबका स्वामी

## 5

## वह है सार्वभौम सम्राट, पवित्रतम पावन

1. गुणगान हो तेरा, हे ईश, मेरे परमेश्वर! तेरे ’दिवसों’ के बीच यह वह ’दिवस’ है और तेरी आशीर्वादित ’घड़ियों’ के बीच वह ’घड़ी’ जिसे तूने अपने ’स्वयं’ के लिए सुरक्षित, स्वयं अपने ’अस्तित्व’ से सम्बद्ध, और उच्च पद पर रखा है, ताकि तेरा ’नाम’ शाश्वत रहे और तेरी सम्प्रभुता प्रकट हो। तूने इस ’दिवस’ को सभी दिनों का स्रोत बनाया है, क्योंकि तूने इस पर अपनी महिमा के ’सिंहासन’ के प्रकटीकरणों और अपनी अलौकिक कृपा के संकेतों की वर्षा की है। तूने, इस क्षण, इस पुराचीन ’मन्दिर’ में, इसे नवीनतम और सर्वोत्तम स्वरूप में गढ़ा है ताकि इस ’दिवस’ में और इसकी कृपा से, धरती और स्वर्ग के सभी निवासियों को पुनः जीवन प्रदान किया जा सके और, सबके बिना जाने और बिना समझे, उन्हें तेरे ’स्व’ के बारे में विवरण देने को बुलाया जा सके। कदाचित, तेरे पवित्र और स्वर्गिक आशीष और तेरे दिव्य एवं भव्य अनुदान उनमें पूर्णता प्राप्त करें और तेरी उपस्थिति के ’दिवस’ में वे सभी वस्तुओं के सृजन और तेरे दिनों के प्राकट्य एवं तेरे सौन्दर्य के ’सूर्य’ के उदय का प्रमाण दे सकें।

2. जैसे ही इस अनुपम सम्मान और परमोच्च कृपा का उल्लेख मात्र किया गया, तेरे लिए उत्कंठा, तेरे सर्वजयी प्रेम के अभ्युदय और तेरे पवित्र हर्षातिरेक की प्रबल भावनाओं के अतिशय आनन्द में, मैंने तेरे सेवकों में से एक की पुकार सुनी जिसने तुझमें और तेरे चिह्नों में आस्था रखी थी, जिसने सभी वस्तुओं का परित्याग कर दिया था, तेरे सौन्दर्य की मुखमुद्रा की ओर उन्मुख हुआ था और जो हर ओर से तेरी शरण-स्थली की ओर शीघ्रता से बढ़ चला था। अंततः वह तेरे द्वार तक पहुँचा और तेरी अनन्त पावनता के उस प्रकाश के समक्ष, जो तेरी एकता के क्षितिज और तेरी असीमता के दिवास्रोत के ऊपर चमका था, यह कामना करते हुए खड़ा हुआ कि वह तेरी उपस्थिति और तेरे पुनर्मिलन की ऊँचाइयों तक पहुँच सके और तेरे पवित्र दरबार में तेरी निकटता के आसन को प्राप्त कर सके। अतः, हे मेरे ईश्वर! उत्कंठा के कपोत को उसके हृदय में उड़ान भरने और तेरे प्रेम के सागर को उसके अंतर्तम में उच्छलित होने और तेरे सुमिरन के अनुपम चिह्नों को उसकी वाणी से प्रवाहित होने और तेरी स्तुति के रत्नों को उसकी चेतना से निस्सृत होने दे। हे परमेश्वर! उसे अपने निकट से निकट ला ताकि अपने हृदय के अंतर्तम प्रकोष्ठों में वह इस प्रखरतम प्रकाश और निगूढ़ खजाने को सुरक्षित रखने में सक्षम हो और इस तरह वह परम उच्च क्षितिज और सर्वगरिमामय लोक में तेरे ’सेवक’ के साथ निवास कर सके।

3. तू, वस्तुतः, अभी भी अपने शाश्वत आवास में निवास कर रहा है और देख रहा है इस अरुणाभ चेतना को और सुन रहा है इस परम माधुर्य को अपने ’दिव्य सारतत्व’ के हृदय-मध्य में, रहस्यों के लोक के केन्द्र में। तू जो चाहे वह करने में समर्थ है। तू, सत्य ही, उदात्त है, सर्वशक्तिमान है, सर्वमहिमाशाली, स्वयंजीवी है।

# रिज़वान

## 6

## उसके’ नाम पर जिसने सम्पूर्ण सृष्टि पर अपनी आभा बिखेरी है

1. हे परम महान लेखनी! दिव्य बसन्त ऋतु आ गया है, क्योंकि सर्वदयालु का ’उत्सव’ अत्यंत सन्निकट है। स्फूर्ति से भर जा और सम्पूर्ण सृष्टि के समक्ष ईश्वर के नाम का प्रसार कर और इस तरह उसकी स्तुति का समारोह मना कि सभी सृजित वस्तुओं में नवजीवन का संचार हो जाए और वे नई बन जाएँ। बोल, चुप न रह। हमारे नाम के क्षितिज पर स्वर्गिक आनन्द का दिवानक्षत्र चमक उठा है, परम आनन्दमय क्योंकि ईश्वर के नामालंकरणों का साम्राज्य तेरे प्रभु, उस स्वर्गों के रचयिता, के नाम के आभूषण से सजा दिया गया है। धरती के राष्ट्रों के समक्ष उठ खड़े हो और स्वयं को इस ’महानतम नाम’ की शक्ति से सुसज्जित कर ले और विलम्ब करने वालों में से न बन।

2. लगता है तुम रुक गई हो और मेरी पाती पर गतिमान नहीं हो। क्या ’दिव्य मुखमुद्रा’ की कांति ने तुझे हतप्रभ कर दिया है या फिर पथभ्रष्टों की व्यर्थ बातों ने तुझे दुःखी कर दिया है और तेरी गति को कुंठित कर डाला है? सावधान रह कि कुछ भी तुझे इस ’युग’ की महत्ता का गुणगान करने से न रोक सके.... उस ’युग’ की जबकि गरिमा और शक्ति की ’अंगुली’ ने ’पुनर्मिलन की मदिरा’ के पात्र का विमोचन किया है और उन सबका आह्वान किया है जो स्वर्ग में और धरती पर हैं। अब जबकि ’ईश्वर के युग’ की घोषणा करने वाली बयार तेरे ऊपर से प्रवाहित हो चुकी है तो भी क्या तुझे हिचकना पसन्द है, या कहीं तू उन लोगों में से है जो उस परमेश्वर से मानो एक पर्दे के आवरण से ढके पड़े हैं?

3. हे सभी नामों के स्वामी और स्वर्गों के रचयिता, मैंने किसी भी पर्दे को तेरे युग की महिमाओं को पहचानने से स्वयं को बाधित नहीं करने दिया है .....वह युग जो इस सम्पूर्ण विश्व के लिए मार्गदर्शन का दीप है और उसमें रहने वाले सभी लोगों के लिए ’प्राचीनतम युग’ का संकेत-चिह्न। मेरी चुप्पी तो उन पर्दों के कारण हैं जिन्होंने तेरे रचित जीवों की आंखों को तेरी ओर से मूंद दिया है और मेरा यह कुछ भी न बोलना उन बाधाओं के कारण है जिन्होंने तेरे लोगों को तेरे सत्य को पहचानने से रोक दिया है। तू जानता है उसे जो मुझमें है किन्तु मैं नहीं जानता वह जो तुझमें है। तू है सर्वज्ञाता, सर्वसूचित। तेरे उस नाम की सौगन्ध जो अन्य सभी नामों से उत्कृष्ट है! यदि तेरी सर्वनियामक और सर्वबाध्यकारी आज्ञा कभी मेरे पास तक पहुँच सके तो, तेरे परम उदात्त शब्द के माध्यम से, जिसे मैंने तेरे गौरव के साम्राज्य में तेरी सामर्थ्‍य की वाणी द्वारा उच्चारित होते सुना है, मुझे सभी लोगों की आत्माओं को नवजीवन की स्फूर्ति से भर देने की क्षमता प्रदान करेगी। यह मुझे तेरी प्रभासित मुखमुद्रा के प्राकट्य की घोषणा करने में सक्षम बना देगी जिसके माध्यम से वह जो कि लोगों की आँखों से छिपा पड़ा है उसे तेरे नाम से प्रकट किया गया है, हे प्रांजल, हे सार्वभौम संरक्षक, हे स्वयंजीवी!

4. हे लेखनी! क्या इस युग में तुम मेरे सिवा किसी अन्य को नहीं देख सकती है? इस सृष्टि और उसके प्रकटीकरणों का क्या हो गया? नामों और उसके साम्राज्य का क्या हो गया? दृश्य और अदृश्य सभी वस्तुएँ कहाँ चली गईं? ब्रह्माण्ड के निगूढ़ रहस्यों और उसके प्रकटीकरणों का क्या हुआ? यह देखो, सम्पूर्ण सृष्टि का अस्तित्व खत्म हो चुका है! मेरे शाश्वत, ज्योतिर्मय, सर्व-महिमाशाली मुखड़े के सिवा और कुछ भी नहीं बचा है।

5. यह वह युग है जिसमें उस ’प्रकाश’ की आभाओं के सिवा और कुछ भी नहीं देखा जा सकता जो तेरे प्रभु, उस परम कृपालु, परम उदार, के मुखड़े से जगमगाती है। सत्य ही, अपनी अदम्य एवं सर्व-वशकारी सम्प्रभुता के दम पर हमने हर आत्मा को मृत कर दिया है। तदुपरांत, मनुष्यों के प्रति अपनी करुणा के संकेत के रूप में, हमने एक नई सृष्टि को अस्तित्व में लाया है। मैं, वस्तुतः, सर्वकृपालु हूँ, युगों से भी प्राचीन!

6. यह वह युग है जब अदृश्य जगत पुकार उठा हैः “ओ वसुंधरा! सौभाग्यशाली है तू कि प्रभु के पावन पग तुझ पर पड़े हैं और तुझे उसके शक्तिसम्पन्न सिंहासन की स्थली के रूप में चुना गया है।“ महिमा का साम्राज्य हर्षोन्मादित हो कह रहा हैः “काश! तुम्हारे लिए मेरा जीवन न्योछावर हो जाए, क्योंकि वह जो कि ’सर्वदयालु का परमप्रिय’ है उसने तुझ पर अपनी सम्प्रभुता स्थापित की है, अपने उस नाम की शक्ति से जिसका वचन अतीत और भविष्य की सभी वस्तुओं को दिया गया था।“ यह वह युग है जिसमें हर मोहक सुरभि वाली वस्तु ने मेरे परिधान के सुवास से अपनी सुगन्धि प्राप्त की है - उस परिधान से जिसने सम्पूर्ण सृष्टि पर अपनी सुरभि बिखेरी है। यह वह युग है जबकि अनन्त जीवन की प्रवाहित होती जलधाराएँ ’सर्वदयालु की इच्छा’ से फूट पड़ी हैं। अपने प्राणपण से शीघ्रता कर, हे उच्च लोक के सहचरों! और इसे छक कर पी ले।

7. कहः यह वह है जो उस अज्ञेय, अगोचरों में भी अगोचर का प्रकटावतार है, काश कि तुम यह जान पाते! यह वह है जिसने तुम्हारे समक्ष निगूढ़ और खजाने की तरह संरक्षित ’रत्न’ को प्रकट किया है, काश कि तुम उसे खोज पाते! यह वह है जो अतीत और भविष्य की सभी वस्तुओं का एकमेव ’प्रियतम’ है, काश कि तुम अपने हृदय और अपनी आशाएँ उस पर केन्द्रित कर पाते!

8 हे लेखनी! हमने तेरी मनुहार के स्वर सुने हैं और क्षमा करते हैं हम तेरी चुप्पी को। आखिर क्या है वह जिसने तुझे इतना व्यथित कर दिया है?

9. हे सभी लोकों के परम प्रियतम! तेरी उपस्थिति की मदहोशी ने मुझे अभिभूत करके रख दिया है।

10. उठो, और सम्पूर्ण सृष्टि के समक्ष इस सुसमाचार की घोषणा कर दो कि वह जो सर्वदयालु है उसने रिज़वान की ओर अपने पग बढ़ाए हैं और उसमें प्रविष्ट हुआ है। अतः, लोगों को उस आनन्द-वन की ओर ले जा जिसे ईश्वर ने अपने ’स्वर्ग का सिंहासन’ नियुक्त किया है। हमने तुम्हें अपनी सबसे शक्तिशाली ‘तुरही’ के रूप में चुना है जिसके तूर्यनाद से समस्त मानवजाति का पुनर्जागरण संकेतित होना है।

11. कहः यह वह स्वर्ग है जिसके पौधों पर वाणी की मदिरा ने यह प्रमाण अंकित किया हैः “वह जो लोगों की आँखों से छिपा था, उसे शक्ति और सम्प्रभुता से सन्नद्ध करके प्रकट कर दिया गया है!” यह वह स्वर्ग है जिसकी पत्तियों की सरसराहट से यह घोषणा होती है: “हे स्वर्गों और धरा के निवासियों! वह प्रकट हो चुका है जो पहले कभी प्रकट नहीं हुआ था। वह जिसने अनन्तकाल से सृष्टि की दृष्टि से अपने ’मुखड़े’ को छिपा रखा था, उसका पदार्पण हो चुका है।“ इसकी शाखाओं के बीच मर्मर-ध्वनि से प्रवाहित होती मधुर बयार से यह आवाज उठती हैः “वह जो कि सबका सम्प्रभु स्वामी है, प्रकट कर दिया गया है। साम्राज्य ईश्वर का है।“ और उसकी प्रवाहित होती जलधाराओं से यह कलरव सुना जा सकता है: “सभी नेत्र आनन्द-विह्वल हैं, क्योंकि जिसके दर्शन किसी को न हो सके, जिसके रहस्य को कोई ज्ञात न कर सका, उसने महिमा के पर्दे को उठा दिया है और ’सौन्दर्य’ की मुखमुद्रा की झलक दिखा दी है।“

12. स्वर्ग के भीतर, और उच्चतम कक्षों की ऊँचाइयों से, स्वर्ग की परियाँ उच्च स्वर से पुकार उठी हैं: “हे उच्च लोक के निवासियों! आनन्द मनाओ क्योंकि उसकी अँगुलियां जो ’युगों से भी प्राचीन’ है, सर्वमहिमाशाली परमात्मा के नाम पर, स्वर्गों के मध्य ’परम महान घड़ियाल’ बजा रही हैं। उदारता के हाथों ने अनन्त जीवन के प्याले पर अपनी पकड़ बना ली है। पास आओ और छक कर पियो। इसे पूर्ण आस्वाद से पियो, हे आप लोग जो उत्कण्ठा के मूर्तिमान रूप हो, उत्कट लालसा के साक्षात स्वरूप हो!”

13. यह वह युग है जबकि वह जो कि ईश्वर के नामों का ’प्रकटकर्ता’ है, उसने महिमा के वितान से बाहर अपने कदम रखे हैं और जो लोग भी स्वर्ग में तथा धरती पर हैं उनके सामने यह घोषणा की है: “दूर रख दो ’स्वर्ग’ के प्यालों को और उनमें भरे हुए समस्त जीवनदायी जल को क्योंकि, देखो, बहा के लोग ’दिव्य सान्निध्य’ के आनन्दमय आवास में प्रवेश कर चुके हैं और उन्होंने सबके स्वामी, परम महान, अपने प्रभु के सौन्दर्य के प्याले से पुनर्मिलन की मदिरा का पान कर लिया है।“

14. भूल जा सृष्टि के संसार को, हे लेखनी! और अपने प्रभु, उस सभी नामों के स्वामी, के मुखड़े की ओर उन्मुख हो। तब फिर इस विश्व को अपने प्रभु, उस अनन्त दिवसों के ’सम्राट’, की कृपाओं के आभूषण से सुसज्जित कर। क्योंकि हमें उस ’युग’ की सुरभि का बोध हो रहा है जब वह जो कि ’सभी राष्ट्रों की अभिलाषा’ है, उसने दृश्य और अदृश्य वस्तुओं के साम्राज्यों पर अपने परम उत्कृष्ट नामों के प्रकाश की आभा बिखेरी है और उन्हें अपनी परम उदार कृपाओं के नक्षत्रों की दीप्ति से आवृत्त किया है - वे कृपाएँ जिनके बारे में ’उसके’ सिवा अन्य कोई सोच भी नहीं सकता जो इस समस्त सृष्टि का सर्वशक्तिमान संरक्षक है।

15. परमात्मा के रचित जीवों पर करुणा और दयालुता के सिवा अन्य कोई भी दृष्टि न डाल, क्योंकि हमारी स्नेहिल रक्षा सभी सृजित वस्तुओं को परिव्याप्त किए हुए है और हमारी कृपा धरती और स्वर्गों को आच्छादित किए हुए है। यह वह युग है जिसमें ईश्वर के सच्चे सेवक पुनर्मिलन की जीवनदायिनी जलधाराओं से अपना अंश ग्रहण करते हैं, वह युग जिसमें वे जो ’उसके’ निकट हैं, अमरता की मृदुवाही सरिता से और वे जो उसकी एकता में विश्वास करते हैं, ’उसकी उपस्थिति’ की मदिरा का पान करने में सक्षम हैं, उसके अभिज्ञान के माध्यम से जो सभी वस्तुओं का ’उच्चतम और अन्तिम लक्ष्य’ है, जिसमें ’भव्यता और महिमा’ ने यह पुकार गुंजित की हैः “साम्राज्य मेरा है। मैं स्वयं, अपने आत्म-अधिकार से, इसका शासक हूँ।“

16. ’उसके’ आह्वान के द्वारा लोगों के हृदयों को आकर्षित कर, वह जो एकमात्र ’प्रियतम’ है। कहः यह ईश्वर की वाणी है, बशर्ते कि तू इस पर ध्यान दे पाता। यह ’ईश्वर के प्रकटीकरण का दिवास्रोत’ है, बशर्ते कि तू यह जान पाता। यह ’प्रभुधर्म का उदय-स्थल’ है, बशर्ते कि तू यह पहचान पाता। यह ईश्वर की आज्ञा का ’स्रोत’ है, बशर्ते कि तू निष्पक्ष रूप से न्याय कर पाता। यह प्रकट और निगूढ़ रहस्य है, बशर्ते कि तू इसे समझ पाता। हे दुनिया के लोगों! मेरे उस नाम पर जो अन्य सभी नामों से उत्कृष्ट है, अपनी सभी सम्पदाओं को न्योछावर कर दे और स्वयं को इस ’महासिंधु’ में निमग्न कर ले जिसकी गहराइयों में छिपे हैं विवेक और वाणी के मोती - वह महासिंधु जो मुझ सर्वदयालु के नाम से तरंगित है। इस तरह निर्देशित करता है तुझे वह जिसके पास ’मातृ-ग्रंथ’ है।

17. परम प्रियतम का आगमन हो चुका है। उसके दाहिने हाथ में है उसके नाम की विशुद्ध मदिरा। धन्य है वह जो उसकी ओर उन्मुख होता है और छककर उसका पान करता है और कह उठता है: “स्तुति हो तेरी, हे परमात्मा के चिह्नों के प्रकटकर्ता!” सर्वशक्तिमान की सच्चाई की सौगन्ध! सत्य की शक्ति से हर छिपी हुई वस्तु उजागर कर दी गई है। उसकी कृपा के संकेत-स्वरूप ईश्वर की समस्त कृपाएँ इस धरती पर भेज दी गई हैं। अनन्त जीवन की जलधाराएँ सम्पूर्ण रूप से मानव को अर्पित कर दी गई हैं। हर प्याले को उस ’परम प्रियतम’ ने अपने हाथ में थाम रखा है। निकट आ, पल भर का भी विलम्ब न कर।

18. धन्य हैं वे जिन्होंने अनासक्ति के डैनों पर उड़ान भरी है और वह उच्च स्थान प्राप्त किया है जो, ईश्वर द्वारा निर्धारित किए गए अनुसार, इस समस्त सृष्टि को आच्छादित करता है, जिन्हें न तो विद्वानों की व्यर्थ कल्पनाएँ और न ही धरती की असंख्य सेनाएँ ‘उसके’ धर्म से विचलित करने में सफल हो पाई हैं। हे लोगों! कौन है ऐसा तुम्हारे बीच जो इस संसार का मोह त्याग कर, सभी नामों के स्वामी ईश्वर के निकट आ सकता है? कहाँ मिल सकता है ऐसा व्यक्ति जो सभी सृजित वस्तुओं से श्रेष्ठ मेरे नाम की शक्ति के माध्यम से, उन चीजों का परित्याग कर देगा जो लोगों के पास हैं और जो पूरी शक्ति से, उन वस्तुओं से संसक्त होगा जिनके लिए दृश्य और अदृश्य वस्तुओं के ज्ञाता ईश्वर ने उसे आदेशित किया है? इस तरह उसकी उदारता लोगों के पास भेजी गई है, उसका प्रमाण सिद्ध हुआ है और उसका साक्ष्य करुणा के क्षितिज पर जगमगाया है। बहुमूल्य है वह पुरस्कार जो उसे प्राप्त होगा जिसने विश्वास किया है और कहा हैः “प्रशंसित है तू, हे सभी लोकों के प्रियतम! महिमा हो तेरे नाम की, हे तू जो हर बोध-सम्पन्न हृदय की ’अभिलाषा’ है!“

19. अतिशय आनन्द से भर उठो, हे बहा के लोगों! क्योंकि तुम चरम हर्ष के दिवस का स्मरण करने चले हो, वह ’दिवस’ जब ’युगाधिक प्राचीन की वाणी’ ने उच्चार किया था, जब वह अपने ’निवास’ से चल पड़ा था और उस ’स्थल’ की ओर अग्रसर हुआ था जहाँ से समस्त सृष्टि के ऊपर उसने अपने नाम, उस सर्वदयामय, की प्रभा बिखेरी थी। ईश्वर हमारा साक्षी है। यदि हमने उस दिवस के निगूढ़ रहस्यों को प्रकट किया होता तो धरती और स्वर्गों में निवास करने वाले सभी प्राणी मूर्छित हो गए होते और अपने प्राण त्याग देते, सिवाय उनके जिन्हें सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ ईश्वर ने संरक्षित किया होता।

20. वह जो परमात्मा के अकाट्य प्रमाणों का प्रकटकर्ता है, उस पर ईश्वर के शब्दों का मदमत्त कर देने वाला प्रभाव कुछ ऐसा ही है कि उसकी लेखनी अब आगे कुछ और अंकित नहीं कर सकती। इन शब्दों के साथ वह अपनी पाती को समाप्त करता हैः मुझ परम उदात्त, परम शक्तिमान, परमोत्कृष्ट, सर्वज्ञाता के सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है।

## 7

## वही है वो जो आसीन है इस ज्योतिर्मय सिंहासन पर

1. स्वर्गिक सहचरों के समक्ष घोषित कर दे, हे प्रभासित महिमा की लेखनी! कि, देखो, गुप्तता का आवरण छिन्न-भिन्न कर दिया गया है और इस अलौकिक महिमा के ’परिदृश्य’ से ’प्रभु का सौन्दर्य’ ऐसी कांति के साथ प्रकट कर दिया गया है कि उसके आदेश के नक्षत्र उसके सर्वशक्तिमान नाम के ऊपर जगमगा उठे हैं। अतः, सर्व स्वागत हो इस ’प्रभु के उत्सव’ का जो परम भव्यता के क्षितिज के ऊपर उदित हुआ है!

2. यह वह उत्सव है जब सभी वस्तुओं को परमात्मा के नामालंकरणों के परिधान से अलंकृत कर दिया गया है और जब उसके उदार कृपा ने एक-एक करके सभी वस्तुओं को आच्छादित कर दिया है। अतः, सर्व स्वागत हो इस ’प्रभु के उत्सव’ का जिसने ज्योतिर्मय पावनता के दिवास्रोत पर अपनी प्रभा बिखेरी है!

3. अतः अनन्तता की परियों का आह्वान करो कि वे अपनी स्वर्गिक भव्यता के साथ अपने अरुणाभ कक्षों से शीघ्रता से बाहर निकलें और परम महिमाशाली अलंकरणों से सुसज्जित होकर धरती और स्वर्ग के बीच प्रकट हों। उन्हें अनुमति दो कि वे दुनिया के निवासियों ‘‘चाहे वे उच्च हों या निम्न’’ को जीवन का वह प्याला प्रदान करें जिसे करुणा के स्वर्गिक स्रोत से भरा गया है। अतः, सर्वस्वागत हो इस ’प्रभु के उत्सव’ का जो विलक्षण हर्षोन्माद के साथ पावनता के क्षितिज के ऊपर प्रकट हुआ है!

4. अतः स्वर्गिक युवाओं को, जिन्हें ’सर्वप्रशंसित’ की आभाओं से सृजित किया गया है, यह कहो कि वे ’सर्वदयालु’ के वस्त्र से सुसज्जित होकर अपने स्वर्गिक आवास से बाहर आएँ और माणिक जैसी अपनी अँगुलियों से बहा के सहचरों के बीच उच्चतम स्वर्ग के सखाओं को अमरता का प्याला प्रदान करें ताकि वे ’भव्यता के प्रभु की आभा’ - इस प्रकाशित और प्रभासित ’सौन्दर्य’ - की ओर आकर्षित हो सकें। अतः, सर्वस्वागत हो इस ’प्रभु के उत्सव’ का जो उदात्त महिमा के दिवास्रोत के ऊपर प्रकट हुआ है!

5. ईश्वर की सौगन्ध! यह वह उत्सव है जबकि ’अज्ञेय सारतत्व’ का सौन्दर्य उजागर हुआ है और उसे ऐसी सम्प्रभुता से सम्पन्न किया गया है कि वह उसके सत्य का खण्डन करने वालों को झुका सके। अतः, सर्वस्वागत हो इस ’प्रभु के उत्सव’ का जो सर्वोत्कृष्ट साम्राज्य के साथ प्रकट हुआ है!

6. यह वह उत्सव है जबकि नामों के पर्दे के पीछे से, उसके प्रकट होने के कारण जो ’पुरातन सम्राट’ है, सभी वस्तुओं को उनके पापों से मुक्त कर दिया है। अतः, अपने हृदय से प्रसन्न हो, हे दुनिया के लोगों! क्योंकि इस सम्पूर्ण सृष्टि के ऊपर क्षमाशीलता के समीर प्रवाहित कर दिए गए हैं और इस विश्व में जीवन की चेतना की सांस फूँक दी गई है। अतः, सर्व स्वागत हो इस ’प्रभु के उत्सव’ का जिसने ज्योतिर्मय पवित्रता के दिवास्रोत के ऊपर अपनी झलक दिखाई है!

7. सावधान रह कि कहीं तू सौजन्यता की सीमाएँ न लाँघ ले और वह अपराध न कर बैठ जिससे तेरा मनो-मस्तिष्क घृणा करता है। यही है वह जिसका आदेश तुझे उस सर्वशक्तिमान, परम बलशाली ’परमेश्वर की लेखनी’ द्वारा दिया गया है। अतः, सर्वस्वागत हो इस ’प्रभु के उत्सव’ का जो प्रकट हुआ है विलक्षण कृपा के क्षितिज के ऊपर!

8. यह वह उत्सव है जब ’भव्यता के प्रभु का सौन्दर्य’ सभी वस्तुओं से अधिक उदात्त बनाया गया है और जब उस प्रकट और अगुप्त ने उन सबके समक्ष, जो स्वर्ग में और धरती पर हैं, अपनी इच्छा और अपने उद्देश्य की घोषणा की है। और यह और कुछ नहीं बल्कि उसकी उस करुणा का एक संकेत मात्र है जिसने सम्पूर्ण सृष्टि को परिव्याप्त कर रखा है। इसमें ’बहा का मन्दिर’ अनन्तता के सिंहासन पर स्थापित किया गया था और उसकी मुखमुद्रा की आभाएँ विलक्षण महिमा की प्रभा के साथ सृष्टि के क्षितिज के ऊपर उदित हुईं। अतः, सर्वस्वागत हो इस ’प्रभु के उत्सव’ का जो अद्भुत कृपा के क्षितिज के ऊपर अवतरित हुआ है!

9. हे भव्यता के वितान तले निवास करने वालों! हे अनुल्लंघनीय पावनता के शिविर में रहने वालों! हे तुम सब जो उच्चता और महिमा के मण्डप तले शरणागत हो! अपनी आवाज मुखरित करो और अपने परम उदात्त प्रकोष्ठों में अत्यंत मधुर स्वरों में गान करो, क्योंकि इस ’प्रकटीकरण’ में आवृत्त ’सौन्दर्य’ को प्रकट किया गया है और ’अगोचर का दिवानक्षत्र’ पुरातन महिमा के क्षितिज पर जगमगाया है। अतः, सर्वस्वागत हो इस ’प्रभु के उत्सव’ का जो भव्य अलंकरणों के साथ प्रकट हुआ है!

10. हे उच्च लोक के सहचरों के सखाओं और हे अमर्त्‍य नगरी के निवासियों! अपनी श्रद्धा अर्पित करने की शीघ्रता करो, क्योंकि इस ’शिविर’ के अन्दर भव्यता की ’समाधि’ का अवतरण हुआ है - वह ’समाधि’ जिसके चारों ओर अतीत की सभी समाधियाँ घूमती हैं, और उसकी परिक्रमा करती हैं और इन दिवसों में, जिसके समान पिछली पीढ़ियों के नेत्रों ने कभी नहीं देखा, सभी लोगो के ’प्रभु’ के निकट आती हैं। अतः, सर्वस्वागत हो इस ’प्रभु के उत्सव’ का जिसका अरुणोदय हुआ है उस सर्व करुणामय, सर्वकृपालु परमात्मा के क्षितिज के ऊपर!

11. हे तू स्वर्ग और धरती के निवासियों! इस परम उच्च और उदात्त स्वर्ग में बहा के हाथों से प्रदत्त अनन्त जीवन के उस प्याले से छक कर पी लो। परमात्मा की सौगन्ध! जो कोई उसकी एक बूंद भी ग्रहण कर लेगा उसे न तो समय के उतार-चढ़ाव ही प्रभावित कर सकेंगे और न ही वह ’शैतान’ के छल-प्रपंच का शिकार हो सकेगा, बल्कि हर ’धर्मयुग’ में प्रभु उसे पवित्र एवं अद्भुत सौन्दर्य से विभूषित करके भेजेंगे। अतः, सर्वस्वागत हो इस ’प्रभु के उत्सव’ का जिसे सर्वप्रज्ञा के स्वामी के आसन से प्रकट किया गया है!

12. हे लोगों! अपनी आत्माओं को इस संसार से मुक्त, पावन कर ले और इस सुदूरतम अभयारण्य में ’दिव्य कल्पवृक्ष’ की ओर शीघ्रता से बढ़ो, ताकि तुम अपने सर्व-करुणामय प्रभु की वाणी पर ध्यान दे सको जो इस ’स्वर्ग’ से पुकार रही है जिसे सर्वप्रशंसित ईश्वर की आज्ञा से रचा गया है और जिसके प्रवेश-द्वारों के सम्मुख पवित्रता के शिविर के अंतःवासी आराधना में नतमस्तक होते हैं। अतः, सर्वस्वागत हो इस ’प्रभु के उत्सव’ का जो प्रताप और भव्यता के क्षितिज के ऊपर आलोकित हुआ है!

13. सावधान रहो, हे लोगों, ताकि तुम कहीं उन दिनों की बयारों से स्वयं को वंचित न कर लो जिन दिनों में इस महिमाशाली और दीप्त ’युवा’ के सान्निध्य से दिव्य ’परिधान’ की सुरभि प्रति क्षण प्रवाहित की जा रही है। अतः, सर्वस्वागत हो इस ’प्रभु के उत्सव’ का जो उस ’परम महान’ के नाम के दिवास्रोत से जगमगाया है!

## 8

## वह है परम पावन, परम महिमाशाली

1. गुणगान हो तेरा, हे मेरे ईश्वर, कि रिजवान के उत्सव का अरुणोदय हो चुका है और उस उत्सव में जिस किसी ने तेरा सान्निध्य चाहा है उसे अपना लक्ष्य प्राप्त हुआ है, हे हमारे स्वामी, परम करुणावान! कितने अनगिनत हैं तेरे प्रेमीजन, हे मेरे परमेश्वर! जिन्होंने तेरे सौन्दर्य को निहारने की ललक में सीरिया की मरुभूमि से होकर यात्रा की किन्तु जिन्हें तेरे उन शत्रुओं के दुष्कर्मों के कारण, जिन्होंने तुझमें अविश्वास किया है और तेरी सम्प्रभुता का विरोध किया है, तेरी अलौकिक एकता के दरबार में आने से रोक दिया गया।

2. हे ईश्वर! अपने लोगों पर अत्याचार करने वालों पर तू अपने प्रतिशोध भरे क्रोध वाली दृष्टि डाल। तेरी सामर्थ्‍य की सौगन्ध! उनका अन्याय ऐसे चरम पर पहुंच गया है जिसका अनुमान तेरे सिवा अन्य कोई नहीं लगा सकता जो सब कुछ जानता है। तेरे प्रियजनों ने इस कारागार में कैदी और बंदी बनना स्वीकार किया किन्तु उनके शत्रु फिर भी संतुष्ट नहीं हुए - इतनी प्रबल थी उनकी घृणा तेरे धर्म के प्रकटावतार के प्रति। आशीर्वादित हो वह अंतर्दृष्टि-सम्पन्न व्यक्ति जो तेरे पथ पर सही गई उन सभी यातनाओं में इसके सिवा और कुछ नहीं देखता कि इससे उसका रुतबा ऊँचा होगा और तेरे धर्म का महिमा-मण्डन होगा, हे सभी लोकों के प्रभु!

3. तेरी महिमा की सौगन्ध! बहा के लोगों में से किसी एक को भी हानि पहुँचाने के लिए यदि धरती के सभी लोग एकजुट हो गए होते तो भी वे स्वयं को असमर्थ पाते, क्योंकि जो कुछ भी वे तेरे चुने हुए लोगों को हानि पहुँचाने के रूप में देख रहे हैं वह उनके लिए प्रकाश के समान और तेरे शत्रुओं के लिए अग्नि के समान है। यदि वह जो ’तेरी सर्वातीत सम्प्रभुता का व्याख्याता’ है, ’महानतम कारागार’ में बंदी नहीं होता तो तेरे धर्म का प्रसार भला कैसे हो पाता, तेरी सम्प्रभुता कैसे प्रकट होती, तेरी सामर्थ्‍य की घोषणा कैसे होती और तेरे संकेतों की सत्यता कैसे स्थापित हो पाती? काश कि मैंने स्वयं, तेरे और तेरे रचित जीवों के प्रेम के कारण, दुनिया की सभी यंत्रणाओं को झेला होता!

4. हे प्रभो! अपने सेवकों के नेत्रों को खोल ताकि वे हर क्षण तुझे तेरी भव्यता के सिंहासन पर विराजमान और सदा उन सबसे सर्वोच्च निहार सकें जो स्वर्ग में और धरती पर हैं। तू जो भी चाहे वह करने में सक्षम है। तुझ सर्वशक्तिमान, परम बलशाली के सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है।

## 9

1. उस प्रथम दिन जब ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ रिज़वान नामक उद्यान में अपने ’महानतम सिंहासन’ पर विराजमान हुए, ’महिमा की वाणी’ ने तीन आशीर्वादित शब्द उचारे। पहला यह कि इस धर्म-प्रकटीकरण में तलवार का कानून निरस्त कर दिया गया है।3 दूसरा यह कि पूरे एक हजार वर्ष की परिसमाप्ति से पूर्व जो कोई भी अवतार होने का दावा करेगा वह झूठा होगा। “वर्ष’ से तात्पर्य एक पूरा साल है और इस सम्बंध में किसी भी व्याख्या या अर्थ-निरूपण की अनुमति नहीं है। और तीसरा यह कि उस खास घड़ी में ईश्वर ने, धन्य हो उसकी महिमा, समस्त सृष्टि पर अपने सभी नामों की पूर्ण आभा बिखेर दी।

2. उसके बाद निम्नांकित श्लोक प्रकट किया गया किन्तु उस प्रभु का आशय यह था कि इसे अन्य तीनों के समान ही दर्जा दिया जाए: कि जब किसी के भी नाम का, चाहे वह जीवित हो या मृत, उसकी उपस्थिति में उल्लेख किया जाएगा तो उस आत्मा ने वस्तुतः पूर्व-अस्तित्ववान ’सम्राट’ के उल्लेख को प्राप्त कर लिया है। धन्य हैं वे जो उसे प्राप्त करते हैं!

## 10

1. वह जो सभी नामों और विभूषणों का अधिपति है, उसकी वाणी के क्षितिज पर उदित शब्दों का दिवानक्षत्र इस परम आशीर्वादित घड़ी में परमात्मा के प्रकाश की आभाएँ लेकर सम्पूर्ण सत्य के साथ जगमगा उठा है। उस ’सर्व-महिमाशाली’ की लेखनी से प्रवाहित बोध की चेतना, उसकी कृपा से, सभी रचित वस्तुओं को प्रदत्त कर दी गई है। सर्वशक्तिमान, अप्रतिबाधित परमात्मा के आदेशानुसार, गुप्तता के आवरण के पीछे से उदित सभी रहस्यों का रहस्य, वस्तुतः, सदाचारियों के समक्ष प्रकट कर दिया गया है।

2. परम बलशाली, परम उदात्त, महानतम परमात्मा अपने मुख से निस्सृत ’आदि शब्द’ के माध्यम से सृजित पवित्र ’प्राणियों’ और उनसे भी आगे उच्च लोक के सहचरों और फिर उनसे भी आगे उन सबको सम्बोधित करता है जिन्हें उसने उन सभी लोगों की बोधगम्यता से परे, पावन, बनाया है जो धरती पर और स्वर्ग में हैं और जिन्हें उसने अपनी निगूढ़ और अपरीक्षेय ’इच्छा’ से सृजित किया है, यह कहते हुएः “अपनी आत्माओं में आनन्द-मग्न हो जाओ क्योंकि परम शुभ क्षण आ पहुँचा है और वह ’घड़ी’ आ गई है जिसके इर्द-गिर्द वे सभी घड़ियाँ परिभ्रमण करती हैं जिनकी पूर्वघोषणा सर्वशक्तिमान, सर्वमहिमाशाली, परम करुणावान परमात्मा की ’पातियों’ में की गई है। और इस संचित ’नाम’ में दिव्यता के दिवास्रोत से निगूढ़ ’प्रभात’ फूट चुका है और उसने उन सभी वस्तुओं पर अपनी प्रभा बिखेर दी है जो अस्तित्व में आ चुकी हैं और जो अस्तित्व में आएंगी।“ धन्य हो सर्व-उदारता का वह प्रभु, इस अलौकिक कृपा का स्रोत!

3. ईश्वर का प्रतिज्ञापित ’दिवस’ आ चुका है! वह जो कि उस ’आराध्य का प्रकटावतार’ है उसे अपने नाम के ’सर्वप्रिय’ सिंहासन पर स्थापित कर दिया गया है और उसकी कृपा के सूर्य ने दृश्य और द्रष्टा दोनों पर ही समान रूप से अपनी किरणें बिखेर दी हैं। अतः, हे सीमाओं के लोक के निवासी! वह सब कुछ त्याग दे जो तेरे पास है, अपनी कनपटियों को ’उसके’ भव्य आवरण से सुसज्जित कर और सुस्पष्ट दृष्टि से उसे देख जो अपने लोकोत्तर, सर्वशक्तिमान और सर्ववशकारी साम्राज्य में महिमा के सिंहासन पर बैठा हुआ ’ईश्वर का ज्योतिर्मय सौन्दर्य’ है। सर्वस्तुति हो उस परम प्रियतम की जिसने ऐसे स्पष्ट प्राधिकार के साथ अपने निगूढ़ सौन्दर्य को प्रकट किया है!

4. इस भव्यतम दिवस में सभी दिवसों ने और इस उत्तम घड़ी में सभी घड़ियों ने अपनी परिपूर्णता प्राप्त की है और ’अगोचर’ ने धरती और स्वर्ग के सभी अंतरंग निवासियों पर हर कृपा उड़ेल देने की कामना की है और उन सबके समक्ष जो प्रकटीकरण और सृष्टि के साम्राज्यों में हैं, ईश्वर के धर्म-प्रकटीकरण और उसकी उच्चता और ईश्वर की सम्प्रभुता एवं उसकी भव्यता स्थापित करने की इच्छा की है ताकि उसके सेवकों पर उसकी कृपा की पूर्णाहुति हो सके और उसके रचित जीवों पर उसकी उदारता को पूरा किया जा सके। तथापि, जब एक बार वह प्रकट हुआ तो उन सबकी आँखें जो उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे चकाचौंध से भर गईं, सिवाय उनकी जिनकी रक्षा उस प्रभु की सामर्थ्‍य ने की थी और जिनकी दृष्टि के आगे से उसने सारे सांसारिक आवरण हटा डाले थे। अतः, धन्य हो वह जिसे इस अद्भुत, इस प्रकाशित वस्त्राभरण में सत्य की शक्ति के माध्यम से प्रकट किया गया है!

5. और जब इस प्रतिज्ञापित ’दिवस’ में ‘उसके प्रकटीकरण’ की निर्धारित घड़ी आ पहुँची तो नियति के आवरण छिन्न-भिन्न कर दिए गए और बगदाद शहर से अनन्तता के स्वर्ग के ’नक्षत्र’ के प्रस्थान के साथ ही दिव्य निर्णय को पूरा कर दिया गया। इसके घटित होने के पीछे थे वे कारनामे जिन्हें इस ’प्रकाश’ के प्रति घृणा से भरे लोगों के हाथों अंजाम दिया गया था - वह ’प्रकाश’ जिसकी पावन और विलक्षण आभा अन्य सभी से बढ़-चढ़कर थी। अतः, धन्य हो ‘वह’ जिसने अपने महानतम, अपने परम शक्तिमान साम्राज्य से इन दो धर्म-प्रकटीकरणों को धरती पर भेजा है!

6. इस धर्म-प्रकटीकरण के अवतरण के साथ ही सभी सृजित वस्तुओं के यथार्थ आनन्द से भर गए और उत्कण्ठा एवं प्रफुल्लता के हाथों से सबने हर्षोन्माद के प्याले को थाम लिया और उस प्याले से इस ’सौन्दर्य’ के प्रति अपने प्रेम के कारण विशुद्ध मदिरा का पान किया - ऐसा ’सौन्दर्य’ जो सत्य की शक्ति से प्रकट हुआ है और उस सार्वभौम, न्यायनिष्ठ, सर्वप्रज्ञ परमात्मा के अलंकरणों से सुसज्जित है! अतः धन्य हो ‘वह जिसने’ इस ‘प्रकटीकरण’ के द्वारा, प्रभु के भाग्यशाली-कृपापात्रों के हृदयों को आकर्षित किया है।

7. कह: यह वह ’दिवस’ है जिसका समकक्ष ’सर्वोच्च की लेखनी’ ने किसी भी अन्य दिवस को नहीं बनाया है और जिसके समान उच्च लोक के निवासियों और अवतारों एवं ईश्वर के संदेशवाहकों ने कभी नहीं देखा है। अतः, धन्य हो ‘वह जिसने’ इस पवित्र और पावन, इस सामर्थ्‍यमय और विलक्षण ’दिवस’ को प्रकट किया है!

8. यह वह दिवस है जिसमें ’सिंहासन’ के स्तम्भ लालायित होकर कांप उठे कि ईश्वर स्वयं को उन पर स्थापित करे, वह ‘दिवस’ जिसमें परम उच्च ’आसन’ की आधारशिलाएँ थर्राकर हिल उठीं। अतः, धन्य हो ईश्वर, इस आनन्दातिरेक का स्रोत, जिसने समस्त सृष्टि को अभिभूत कर रखा है!

9. यह वह दिवस है जिसमें ’सौन्दर्य का सूर्य’ परम उदात्त, परम महान परमात्मा की मुख-भंगिमा के क्षितिज पर उदित हुआ है और उदारता के मेघ बरस पड़े और स्वर्ग के वृक्षों ने ऐसे फल उत्पन्न किए जिन्हें ईश्वर ने उन लोगों के हिस्से में दिया है जो इस धर्मयुग में प्रकाशित हृदयों से उसकी ओर उन्मुख होते हैं। अतः, धन्य हो परमेश्वर जिसने यह महती कृपा प्रदान की है!

10. यह वह दिवस है जिसमें चेतनाएँ इस कौतूहल से अपने शरीरों से बाहर निकल आईं कि वे ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ की अनावृत मुखमुद्रा निहार सकें। अतः, धन्य हो ’वह’ जिसने इस सामर्थ्‍यमय दिवस को प्रत्यक्ष किया है!

11. यह वह दिवस है जब ’महानतम चेतना’ ने अत्यंत सौम्य स्वरूप में देह-धारण किया और उच्च लोक से चलकर वे सर्वातीत महिमा के ’स्थल’ पर ऐसी कांति के साथ पहुँचे कि ’स्वर्ग की परी’ ऐसी आनन्द-विभोर हुई कि जब तक वह रुकी रही, वह ‘हमारी’ उपस्थिति के समक्ष ऐसे अलंकरण के साथ हवा में तैरती रही कि ’ईश्वर के संदेशवाहकों’ के हृदय लालसा से भर उठे। अतः, धन्य हो ईश्वर जिसने इस वरेण्य देवदूत को सिरजा है!

12. तदुपरांत स्वर्ग के अंतःनिवासी, और उनसे भी आगे वे जो पवित्रता की शरण-स्थली और मिलन के लोकों में रहते हैं और उनसे आगे जो स्वर्ग के निवासियों के बीच निवास करते हैं, और फिर उनसे भी आगे वे जो गुप्तता के शिविर में निवास करते हैं, वे सब एक-एक करके अपने उच्च प्रासादों से निकल पड़े और निस्तब्ध स्वरों में बात करते हुए एक-दूसरे को बताने लगे कि धरती पर क्या घटित हुआ है। यह मानो ऐसा था कि ’पुरातन सम्राट’ ने ‘स्वयं’ को ‘स्वयं’ के समक्ष और उसके बाद, अकाट्य प्रभुसत्ता के साथ, इस सृष्टि के लोक में ‘अपने’ सेवकों और अपने जीवों के समक्ष, प्रकट किया था। अतः, धन्य हो परमेश्वर जो अपनी सर्व-बाध्यकारी आज्ञा के बल पर जो चाहता है घटित करता है!

13. और तब ’महानतम चेतना’ ने एक आवाज लगाई जो सपूर्ण सृष्टि में प्रतिगुंजित हुई, यह कहते हुए कि: “चैन मिले तेरी आँखों को, हे धरती और स्वर्ग के निवासियों, हे दिव्य नामों और विभूषणों के प्रकटीकरणों और हे तू सब जो भव्यता के उन महासिन्धुओं में निमग्न हो जो संकेतों और उल्लेखों के लोकों से कहीं परे है! यह वह दिवस है जब साक्षात ईश्वर, परम उदात्त, परम महान, अपने ही पावन और भव्य ’स्व’ से, हर आत्मा को, चाहे वह उच्च हो या निम्न, निकटता और पुनर्मिलन की मदिरा प्रदान कर रहा है।“ अतः, धन्य हो ईश्वर जिसने इस महानतम दिवस में अपनी समस्त अगणित भव्यताओं के साथ स्वयं को प्रकट किया है!

14. यह वह दिवस है जबकि परम दारुण आवरण को छिन्न-भिन्न कर दिया गया और सर्वातीत शुद्धता का ’दृश्य’ प्रकट कर दिया गया, वह दिवस जिसमें ईश्वर का मुखमंडल पुनर्मिलन के हर्ष से मुस्कुरा उठा और उसके सौन्दर्य और उसकी गरिमा के मूर्तिमान स्वरूपों के लिए, और उनके लिए जिन्होंने सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ परमेश्वर से व्युत्पन्न शक्ति के माध्यम से गौरव के आवरणों को बेध डाला है, उसकी उपस्थिति के द्वार उन्मुक्त खोल दिए गए हैं; वह दिवस जब सभी दृश्य और अदृश्य वस्तुएँ पुकार उठी हैं: “पावन हो हमारा परमेश्वर, सभी रचयिताओं में सर्वोत्तम!”

15. तब इसपर ’महानतम चेतना’ को चुप रहने का आह्वान किया गया और अनन्तता के नगरों के निवासी, अरुणाभ कक्षों के अंतःवासी और नामों के साम्राज्य में निवास करने वाले परमात्मा के आनन्दातिरेक से विभोर हो गए। एक-एक कर वे सभी अपने आवासों से नीचे उतरे और, उसकी ’मुखमुद्रा’ के समक्ष अत्यंत विनम्रता और आज्ञाकारिता के साथ, धरती एवं स्वर्ग के बीच खड़े हो गए। अतः, धन्य हो परमात्मा जिसने इस अदम्य, इस सर्वमहिमाशाली और अलौकिक धर्म को प्रकट किया है!

16. और तब उनके स्वर इस महिमाशाली दिवस की स्तुति और महिमा-गान के लिए गुंजरित हुए - वह दिवस जिसकी प्रदीप्ति सूर्य से नहीं बल्कि उस सम्राट, उदात्त, सर्वदयालु परमात्मा की मुख-भंगिमा से प्राप्त है। अतः, धन्य हो ’वह’ जिसने सत्य की शक्ति से इसे प्रकटित किया है और जिसने इस दिवस में सम्पूर्ण मानवजाति की आत्माओं को नवजीवित किया है!

17. और तब अलौकिक महिमा की ’स्थली’ से एक अन्य अग्रदूत पुकार उठी: “ईश्वर की सौगन्ध! यही है वह दिवस जबकि विवाद के आवरण छिन्न-भिन्न कर दिए गए और एकता की बयारें प्रवाहित की गईं और इस प्रतिज्ञापित दिवस में, साक्षात सम्प्रभुता से विभूषित और भव्यता के बादलों पर सवार सृष्टि का प्रभु अवतरित हुआ।“ अतः, धन्य हो परमात्मा जो सत्य ही उत्तुंग पावनता के स्वर्ग से अवतरित हुआ है!

18. यह वह दिवस है जब आग और पानी को मिलाकर एक कर दिया गया और सभी रहस्यों के मुखड़े पर से पर्दे उठा दिए गए, क्योंकि ’अप्रतिबाधित का सौन्दर्य’ उसके ’स्वयं’ के वस्त्र से सुसज्जित होकर अवतरित हुआ, वह जो संकटों में सहायक, सर्वशक्तिमान, अतुलनीय है। सर्वमहिमा हो इस दिवस की जिसके अवतरण से ईश्वर के कृपा-पात्रों के नेत्र उत्फुल्ल हो उठे हैं!

19. जब ईश्वर से उत्पन्न उस हर्ष ने ’उसके’ अतिरिक्त सबको अभिभूत कर दिया तो ’महानतम चेतना’ ने एक बार फिर पुकार लगाई, यह घोषणा करते हुए: “हे धरती और स्वर्ग के साम्राज्यों के निवासियों! हे प्रकटीकरण और सृष्टि के लोकों में रहने वालों! धन्य हैं तुम्हारे कान क्योंकि उन्होंने निकटता और पुनर्मिलन के श्लोकों पर ध्यान दिया है। अब दूरी और वियोग के समाचार सुन क्योंकि उस सुदृढ़ संविदा के अनुसार जिसे सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ परमात्मा के ग्रंथों में निर्धारित किया गया है, विश्व के ’नक्षत्र’ ने इराक की भूमि से प्रस्थान करना तय किया है।“

20. स्वर्ग और धरती के निवासी इस घोषणा से खिन्न हो उठे। ऐसा था उनका रुदन और विलाप कि शोक-संतप्त होकर वे धरती पर गिर पड़े। कैसा अजीब था वह दारुण और दुःसह बिछोह! दृश्य और अदृश्य सभी वस्तुएँ यह पुकार सुनकर विचलित हो उठीं। ऐसी थी उनकी दशा कि ’भ’ अक्षर ’व’ अक्षर को भुला बैठा और प्रेमीजनों ने अपने ’परम प्रियतम’, सवशक्तिमान, सर्वप्रशंसित के मुखड़े को त्याग दिया। कितना दुःखद था वह स्पष्ट और अकाट्य निर्णय!

21. जब घटनाएँ इस मोड़ पर पहुँचीं तो ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ स्वयं स्पंदित हो उठा और सभी वस्तुओं में अन्दर और बाहर से हलचल मच गई। तब ’वह’ उठा और उसके उठने से धरती और स्वर्ग के बीच ’महानतम पुनर्जीवन’ घटित हुआ। इस पर ’चेतना’ ने ’उसकी’ उपस्थिति में एक बार फिर से पुकार लगाई: “हे इस्राफिल!4 ईश्वर की धर्म-परायणता की सौगन्ध! तुझे इसी दिन के लिए रचा गया था। अतः, इस धर्म-प्रकटीकरण के अवतरण की घोषणा करने के लिए अपनी तुरही बजा ताकि उससे हर जर्जर होती अस्थि स्पंदित हो सके!” आदेशानुसार, उस देवदूत ने अपनी तुरही बजाई जिससे वे सब जो स्वर्ग में और धरती पर रहते हैं, मूर्च्छित हो गए। उसने एक बार फिर अपनी तुरही बजाई, वे जाग उठे और, इस महिमाशाली दिव्यदर्शन की ओर एकटक निहारते हुए, पुकार उठे: “पावन हो परमेश्वर, सभी सिरजनहारों में सर्वश्रेष्ठ!”

22. ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ ने प्रस्थान किया, उनके आगे-आगे चला ’प्रकटीकरण का साम्राज्य’ और ’दिव्य प्रेरणा का स्वर्ग’ उनके पीछे हो लिया। ‘उनके’ दाहिने तरफ सवार था ’आज्ञा का लोक’ और ‘उनकी’ बाईं ओर कृपा-पात्र जनों की सेना ने प्रयाण किया। सर्वमहिमा हो इस स्पष्ट और विलक्षण धर्म की!

23. और जब वे ’घर’ के प्रांगण में पहुँचे तो पावनता के लोक के सहचर उनके चरणों पर साष्टांग दण्डवत हुए और ’घर’ की आधारशिलाएँ परम बलशाली, सर्वशक्तिमान, परम उदात्त ईश्वर से बिछोह में कांप उठीं। प्रत्येक नगर के निवासी बिलख उठे और वे लोग जो ईश्वर की परिक्रमा करते हैं उनके हृदय बुरी तरह प्रकम्पित हो उठे। कितना दारुण था वह बिछोह जिसने विश्व के स्तम्भों को चरमरा कर रख दिया!

24. पृथ्वी लोक के निवासियों के विलापों को सुनकर ’सर्व-प्रियतम का सौन्दर्य’ एक क्षण को रुका और उनके रुदन को सुनकर गरिमा का ’नयन’ फूट-फूट कर रो पड़ा। वस्तुतः, उसके प्रियजनों की आहों ने उसके हृदय को ऐसे दुःख से उद्वेलित कर दिया कि स्वर्गों और धरती का कोई भी निवासी उसका भार न सह सका।

25. ’वह’ तब तक चलता रहा जब तक वह गुप्तकारी आवरण तक नहीं पहुँच गया और वहाँ अपने चरणों के पास उसने एक बच्चे को देखा जो अपनी माँ के वक्ष से स्वयं को छुड़ा कर आया था। और वह शिशु उनके वस्त्र के आंचल से ऐसी भाव-प्रवणता से चिपक गया और उससे रुकने के लिए ऐसे करुण स्वरों में याचना की कि दुःख की धूल ने हर बोध-सम्पन्न आत्मा को ढंक लिया और वेदना की बयारें सम्पूर्ण सृष्टि पर प्रवाहित हो उठीं। कितना दुःसह था दुःख का वह बोझ जिसने निष्ठावानों के मुखमंडल को ढंक दिया! यदि ईश्वर का संरक्षण प्राप्त नहीं हुआ होता तो उसी क्षण सातों स्वर्ग फट जाते और धरती अपने सभी निवासियों को निगल गई होती और हर उच्च शिखर धूल में मिल गया होता।

26. तब फिर ’शक्ति की भुजा’ ने महिमा का पर्दा उठाया और इससे ’सर्वमहिमाशाली का सौन्दर्य’ सर्वोच्च सम्प्रभुता के साथ उदित हुआ। जब वह जो कि सर्वशक्तिमान, सर्वदयालु परमात्मा का ’स्व’ है द्वार से निकलने को उद्यत हुआ तो ’महानतम चेतना’ ने अपनी अन्तिम घोषणा की: “ईश्वर की सौगन्ध! आततायियों के हाथों ने जो कारनामे किए हैं उनके कारण लोकों का ’परम प्रियतम’ अपने ’घर’ से निकल पड़ा है।“

27. तब वह अपने ही भीतर ऐसा रुदन रो पड़ा कि धरती और स्वर्ग के निवासी और वे जो वायुलोक में उसके समक्ष लम्बित थे और वे जो भव्यता की ’मुखमुद्रा’ के चारों ओर परिक्रमा कर रहे थे, उसके साथ रो पड़े। और उसने यह कहते हुए उन्हें सम्बोधित किया: “तू यह जान कि हमारे प्राकट्य के खास दिन इस तरह प्रस्थान करने में उन लोगों के लिए प्रतीक और संकेत हैं जो समझते हैं। कदाचित, इस परम महान और विलक्षण दिवस में हमारे प्रयाण से धरती और स्वर्ग के लोग स्वार्थ और लालसा के पर्दों से बाहर आ सकें, वे परम उदात्त, सर्वमहिमाशाली ईश्वर की निकटता प्राप्त कर सकें और उन सभी वस्तुओं से अनासक्त हो सकें जिसे ईश्वर ने इस संसार में रचा या निर्धारित किया है। यह वह है जिसे ईश्वर ने अपनी उपस्थिति से एक कृपा के रूप में उनके लिए उद्दिष्ट किया है। वह, वस्तुतः, सर्वकृपालु है, सदा क्षमाशील, परम उदार।“ अतः, धन्य हो ईश्वर, इस परम प्रत्यक्ष, इस परम महान अनुदान, का स्रोत!

28. अपनी दृष्टि दिव्य निर्णय के दरबार पर जमाए हुए, अपने दृश्य और अदृश्य समूहों के साथ, ’अनन्तता का सम्राट’ आगे चला। उसके सम्मुख उसके प्रेमियों की आहें उठीं जबकि उसके पीछे उसके प्रति उत्कंठित जनों के विलाप सुने जा सकते थे। जब ‘वह’ नदी के तट पर पहुँचा तो उसने अपने प्रियजनों को अलविदा कहा और ऐसा लगा जैसेकि उन श्रद्धालु सेवकों की आत्माएँ ही उनके शरीर से निकल चुकी हों। लेकिन ‘उसने’ उन सबको धैर्य और दृढ़ता से काम लेने को कहा और उन्हें सर्वशक्तिमान, सामर्थ्‍यमय, अप्रतिबाधित ईश्वर के भय की याद दिलाई। और तब, उस नदी को पार करके, ‘उसने’ रिज़वान के बगीचे में प्रवेश किया जहाँ ‘वह’ अपनी विलक्षण सम्प्रभुता के सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। अतः, धन्य हो वह सर्वदयालु, सबको अपने दायरे में समेट लेने वाली इस कृपा का ‘स्रोत’!

29. अपने सिंहासन पर विराजमान होने के बाद, ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ ने सभी वस्तुओं पर अपने नाम ’स्वयंजीवी’ की आभा बिखेरी ताकि उसे पूरा किया जा सके जिसे परम उदात्त, परमोच्च, परमेश्वर की आज्ञा से ’सर्वोच्च लेखनी’ द्वारा अंकित किया गया था। तब उसने गोचर-अगोचर वस्तुओं पर अपने नाम, ’जो सबका स्वामी है’ और फिर अपने नाम, ’परम प्रकट’, का प्रकाश उन सभी वस्तुओं पर डाला; जिनका उल्लेख किया गया है और उन सब पर जो गुप्त हैं और अपने नाम, ’परम महान’ का प्रकाश अनन्तता के मूर्तिमंत स्वरूपों पर और अन्य सभी लोगों पर और फिर अपने नाम, ’सर्वज्ञ’, का प्रकाश ईश्वर के नामों के व्याख्याताओं पर विकीर्ण किया। धन्य है वह जो उसकी ओर उन्मुख हुआ है जिसे ‘उसने उसकी’ अचूक कृपा से इस परम भव्य दिवस को प्रकट किया गया है। उस महिमा के आसन पर ‘उसका’ विराजमान होना कितना महिमाशाली था, जिसके माध्यम से उनके हृदय आश्वस्त हुए जो ‘उसकी’ निकटता के करीब होने से आह्लादित हैं और उनकी आत्माएँ जिन्होंने ‘उसका’ अभिज्ञान किया है ‘उसकी’ समीपता को प्राप्त हुईं और उनके मुखड़े ज्योतित हुए जो ‘उसकी’ ओर उन्मुख हुए और उनकी चेतनाएँ पावन हुईं जिन्होंने ‘उस’ पर अपनी दृष्टि केन्द्रित की और उच्च लोक के समूहों के नेत्र पुलकित हुए और दृश्य एवं अदृश्य सभी वस्तुओं की वाणियाँ उस सार्वभौम प्रभु, शक्तिमान, भव्य परमेश्वर की स्तुति के लिए मुक्त हुईं! वस्तुतः, कितनी मधुर थी वह स्वर्गिक सुरभि जिसके माध्यम से निगूढ़ अर्थों की कस्तूरी सभी लोकों में फैला दी गई!

30. ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ द्वारा अपने सिंहासन पर विराजमान होने की घटना उस खास क्षण घटित हुई जब लोग परमेश्वर, उस सर्वशक्तिमान, उस सौन्दर्यमय, को दोपहर की प्रार्थना अर्पित करने उठे थे। इसमें भी उन लोगों के लिए चिह्न हैं जिन्हें सुनिश्चित बोध है, उनके लिए प्रमाण हैं जो समझते हैं और उनके लिए संकेत हैं जो अंतर्दृष्टि से सम्पन्न हैं। ’सर्वदयालु का सौन्दर्य’ रिज़वान के उद्यान में बारह दिनों तक रुका जिसके दौरान उच्च लोक के सहचरों का समूह, ईश्वर के कृपा प्राप्त देवदूत और उसके संदेशवाहकों की आत्माएँ, ईश्वर जनों को ’शैतान’ से बचाते और रक्षा करते हुए, रात-दिन भव्यता के ’मंडप-वितान’ और अनुल्लंघनीय पवित्रता के ’शिविर’ की परिक्रमा करते रहे। अतः, धन्य हो परमात्मा जिसने इस अतुलनीय, इस भव्य पद को प्रकट किया!

31. उन दिनों के प्रत्येक क्षण में, ’स्वर्ग’ के कक्षों के अंतःवासी उच्च लोक से उतरते रहे और उनके हाथों में थे वे पात्र जो प्रकटीकरण के जल से लबालब भरे थे और वे प्याले जो पवित्रता की विशुद्ध मदिरा से लबरेज थे, जिन्हें उन्होंने महिमा के शिविर के निवासियों और ज्योतिर्मय गरिमा के मंडप-वितान के अंतःवासियों को प्रदान किया। अतः, धन्य हो ईश्वर, इस परमोच्च एवं सबको अपने दायरे में समेट लेने वाली कृपा के लिए!

32. और जब रुकने की निर्धारित अवधि पूरी हुई और प्रस्थान करने का आदेश प्राप्त हुआ तो ’सर्वदयालु का सौन्दर्य’ उठा और एक उत्तम घोड़े पर सवार होकर रिज़वान के उद्यान से चल पड़ा। अतः, धन्य हो वह ’सर्वमहिमाशाली’ जो ऐसी सम्प्रभुता के साथ इस सृष्टि के साम्राज्य में प्रकट हुआ जो स्वर्गों और इस धरती से परे, अत्यंत उच्च है!

33. जब ‘उसने’ प्रस्थान किया तो उस उद्यान से, उसके वृक्षों और पत्तियों और फलों और दीवालों और हवा और भूमि और शिविर सबसे एक शोकपूर्ण विलाप उठा, जबकि मरुभूमियों और बियावानों के निवासी और यहाँ तक कि बालू के ढेर और धरती की धूल भी ‘उसके’ आगमन से सब के सब हर्षित हो उठे।

34. इस तरह, ’सर्वमहिमाशाली के सौन्दर्य’ ने स्वयं को अनन्तता के उच्च शिखरों पर स्थापित किया क्योंकि उसकी दृष्टि उस आदेश पर जमी हुई थी जिसे परम उदात्त, परम महिमाशाली, ’ईश्वर की अंगुली’ ने आशीर्वादित एवं हिमधवल ‘पाती’ पर अंकित किया था। और इस तरह सुनाते हैं हम तुझे हमारे ’प्रकटीकरण’ की गाथा और हमारे देशनिकाले की परिस्थितियाँ जिसके पीछे ऐसी विद्रोही आत्माओं का हाथ था जिन्होंने सर्वबलशाली, सर्वशक्तिमान, परम उदार परमात्मा में अविश्वास किया था और उसके भागीदार बन बैठे थे।

## 11

## वह है प्रकट, निगूढ़, सर्वमहिमाशाली, सर्वज्ञ, सदा-सहिष्णु

1. हे ईश्वर, मेरे परमेश्वर! जब कभी मैं तेरी सर्वातीत एकता की विलक्षण अभिव्यक्तियों के स्तुति-गान के लिए अपनी वाणी को मुक्त करने या तेरे उस अनुपम हस्तशिल्प के रहस्यमय रत्नों को प्रकट करने के लिये अपने होंठ खोलने की चेष्टा करता हूँ जिससे तूने मुझे उत्प्रेरित किया है तो मैं यह मानने को बाध्य हो जाता हूँ कि सभी वस्तुएँ तेरे ही गुणगान गाती हैं और तेरे ही स्मरण को महिमावंत करती हैं-वह स्मरण जिसने स्वर्गों और धरती को इस तरह परिव्याप्त कर दिया है कि सभी वस्तुएँ, अपने अस्तित्व के अंतर्तम में, तेरी उदात्त स्तुति के विलक्षण प्रमाणों की घोषणा करती हैं और तेरी सर्वातीत एकता के अद्भुत संकेतों का साक्ष्य देती हैं। अतः, तेरे स्मरण की उत्तुंग ऊँचाइयों तक पहुँच पाने में मैं लज्जित हूँ, जैसेकि वे सभी लज्जित हैं जो तेरा उल्लेख करते हैं, और तेरी स्तुति के उच्च शिखरों तक पहुँच सकने में मैं शक्तिहीन हूँ, जैसेकि वे सभी शक्तिहीन हैं जो तेरा गुणगान करते हैं।

2. महिमाशाली, अत्यंत महिमाशाली है तू! तेरी रचनाओं पर तेरी कृपा के चमत्कार इतने महान हैं कि तूने सभी वस्तुओं वस्तु को तेरे सेवकों के बीच जो सजग हैं उनके लिए एक संकेत के रूप में सृजित किया है और तेरे लोगों के बीच जो असावधान हैं उनके लिए एक चेतावनी के रूप में। तेरी महिमा मेरी साक्षी है! वे जो सच्चे बोध से सम्पन्न हैं उन्हें इस समस्त सृष्टि में तेरे अनुपम हस्तशिल्प के अद्भुत प्रतीकों के सिवा और किसी भी चीज का बोध नहीं होगा और न ही इस अस्तित्व के संसार में वे तेरी सर्व-गौरवशाली प्रभुसत्ता के छिपे हुए रत्नों के सिवा और कुछ भी देख सकते हैं।

3. हे मेरे परम प्रियतम! मैं तेरी महिमा की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, जब कभी मैं अपने नेत्रों को स्वर्गों की ओर उठाता हूँ और उनकी ऊँचाइयों को निहारता हूँ तो उनमें मैं तेरी परमोच्च सामर्थ्‍य और तेरी सार्वभौम सत्ता की विस्मयकारी उच्चता के सिवा अन्य कुछ भी नहीं पहचान पाता। और जब कभी मैं तेरी धरती की ओर दृष्टिपात करता हूँ और इसे प्रदत्त क्षमताओं पर गौर करता हूँ तो तेरी निर्विवाद प्रकृति और तेरी शाश्वत भक्ति के अनुपम चिह्नों के सिवा मुझे और कुछ भी समझ में नहीं आता। और हे मेरे ईश्वर! जब कभी मैं समुद्र और उसकी लहरों को देखता हूँ तो मुझे लगता है मैं तेरी शक्ति और सम्पदा के लहराते हुए महासिंधु की गर्जना सुन रहा हूँ। सूर्य में मुझे और कुछ नहीं बल्कि तेरी पावन मुख-भंगिमा और तेरी उपस्थिति के प्रकाश की अद्भुत आभा ज्ञात होती है और हवा में मुझे तेरी निकटता और पुनर्मिलन की सरसराती हुई बयारों के सिवा और कुछ भी बोध नहीं होता। वृक्षों में मुझे केवल तेरे ज्ञान और विवेक के फलों का प्रकटीकरण दिखाई पड़ता है, और उनकी पत्तियों में मैं बस उन ग्रंथों के पन्नों को पढ़ता हूँ जिनमें उन सबके रहस्य निहित हैं जो तेरी आज्ञा से उत्पन्न हुए हैं या तेरी शक्ति से अस्तित्व में आएंगे।

4. अतः, महिमा हो तेरी, हे मेरे परमेश्वर! तेरी सृष्टि के लघुतम संकेत का अनुमान लगाने में भी मैं असमर्थ हूँ, जैसेकि वे सब असमर्थ हैं जिन्हें लगभग तेरे निकट होने का आनन्द प्राप्त है, क्योंकि तूने सभी वस्तुओं को अपने हस्तशिल्प के प्रत्यक्ष स्वरूपों और तेरी सार्वभौम सत्ता के प्रकटीकरणों को झलकाने वाला बनाया है। मुझे और सभी सृजित वस्तुओं को परिसीमित करने वाली अशक्तता और दरिद्रता के ऐसे बन्धनों के होते हुए कोई भी आत्मा तेरे ज्ञान के अभयारण्य के द्वारों तक पहुँच पाने की आशा अथवा तेरी सर्वातीत महिमा की नगरी तक जा सकने की जरा भी अपेक्षा भला कैसे कर सकती है? महिमाशाली, अपरिमित रूप से महिमाशाली है तू! अनन्तकाल से तू अपनी रचित वस्तुओं की बोधगम्यता से परे पावन रहा है, क्योंकि यह बोध और कुछ नहीं बल्कि ऐसी कपोल-कल्पनाओं की उपज है जो उन रचित वस्तुओं के अपने आप तक ही सीमित हैं, जबकि तू, तेरे अपने ही ’स्व’ के यथार्थ में, उन सबसे और उनके पास जो कुछ भी है उन सबसे उदात्त रहा है, और उन सबकी समझ से परे जो स्वर्ग में और धरती पर हैं। तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, सर्वशक्तिमान, अतुलनीय!

5. हे मेरे ईश्वर! अपनी आत्मा, अपनी जिह्वा, अपने सार-तत्व और अपने अंतः एवं बाह्य अस्तित्व से अपने उन सभी उल्लंघनों को स्वीकार करने के बाद जिनके समान नाशवान नेत्रों ने कभी पहले नहीं देखा और न ही मानव के मस्तिष्क कभी सोच ही पाए हैं, मैं तुझसे याचना करता हूँ कि तेरे विधानों और आदेशों में से जो कुछ भी हम पालन करने से चूक गए, उनके लिए मुझे और तेरे प्रियजनों को क्षमा कर दे। अतः, हे मेरे परमेश्वर! इस ’दिवस’ में जिसमें तूने, अपने नामालंकरणों और विभूषणों की पूर्ण महिमा से सम्पन्न, अपनी कृपा और उदारता का सिंहासन ग्रहण किया है, हमें क्षमाशीलता के वस्त्र से अलंकृत कर; यह वह ’दिवस’ है जिसमें तेरे सौन्दर्य का सूर्य तेरी भव्यता के क्षितिज पर उदित हुआ है; और तेरी कृपा के कोषालय से तेरी महिमाशाली प्रभुसत्ता के संकेत सुनिश्चित किए गए हैं। यह वह ’दिवस’ है जब उन सबके ऊपर जो तेरे स्वर्ग में और तेरी धरती पर हैं पुनर्मिलन की मोहक सुरभियाँ प्रवाहित की गई हैं और तेरी सुरक्षा और शक्ति के भण्डार से निगूढ़ ’शब्द’ जगमगाया है।

6. मैं साक्षी देता हूँ, हे मेरे ईश्वर! कि तूने इस ’दिवस’ को अपने लोक के समस्त दिवसों में अनूठा निर्धारित किया है और अपनी सृजनात्मक शक्ति से तूने जो कुछ भी सिरजा है उन सबके बीच इसे अनुपम नियत किया है। यह वह आदि ’दिवस’ है जिसे तूने अन्य सभी दिनों से विशिष्टता प्रदान की है और अन्य सभी कालों से महानतर बनाया है, और लोगों के लिए उसे ’सभी दिवसों का सम्राट’ नियुक्त किया है, क्योंकि इस ’दिवस’ में तूने अपनी सर्वातीत शक्ति के संकेतों एवं अपनी पावन एकता के प्रमाणों को प्रकट किया। इसकी प्रखरता को तूने सूर्य, चन्द्र और सभी तारों की प्रभा से भी बढ़कर बनाया है और इतना प्रखर कि वह हर उच्च और गौरवशाली, हर प्रकाशित और प्रदीप्त प्रकाश से भी श्रेष्ठ है। नहीं, बल्कि, हे मेरे परम प्रियतम! तूने इस ’दिवस’ को स्वयं अपने ही अगम्य ’अस्तित्व’ की प्रकाश-किरणों और स्वयं अपने ही उदात्त ’सार-तत्व’ की पूर्ण महिमा से ज्योतित किया है।

7. अतः, महिमावंत हो यह ’दिवस’ जिसमें तूने सभी वस्तुओं पर अपनी भव्य एकता की देदीप्यमान प्रकाश-किरणों को प्रकट किया है और समस्त सृष्टि पर अपनी प्रभुत्व-सम्पन्न और सर्वातीत एकमेवता की कांति बिखेरी है, वह दिवस जिसमें तूने अपने सौन्दर्य की मुखमुद्रा पर से छिपाव का आवरण हटाया है, अपनी भव्य कृपा के माध्यम से लोगों की आँखों को अंधा बना देने वाली निरर्थक कल्पनाओं के पर्दों को भस्म कर दिया है - और सबको अपनी निकटता एवं पुनर्मिलन का आस्वाद लेने का आह्वान किया है। असीमित रूप से महिमाशाली हो यह ’दिवस’ जब आभा और भव्यता के महासिंधु तरंगित हुए हैं और कृपा एवं न्याय की नदियाँ प्रवाहित हुई हैं; वह ’दिवस’ जब तेरी उदारता ऐसी पराकाष्ठा पर पहुँची है कि इस हकलाती हुई वाणी ने तेरी स्तुति का समारोह मनाया है, हर अंधे नेत्र ने तेरे सौन्दर्य का प्रकाश देखा है, और हर बहरे कान ने तेरी एकमेवता के ’कपोत’ की गौरवमयी तानों पर ध्यान दिया है।

8. इस ’दिवस’ में तेरी अतुलनीय सम्पदा के चमत्कारों के माध्यम से दरिद्र को समृद्ध बना दिया गया है, तेरी भव्यता और महिमा के अगणित प्रकटीकरणों के माध्यम से वे जो अधम थे उन्हें श्रेष्ठ बना दिया गया है, वे जो पाप-ग्रस्त थे उन्हें तेरी क्षमाशीलता का अंशदान प्राप्त हुआ है, बीमारों ने तेरे कृपापूर्ण आरोग्य के जल का पान किया है, खिन्न जनों ने तेरी आशा और अनुदान के वृक्ष की छाया तले शरण ग्रहण की है और अत्यंत अकिंचन जनों को तेरी करुणा और कृपा के समुद्र के तट की निकटता प्राप्त हुई है।

9. वे नेत्र अंधे हैं जो इस ’दिवस’ में तुझे तेरी सम्प्रभुता के सिंहासन पर आसीन देख पाने में विफल हैं, या जो उन सभी वस्तुओं के ऊपर तेरी निर्विवाद प्रभुसत्ता को नहीं निरख पाते जिन्हें तूने अपने नामों और विभूषणों के व्याख्याता के रूप में रचा है! हे मेरे ईश्वर! क्या तेरे चिह्नों और संकेतों में से किसी एक को भी जो कुछ तेरे रचित जीवों से सम्बंधित है वह समझने का भ्रम पाला जा सकता है? नहीं, तेरी महिमा की सौगन्ध! जो कुछ भी तुझसे और तेरी उपस्थिति से व्युत्पन्न है वह तेरे न्याय के स्वर्ग में उसी तरह प्रकाशित है जैसे दोपहर का सूर्य, जबकि अन्य सभी वस्तुएँ, भले ही वे तेरी सृष्टि की बहुमूल्य निधियों में से हों या तेरे हस्तशिल्प के सार-तत्व में से, वे सब एक दिन शून्य में विलीन हो जाती हैं। और चूंकि तूने किसी को भी अपना भागीदार नहीं नियुक्त किया है, अतः जो कुछ भी तुझसे प्रकट होता है उसके समान या समकक्ष भी कुछ नहीं। और हालाँकि तूने सभी रचित वस्तुओं के ऊपर अपनी महान एकमेवता की प्रखर प्रकाश-किरणें बिखेरी हैं और किसी भी वस्तु से कुछ भी तब तक उत्पन्न नहीं होता जब तक कि वह तेरे माध्यम से प्रकटित और तेरी आज्ञा से सृजित न हो, तब भी जो कुछ स्वयं तुझसे उत्पन्न है वह तेरे स्वर्गों और तेरी धरती पर अन्य सबसे उत्कृष्ट है और इस तरह तेरी भव्य सम्प्रभुता के संकेत लोगों के नेत्रों के सम्मुख प्रकट किए गए हैं और तेरा प्रमाण सम्पूर्ण सृष्टि के समक्ष पूरा किया गया है।

10. चूंकि तेरी उदार कृपाएँ इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में परिव्याप्त हैं और तेरी मुख-भंगिमा के प्रकाश ने सभी रचित वस्तुओं को प्रकाशित कर रखा है, अतः, मैं याचना करता हूँ तुझसे इस ’दिवस’ के नाम पर, और उन हृदयों के नाम पर जिन्हें तूने अपने ज्ञान और अपनी प्रेरणा के भंडार और अपने प्रकटीकरण एवं अभिज्ञान के कोषागार बनाए हैं, कि तू यह वरदान दे कि तेरी आज्ञा के क्षितिज पर तेरी अकाट्य सर्वोच्चता के संकेत प्रकाशित हों, कि तेरी कृपा के स्वर्ग से तेरी असीम दया की फुहारें बरस पड़ें और यह कि तेरी सम्प्रभु ’इच्छा’ के क्रियान्वयन से तेरी मुक्ति के संकेत प्रकट हो सकें। इस तरह तेरे मित्र अपने शत्रुओं के चंगुल से मुक्त हो सकें और तेरे प्रियजन उनके हाथों से छुटकारा पा सकें जो तेरे सेवकों के बीच दिग्भ्रमित जन हैं, ताकि, हे ईश्वर! वे तेरे नामों के अति-उच्च लोकों में मुखरित ध्वनि से तेरा गुणगान कर सकें और तेरे विभूषणों के साम्राज्य में अपने सम्पूर्ण अस्तित्व से तेरी आराधना कर सकें। और इस तरह तेरे नाम की श्रेष्ठता और तेरा साक्ष्य स्थापित हो सके, तेरे प्रमाण की सत्यता सिद्ध हो सके, तेरी कृपा की पूर्णाहुति हो सके, तेरी उदारता पूरी हो सके, तेरे श्लोकों की घोषणा हो सके और तेरे संकेतों की व्याख्या हो सके - इस तरह कि यह समस्त विश्व तेरी मुखमुद्रा के प्रकाश से भर जाए और सम्पूर्ण सम्राज्य सिर्फ तेरा हो। तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, सर्वसामर्थ्‍यमय, सर्वशक्तिमान, सर्वबलशाली, सर्व-बाध्यकारी।

11. और फिर, हे मेरे ईश्वर! मैं याचना करता हूँ तुझसे उस नाम के द्वारा जिसके माध्यम से ’स्वर्गिक सिंहासन के पक्षी’ ने अदृश्य ’लोक’ में तेरी सर्वातीत एकता के माधुर्यों का कलरव-नाद किया है और तेरे प्रकटीकरण के ’कपोत’ ने अनन्तता के ’साम्राज्य’ में तेरी सम्प्रभु एकता का स्तुति-गान किया है, और ’पवित्र चेतना’ ने अद्भुत स्वरों में तेरी अनन्त महिमा का प्रसार किया है - मैं याचना करता हूँ तुझसे कि इन सेवकों की ओर अपनी निकटता और उपस्थिति के प्रभात की मृदुल बयारों को प्रवाहित होने से न रोक और न ही उन्हें तेरे पुनर्मिलन और तेरे अभिज्ञान के उषाकाल की मोहक सुरभियों से बहुत दूर किया जाने दे।

12. यह वरदान दे, हे मेरे ईश्वर! कि यह ’उत्सव’ उनके लिए और तेरे सभी प्रियजनों के लिए आशीर्वादों का स्रोत हो। अतः उन्हें वह समस्त शुभ प्रदान कर जिन्हें तूने अपने निर्णय और उद्देश्य के स्वर्ग में तथा अपने संरक्षण और आदेश की पातियों में नियत किया है। अतः, इस वर्ष के दौरान, हे मेरे परमात्मा! अपने क्रोध की शक्ति और अपनी अदम्य सामर्थ्‍य से उनके शत्रुओं को पराजित कर और, हे मेरे ईश्वर! उनके लिए वह सब निर्धारित कर जिनकी मैंने तुझसे याचना की है और वह सब जिन्हें मैंने अयाचित ही छोड़ दिया है। और फिर उन्हें अपने प्रेम तथा अपने धर्म में स्थिरता का वरदान दे कि वे कभी तेरी ’संविदा’ भंग न करें और न ही तेरे उस ’प्रमाण’ का उल्लंघन करें जिसके अनुपालन का वचन उन्होंने स्वर्गों और धरती की सृष्टि से भी पहले दिया था। उस परम विलक्षण साधन से उन्हें विजयी बना जो तेरी शक्ति के कोषालयों और तेरी सामर्थ्‍य के भण्डारों में ढंका पड़ा है और हे मेरे परमेश्वर! उन्हें उस ’घड़ी’ तक पहुँचने का वरदान दे जिसका वचन तूने उन्हें अपने बाद वाले ’पुनरुत्थान’ में, अपने सर्वगौरवमय ’स्व’ के ’अवतार’ के प्रकटीकरण के माध्यम से दिया था - क्योंकि यह सत्य ही उनके और सभी वस्तुओं के अस्तित्व का विशिष्ट ध्येय है, उनकी सृष्टि और सभी वस्तुओं की सृष्टि का हेतु है। अतः, हे मेरे ईश्वर! उन्हें सभी परिस्थितियों में तेरी इच्छा के प्रति समर्पित बना। सत्य ही, तू कृपा और उदारता का, अनन्त अनुदानों और अबाधित सम्प्रभुता का प्रभु है। और तू, सत्य ही, परम उदात्त, सर्वशक्तिमान, सर्वकृपालु है।

13. पुनः, तेरे नामों के सभी ’व्याख्याताओं’ और तेरे गुणों के सभी ’प्रकटकर्ताओं’ के नाम से मैं तुझसे यह याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर! कि अपने इन सेवकों को उनमें से न गिन जो तेरे ’प्रकटीकरण’ से जुड़े ’उत्सवों’ को बाहरी तौर पर मनाते हैं, जो अपने साधनों और क्षमताओं के उपयुक्त इन दिनों को सम्मानित और गौरवान्वित तो करते हैं, किन्तु इसके बावजूद जो एक पर्दे से ’उससे’ दूर कर कर दिए गए हैं जो, अपने आदेश और निर्णय से, इन समारोहों और अन्य सभी वस्तुओं का ’प्रणेता’ है, क्योंकि इस तरह से उनके सारे कार्य निरर्थक चले जाएँगे, भले वे इसे समझें या न समझें।

14. हे मेरे परमेश्वर! मैं अनुनय करता हूँ तुझसे उसके प्राकट्य के नाम पर जिसे तूने इन दिवसों में अपने नाम “वह जिसका आह्वान किया जाता है” के माध्यम से प्रकट किया है, और उसके सौन्दर्य के नाम पर और उसके प्रताप के नाम पर और उन यातनाओं के नाम पर जो उन्हें भोगनी पड़ी और उसके मधुर स्वरों के नाम पर, और उसकी दिव्य सुरभियों के नाम पर और उसकी भव्यता के नाम पर और उसकी सामर्थ्‍य के नाम पर कि तू यह वरदान दे कि तेरे प्रियजनों के नेत्र अज्ञान और अंधता के पर्दों और संदेह एवं खिन्नता के धुंधले कुहासों से मुक्त हो सकें। कदाचित, वे अपनी दृष्टि ’तेरे प्रकटीकरण के वृक्ष’ पर केन्द्रित कर सकें और उस पर जो तेरी पुरातन अनन्तता की अद्भुत पत्तियों और तेरी पावन एकता के अमूल्य फलों से प्रकट होते हैं, वे उनसे और उनमें निहित तेरे निगूढ़ उपहारों और उनमें छुपे हुए ज्ञान से आनन्दित हो सकें और इस तरह स्वयं को अन्य सभी वस्तुओं से अनासक्त कर सकें। यही, वस्तुतः, पूर्ण कृपा और विशुद्ध आशीर्वाद है और उनका सार-तत्व, उनका मूल, और उनका अन्तिम ध्येय, क्योंकि तेरे ज्ञान की परिधि में इस कृपा से बढ़कर तथा इस आशीर्वाद से मधुर और कुछ नहीं है। तू, वस्तुतः, सम्राट है, सर्वदर्शी है, सर्वशक्तिमान, सर्वसामर्थ्‍यमय, सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ है।

## 12

## हूर-ए-उजाब

## (अद्भुत परी की पाती)

1. पर्दे के पीछे से पावन सौन्दर्य का ज्योतिर्मय प्रकाश चमक उठा। कैसी अद्भुत बात, सचमुच कैसी अद्भुत!

2. और, देखो, अतिशय आनन्द की लपट ने सभी आत्माओं को मूच्र्छित कर दिया। कितना अद्भुत है यह, सचमुच कितना अद्भुत!

3. वे उठे और स्वर्ग के चंदोवे के सिंहासन तले आशीर्वादित शिविर की ओर उड़ान भरी। कैसा अद्भुत रहस्य, सचमुच कैसा अद्भुत!

4. कहः ’अनन्तता की परी’ ने अपने मुखड़े को अनावृत किया - उसका विलक्षण सौन्दर्य वस्तुतः उदात्त हो!

5. स्वर्ग से धरती तक अपनी ज्योतिर्मय किरणें बिखेरती हुई। कैसा अद्भुत प्रकाश, सचमुच कितना अद्भुत!

6. उसने बिजली-सी कौंधती हुई अपनी झलक दिखाई, एक धूमकेतु की तरह चकाचैंध भरी झलक - कितनी अद्भुत थी वह झलक, सचमुच कितनी अद्भुत! --

7. अपनी लपटों में हर नाम और हर उपाधि को भस्म कर देने वाली वह झलक। कैसा अद्भुत यह करतब, सचमुच कैसा अद्भुत!

8. धूल के निवासियों की ओर ’उसने’ किया अपना दृष्टिपात। कैसी अद्भुत वह दृष्टि, सचमुच कैसी अद्भुत!

9. और तब समस्त सृष्टि में मची हलचल और समाप्त हो गई वह। कैसी विस्मयकारी मृत्यु, सचमुच कैसी विस्मयकारी!

10. फिर उसने अपनी एक काली लट झुकाई, अंधकारतम रात में चेतना का एक आभूषण-कितना विलक्षण रंग, सचमुच कितना विलक्षण!

11. और उससे चेतना की सुगंधमयी बयारों का हुआ बोध। कितनी अद्भुत वह सुरभि, सचमुच कितनी अद्भुत!

12. उसके दाहिने हाथ में थी रक्ताभ मदिरा और उसके बाएं हाथ में उत्तम भोज्य वस्तु का एक अंश। कितनी अद्भुत वह भव्यता, सचमुच कितनी अद्भुत!

13. वे हाथ जो उसके उत्कट प्रेमियों के रक्त से सने लाल थे - कितनी विलक्षण यह बात, सचमुच कितनी विलक्षण!

14. अपने प्यालों और चशकों में से उसने दी सबको जीवन की मदिरा। कितनी अद्भुत वह घूंट, सचमुच कितनी अद्भुत!

15. अपनी बीन और वीणा से उसने गाया अपने ’प्रियतम’ का स्तुति-गान। कितना विलक्षण वह संगीत, अहा! कितना विलक्षण!

16. उससे हृदय प्रबल ज्वाला में विगलित हो गए। कितना अद्भुत वह प्रेम, सचमुच कितना अद्भुत!

17. अपने पोषणदायी सौन्दर्य से उसने सबको प्रदान किया एक असीमित अंश -- कितना अद्भुत वह अंश, सचमुच कितना अद्भुत!

18. फिर उसने अपने प्रेमियों की गर्दनों पर तान दी तलवार अपने आकर्षण की - कितना विस्मयकारी था वह प्रहार, सचमुच कितना विस्मयकारी!

19. जैसे ही वह मुस्कुराई, उसके मोती जैसे दाँत चमक उठे। कितना विलक्षण वह मोती, सचमुच कितना विलक्षण!

20. उस पर उनके हृदय, जो जानते हैं, विलाप करके रो उठे। कैसी अद्भुत करुणा, सचमुच कैसी अद्भुत!

21. लेकिन वे जो संदेह करते हैं और अपने ही बड़प्पन में निमग्न हैं उन्होंने उसके सत्य को नकार दिया। कितना विस्मयकारी था वह नकारना, सचमुच कितना विस्मयकारी!

22. और यह सुनकर, शोकाकुल होकर, वह लौट गई अपने निवास में। कितनी दुःखद थी उसकी वह वेदना, आह, कितनी दुःखद!

23. वह वहीं लौट गई जहाँ से वह आई थी: कितने उच्च थे वे सोपान जो उसने नापे! कैसा विस्मयकारी वह निर्णय, सचमुच कैसा विस्मयकारी!

24. वह तीव्र वेदना भरे रुदन के साथ रो उठी, मानो सभी वस्तुओं को शून्य में विलीन करती हुई। कितना दुःखद था उसका शोक, सचमुच कितना दुःखद!

25. और उसके ओठों से चेतावनी और भत्र्सना के ये शब्द प्रवाहित हो उठे -- कैसा अद्भुत प्रवाह, सचमुच कैसा अद्भुत! --

26. “क्यों मेरा खण्डन करते हो तुम सब, हे धर्मग्रंथ वाले लोग?” कितना विस्मयकारी है यह, सचमुच कितना विस्मयकारी!

27. “दावा करते हो कि तुम्हें मार्गदर्शन प्राप्त है और तुम सब प्रभु के प्रियपात्र हो?” ईश्वर की सौगन्ध! कितना आश्चर्यकारी है यह झूठ, सचमुच कितना आश्चर्यकारी!

28. उसने कहा, “हे मेरे मित्रों, हम फिर वापस नहीं आएंगे।“ - कितनी अद्भुत वह वापसी, सचमुच कितनी अद्भुत!

29. “बल्कि ईश्वर के रहस्यों को उसके ग्रंथों और उसकी पुस्तकों में ही निगूढ़ रखेंगे”, जैसाकि उस एकमेव ’सामर्थ्‍यमय’ और ’कृपालु’ ने सचमुच आदेशित किया है!

30. “न ही तुम्हें मैं मिलूंगी तब तक जब तक ’निर्णय के दिन’ उस ’प्रतिज्ञापित अवतार’ का आगमन नहीं हो जाता।“ मेरे जीवन की सौगन्ध! कितनी विस्मयकारी यह अधोगति, सचमुच कितनी विस्मयकारी!

## 13

## वह है परम पावन, परम गरिमामय

1. स्तुति हो तेरी, हे हमारे प्रभो, हे परम दयामय! यह उस उत्सव के दिनों में से एक है जिसे तूने रिज़वान का नाम दिया है, वह उत्सव जिसमें तूने उन सबके समक्ष अपनी प्रभुसत्ता प्रकट की है जो तेरे स्वर्गों में और तेरी धरती पर हैं, यद्यपि लोग तुझे हानि पहुँचाने और तेरी ज्योति को बुझा देने के लिए उठ खड़े हुए हैं, वह उत्सव जिसमें तेरी एकता का ’नक्षत्र’ तेरे ’घर’ के दिवास्रोत से सभी गोचर और अगोचर वस्तुओं पर जगमगाया है।

2. इस ’दिवस’ के नाम पर, हे मेरे परमेश्वर! और उसके नाम पर जिसे तूने अपने प्रकटीकरण का ’उदय-स्थल’ और अपनी प्रेरणा का ’दिवास्रोत’ बनाया है, मैं तुझसे याचना करता हूँ कि अपने प्रियजनों के लिए इहलोक और परलोक की सभी शुभ वस्तुओं का विधान कर और उन्हें उनमें गिन जिन्हें कोई भी वस्तु तेरे स्मरण और गुणगान से न भटका सके। अतः, उनके हृदयों को इस तरह सुदृढ़ कर कि जिन्होंने तुझमें और तेरे चिह्नों में अविश्वास किया है उनका वर्चस्व उन्हें कदापि हतप्रभ न कर सके।

3. हे प्रभो! उनकी आँखों को अपने ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित कर और उनके हृदयों को अपनी मुख-भंगिमा की आभा से। अतः उनके हृदयों और चेतनाओं को परस्पर जोड़ दे ताकि उनकी एकता के माध्यम से तेरे साम्राज्य के सभी निवासी एकजुट हो जाएँ।

4. तेरी सामर्थ्‍य उन सबके ऊपर है जो तेरे प्रकटीकरण और तेरी सृष्टि के साम्राज्यों में हैं। तू, सत्य ही, सर्वशक्तिमान, सर्वदयालु है। गुणगान हो तेरा, हे लोकों के स्वामी!

## 14

## परमेश्वर के नाम पर जो है सर्वशक्तिमंत, सर्वदयावंत

1. गौरवान्वित है तू, हे मेरे परमेश्वर! इस ’दिवस’ के नाम पर और ’उसके’ नाम पर जिसे तेरी प्रभुसत्ता और तेरी महिमा और तेरी सामर्थ्‍य ने इस दिवस में प्रकट किया है और उन आँसुओं के नाम पर जिन्हें तेरे उत्कट प्रेमियों ने तुझसे दूर होने और तेरे वियोग में बहाए हैं और उस अग्नि के नाम पर जिसने उनके हृदयों को विदग्ध कर डाला है जो तेरे सौन्दर्य को निहारना चाहते हैं, हम तुझसे याचना करते हैं कि इस दिवस में हमारे पास वह भेज जो तेरे सौन्दर्य के योग्य और तेरी कृपा और उदारता के अनुरूप है।

2. हे प्रभो! हम अकिंचन जीव हैं जिन्होंने स्वयं को तेरे सिवा अन्य सभी वस्तुओं से अनासक्त कर लिया है, जिन्होंने अपने मुखड़ों को तेरे वैभव की निधियों की ओर उन्मुख कर लिया है और तेरे पास पहुँचने की आशा में जो दूरस्थता से भाग चले हैं। अतः, अपनी इच्छा के स्वर्ग से हमारे पास वह भेज हो हमें संसार और उसकी सभी वस्तुओं से मुक्त, पावन कर दे और हमें ऐसे परिधान से सुसज्जित कर जिसे तूने अपनी करुणा और कृपा से हमारे लिए उद्दिष्ट किया है।

3. और फिर, हे मेरे ईश्वर! मैं याचना करता हूँ तुझसे तेरे उस नाम से जिसे तूने अपने ज्ञान का कोषालय, अपने प्रकटीकरण का आगार और अपनी प्रेरणा का स्रोत बनाया है - वह ’नाम’ जिसके माध्यम से तूने निष्ठावानों और निष्ठाहीनों के बीच विभेद किया है और उन्हें एकजुट किया है, कि हमें इस ’दिवस’ में अपने मार्गदर्शन के वस्त्र और अपनी कृपा के आवरण से सुसज्जित कर। तब हमें अपने धर्म का पुरोधा बना, उसका सहायक बना, और उन सबके समक्ष तेरे नाम का उल्लेख करने दे जो तेरे स्वर्ग में और तेरी धरती पर हैं, ताकि सभी भूभाग तेरे स्मरण के विस्मय से भर जाएँ और हर मुखड़ा तेरी मुख-भंगिमा के प्रकाश से आलोकित हो उठे।

4. हे प्रभो! हम साक्षी देते हैं कि तू ही है ईश्वर और तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है। हम प्रमाणित करते हैं कि अनन्त काल से तू ऐसे अलौकिक पद पर आसीन रहा है जो उनके लिए भी अगम्य है जो तुझे पहचान चुके हैं और यह कि तू अनन्तकाल तक गरिमा की ऊँचाइयों पर आसीन रहेगा जो इतना अगम्य है कि तेरे समर्पित सेवकों के हृदय रूपी पखेरू तेरे ज्ञान के उस वायुमंडल में उड़ान भर पाने में सदा-सर्वदा असमर्थ रहेंगे।

5. हे ईश्वर! सभी वस्तुएँ तेरी एकता की साक्षी हैं और जिस किसी वस्तु को विद्यमान कहा जा सकता है - चाहे वे गोचर हों या अगोचर - तेरी एकता को प्रमाणित करती हैं। वस्तुतः, तूने अपने ’स्व’ को स्वयं तेरे सिवा अन्य सबके ज्ञान से परे, पावन बनाया है और अपने ’सार-तत्व’ को अन्य सबके उल्लेख से परे किया है। अस्तित्व के लोक में सृजित सभी शब्द और अर्थ अंततः उस एक ’शब्द’ की ओर लौट जाते हैं जो तेरी आज्ञा की लेखनी और तेरे निर्णय की अँगुलियों से निस्सृत हुए हैं। तेरी महानता के प्रमाणों के समक्ष हर महान व्यक्ति शून्य हो जाता है और तेरी परातीत सामर्थ्‍य के प्रकटीकरणों के आगे हर शक्तिशाली व्यक्ति एक विस्मृत वस्तु बनकर रह जाता है।

6. हे स्वामी! तू देखता है अपने प्रियजनों को अन्याय के कारिन्दों से घिरा हुआ। मैं याचना करता हूँ तेरे उस नाम से जिसके माध्यम से तेरे महाक्रोध की अग्नि प्रदीप्त हुई थी और तेरे कोप की लपटें प्रज्‍वलित हो उठी थीं कि उन पर अपना शिकंजा कस जिन्होंने तेरे प्रियजनों पर अत्याचार किए हैं। अतः हम सबके पास वह भेज जिसकी हमने तेरी करुणा और तेरी कृपा से याचना की है और हमें अपनी ओर उन्मुख होने तथा तेरी अलौकिक एकता के अभयारण्य के निकट आने से बाधित न होने दे। तू, सत्य ही, सर्वशक्तिमंत है जिसकी सामर्थ्‍य के साक्षी अनादिकाल से धरती के एक-एक कण रहे हैं, और जिसकी भव्यता को सभी रचित वस्तुएँ सदा प्रमाणित करेंगी। तू, सत्य ही, शक्ति और गरिमा का प्रभु है और अधिनायक है तू धरती और स्वर्ग का। तुझ सर्वशक्तिमान, सर्वगरिमामय के सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, जिसकी सहायता की याचना सभी करते हैं।

## 15

## स्तुति हो तेरी, हे मेरे परमेश्वर

1. तूने इस ’दिवस’ में सभी रचित वस्तुओं पर अपने नामों की आभा बिखेरी है, हे तू जो महिमा, गरिमा और भव्यता का प्रभु है, शक्ति, सामर्थ्‍य और आशीर्वादों का प्रभु है! यह वह दिवस है जब कि वह जो कि सर्व-सम्पदामय, अगम्य, परमोच्च परमात्मा का ’प्रवक्ता’ है, ने अनन्तता के लोक से पुकारा है, यह कहते हुए कि “साम्राज्य ईश्वर का है, उस सर्वशक्तिमान, परम उदात्त, परम भव्य का!”

2. प्रशंसित हो तेरा नाम, हे तू जो हवाओं को प्रवाहित और प्रभात का उदय करता है, जो श्लोकों का प्रकटकर्ता और प्रमाणों को अनावृत करने वाला है! हर वस्तु यह घोषणा करती है कि तू ही है परमेश्वर और तुझ सार्वभौम, सर्वशक्तिमान, परम महान के सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है। महिमा हो तेरे नाम की, हे तू जो स्वर्गों का सर्जक और सभी नामों का रचयिता है, जो अपने ’महानतम नाम’ की सामर्थ्‍य के माध्यम से सभी वस्तुओं पर अपनी आभा बिखेरता है। वस्तुतः, यह वह नाम है जिसके माध्यम से ’रहस्यमय कपोत’ ने स्वर्गिक डाली पर कलरव गान किया, यह घोषणा करते हुए कि “सभी साम्राज्य सदा-सर्वदा के लिए परमेश्वर का है, वह जो हमारा प्रभु है, परम दयालु है!”

3. गौरवान्वित है तू, हे अनन्तता के सम्राट और राष्ट्रों के अधिनायक और हर जर्जर होती अस्थि में स्फूर्ति भरने वाले! स्तुति हो तेरी, ऐसी स्तुति जिसका प्रशस्ति-गान कोई भी पार्थिव जिह्वा कभी समुचित रूप से नहीं कर सकती, ऐसी स्तुति जिसके माध्यम से तेरी करुणा की बरखा उन सभी सृजित वस्तुओं पर बरस पड़ी है जो स्वर्ग में और धरती पर हैं। स्तुति हो तेरी, ऐसी स्तुति जिसने तेरे समारोह में हर निर्वाक व्यक्ति की वाणी को मुक्त कर दिया है, ऐसी स्तुति जिसने हर दूरस्थ को तेरे शक्तिशाली सिंहासन के निकट ला दिया है, और जिसने हर प्यासे को तेरी उदारता की जीवन्त जलधाराओं और तेरी कृपा के मृदुवाही स्रोतों का मार्ग दिखाया है। स्तुति हो तेरी, ऐसी स्तुति जिसके माध्यम से तेरी करुणा के परिधान की सुरभि उन सबके ऊपर प्रवाहित कर दी गई है जो स्वर्ग में और धरती पर हैं और तेरी अलकापुरी के गुलाबों की मोहक सुगन्ध अनन्तता के नगरों के निवासियों के ऊपर बिखेर दी गई है और हर नाम को तेरे स्मरण और तेरी गरिमा का गुणगान करने दिया गया है। स्तुति हो तेरी, ऐसी स्तुति जिसने तेरे प्रियजनों के हृदयों को वह स्थिरता प्रदान की है कि कोई भी पार्थिव अवरोध उन्हें तेरी कृपाओं के क्षितिज पर टकटकी लगाने से नहीं रोक सकता और न ही अत्याचारियों का अभ्युदय उन्हें तेरी मुखमुद्रा की विलक्षण प्रभा को निहारने से ही बाधित कर सकता है। स्तुति हो तेरी, ऐसी स्तुति जिसने तेरे सेवकों के हृदयों से तेरे सिवा अन्य किसी के भी उल्लेख को मिटा डाला है और उन्हें तेरे धर्म के शिक्षण और हर भूभाग में तेरे सुमिरन के प्रसार के लिए सहायता प्रदान की है।

4. हे ईश्वर, तेरे परम उत्कृष्ट नामालंकरणों और तेरे परम उदात्त विभूषणों के नाम पर और उनके नाम पर जिन्होंने तेरी निकटता और सत्कृपा के वातावरण में आरोहण किया है और विश्वास एवं अनासक्ति के डैनों पर तेरे नाम, सर्वदयालु, के ’दिवास्रोत’ की ओर उड़ान भरी है और तेरे लिए बहाए गए खून के नाम पर और तेरे प्रेम के निमित्त भरी गई आहों के नाम पर, मैं तुझसे याचना करता हूँ कि इस दिवस में तेरे पथ पर किए गए हमारे हर कर्म को स्वीकार कर।

5. यह वह दिवस है जिसमें सर्वदयालु ने सभी नामों के ऊपर अपनी प्रखरता की आभा बिखेर दी है। सर्वगरिमा हो उसकी जो हमें ईश्वर ने प्रदान किया है!

6. यह वह दिवस है जिसमें वह जो ’निगूढ़’ और ’अगोचर’ है, समस्त सृष्टि के नेत्रों के समक्ष प्रकट हुआ है। सर्वगरिमा हो उसकी जो हमें ईश्वर ने प्रदान किया है!

7. यह वह दिवस है जिसमें ’महानतम प्रतिमा’ विखंडित हुई। सर्वगरिमा हो उसकी जो हमें ईश्वर ने प्रदान किया है!

8. यह वह दिवस है जिसमें करुणा के प्रभु ने समस्त सृष्टि के समक्ष स्वयं को प्रकट किया। सर्वगरिमा हो उसकी जो हमें ईश्वर ने प्रदान किया है!

9. यह वह दिवस है जब फराओ को डुबो दिया गया और मूसा ने उसके दर्शन किए जो ’सर्वगरिमामय प्रभु का सौन्दर्य’ है। सर्वगरिमा हो उसकी जो हमें ईश्वर ने प्रदान किया है!

10. यह वह दिवस है जब कि निरर्थक कल्पना के झूठे देवों को हमारे सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ परमेश्वर की शक्ति द्वारा परास्त कर दिया गया। सर्वगरिमा हो उसकी जो हमें ईश्वर ने प्रदान किया है!

11. यह वह दिवस है जिसमें अलौकिक गरिमा के ’स्थल’ पर ’महानतम महासागर’ की लहरों को प्रकट किया गया। सर्वगरिमा हो उसकी जो हमें ईश्वर ने प्रदान किया है!

12. यह वह दिवस है जब कि सभी रचित वस्तुओं का अपने उस अगम्य, परम महान, परमेश्वर के सान्निध्य में आह्वान किया गया। सर्वगरिमा हो उसकी जो हमें ईश्वर ने प्रदान किया है!

13. यह वह दिवस है जब कि सभी वस्तुएँ उसका साक्ष्य देती हैं जिसका प्रमाण ’शक्ति की वाणी’ ने ’दिव्य कल्पतरु’ के समक्ष दिया था। सर्वगरिमा हो उसकी जो हमें ईश्वर ने प्रदान किया है!

## 16

## ईश्वर के नाम पर, जिसने समस्त सृष्टि पर अपनी आभा बिखेरी है!

1. हे धरती और स्वर्ग के समूहों! ईश्वर के उस प्रमाण पर ध्यान दो जो तेरे प्रभु, उस सर्वगरिमामय, के मुख से निस्सृत होता है। उसने, वस्तुतः, उससे भी पूर्व जबकि उसके धर्म का स्वर्ग निर्मित किया गया था और उसके निर्णय के बादल एकत्रित हुए थे, स्वयं में और स्वयं के द्वारा यह प्रमाणित किया था कि उसके सिवा और कोई ईश्वर नहीं है और वह जो प्रकट हुआ है वह वही ’महानतम नाम’ है जिसके माध्यम से स्वर्ग और धरती के सभी निवासियों के समक्ष उसके पुरातन साक्ष्य और प्रमाण संस्थापित किए गए हैं।

2. वस्तुतः, ईश्वर ने स्वयं में और स्वयं के द्वारा, और अपने अंतर्तम ’सार-तत्व’ में यह प्रमाणित किया है कि उसके सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है और वह जो सत्य की शक्ति के माध्यम से प्रकट हुआ है वह ’उसके’ परम उत्कृष्ट नामालंकरणों का ’प्रकटावतार’ और उसके परम उदात्त विभूषणों का ’उदय-स्थल’ है। उसके माध्यम से अनन्तता के क्षितिज से रहस्यमय ’प्रभात’ के स्वर गूंज उठे और ’परम महान चेतना’ यह कहते हुए ’दिव्य कल्पतरु’ से बोल उठी कि “वस्तुतः, यह वही है जो ’नामों की नगरी’ में अभीष्ट था और धरती एवं स्वर्ग के ’अधिनायक’ तेरे प्रभु की ’इच्छा’ के स्वर्ग से प्रकटित पातियों में जिसका उल्लेख किया गया था। वह, वास्तव में, सभी राष्ट्रों के बीच महानतम ’उपकरण’ है जो सम्पूर्ण विश्व को नवजीवन देने आया है।“

3. वस्तुतः, परमेश्वर ने स्वयं में और स्वयं के द्वारा, तथा इस संसार के सृजन एवं उसके नामों और विभूषणों के प्रकटीकरण से भी पूर्व, प्रमाणित किया है कि उसके सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है और वह जो दिव्य निर्णय के बादलों पर सवार होकर आया है वह तुम्हारे बीच ’ईश्वर का विश्वास’ और तुम सबके मध्य उसके ’सार-तत्व’ का प्रकटकर्ता है।

4. इस समय और उसके लोक से हम, वस्तुतः, स्वर्ग और धरती के सभी निवासियों को निहार रहे हैं और उस ’सौन्दर्य’ की ओर उनका आह्वान कर रहे हैं जिसने अलकापुरी के अंतःवासियों और पवित्रता के शिविर में निवास करने वालों की आँखों को चैन दिया है, उन्हें जिन्होंने अपनी दृष्टि इस ज्योतिर्मय गरिमा की ’स्थली’ पर केन्द्रित किया है और जिन्हें मानवीय सीमाओं के पर्दे सर्वशक्तिमान, परम विलक्षण परमेश्वर की मुखमुद्रा को निहारने से बाधित नहीं कर पाई हैं। वही है वह जो सभी वस्तुओं में यह घोषणा करता हैः “वस्तुतः, मैं ही हूँ तुम्हारा प्रभु, दयालु, करुणामय। अनादिकाल से ही मैं उस अवस्थान में निगूढ़ ’खजाना’ था जिसे मुझ सर्वज्ञ, सर्वसूचित के ’स्व’ के सिवा अन्य कोई नहीं जानता था। अपनी समस्त सम्पदाएँ त्याग दे और इस वायुमण्डल में जहाँ तेरे सदा-क्षमाशील, परम उदार प्रभु की करुणा की बयारें बहती हैं, अनासक्ति के डैनों से उड़ान भर।“

5. मेरे जीवन की सौगन्ध! वह दिवस आ चुका है जिसे अनन्तकाल से तुम्हारे प्रभु की सामर्थ्‍य की निधियों में छुपा कर रखा गया था। इस आशीर्वादित, इस भव्य, इस महान दिवस में आनन्द-मग्न हो जा। क्योंकि वह, वास्तव में, तुम्हारे बीच ’स्वयं मेरा प्रकट स्वरूप’ है और जो कोई भी ’उसके’ और ’मेरे’ बीच जरा भी अन्तर करता है वह सचमुच सत्य के मार्ग से बहुत दूर भटक गया है। वही है वह जिसने गरिमा के ’तरुवर’ पर ’रहस्यमय कपोत’ से कलरव-गान कराया है, यह कहते हुए कि “एकमेव सत्य ईश्वर की सौगन्ध! लोकों के परम प्रियतम का आगमन हो चुका है!”

6. महिमावंत है तू, हे प्रभो, मेरे परमेश्वर! क्या कोई भी व्यक्ति तुझे ऐसे आशीर्वादों के लिए पर्याप्त धन्यवाद दे सकता है जो तूने अपनी एकता के स्वर्ग और अपनी इच्छा के गगन से हमारे लिए भेजे हैं, वे आशीर्वाद जिन्हें तूने सृष्टि के लोक में बहा के लोगों के लिए आरक्षित रखा है? नहीं, तेरी शक्ति की सौगन्ध! हे तू लोकों के प्रियतम और उन सबकी एकमात्र ’अभिलाषा’ जिन्होंने तुझे पहचान लिया है! यदि तू धरती के प्रत्येक जीव को अनेक जिह्वाएँ प्रदान कर दे, इतनी जितनी कि ब्रह्माण्ड में परमाणुओं की संख्या है और यदि वे उन उदार कृपाओं के लिए जो तूने अपने प्रियजनों को इस युग में प्रदान की हैं - वह युग जिसमें तूने स्वयं अपने ’सार-तत्व’ और अंतर्तम ’अस्तित्व’ में स्वयं को धरती और स्वर्ग के निवासियों के समक्ष और अपने सौन्दर्य में अनन्तता के नगरों के निवासियों और अपने नामालंकरणों के माध्यम से स्वयं को उनके समक्ष प्रत्यक्ष किया है जो भव्यता के उच्छल महासागरों में निमग्न हैं - तुम्हारे प्रति इतना आभार प्रकट करें जितनी दूर तक तेरे राज्य और अधिराज्य का अस्तित्व है, तो भी तूने अपनी कृपा और उदारता से उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उनके सम्मुख उनका यह आभार शून्य में विलीन हो जाएगा।

7. हे ईश्वर! मैं नहीं जानता कि इस दिवस में तुम्हारे किन उपहारों की प्रशंसा की जाए, उस दिवस में जिसे तूने अपने सभी दिवसों का स्रोत और वह उदय-स्थल बनाया है जहाँ से तेरे ’सार-तत्व’ के प्रकाश की किरणें और तेरी मुखमुद्रा की गरिमा की आभाएँ चमकी हैं। क्या मैं उस स्वर्गिक भोज का गुणगान करूँ जिसे तूने इस दिवस में बहा के लोगों के लिए भेजा है, जिन्हें तूने धरती और स्वर्ग के निवासियों के बीच अपनी विशेष कृपाओं के लिए चुना है? वास्तव में यह तेरे उन शब्दों के पात्र में वाहित जीवनाधार है जिनके एक-एक अक्षर से दिव्य प्रज्ञा और वाणी के असंख्य सूर्यों का उदय होता है और जिनसे प्राधिकार एवं व्याख्या के ज्योतिर्मय प्रकाश विकीर्ण होते हैं। यह वास्तव में ऐसा जीवनाधार है जिसके सारांश हैं वे आंतरिक अर्थ जो अनन्तकाल से तेरे अनुल्लंघनीय खजानों में छुपे हुए और तेरी गरिमा के चंदोवे तले निगूढ़ थे। या फिर, हे मेरे ईश्वर! तेरे ’सार-तत्व’ के उदय-स्थल से मैं इस युग में तेरे प्रकट होने का प्रशस्ति-गान करूँ, या सभी लोगों की दृष्टि के सम्मुख तेरे नाम - सर्वदयालु - के सिंहासन पर तेरे स्थापित होने का, या फिर सभी दृश्य-अदृश्य वस्तुओं के सम्मुख शक्ति और सामर्थ्‍य की वाणी से की गई तेरी घोषणा का? स्वयं मुझ एकमेव सत्य की सौगन्ध! ’निगूढ़ भेद’ और ’संचित रहस्य’ को प्रकट कर दिया गया है। जिस किसी को भी मेरी तलाश है, उसे मेरे दर्शन होंगे।

8. मैं तेरी गरिमा की सौगन्ध खाता हूँ, हे नामों के सर्जनहार और धरती एवं स्वर्ग के रचयिता! इस युग में - वह युग जिससे तूने सभी युगों को आरम्भ किया है - तूने अपने रचित जीवों को जो कृपाएँ प्रदान की हैं उनके लिए आभार प्रकट करने में उनकी वाणी अशक्त है। यह वह युग है जिसमें तूने अपने कृपा-प्राप्त जनों को अपनी निकटता के ’दिवास्रोत’ और निष्ठावान जनों को अपनी मुखमुद्रा के प्रकाश के उदय-स्थल के पास आने का आह्वान किया है। यह वह युग है जिसके बारे में तूने प्रत्येक अवतार के साथ अपनी यह संविदा स्थापित की थी कि वे सबके लिए उसके अवतरण के अग्रदूत बनेंगे जो उस युग में तेरी सार्वभौम सामर्थ्‍य और स्वर्गिक शक्ति से प्रकटित होगा।

9. यह वह युग है जिसमें प्रभुदूत मुहम्मद स्वर्ग के परम मध्य से पुकार उठे: “हे धरती के लोगों! ईश्वर की सौगन्ध! लोकों के ’प्रियतम’ और हर बोध-सम्पन्न हृदय की ’अभिलाषा’ का प्रादुर्भाव हो चुका है। वह वस्तुतः वही है जिसकी ध्वनि मैंने अपनी ’रात्रिकालीन यात्रा’ के दौरान सुनी थी लेकिन जिसका सौन्दर्य मुझे तब तक नहीं देखना था जब तक कि सभी दिवसों की इस युग में पूर्णाहुति न हो जाए - वह युग जो उस सम्प्रभु स्वामी, सर्वशक्तिमान, सर्वप्रशंसित परमात्मा के सभी युगों का विभूषण है। यह वह युग है जिसमें उसकी करुणा और उसकी सर्वव्यापी दया का शासन इस तरह विश्वव्यापी रूप से स्थापित है कि उसने हर आत्मा का समावेश कर लिया है, क्योंकि उसने सचमुच हर किसी को अपने सान्निध्य में आने का आह्वान भेजा है और सभी वस्तुओं पर अपने गौरवमय एवं प्रभासित सौन्दर्य की आभा बिखेर दी है।“

10. यह वह युग है जिसमें ’चेतना’5 ने स्वर्ग के परम मध्य से यह घोषणा की: “हे सृष्टि के समूहों! वह जो सबका सार्वभौम ’अधिनायक’ है, प्रकट कर दिया गया है। वह जिसका सम्बंध मेरे ’प्रभु के साम्राज्य’ से है उसे पूरा कर दिया गया है। वह जो मेरे हृदय का ’प्रियतम’ और मेरे धर्म का ’सहायक’ है, आ चुका है। उसके अनुगामी बनो और विमुख होने वालों में से न हो। यह वह युग है जिसमें सभी पर्दों को फाड़ दिया गया है और तुम्हारा प्रभु - वह सर्वशक्तिमान, परम उदार - प्रकट हो चुका है और अपने प्राकट्य के माध्यम से उसने उन सभी वचनों को पूरा कर दिया है जो पिछले समय में दिए गए थे। अतः, इस ज्योतिर्मय, इस परम प्रकाशित ’सौन्दर्य’ की ओर शीघ्रता से बढ़!

11. “हे पुरोहितों! हमारे सेवकों से कहो कि उस सर्वगरिमामय, परमोच्च के नाम के सिवा अन्य किसी हेतु घण्टा-नाद न करें। यह वह युग है जिसमें अतिशय प्यासे जनों को अनन्त जीवन का स्रोत प्राप्त हुआ है और अभिलाषी आत्माओं को सर्वदयालु के ’दर्शन’ लाभ हुए हैं। यह वह युग है जिसमें अधम को महान, निर्धन को धनवान, रुग्ण को स्वस्थ बना दिया गया है, बहरों को उसका माधुर्य सुनने को मिला है और नेत्रहीनों को नेत्रदान प्राप्त हुआ है। अतः, धन्यवाद अर्पित कर और उन लोगों में से न बन जो ईश्वर के साझेदार बनते हैं। वस्तुतः, ईश्वर का साम्राज्य उसकी परिक्रमा करता है। उसी के निमित्त मैंने अपने शरीर से सलीब की शोभा बढ़ाई और फिर लोगों के बीच उसके स्मरण को पूर्णता प्रदान करने मैं मृत होकर भी पुनर्जीवित हो उठा।

12. “हे ईशवाणी (गॉस्पेल) के जनों! सावधान रह कि कहीं तू मेरे सर्वगरिमामय ’पिता’ से विमुख होकर मुझे अपनी प्रार्थनाएँ न अर्पित करने लगे - वह ’पिता’ जिसने अपने प्रेम से अब्राहम की अग्नि को प्रकाश में बदल दिया। एक बार ’उसके’ प्रकट हो जाने के बाद जो अन्य की प्रतीक्षा करता है वह वास्तव में गंभीर भूल कर रहा है। अतः, अपने सर्वकरुणामय परमेश्वर की दया की सरिता की ओर बढ़ने की शीघ्रता कर और सावधान रह कि कहीं तू स्वयं को इसकी मृदुवाही जलधाराओं से वंचित न कर ले। हमने वास्तव में इसी युग के लिए तुझे पोषित किया है। ’ग्रंथ’ का अध्ययन कर ताकि तुम लोग मेरे दिवसों में मेरे शब्दों के अर्थ को समझ सको। वस्तुतः, मैंने केवल उसके धर्म के निमित्त ही स्वयं को प्रकट किया और सिर्फ तुम्हारे प्रभु और सभी लोकों के प्रभु परमेश्वर के साम्राज्य का अग्रदूत बनने के लिए ही तुम्हारे बीच आया। जो निगूढ़ था वह प्रकट हो चुका है और वह जो प्रच्छन्न था अब सामने आ चुका है। इस युग के अभिन्नदन की स्फूर्ति से भर जा - वह युग जिसमें स्वर्ग के द्वारों के कपाट पूरी तरह खोल दिए गए हैं और अनन्तता के बादल बरस पड़े हैं और उसके धर्म के ’कोकिल’ ने ’दिव्य कल्पतरु’ की टहनियों पर अपना सुमधुर आलाप छेड़ा है और उच्च लोक के सहचरों के हृदय उच्चतम स्वर्ग की उत्कंठा से भर उठे हैं और ’स्वर्ग की परियाँ’ अपने स्वर्गिक कक्षों से उसके शक्तिमान सिंहासन की ओर शीघ्रता से बढ़ चली हैं। अपनी समस्त सम्पदाएँ त्याग दे और इस ’पुरातन सौन्दर्य’ द्वारा तेरे लिए जो निर्धारित किया गया है उसका दामन थाम।

13. “हे धर्मगुरुओं के समुदाय! अपनी लेखनियों को ठहर जाने दो, क्योंकि ’गरिमा की लेखनी’ बोल उठी है। अपनी पुस्तकें एक ओर रख दो क्योंकि वह ’ग्रंथ’ प्रकट हो चुका है जिसमें वह सब कुछ निहित है जो पहले कहा जा चुका है और जो धरती के सभी निवासियों के लिए पर्याप्त है। अपने प्रभु, उस सर्वदयामय, के नाम से निश्चय के क्षितिज के ऊपर उठ और उन पर्दों को छिन्न-भिन्न कर दे जो तेरे और सम्पूर्ण सृष्टि के उस प्रभु के बीच आ पड़े हैं।

14. “इस तरह आदेशित करती है तुझे वह ’चेतना’ जिसने इसलिए अपना जीवन उत्सर्ग किया ताकि यह संसार स्फूर्ति से भर सके और हर हृदय की ’अभिलाषा’ का प्रादुर्भाव हो सके। और वह, वस्तुतः, सत्य की शक्ति से प्रकट हो चुका है। उसका अनुसरण कर और पहले के समयों की घोषणाओं के सम्बंध में जो कुछ भी तेरे पास है उससे चिपके न रह। क्योंकि तुरही की आवाज गुंजित हो चुकी है और देखो! निरर्थक कल्पना की धरती एकदम से फट पड़ी है, और ’भव्यता की वाणी’ गरिमा के शिविर से यह कहते हुए बोल उठी है: इस युग में साम्राज्य प्रभु का है - वह जो है सर्वसम्पदामय, सर्वशक्तिमान, परम उदात्त, परम महान! मृतक उठ चुके हैं और आत्माओं को एकत्रित किया जा चुका है और फिर भी हम देख रहे हैं कि तुम सब अभी भी असावधानी और लालसा की कब्रों में सोए पड़े हो। हे लोगों! ईश्वर से डरो, मृतकों के बीच से उठ खड़े हो और अपने मुखड़ों को ’उसकी’ कृपा के उस ’दिवानक्षत्र’ की ओर उन्मुख करो जो इस देदीप्यमान क्षितिज पर जगमगा रहा है। वस्तुतः, मुझे उसके आदेश की प्रतीक्षा है ताकि उसकी आज्ञा से मैं इस संसार में वैसे ही अवतरित हो सकूँ जैसे मैं यहाँ से तिरोहित हुआ था। सत्य ही, जो कुछ भी उसकी इच्छा है उसे निर्धारित करने में वह सामर्थ्‍यवान है।

15. “हे ईशवाणी (गॉस्पेल) के अनुगामियों! क्या तुम्हें यरुशलम की तलाश है जबकि उसका पदार्पण हो चुका है जिसने वहाँ मात्र अपनी इच्छा के संकेत से ’ईश्वर के गृह’ का निर्माण किया है? बहुत दूर भटक चुके हो तुम सब अपनी भूल के पथ पर! निश्चित रूप से, इस युग में किसी भी कार्य को तब तक स्वीकार नहीं किया जाएगा जब तक कि उसे ’उसकी’ अनुमति से नहीं किया जाएगा और ’उसके’ प्रेम के निमित्त किए गए आह्वा्न के सिवा अन्य कोई भी आह्वा्न ईश्वर तक नहीं पहुँचेगा। इस तरह निर्णय को पूरा किया गया है और उसके द्वारा आदेश संस्थापित किया गया है जो है सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञाता।“

16. यह वह युग है जिसमें मूसा ने हमारे - सर्वशक्तिमान - के नाम के सिनाई पर्वत से यह कहते हुए अपनी आवाज मुखरित की: “हे लोगों! वस्तुतः वह युग आ चुका है! यही है वह जिसके बिछोह में मैं आकांक्षा के मरुस्थल में फूट-फूट कर रोया था, और जिसके प्रेम के निमित्त मैंने उत्कट प्रेम के बियावान में विलाप किया था। और जब मैंने उसकी निकटता के अभयारण्य में प्रवेश करना और उसके सौन्दर्य पर दृष्टि केन्द्रित करना चाहा तो उसने अपनी संप्रभु सामर्थ्‍य की शक्ति से मुझे अवरोधित किया और मेरे हृदय की अभिलाषा तक पहुँचने से मुझे रोक दिया। तदुपरांत उसने यह कहते हुए मुझे सम्बोधित किया: ’तुम मुझे कभी नहीं देखोगे!’ और उसने मुझे अपने शक्तिशाली सिंहासन की आभाओं के पास वापस लौटा दिया। उसके बाद मैं ऐसी उत्कंठा से भर उठा कि मैं उसका वर्णन करने में अशक्त हूँ और सच्चे अनुयायियों के श्रवण उसे सुन पाने में असमर्थ हैं। लेकिन, देखो, अब वह सत्य की शक्ति से अवतरित हुआ है और उसने अपना सौन्दर्य तुम्हारे समक्ष उजागर कर दिया है। हर क्षण वह यह घोषणा करता है: ’हे सृष्टि के समुदाय, देखो और तुम मुझे निहार सकोगे!’ ईश्वर की सौगन्ध! यह वह ’शब्द’ है जो तुम्हारे प्रभु, उस सर्वदयावंत, के मुख से निकला है। यदि तुम सब निष्पक्षता से निर्णय करने वाले हो तो तुम्हारे योग्य यही है कि तुम उस पर अपनी आत्माएँ न्योछावर कर दो। इस तरह, हे लोगों! मैंने तुम्हें उसके बारे में सूचित किया है जिससे दूरी ने मेरे हृदय को फाड़ कर रख दिया है और जिसने मुझे वियोग का प्याला पीने को दिया है। उसके साक्षी बनो और असावधान लोगों में से न बनो। धन्य हैं तुम्हारे नेत्र जिन्होंने देखे हैं और तुम्हारे कान जिन्होंने सुने हैं। और अफसोस है उनके लिए जिन्होंने इस ज्योतिर्मय ’दर्शन’ से स्वयं को वंचित रखा है।“

17. यह वह युग है जबकि ’बयान का बिंदु’ स्वर्ग के बीचों-बीच से यह कहते हुए पुकार उठा: “हे लोगों! वही है वह जिसके पथ पर मैंने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया। वह वही है जिसके निमित्त मैंने स्वयं को प्रकट किया और जिसकी उपस्थिति का सुसमाचार मैंने तुझे दिया। सावधान कि कहीं तू उसी को इन्कार न कर दे जिसके बिना ‘बयान6 का दिवानक्षत्र’ कभी उदित नहीं हुआ होता और न ही ’सर्वदयालु’ के श्लोकों को प्रकट किया गया होता। ईश्वर की सौगन्ध! वही है वह जिसने आभ्यंतरिक अर्थ और व्याख्या का प्रभात फूटने दिया और जिसने धरती के सभी राष्ट्रों के समक्ष स्वर्गिक पुनर्मिलन के कपाटों को खुलने दिया। नामों की नगरियाँ उसी के ’नाम’ से अलंकृत की गई हैं, चुने हुए लोगों के हृदयों को उसी के स्मरण से प्रदीप्त किया गया है। सावधान कि कहीं तू उससे वैसा ही व्यवहार न कर बैठना जैसा कि तूने मुझसे किया था। मैं साक्षी देता हूँ कि जो कोई भी स्वर्ग में और धरती पर हैं उन सबके लिए मैं उसके प्रकटीकरण का अग्रदूत मात्र था और मैंने ’बयान’ को उसी की अनुमति और सत्कृपा पर निर्भर किया था। परमात्मा की सौगन्ध! यह उसी का प्रेम है जिसके निमित्त मैं तुम्हारे बीच आया और तुम्हारा सहचर बना। यदि उसकी बात न होती तो निस्संदेह मैंने एक भी शब्द या श्लोक प्रकट नहीं किया होता। उसकी दया के परिधान का आंचल थाम और उसके प्रेम की डोर को दृढ़ता से पकड़। यह वह युग है जब एक-एक परमाणु यह घोषणा कर रहा है: ’सभी नामों और विभूषणों के धारणकर्ता की सौगन्ध! वस्तुतः, वह जिसका आह्वा्न वे सब करते हैं जो स्वर्ग में हैं, आ चुका है!’”

18. गुणगान हो तेरा, हे मेरे परमेश्वर कि तूने इस परम ज्योतिर्मय युग से अनन्तता की पुस्तक की भूमिका अलंकृत की है - वह युग जिसमें तूने सभी रचित वस्तुओं पर अपने परम उत्कृष्ट नामों और परम उदात्त विभूषणों की आभा बिखेरी है। यह, वस्तुतः, वह दिवस है जिसमें तूने यह सुनिश्चित किया है कि तेरा प्रत्येक नाम तेरे सभी नामों की क्षमताओं से सम्पन्न हो। अतः, धन्य हैं वे जो तेरी ओर उन्मुख हुए हैं, जिन्होंने तेरा सान्निध्य प्राप्त किया है और तेरे आह्वान की ओर ध्यान दिया है।

19. हे प्रभो, मेरे परमात्मा! इस दिवस के नाम पर और तेरे उस चरम ’नाम’ के नाम पर जिससे ’महानतम महासागर’ तरंगित हुआ, मैं याचना करता हूँ तुझसे कि बहा के लोगों की उनसे रक्षा कर जिन्होंने तेरे सामर्थ्‍यशाली चिह्नों में अविश्वास किया है। तब उन्हें, हे मेरे ईश्वर! तेरे अभ्युदय और तेरी सामर्थ्‍य के व्याख्याता बना, ताकि वे तेरा महिमा-मण्डन करने और तेरे सेवकों के बीच इस तरह तेरी स्तुति का समारोह मनाने उठ खड़े हों कि न तो धरती के मनुष्यों के आवरण और न ही उनके प्रलोभन, और न ही उनके आक्रमण जो तेरी ज्योति को बुझा देने के लिए उठ खड़े हुए हैं, उन्हें तुझसे दूर रख सकें। हे ईश्वर! उन्हें उन मृदुल बयारों से वंचित न कर जो इस युग में प्रवाहित हो रही हैं - वह युग जिसमें एक-एक परमाणु यह घोषणा करता है: “वस्तुतः, तुम्हीं हो परमेश्वर! तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है!” हे प्रभो, उन्हें अडिगता और निश्चय के विभूषणों से अलंकृत कर और सम्पूर्ण सृष्टि के मध्य उन्हें अपने धर्म का पुरोधा बना।

20. हे मेरे ईश्वर और सभी लोकों के परमेश्वर! हे मेरी अभिलाषा और हर बोध-सम्पन्न हृदय की अभिलाषा! मैं याचना करता हूँ तुझसे ’उसके’ नाम पर जिसने तेरे प्रकटीकरण और तेरी प्रेरणा के सूर्य को उदित किया है कि इस युग के लोगों के लिए तू वह निर्धारित कर जो तूने अपने सेवकों के बीच चुने हुए जनों के लिए निर्धारित किया है। अतः उनके पास अपनी कृपा का ऐसा उदार प्रवाह भेज जैसा कि पहले कभी किसी को प्राप्त नहीं हुआ है और उन्हें अपनी निकटता के दरबार और अपने सान्निध्य के अभयारण्य की परिक्रमा करने वालों में से बना। तब उन्हें इस तरह अपने धर्म में उत्प्रेरित कर जो लोगों के हृदयों और आत्माओं को प्रज्‍वलित करके रख दे। उनमें से प्रत्येक को अपने उन सेवकों के बीच, जो स्वार्थ और वासना के पर्दों के कारण तेरे ’सार-तत्व’ और तेरे ’संकेतों के दिवास्रोत’ के प्रकटीकरण को पहचानने से बाधित रहे हैं, अपने सुमिरन का प्रदीप बना।

21. तू वह है, हे मेरे ईश्वर! जिसकी शक्ति और सम्प्रभुता का प्रमाण हर सामर्थ्‍यवान ने दिया है, और जिसकी गरिमा और भव्यता के साक्षी है हर महान व्यक्ति। अतः, अपने प्रियजनों को वह प्रदान कर जो इस युग के समीचीन है - वह युग जिसे तूने अपने सभी युगों की भृकुटि के ऊपर एक ज्योतिर्मय अलंकरण बनाया है और जिसे तूने अनन्तता के क्षितिज के ऊपर जगमगाया है। अतः, अपनी एकता के मेघों और अपनी कृपा के स्वर्ग से उनके पास वह भेज जो उन्हें तेरे सिवा अन्य सबकुछ त्याग देने में सक्षम बना सके।

22. हे प्रभो! अपनी करुणा के करों से उन्हें अनन्त जीवन की उस सरिता से एक बूंद पीने को दे जो तेरे सिंहासन की दाहिनी भुजा से प्रवाहित होती है और उन्हें उसका दामन थामने में सहायता दे जो तूने अपने मांगलिक ’ग्रंथ’ में प्रकट किया है। तू, वस्तुतः, जैसा चाहता है निर्धारित करता है। तुझ परम उदात्त, सार्वभौम संरक्षक, सर्व-बाध्यकारी, सर्वशक्तिमान, परम उदार के सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है।

## 17

## ईश्वर के नाम पर, जो है सर्वशक्तिमंत, अप्रतिबाधित!

1. गुणगान हो तेरा, हे मेरे ईश्वर! कि तूने अपने प्रियजनों को अपने उस ’महानतम उत्सव’ का समारोह मनाने एकत्रित किया है जबकि तूने उन सबके ऊपर जो स्वर्ग में और धरती पर हैं अपने परम उत्कृष्ट नामों की आभा बिखेरी है, वह उत्सव जब कि ’सत्य का सूर्य’ तेरी इच्छा के क्षितिज पर प्रखरता से चमक उठा है और ’पुरातन सम्राट’ तेरी कृपा के सिंहासन पर विराजमान हुआ।

2. यह रिज़वान का नवां दिन है, हे मेरे ईश्वर! और आज के दिन तेरे प्रियजनों में से एक ने, तेरे ’सौन्दर्य’ के प्रति उसके प्रेम के प्रतीकस्वरूप और तेरे प्रति उसकी श्रद्धा की उत्कंठा के कारण, उसे जो कि तेरे ’स्व’ का प्रकटीकरण और तेरी गरिमा का ’दिवास्रोत’ है, कारागार में अपने कक्ष से दूसरे कक्ष में जाने के लिए आमंत्रित किया है। वहाँ तेरी उपस्थिति के सम्मुख उसने तेरे वे उपहार प्रस्तुत किए हैं जो वह प्रस्तुत करने में सक्षम था, यद्यपि लोगों ने उसकी और तेरे प्रियजनों में से अन्य लोगों की सारी सम्पदाओं को लूट लिया था। हे प्रभो, चूंकि तूने उन सबको अपने चतुर्दिक एकत्रित किया है और उन्हें यह परम कृपा प्राप्त करने में सहायता दी है, अतः उन्हें अपने धर्म में अडिगता का वरदान दे और उनके हृदयों को परस्पर इस तरह जोड़ दे कि उनके बीच कोई भी विभेद उत्पन्न न हो सके। अतः यह वरदान दे कि वे सभी लोगों को इस ’नक्षत्र’ की ओर मार्गदर्शित कर सकें जिसके समान इस सृष्टि के नयन ने पहले कभी नहीं देखे और जो गोचर-अगोचर लोकों में अतुल्य बनकर खड़ा है।

3. तू यह भली-भाँति जानता है, हे मेरे प्रभो! कि वे सब लोग जो तेरे चारों ओर रहते हैं उनकी इच्छा थी कि वे रिज़वान के दिनों में तेरा स्वागत करें। अपने-अपने साधनों के अनुसार उनमें से कुछ ही यह सम्मान प्राप्त करने में सक्षम हो सके जबकि अभाव के कारण अन्य लोग इससे वंचित ही रह गए। इन लोगों ने श्वेत पात्रों में चीन देश की पत्तियों7 को उबाल कर बनाए गए लाल रंग के आसव एक-दूसरे को देते हुए ही स्वयं को संतुष्ट कर लिया। हे ईश्वर! उस ’शब्द’ के नाम पर जिसे तूने लोगों के हृदयों और आत्माओं को आकर्षित करने वाला चुम्बक बनाया है, वह ’शब्द’ जिसके माध्यम से तूने अपने सेवकों को अपनी स्नेहिल करुणा के स्वर्ग एवं अपनी कृपा और उदारता के क्षितिज की ओर आकर्षित किया है, मैं तुझसे याचना करता हूँ कि उन पहले वाले जनों द्वारा तेरे पथ पर किए गए सभी कर्मों को स्वीकार कर और बाद वाले उन जनों को जो कुछ भी करना अभीष्ट रहा हो उसके लिए उनका पुरस्कार निर्धारित कर। तू, वास्तव में, कृपा और उदारता का, भव्यता और गरिमा का स्वामी है। हे प्रभो!, उनमें से कतिपय जनों को यह सहायता दे कि वे स्वयं को जानें और अपनी वाणी को नियंत्रित करें ताकि वे ऐसा कुछ भी न बोलें जिनसे उनका रुतबा छोटा होता हो और उनके कार्य निष्फल होते हों। वस्तुतः, तेरी शक्ति हर वस्तु पर है।

4. हे स्वामी, तेरे प्रियजनों के बीच जो निष्ठावान हैं तू उनका विलाप सुन रहा है जिन्हें इन दिनों में तुझसे मिलने से रोक दिया गया - उन दिनों में जिन्हें तूने अपने लोगों के लिए एक उत्सव नियत किया है और तेरे लोक के निवासियों के लिए एक निधि और सम्मान ....हे प्रभो, तेरे प्रति अपने प्रेम के कारण उन्होंने जो कुछ भी उद्दिष्ट किया हो उसे उनसे स्वीकार कर और उनमें से सबके और प्रत्येक के लिए वह पुरस्कार नियत कर जो तेरे भण्डार में उनके लिए संचित है जिन्होंने सभी अच्छाइयों को प्राप्त कर लिया है। वस्तुतः, तेरी शक्ति हर वस्तु पर है।

5. और फिर, हे मेरे परमेश्वर, वे लोग जो ’हा’8 की भूमि में बिखरे पड़े हैं उन पर अपनी कृपा भरे नेत्रों की दृष्टि डाल। वे वहाँ तभी से रुके पड़े हैं जबसे उन्हें ’तेरी एकता के वृक्ष’ तले शरण पाने से रोक दिया गया था। हे ईश्वर, उन्हें वे वस्तुएँ देने से इन्कार न कर जो तेरे पास हैं। सत्य ही, तू स्वर्गों और धरती का अधिनायक है। तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है - सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ!

6. हे परमेश्वर! तेरी शक्ति की महिमा मेरी साक्षी है। सबके लिए यही शोभनीय है कि प्रत्येक भूभाग में तेरे उत्कट प्रेमियों के विलापों और तेरे शत्रुओं के हाथों यातना भोग रहे तेरे मित्रों की आहों को सुनने वाले तेरे श्रवण के लिए वे अपने प्राण न्योछावर कर दें। सत्य ही, उनके विलाप के स्वर तेरे प्रति उनके प्रेम के कारण मुखरित हुए हैं और उनके हृदय तेरे दिनों में तेरे वियोग की अग्नि से विह्वल हैं। हे गरिमा के मुखमण्डल, तेरी इन घोर यातनाओं पर मेरी आत्मा बलि हो जाए और तेरे धैर्य के लिए मेरी चेतना कुर्बान हो जाए, हे तू जिसके हाथ में बागडोर है स्वर्ग और धरती के साम्राज्य की!

7. हे उनके ’परम प्रियतम’ जो तेरे प्रति उत्कंठित हैं और हे उनकी ’अभिलाषा’ जो तेरे प्रेम को संजोये हुए हैं! मैं तेरी गरिमा की सौगन्ध खाता हूँ कि यदि कोई अंतर्दृष्टि-सम्पन्न व्यक्ति इस पावन ’पाती’ को दबाकर देख पाता तो उसे इसमें से मेरे हृदय का लहू बहता हुआ दिखता - वह लहू जो तेरे और उनके प्रेम के लिए विगलित हुआ है जिन्होंने तेरी ओर अपने कदम बढ़ाए और जो इस नगर या इसकी सीमाओं तक आ पहुँचे किन्तु फिर भी जिन्हें तेरे मुखड़े के दर्शन से रोक दिया गया। हे शक्ति और सामर्थ्‍य के स्वामी! तेरे इस धैर्य के लिए बलिदान के रूप में मेरा सम्पूर्ण अस्तित्व उत्सर्ग हो जाए! तेरे द्वारा यह सब कुछ झेलने के लिए मेरी आत्मा बंधक बन जाए, हे तू जिसके महाक्रोध के भय से नामों के साम्राज्य के निवासियों के हृदय थर्रा उठते हैं!

8. हे बहा के लोगों के दिलों के चैन! मैं प्रमाणित करता हूँ, हे मेरे ईश्वर! कि तेरे सिवा अन्य कोई भी तेरे अपरीक्षेय विवेक की थाह नहीं पा सकता अथवा उन सच्चाइयों और रहस्यों को ही जान सकता है जो उन सभी वस्तुओं में निहित हैं जो तेरी शक्ति के अगणित प्रतीकों और तेरी इच्छा के प्रकटीकरणों से निकले हैं। और फिर मैं, हे ईश्वर! यह अनुनय करता हूँ कि मेरे प्रियजनों को इस तरह सक्षम बना कि वे अपने चरित्र और आचरण के माध्यम से तेरे प्रति अपना आतिथ्य झलका सकें, ताकि उसके द्वारा तेरी स्नेहिल दया की स्वर्गिक मेज तेरे सभी सेवकों के समक्ष बिछाई जा सके और दुनिया के सभी लोग उसके चारों ओर एकत्रित हो सकें। वस्तुतः, अपने बन्धुओं के प्रति आतिथ्य दर्शाने का यही सच्चा अर्थ है। तेरी शक्ति और सामर्थ्‍य, वस्तुतः, सभी वस्तुओं के बराबर है। गुणगान हो तेरा, हे लोकों के प्रभु, तू जिसकी शक्ति स्वर्गों और धरती सबको आच्छादित किए हुए है।

## 18

## परम गरिमावान परमात्मा के नाम पर

1. महिमावंत है तू, हे प्रभो, मेरे परमेश्वर! यह रिज़वान उत्सव के दिनों में से एक है जिसमें तूने धरती के सभी लोगों के ऊपर अपने नाम, सर्वदयालु, की आभा बिखेरी है और सभी रचित जीवों पर अपनी शक्ति और सम्प्रभुता प्रकट की है। तू देखता है, हे मेरे ईश्वर! कि कैसे इस दिवस में तुम्हारे एक प्रियजन ने तेरे ’प्रकटीकरण के सार-तत्व’ को इस कारागार में एक कक्ष से दूसरे कक्ष में आमंत्रित किया है, जहाँ तेरे नाम पर एक सम्मिलन आयोजित किया गया है और जिसे तेरे ही ’स्व’ के विभूषण से इस तरह अलंकृत किया गया है कि तेरे सौन्दर्य का ’सूर्य’ इसके क्षितिज पर जगमगा उठा है। धन्य है वह जो उसमें शामिल हुआ है, धन्य है वह दिवस जो तेरे प्रकटीकरण से सम्मानित है, और धन्य है वह भूमि जो तेरी मुखमुद्रा के आलोक से प्रकाशित हुई है।

2. हे प्रभो, उसके लिए और अपने उन सेवकों के लिए जिन्हें तुझसे मिलने से बाधित कर दिया गया है वह पुरस्कार निर्धारित कर जो उनके लिए आदेशित है जिन्होंने तेरा सान्निध्य प्राप्त किया है और तेरे नाम के गुणगान और तेरे सुमिरन के लिए सम्मिलन बुलाया है। तब उनके लिए वह लिख डाल जो तूने उनके लिए अंकित किया है जिन्हें तेरी निकटता के पास तक आने का आनन्द प्राप्त है। तेरी शक्ति, वस्तुतः, सभी वस्तुओं के तुल्य है।

## 19

## वही है ईश्वर!

1. महिमावंत है तू, हे प्रभो, मेरे परमेश्वर! यह रिज़वान के उत्सव के दिनों में से एक है जब कि उसके निवेदन को स्वीकार करते हुए जिसकी उत्कट श्रद्धा ने उसे तुझे आमंत्रित करने के लिए प्रेरित किया है, इस कारागार का एक हिस्सा उसके प्राकट्य के लिए सुसज्जित किया गया है जो तेरे सौन्दर्य का’ ’व्याख्याता’ है। सर्वस्तुति हो तेरी क्योंकि, उनके प्रति अपनी उदार कृपा के प्रतीक के रूप में जो तेरी छाया तले निवास करते हैं और तेरे अस्तित्व की परिक्रमा करते हैं, तू इस कारागार के क्षितिज पर इस तरह देदीप्यमान हुआ है कि उससे सम्पूर्ण सृष्टि आलोकित हो उठी है।

2. यह वह दिवस है जब कि तूने अपनी वाणी को उन्मुक्त किया है और संसार के लोगों को आंतरिक अर्थ और वचनों के रत्नों का मुक्तहस्त दान दिया है। अतः, हे प्रभो, इस स्वर्गिक प्याले से धरती पर रहने वाले सभी लोगों को स्फूर्ति से भर दे और वह निर्धारित कर जो बहा के लोगों के बीच ऐसे जनों के लिए लाभकारी हो जो तेरे मुखड़े को देखने के लिए लालायित हैं किन्तु, हे नामालंकरणों के सम्राट और स्वर्ग एवं धरती के अधिनायक! जिन्हें तेरे शत्रुओं के कुकृत्यों के कारण इससे बाधित होना पड़ा। और फिर इन दिनों में जब कि हर अधम को उदात्त बना दिया गया है, हर आस्थावान तेरी कृपा से विभूषित हुआ है, प्रत्येक जड़ हृदय में आग सुलगा दी गई है, हर निर्धन को समृद्ध बना दिया गया है, और हर साधक को सन्मार्ग पर भेज दिया गया है, उन्हें अपनी अनगिनत कृपाओं का अंशदान दे।

3. प्रशंसित है तू, हे मेरे ईश्वर! कि तूने अपने प्रियजनों को विशेषित किया है और अपने लोगों के बीच से उन्हें चुना है और इसलिए कि तूने इस स्थल से उनकी ओर अपनी दृष्टि की है जहाँ वह जो कि ’तेरे धर्म का मूर्तिमान स्वरूप’ है बंदी बना पड़ा है। हे ईश्वर! जो कुछ भी तेरे पास है उन्हें उनसे दूर न कर बल्कि अपने प्रकटीकरण की बयारों से उनके हृदय को ऐसा आनन्द-विभोर कर दे कि वे स्वयं को तेरे सिवा अन्य सभी वस्तुओं से अनासक्त कर लें और अपने मुखड़ों को तेरी कृपा और उदारता के दरबार की ओर उन्मुख कर लें। तू जो भी चाहे वह करने में सक्षम है और तेरी सामर्थ्‍य सभी वस्तुओं पर है। सर्वस्तुति हो तेरी, हे लोकों की अभिलाषा!

## 20

## वह है परम पावन, परम गरिमावान

1. सर्वस्तुति हो तेरी, हे प्रभो, मेरे परमेश्वर! यह तुम्हारे रिज़वान उत्सव के दिनों में से एक है जब कि तेरे एक सेवक ने तेरे ’सार-तत्व के प्रकटीकरण’ और तेरी ’सम्प्रभुता के प्रकटकर्ता’ के पास एक आमंत्रण भेजा है कि, और तेरे सर्व-गरिमामय ’सौन्दर्य’ के स्वागत के लिए इस कारागार में एक स्थान को सुसज्जित किया है, हे तू जो स्वामी है धरती और स्वर्ग का! सर्वगरिमा हो इस घड़ी की जिसमें वह जो तेरी अलौकिक सामर्थ्‍य का ’दिवास्रोत’ है ने इस कारावास के एक कक्ष से दूसरे कक्ष की ओर अपने कदम बढ़ाए हैं। हे तू जो ’नामों का सम्राट’ और स्वर्ग एवं धरती का रचयिता है, मैं तुझसे याचना करता हूँ कि अपने ऐसे प्रियजनों के लिए जिन्हें तेरी करुणा के प्रांगण में प्रवेश करने और तेरी शक्ति के सिंहासन के समक्ष खड़े होने से बाधित कर दिया गया है, वह पुरस्कार लिख डाल जो उन लोगों के लिए तय किया गया है जिन्होंने तेरा सान्निध्य प्राप्त किया है और उसे निहारा है जो तेरा ’सौन्दर्य’ है।

2. हे प्रभो, तेरे वियोग और तुझसे दूर रहने के कारण उठने वाली उनकी आहों और उनके विलाप को तू सुन रहा है। मैं अनुनय करता हूँ तुझसे कि उनके लिए वे समस्त शुभ वस्तुएँ निर्धारित कर जो तेरे पास हैं। तू जैसा चाहे वैसा करने में समर्थ है। तुझ सर्वशक्तिमान, सर्वप्रशंसित के सिवा और कोई ईश्वर नहीं है।

## 21

## लौह-ए-आशिक व माशूक

## (प्रेमी और प्रियतम की पाती)

## वह है उदात्त, अलौकिक, सर्वोच्च

1. हे ईश्वर के कोकिलों, स्वयं को खिन्नता और लाचारी के कांटों और झाड़ियों से मुक्त कर और अपने डैने फैला कर कभी धूमिल न होने वाली आभा की गुलाब-वाटिका की ओर उड़ान भर। हे धूल पर रहने वाले मेरे मित्रों! अपने स्वर्गिक आवास की ओर शीघ्रता से बढ़। स्वयं के समक्ष इस आनन्ददायक सुसमाचार की घोषणा कर: “वह जो ’परम प्रियतम’ है, आ चुका है! उसने स्वयं को ईश्वर के प्रकटीकरण के मुकुट से सुशोभित किया है और लोगों के मुखड़ों के सम्मुख ’उसके’ पुरातन स्वर्ग के कपाट खोल दिए हैं।“ सभी नेत्रों को उत्फुल्ल होने दे और प्रत्येक कान को आनन्द-विह्वल हो जाने दे क्योंकि यही समय है ’उसके’ सौन्दर्य को निहारने का, यही उपयुक्त समय है उसकी आवाज को ध्यान से सुनने का। प्रत्येक उत्कंठित प्रेमी के समक्ष यह घोषणा कर: “देखो, लोगों के बीच तुम्हारा ’परम प्रियतम’ आ चुका है! और प्रेम के ’सम्राट’ के संदेशवाहकों तक यह शुभ समाचार पहुंचा: “देखो, वह ’आराध्य’ अपनी सम्पूर्ण गरिमा से सुसज्जित होकर प्रकट हुआ है!” हे उसके सौन्दर्य के प्रेमियों! उससे बिछोह की अपनी वेदना को अनन्त पुनर्मिलन के आनन्द में बदल डाल और उसकी उपस्थिति के माधुर्य को उसके दरबार से तेरे दूर रहने की कड़वाहट मिटा देने दे।

2. देख कि दिव्य गरिमा के बादलों से बरसने वाली ईश्वर की अगणित कृपाओं ने इस युग में किस तरह से पूरे विश्व को आवृत्त कर रखा है। अतीत के युगों में जहाँ प्रत्येक प्रेमी ने अपने ’प्रियतम’ को पाने की कोशिश की और उसे तलाशा, (इस युग में) ’प्रियतम’ स्वयं अपने प्रेमियों को पुकार रहा है और उन्हें अपना सान्निध्य प्राप्त करने को आमंत्रित कर रहा है। सावधान, कि कहीं तू ऐसी बहुमूल्य कृपा को गंवा न दे, सावधान, कि कहीं तू उसकी उदारता के ऐसे महत्वपूर्ण संकेत को कम करके न आंकने लगे। उन लाभों को न त्याग जो कभी भी विकृत नहीं हो सकते और जो नष्ट होने वाला है उससे संतुष्ट न हो जा। उस पर्दे को ऊपर उठा जिसने तेरी दृष्टि को बाधित कर रखा है और उस अंधकार को विच्छिन्न कर दे जिससे वह ढंका हुआ है, ताकि तू ’प्रियतम’ के मुखड़े के खुले सौन्दर्य को निहार सके, उसे देख सके जिसे किसी भी नेत्र ने नहीं देखा है और वह सुन सके जो किसी भी कान ने नहीं सुने हैं।

3. हे नाशवान पक्षियों, सुनो मेरी बात! अपरिवर्तनीय आभा की ’गुलाब-वाटिका’ में एक ’फूल’ खिलने लगा है जिसकी तुलना में अन्य सभी फूल कांटों जैसे हैं, और ’जिसकी’ कांति के आगे सौन्दर्य का सार-तत्व भी म्लान होकर मुर्झा जाएगा। अतः, उठ और अपने हृदय के पूरे उत्साह से, अपनी इच्छा की पूर्ण उत्कंठा से और अपने समस्त अस्तित्व के संकेन्द्रित प्रयासों से ’उसकी’ उपस्थिति के स्वर्ग को पाने का प्रयत्न कर और उस कभी न मुरझाने वाले ’फूल’ की सुरभि, पवित्रता की सुमधुर सुगन्ध और स्वर्गिक गरिमा के सुवास का एक अंश ग्रहण करने का जतन कर। जो कोई भी इस परामर्श पर ध्यान देगा वह अपनी समस्त बेड़ियों को छिन्न-भिन्न कर देगा, आनन्द-विह्वल प्रेम का आस्वाद ग्रहण करेगा, अपने हृदय की अभिलषा को प्राप्त करेगा और अपनी आत्मा को अपने ’प्रियतम’ के हाथों में सौंप देगा। अपने पिंजरे को तोड़कर वह, चेतना के पखेरू की तरह पंख फैलाकर, अपने पवित्र और अनन्त निविड़ की ओर उड़ चलेगा।

4. रात के बाद दिन और दिन के बाद रात्रि का आगमन हो चुका है और तेरे जीवन की घड़ियाँ और क्षण आकर चले गए, किन्तु तुझमें से कोई भी, एक क्षण के लिए भी, उससे अनासक्त होने को सहमत न हो सका जो नाशवान है। स्वयं को स्फूर्त कर, ताकि थोड़े से क्षण जो अभी भी तेरे हैं वे नष्ट-भ्रष्ट न हो जाएँ। चमकती हुई बिजली की तेजी से तेरे ये दिन गुजर जाएंगे और तेरे ये शरीर धूल के चंदोवे के नीचे चिर विश्रान्ति प्राप्त करेंगे। फिर तुम क्या हासिल कर लोगे? अपनी विगत विफलताओं के लिए तुम भला कैसे प्रायश्चित कर सकोगे?

5. अनन्त ’प्रदीप’ अपनी उन्मुक्त गरिमा से जगमगा रहा है। देखो कि कैसे इसने प्रत्येक नाशवान आवरण को भस्मीभूत कर दिया है। हे उसके प्रकाश के प्रेमी परवानों! हर संकट का डटकर सामना कर और अपनी आत्माओं को पावन कर इसकी लहलहाती हुई लपट के हवाले कर दे। हे तू उसके लिए तृषित! हर पार्थिव मोह-माया त्याग दे और अपने ’प्रियतम’ के आलिंगन के लिए शीघ्रता कर। अनुपम उत्साह के साथ उसका सान्निध्य पाने के लिए तेजी से कदम बढ़ा। वह ’फूल’ जो अभी तक लोगों की दृष्टि से सुदूर ओझल था, वह तुम्हारी आँखों के सामने अनावृत है। अपनी गरिमा की अबाध कांति के साथ, वह तुम्हारे सामने खड़ा है। उसकी आवाज सभी पावन और पवित्र जनों को अपने निकट आने और उससे एकाकार होने के लिए आमंत्रित कर रही है। निहाल है वह जो उसकी ओर उन्मुख होता है, भला हो उसका जिसने उसका सान्निध्य पाया है और जिसने ऐसी विलक्षण मुखमुद्रा की प्रभा पर अपनी दृष्टि केन्द्रित की है।

## 22

## तेरे नाम पर, तू जो है परम विलक्षण, परम गरिमामय!

1. हे मेरे ईश्वर, चूंकि तूने स्वयं को अपनी सर्वातीत गरिमा के सिंहासन पर आसीन किया है और तू अपनी एकता के दया-आसन पर विराजमान हुआ है अतः यह तेरे लिए उपयुक्त है कि सभी जीवों के हृदयों से वह सबकुछ मिटा डाल जो उन्हें तेरे दिव्य रहस्यों के अभय-स्थल में प्रवेश करने से रोक सके और तेरी दिव्यता के शिविर में आने से उन्हें बाधित कर सके, कि सभी हृदय तेरे सौन्दर्य को प्रतिबिम्बित कर सकें, तुझे झलका सकें, तेरे बारे में बोल सकें और यह कि सभी सृजित वस्तुएँ तेरी परम भव्य सम्प्रभुता के चिह्नों को दर्शा सकें और तेरी परम पवित्र सत्ता के प्रकाश की आभाएँ बिखेर सकें और यह कि वे सब जो स्वर्ग में और धरती पर हैं वे तेरी एकता की स्तुति और उसका महिमा-गान कर सकें और तुझे गरिमा प्रदान करें कि तूने उसके माध्यम से उनके समक्ष अपने ’स्व’ को प्रकट किया है जो तेरी एकता का प्रकटकर्ता है।

2. तब फिर, हे मेरे ईश्वर! अपने सेवकों के ऊपर से स्वार्थ और लालसा के परिधानों को उतार फेंक, या यह वर दे कि तेरे लोगों के नेत्र ऐसी ऊँचाइयों तक उठ सकें कि वे अपनी अभिलाषाओं में तेरी अनन्त गरिमा की मृदुल बयारों की सरसराहट के सिवा अन्य किसी भी वस्तु का बोध नहीं करें और अपने आत्म के भीतर स्वयं तेरे दयालु ’आत्म’ के प्रकटीकरण के सिवा अन्य कुछ भी न पहचानें और यह कि धरती और उसपर जो कुछ भी है उन सभी वस्तुओं से मुक्त होकर पावन हो जाए जो तेरे लिए अजनबी है, या ऐसी किसी भी वस्तु से जो तेरे ’स्व’ के सिवा अन्य कुछ भी प्रकट करती हो। तेरे समस्त साम्राज्य में यह सब कुछ तेरी आज्ञा के इस एक शब्द से पूर्ण हो सकता है - ’हो जा’, और वह हो जाएगा। नहीं, बल्कि इससे भी अधिक शीघ्रता से, और फिर भी लोग हैं कि समझते नहीं।

3. महिमावंत, अपरिमित रूप से महिमावंत है तू, हे मेरे प्रियतम! मैं तेरी गरिमा की सौगन्ध खाकर कहता हूँ! अभी इस क्षण - इस आशीर्वादित रात्रि में जो, तेरे निर्णय के अनुसार, उसका स्मरण दिलाती है जो, तेरे द्वारा मेरा उल्लेख किए जाने से पहले या तेरी पवित्रता के दरबार में अस्तित्ववान बनाए जाने से पहले, तेरे सौन्दर्य का सहचर और तेरे मुखड़े को निहारने वाला था - मैं यह मानता हूँ कि तूने वह सब प्रदान कर दिया है जिसकी मैंने याचना की है। मैं यह बोध करता हूँ कि तूने सभी वस्तुओं को अपनी आज्ञा के प्रकटीकरण और अपने हस्तशिल्प के प्रत्यक्ष स्वरूप और अपने ज्ञान का भंडार और अपनी प्रज्ञा का कोषागार बनाया है। और फिर, मैं यह मानता हूँ कि यदि तेरे नामों और तेरे विभूषणों के किसी भी प्रकटीकरण को, भले ही वह सरसों के दाने के बराबर वजन का भी होता, ऐसी किसी भी वस्तु द्वारा थामा जाता जिसे तेरी शक्ति ने सृजित किया है और जो तेरी सामर्थ्‍य से उत्पन्न है, तो तेरे अनन्त हस्तशिल्प की आधारशिलाएँ उसके माध्यम से अधूरी बना दी जातीं और तेरी दिव्य प्रज्ञा के रत्न अपूर्ण हो जाते। क्योंकि अस्वीकृति के अक्षरों का तेरे साम्राज्य में अस्तित्ववान होना आवश्यक है - चाहे उन्हें तेरे ज्ञान की पावन सुरभि से कितनी भी दूर हटा दिया जाए और तेरी महिमा के स्वर्ग से विकीर्ण होते हुए तेरे सौन्दर्य के उदीयमान प्रकाश की विलक्षण आभाओं को वे कितना भी विस्मृत कर दें - ताकि तेरी पुष्टि करने वाले शब्द उनके माध्यम से उदात्त बनाए जा सकें।

4. तेरी सामर्थ्‍य मेरी साक्षी है, हे मेरे परम प्रियतम! इस सम्पूर्ण सृष्टि को तेरी विजय को उन्नत बनाने और तेरे अभ्युदय की संस्थापना के लिए ही अस्तित्व प्रदान किया गया है और तेरे द्वारा निर्धारित सभी सीमाएँ तेरी सम्प्रभुता के संकेतों और तेरी सामर्थ्‍य की शक्ति की घोषणा के सिवा और कुछ नहीं हैं। कितने महान, कितने परम महान हैं सभी वस्तुओं में तेरी विलक्षण शक्ति के प्रकटीकरण! ऐसे हैं वे कि तेरे सृष्ट जीवों में जो अत्यंत अधम हैं वे भी तेरे द्वारा तेरे परम भव्य विभूषण के प्रत्यक्ष रूप बना दिए गए हैं और तेरे हस्तशिल्प के अत्यंत हेय संकेत को भी तेरे परम सामर्थ्‍यमय नाम को प्राप्त करने वाले के रूप में चुना गया है। तेरे निर्णयानुसार दरिद्रता को तेरे वैभव के प्राकट्य का माध्यम बनाया गया है और तुच्छता को तेरी गरिमा की ओर ले जाने वाला पथ और पाप को तेरी क्षमाशीलता के प्रयोग का निमित्त। उन सबके माध्यम से तूने यह प्रदर्शित किया है कि सभी उत्कृष्ट उपाधियाँ तेरी हैं और तेरे परम उदात्त विभूषणों की विलक्षणताएँ तुझसे ही सम्बंधित हैं।

5. हे ईश्वर! चूंकि तूने यह उद्दिष्ट किया है कि सभी रचित वस्तुएँ तेरी सर्वातीत करुणा और कृपा के चंदोवे तले प्रवेश करें और तूने इस सम्पूर्ण सृष्टि पर अपनी भव्य एकता के परिधान की सुरभियों को प्रवाहित करना और सभी वस्तुओं को अपनी उदारता और एकमेवता की दृष्टि से देखना तय किया है, अतः तेरे प्रेम के नाम पर जिसे तूने अपनी अनन्त पावना का मुख्य आश्रय और तेरे उन जीवों के हृदय में प्रदीप्त होने वाली ज्वाला बनाया है, मैं तुझसे याचना करता हूँ कि तेरे उन जनों के लिए जो पूर्णतया तेरे प्रति समर्पित हैं और अपने उन प्रियजनों के लिए जो तुझसे प्रेम करते हैं, अपनी कृपा और उदारता के सार-तत्व से और अपनी करुणा एवं गरिमा की अंतःतम चेतना से अभी इसी क्षण अपनी अलौकिक पावना का स्वर्ग रच डाल और स्वयं अपने सिवा उसे अन्य सबसे उदात्त बना और स्वयं अपने सिवा उसे अन्य सबसे मुक्त एवं पावन कर दे। और फिर उसके भीतर, हे मेरे परमेश्वर! तेरे सिंहासन से प्रदीप्त होते प्रकाशों से, ऐसी सेविकाओं की रचना कर जो तेरे अद्भुत एवं मधुरतम आविष्कार का माधुर्य-गान करें, ताकि वे ऐसे शब्दों से तेरे नाम का महिमा-गायन कर सकें जिन्हें तेरे किसी भी जीव ने नहीं सुना है - चाहे वे तेरे स्वर्ग के अंतःवासी हों या तेरी धरती के निवासी और न ही जिन्हें तेरे किसी भी लोगों द्वारा पहले उसे जाना गया है। तब फिर अपने प्रियजनों के मुखड़ों के समक्ष अपने स्वर्ग के द्वारों को खोल दे ताकि वे कदाचित तेरे नाम से और तेरी सम्प्रभुता की शक्ति से उनमें प्रवेश कर सकें, ताकि उस माध्यम से तेरे द्वारा तेरे चुने हुए जनों के लिए निर्धारित तेरी सार्वभौम कृपाएँ और तेरे विश्वस्त जनों को प्रदत्त तेरे अलौकिक उपहार पूर्णकाम हो सकें, ताकि वे ऐसी मधुरता के साथ तेरे गुणों का महिमा-गान कर सकें जिसका गायन और वर्णन कोई न कर सके और तेरे लोगों में से कोई भी तेरे चुने हुए जनों के रूप में सामने आने, या तेरे प्रियजनों के आदर्श की नकल करने की शैली न समझ सके और यह कि कोई भी व्यक्ति तेरे मित्रों और तेरे शत्रुओं के बीच अन्तर करने से, अथवा वे जो तेरे प्रति समर्पित हैं उन्हें तेरा कट्टर विरोध करने वालों से अलग पहचानने में चूक न सके। तू जो भी चाहे वह करने में समर्थ है और तू सभी वस्तुओं के ऊपर शक्तिशाली और सर्वोच्च है।

6. हे मेरे प्रियतम, अपने किसी भी रचित जीव द्वारा तुझे जानने के प्रयासों से - चाहे वे कितने ही ज्ञानी क्यों न हों - तू कहीं ऊपर, उदात्त, अपरिमेय रूप से उदात्त है, तेरा वर्णन करने के लिए किए जाने वाले किसी भी मानवीय प्रयास से - चाहे वह कितना भी खोजपूर्णं क्यों न हो - महान, अत्यधिक महान है तू! क्योंकि मनुष्य के उच्चतम विचार भी - चाहे उनका चिन्तन कितना भी गहन क्यों न हो - कभी भी उन सीमाओं से परे उड़ान नहीं भर सकते जो तेरे रचित जीवों पर लागू की गई हैं, न ही उन हदों को पार कर सकते हैं जो निर्विवाद रूप से तेरे द्वारा तय कर दी गई हैं। तब फिर वह वस्तु जो सम्पूर्ण सृष्टि को अधिशासित करने वाली तेरी इच्छा से सृजित है, वह वस्तु जो स्वयं ही इस क्षणभंगुर संसार का अंग है, तेरे ज्ञान के पवित्र वातावरण में उड़ान भरने या तेरी सर्वातीत शक्ति के आसन तक पहुंच पाने में कैसे समर्थ हो सकती है?

7. तेरे क्षणभंगुर जीवों द्वारा तेरी अनन्तता के सिंहासन की ओर उड़ान भर सकने, अथवा दरिद्र एवं खिन्न जनों द्वारा तेरी सर्वपर्याप्त गरिमा के शिखर तक पहुँच पाने के प्रयत्नों से उच्च, अत्यंत उच्च है तू! अनन्तकाल से तूने अपने ’स्व’ का वर्णन स्वयं ही अपने ’स्व’ के समक्ष किया है और अपने ही ’सार-तत्व’ में तूने अपने ही ’सार-तत्व’ के समक्ष अपने ’सार-तत्व’ का गौरव बखान किया है। हे मेरे परम प्रियतम! मैं तेरी गरिमा की सौगन्ध खाता हूँ, तेरे सिवा अन्य कौन है जो तुझे जानने का दावा कर सकता है और तेरे सिवा अन्य कौन है जो तेरा समुचित उल्लेख कर सकता है? तू वह है जो अनन्तकाल से अपने साम्राज्य में निवास करता रहा, अपनी सर्वातीत एकता की गरिमा में और अपनी पावन गरिमा की आभाओं में। तेरी सृष्टि के सभी साम्राज्यों में, अमरता के उच्चतम लोकों से लेकर इस अधोलोक के स्तर तक, यदि तेरे सिवा अन्य किसी को भी उल्लेख के योग्य माना जाता तो फिर यह कैसे प्रदर्शित होता कि तू अपनी एकता के सिंहासन पर विराजमान है और तेरे ऐक्य एवं तेरी एकमेवता के विलक्षण गुणों को गौरवान्वित कैसे किया जाता?

8. अभी इस क्षण, मैं उसका साक्षी देता हूँ जिसे स्वर्गों और धरती की रचना करने से पूर्व तूने स्वयं अपने लिए प्रमाणित किया है, कि तू ही ईश्वर है और तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है। अपनी शक्ति के ’प्रकटीकरणों’ के माध्यम से तू अनन्त काल से सामर्थ्‍यवान रहा है और तेरे ज्ञान के ’दिवास्रोतों’, तेरे विवेक के शब्दों के माध्यम से तुझे हमेशा ज्ञात कराया गया है। तेरी एकता के चंदोवे के समक्ष तेरे सिवा अन्य किसी को भी उल्लेख के योग्य नहीं पाया गया है और तेरी एकता के पवित्र दरबार में तेरे सिवा अन्य किसी ने भी प्रशंसनीय होना प्रमाणित नहीं किया है।

9. गुणगान हो तेरा, हे मेरे ईश्वर, कि तूने अपनी कृपाएँ और उदारताएँ प्रकट की हैं और गरिमा हो तेरी, हे मेरे प्रियतम, कि तूने अपनी स्नेहिल दया और अपनी सुकोमल करुणा के ’दिवानक्षत्र’ को प्रत्यक्ष किया है। मैं तेरे प्रति ऐसा आभार प्रकट करता हूँ जो दिग्भ्रमित जनों के कदमों को तेरे मार्गदर्शन के प्रभात-प्रकाश की आभाओं की ओर मार्गदर्शित कर सके और जो तेरे लिए लालायित हैं उन्हें तेरे सौन्दर्य की प्रभा के प्रकटीकरण के आसन तक पहुँचने में सक्षम बना सके। मैं ऐसा आभार प्रकट करता हूँ तेरे प्रति कि जो व्याधिग्रस्त लोगों को तेरे आरोग्य की जलधाराओं के निकट पहुँचने के लिए प्रेरित कर सके और जो तुझसे दूर हैं उन्हें तेरी उपस्थिति के जीवन्त निर्झर-स्रोत के पास आने में सहायता दे सके। मैं तेरे प्रति ऐसा धन्यवाद अर्पित करता हूँ जो तेरे सेवकों के शरीर को नाशवानता और अधमता के परिधानों से विवस्त्र कर सके और उन्हें तेरी अनन्तता और तेरी गरिमा के वस्त्रों से सुसज्जित कर दे और दरिद्र जनों को तेरी पावनता और सर्व-पर्याप्त वैभव के तटों तक ले जा सके। ऐसा धन्यवाद अर्पित करता हूँ मैं तुझे जो ’स्वर्गिक कपोत’ को अमरता के कल्प-वृक्ष की शाखाओं पर अपना यह गान गुंजरित करने में सक्षम बना सके: “वस्तुतः, तू ही है ईश्वर! तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है। अनन्तकाल से तू स्वयं अपनी स्तुति के सिवा अन्य सबकी स्तुतियों से कहीं उदात्त और स्वयं अपने सिवा अन्य किसी के भी वर्णन से कहीं उच्च रहा है।“ मैं ऐसा आभार प्रकट करता हूँ तेरे प्रति जो कि ’गौरव के कोकिल’ को उच्चतम स्वर्ग में अपना माधुर्य बिखेरने के लिए प्रेरित कर सके कि “अली (बाब), सत्यतः, तेरा सेवक है जिसे तूने अपने संदेशवाहकों और अपने चुने हुए जनों में से चुना है और उन सबमें जो तुझसे सम्बंधित हैं और जो तेरे विभूषणों के प्रकटीकरण और तेरे नामों के प्रमाणों से सम्बंधित हैं, उसे तूने स्वयं अपना प्रकटावतार बनाया”। मैं ऐसा धन्यवाद अर्पित करता हूँ तुझे जो हर वस्तु को तेरी स्तुति करने और तेरे ’सार-तत्व’ को गौरवान्वित करने के लिए स्फूर्तिमान बना दे और सभी जीवों की वाणी को तेरे सौन्दर्य की सम्प्रभुता की महिमा के बखान के लिए मुक्त कर सके। मैं तेरे प्रति ऐसा आभार प्रकट करता हूँ जो स्वर्गों और इस धरती को तेरे अलौकिक ’सार-तत्व’ से भर दे और सभी सृजित वस्तुओं को तेरी निकटता और तेरी उपस्थिति के चंदोवे तले प्रवेश करने में सहायता दे सके। मैं तेरे प्रति ऐसा आभार प्रकट करता हूँ कि जिससे सभी रचित वस्तुएँ ऐसी पुस्तक बन जाएँ जो तेरा बखान करें और एक ऐसी पत्रिका जो तेरी स्तुति प्रकट करे। मैं ऐसा आभार प्रकट करता हूँ तेरे प्रति जो तेरे अधिशासन के सिंहासन पर तेरी सम्प्रभुता के ’प्रकटावतारों’ को संस्थापित कर सके और तेरी दिव्यता के आसन पर तेरी गरिमा के ’व्याख्याताओं’ को विराजमान कर सके। मैं ऐसा धन्यवाद अर्पित करता हूँ तुझे जो भ्रष्ट वृक्ष को तेरी कृपाओं के पावन उच्छवासों के माध्यम से सुमधुर फलों को उत्पन्न करने के लिए प्रेरित कर दे और सभी जीवों की काया तेरी अलौकिक करुणा की मृदुल बयारों से पुनरुज्जीवित कर दे। मैं ऐसा धन्यवाद अर्पित करता हूँ तुझे जिससे तेरी उदात्त एकमेवता के संकेत तेरी पवित्र एकता के स्वर्ग से धरती पर भेज दिए जाएँ। मैं ऐसा आभार प्रकट करता हूँ तेरे प्रति जो सभी वस्तुओं को तेरे ज्ञान के यथार्थ और तेरे विवेक के सार की शिक्षा दे सके और जिससे तेरे खिन्न प्राणी तेरी करुणा और तेरी उदार कृपा के द्वारों से दूर न रह सकें। मैं ऐसा आभार प्रकट करता हूँ तेरे प्रति कि जिससे वे सब जो स्वर्ग में और धरती पर हैं, तेरे सर्व-पर्याप्त वैभव के खजानों के माध्यम से सभी रचित वस्तुओं से मुक्त हो सकें और सभी सृजित वस्तुओं को तेरी सर्वशक्तिमान कृपाओं के शिखर पर पहुँचने में सहायक हो सकें। मैं ऐसा धन्यवाद अर्पित करता हूँ तुझे कि वह तेरे उत्कट प्रेमियों को तेरी निकटता और तेरे प्रति उत्कंठा के वातावरण में उड़ान भरने में सहायता दे सके और इराक की भूमि में ’प्रकाशों के प्रकाश’ को प्रज्‍वलित करने में। मैं ऐसा धन्यवाद अर्पित करता हूँ तुझे कि वह उन्हें जो तेरे निकट हैं सभी सृजित वस्तुओं से अनासक्त कर दे और उन्हें तेरे नामों और विभूषणों के निकट खींच ले आए। ऐसा आभार प्रकट करता हूँ मैं तेरे प्रति कि तू सभी पापों और उल्लंघनों को क्षमा कर दे और सभी धर्मों के लोगों की आवश्यकताएँ पूरी कर दे, और समस्त सृष्टि के ऊपर क्षमा के सुवास प्रवाहित कर दे। ऐसा आभार प्रकट करता हूँ मैं तेरे प्रति कि उससे वे जो तेरी एकता को पहचानते हैं, तेरे प्रेम की उच्चता तक उड़ान भर सकें और वे जो तेरे प्रति श्रद्धालु हैं उन्हें तेरी उपस्थिति के स्वर्ग तक पहुँचने में सक्षम बना दे। तेरे प्रति ऐसा धन्यवाद अर्पित करता हूँ मैं कि वह उनकी जरूरतों को संतुष्ट कर दे जो तुझे पाना चाहते हैं और उनके उद्देश्यों को साकार कर दे जिन्होंने तुझे पहचान लिया है। ऐसा आभार प्रकट करता हूँ मैं तेरे प्रति कि वह लोगों के हृदयों से सीमाओं की सभी धारणाएँ मिटा डाले और तेरी एकता के चिह्नों को अंकित कर दे। ऐसा धन्यवाद अर्पित करता हूँ मैं तुझे कि जैसे कि वह जिससे अनन्तकाल से तूने जो कुछ भी किया है वह तेरे ’स्व’ को महिमा-मण्डित करे, और जैसे तूने उसे सभी मित्रों, प्रतिद्वंद्वियों, और तुलनाओं से उदात्त बनाया, हे तू जिसके हाथों में हैं करुणा और कृपा के स्वर्ग और गरिमा एवं भव्यता के साम्राज्य!

10. प्रशंसित हो तेरा नाम, हे प्रभु, मेरे परमेश्वर और मेरे स्वामी! तू इसका साक्षी है और यह देखता है और जानता है कि तेरे दिवसों में तेरे प्रियजनों पर क्या मुसीबतें टूटी हैं और सतत परीक्षाओं को, एक के बाद एक दी गई यातनाओं को, और अनवरत कष्टों को जो तेरे निर्वाचित जन को दिए गए हैं। ऐसी स्थिति हुई उनकी कि यह धरती उनके लिए अत्यंत कठोर हो गई और प्रत्येक भूभाग में वे तेरे क्रोध और तुझसे भय के संकेतों से घिर गए और तेरी करुणा एवं स्नेहिल दया के द्वार उनके लिए बंद हो गए और उनके हृदय की बगिया तेरी कृपा और तेरे उदार अनुदानों की प्रवाहित होती जलधाराओं से वंचित हो गई। हे मेरे ईश्वर, ऐसे लोगों से जो तुझसे प्रेम करते हैं, क्या तुम अपने अभ्युदय और अपनी विजय के आश्चर्यों को उनसे रोक दोगे? हे मेरे प्रियतम, जो तेरे प्रति समर्पित हैं क्या उनकी उन आशाओं को तुम तोड़ दोगे जो उन्होंने तेरी अगणित कृपाओं और अनुदानों पर टिका रखी है? हे मेरे स्वामी! जिन्होंने तुझे पहचाना है क्या तुम उन्हें अपने पावन ज्ञान के तटों से दूर रखोगे, या जो तेरी अभिलाषा रखते हैं क्या उनके हृदयों पर तुम अपनी सर्वातीत कृपा की बरखा की फुहारों को आने से रोक दोगे? नहीं, नहीं, और इसका साक्षी है तेरा गौरव! मैं इस क्षण यह साक्षी देता हूँ कि तेरी करुणा सभी सृजित वस्तुओं से बढ़कर है, और तेरी स्नेहिल दया उन सबका समावेश किए हुए है जो स्वर्ग में और इस धरती पर हैं। अनन्तकाल से ही तेरी उदारता के द्वार तेरे सेवकों के मुखड़ों के समक्ष खुले रहे हैं और तेरी करुणा की मृदुल बयारें तेरे सृष्ट जीवों के वक्षों पर प्रवाहित की गई हैं, और तेरे जनों एवं तेरे साम्राज्य के निवासियों पर तेरी उदारता की प्रचुर बरखा बरसाई गई है।

11. मुझे यह अच्छी तरह ज्ञात है कि सृष्टि के साम्राज्य में तूने अपनी विजय को प्रकट करने में अपने उस विवेक के कारण विलम्ब किया है जो तेरे निर्णय के रहस्यों और तेरे अकाट्य उद्देश्य के आवरण के पीछे निर्धारित छिपी हुई वस्तुओं इन दोनों का ही समावेश करता है, ताकि उसके माध्यम से वे जिन्होंने तेरी अलौकिक करुणा की छाया तले प्रवेश किया है उन्हें उनसे अलग किया जा सके जिन्होंने तेरे साथ घृणास्पद व्यवहार किया है और ऐसे समय जब तूने अपने परम उदात्त सौन्दर्य को प्रकट किया तो जो तेरी उपस्थिति से विमुख हो गए।

12. उदात्त, अपरिमित रूप से उदात्त है तू, हे मेरे प्रियतम! क्योंकि तूने अपने लोक में अपने प्रियजनों को अपने शत्रुओं से पृथक किया है और उन सबके समक्ष जो स्वर्ग में और धरती पर हैं तूने अपने अत्यंत सशक्त प्रमाण और अपने परम अचूक साक्ष्य को परिपूर्णता प्रदान किया है, अतः उन पर दया कर जिन्हें तेरी धरती पर, तेरे पथ पर उन पर जो मुसीबतें टूटीं उस कारण से नीचा दिखाया गया। अतः, उदात्त कर उन्हें, हे मेरे ईश्वर! अपनी सामर्थ्‍य की शक्ति के माध्यम से और अपनी इच्छा की शक्ति से और अपनी सर्वशक्तिमान सम्प्रभुता और उद्देश्य के माध्यम से उन्हें अपने धर्म की घोषणा करने के लिए उठ खड़ा कर।

13. मैं तेरी गरिमा की सौगन्ध खाकर कहता हूँ! तेरे अभ्युत्थान को दर्शाने में मेरा एकमात्र उद्देश्य तेरे धर्म को गौरवान्वित करना और तेरे शब्द का प्रसार करना रहा है। मुझे यह समझाया गया है कि यदि अपनी विजय को भेजने और अपनी शक्ति को प्रदर्शित करने में तूने विलम्ब किया होता तो तेरी भूमि पर तेरी सम्प्रभुता के संकेत निश्चित रूप से नष्ट हो गए होते और तेरे समस्त साम्राज्य में तेरे शासन के चिह्न मिटा दिए गए होते।

14. हे मेरे ईश्वर! मेरा हृदय इस बात से विदग्ध है और दुःखों एवं अप्रसन्नताओं ने मुझे चारों ओर से घेर लिया है क्योंकि तेरे सेवकों के बीच मैं तेरी विलक्षण स्तुति के सिवा अन्य सभी प्रशंसाएँ सुन रहा हूँ, और तेरे लोगों के बीच सभी वस्तुओं के प्रमाण देख रहा हूँ सिवाय उनके प्रमाणों के जिन्हें तूने अपनी आज्ञा से उनके लिए अनुशंसित किया है और अपनी सार्वभौम इच्छा के माध्यम से उनके लिए निर्धारित किया है और अपने सर्वोपरि निर्णय से उनके लिए सुनिश्चित किया है। इतनी दूर भटक गए हैं वे तुमसे कि यदि तेरे प्रियजनों में से कोई भी उनके समक्ष तेरी एकता के अद्भुत प्रमाणों और तेरी सर्वातीत एकता को प्रमाणित करने वाली तेरी रत्नों जैसी वाणियों को भी प्रस्तुत करे तो भी वे अपने कानों में अंगुलियाँ डाल लेंगे और उस व्यक्ति का उपहास करेंगे, उसकी हँसी उड़ाएँगे। यह सबकुछ तूने अपनी सबको आच्छादित करने वाली सम्प्रभुता से इस धरती पर भेजा है और अपनी सर्वशक्तिमान सर्वोच्चता से तू यह सब कुछ जानता है।

15. हे मेरे स्वामी! गौरवमय, अपरिमित रूप से गौरवमय है तू। अतः उन हृदयों पर दृष्टि डाल जो तेरे प्रेम के निमित्त तेरे शत्रुओं की बरछियों से जड़ हो चुके हैं, और उन सिरों को देख जिन्हें तेरे धर्म के महिमा-मण्डन और तेरे नाम को गौरवान्वित करने के कारण भालों की नोंक पर चढ़ा दिया गया। अतः दया कर उन हृदयों पर जो तेरे प्रेम की अग्नि से प्रज्‍वलित हैं और जो ऐसे उत्पीड़नों के शिकार हुए हैं जिसे केवल तू ही जानता है।

16. सर्वप्रशंसा और सम्मान हो तेरा, हे मेरे ईश्वर! तू उन बातों को भली-भाँति जानता है जो बीस से भी अधिक वर्षों से तेरे दिवसों में घटित होती आई हैं और जो अभी, इस घड़ी तक, जारी हैं। इस समस्त समयावधि में तेरे चुने हुए जनों पर क्या कुछ गुजरा है इसका वर्णन न कोई मनुष्य कर सकता है और न ही कोई वाणी उसका बखान कर सकती है। उन्हें न कोई शरण प्राप्त हो सकी और न ही कोई ऐसा आश्रय मिल सका जहाँ वे सुरक्षित रह पाते। अतः, हे मेरे ईश्वर! उनके भय को अपनी शांति और सुरक्षा के प्रमाणों में बदल डाल और उनकी अधम स्थिति को अपने गौरव की सम्प्रभुता में और उनकी दरिद्रता को अपने सर्व-पर्याप्त वैभव में और उनके संकट को अपनी पूर्ण प्रशान्ति के विस्मयों में। उन्हें अपनी शक्ति और करुणा की सुरभियाँ प्रदान कर और अपनी अद्भुत स्नेहिल दयालुता से उनके पास वह भेज जो उन्हें तेरे सिवा अन्य सभी वस्तुओं से अनासक्त होने में सहायता दे, ताकि तेरी एकता का साम्राज्य प्रकट हो सके और तेरी कृपा एवं उदारता की सर्वोच्चता प्रदर्शित हो सके।

17. हे मेरे ईश्वर! क्या तुम उन आँसुओं को नहीं देखोगे जो तेरे प्रियजनों ने बहाए हैं? हे मेरे प्रियतम, क्या तुम उन नयनों पर दया नहीं करोगे जो तुझसे बिछोह और तेरी विजय के चिह्नों के प्रकट होने से रुक जाने के कारण धुंधला गए हैं? हे मेरे स्वामी, क्या उन हृदयों पर तुम दृष्टि नहीं डालोगे जिनमें तेरे लिए प्रेम और उत्कंठा के कपोतों ने अपने पंख फड़फड़ाए हैं? तेरी गरिमा की सौगन्ध! स्थिति उस मुकाम पर आ पहुँची है कि तेरे प्रियजनों के हृदयों में आशाएँ लगभग समाप्त हो चुकी हैं और तेरे दिवसों पर उन पर जो विपदाएँ टूटी हैं उनके कारण निराशा के उच्छवास उन्हें जकड़ लेने को तत्पर हैं।

18. अतः, मुझ पर दृष्टि डाल, हे मेरे प्रभो! कि कैसे मैं अपने पास से तेरे निकट भाग आया हूँ और मैंने स्वयं अपने अस्तित्व को त्याग दिया है ताकि मैं तेरे ’अस्तित्व’ के प्रकाश की आभाओं को पा सकूँ और मैंने उन सभी वस्तुओं को त्याग दिया है जो मुझे तुमसे दूर किए हुई हैं और जिन्होंने तुझे विस्मृत करवा रखा है, ताकि मैं तेरी उपस्थिति और तेरे स्मरण की सुरभियाँ ग्रहण कर सकूँ। देख कि कैसे मैंने तेरी क्षमाशीलता और तेरी उदारता की नगरी की मिट्टी पर अपने कदम रखे हैं और तेरी सर्वातीत करुणा के परिवेश में निवास किया है और वह जो तेरा ’स्मरण’ है और जो परम पावन, परम भव्य ’सौन्दर्य’ के परिधान में प्रकट हुआ है उसकी सम्प्रभुता के माध्यम से यह याचना की है कि इस वर्ष अपने प्रियजनों के पास वह भेज जो उन्हें तेरे सिवा अन्य सभी वस्तुओं से अनासक्त होने में सक्षम बनाए और तेरी सम्प्रभु इच्छा और सर्व-विजयी उद्देश्य को पहचान सकने के लिए उन्हें स्वतंत्र कर दे - इस तरह कि वे केवल वही कामना करें जो अपनी आज्ञा से तूने उनके लिए चाहा है और अपनी इच्छा के माध्यम से तूने उनके लिए जो अभिलाषा की है उसके सिवा वे अन्य कुछ भी न चाहें। अतः, हे ईश्वर! उनके नेत्रों को पावन बना ताकि वे तेरे ’सौन्दर्य’ के प्रकाश को निहार सकें और उनके कानों को पवित्र कर ताकि वे तेरी अलौकिक एकता के ’कपोत’ के सुमधुर गान को सुन सकें। अतः, उनके हृदयों को अपने प्रेम के विस्मयों से लबालब भर दे और तेरे सिवा अन्य किसी का भी उल्लेख करने से उनकी वाणी की रक्षा कर और तेरे सिवा अन्य किसी की भी ओर उन्मुख होने से उनके मुखड़ों को बचा। तू जो भी चाहे वह करने में समर्थ है। तू, वस्तुतः, सर्वशक्तिमान है, संकटों में सहायक, स्वयंजीवी।

19. और फिर, हे मेरे प्रियतम, उनके प्रति अपने प्रेम के माध्यम से और उस प्रेम के माध्यम से जो उनके मन में तेरे प्रति है, तू अपने इस सेवक की रक्षा कर जिसने तेरे लिए अपना सर्वस्व त्याग दिया है और तूने उसे जो कुछ भी प्रदान किया है उसे तेरे प्रेम और तेरी सत्कृपा के पथ पर न्योछावर कर दिया है, और उन सब चीजों से उसकी रक्षा कर जिनसे तू घृणा करता है और जो तेरी पवित्र सम्प्रभुता के शिविर में प्रवेश करने और तेरी सर्वातीत एकता के आसन तक पहुँचने से उसे बाधित कर सकती हो। और तब, हे मेरे ईश्वर! उसकी गिनती उन लोगों में कर जिन्होंने किसी भी वस्तु को तेरे सौन्दर्य को निहारने, अथवा तेरे अनन्त हस्तशिल्प के विलक्षण प्रमाणों पर ध्यान केन्द्रित करने से बाधित नहीं करने दिया है, ताकि उसकी बन्धुता तेरे सिवा अन्य किसी से भी न हो और वह तेरे सिवा अन्य किसी की ओर उन्मुख न हो और धरती एवं स्वर्ग के साम्राज्यों में जो कुछ भी तेरे द्वारा सृजित किया गया है उनमें वह तेरे मुखड़े के अद्भुत ’सौन्दर्य’ और उसकी आभाओं के प्रकटीकरण के सिवा अन्य कुछ भी न तलाश करे, तथा सबको शासित करने वाली तेरी कल्याण-भावना के तरंगित होते महासागरों एवं तेरी पवित्र एकता के उच्छल सिंधुओं में इस तरह निमग्न हो जाए कि तेरी सर्वातीत एकता के उल्लेख के सिवा वह अन्य सभी उल्लेखों को भूल जाए और अपनी आत्मा से सभी दुर्भावनाओं का नामो-निशान मिटा डाले, हे तू जिसके हाथों में हैं साम्राज्य सभी नामों और विभूषणों के!

20. स्तुति हो तेरे नाम की, हे तू जो कि लक्ष्य है मेरी अभिलाषा का! मैं तेरी गरिमा की सौगन्ध खाता हूँ! कितनी बड़ी है मेरी अभिलाषा कि मैं अनासक्ति की उस पूर्णता को प्राप्त कर सकूँ कि यदि मेरे सामने वे मुखमुद्राएँ प्रकट हो जाएँ जो शुचिता के कक्षों में छुपी पड़ी हैं और जिसके सौन्दर्य को तूने समस्त सृष्टि के नेत्रों से ओझल रखा है और जिनके मुखड़ों को तूने सभी जीवों की दृष्टि से परे, पवित्र बनाए रखा है और यदि वे तेरी अनुपम सुन्दरता की आभाओं की सम्पूर्ण गरिमा के साथ स्वयं को प्रकट करें तो भी मैं उनकी और दृष्टि डालने से मना कर दूँगा और उन्हें सिर्फ इस उद्देश्य से निहारूँगा कि तेरे हस्तशिल्प के रहस्यों को समझ सकूँ जिन्होंने उनके मनो-मस्तिष्क को असमंजस में डाल रखा है जिन्होंने तेरी निकटता प्राप्त की है और उन सबकी आत्माओं को विस्मित कर रखा है जिन्होंने तुझे पहचाना है। तेरी शक्ति और सामर्थ्‍य के दम पर मैं उन ऊँचाइयों तक उड़ान भरूँगा कि कुछ भी मुझे तेरे अलौकिक साम्राज्य के अगणित प्रमाणों से रोक सकने में समर्थ नहीं हो सकेगा और न ही इस दुनिया का कोई कुचक्र मुझे तेरी दिव्य पावनता के प्रकटीकरणों से दूर रख सकेगा।

21. गौरवान्वित, अपरिमित रूप से गौरवान्वित है तू, हे मेरे ईश्वर, और मेरे प्रियतम और मेरे स्वामी और मेरी अभिलाषा! इस अधम द्वारा तेरे गौरव के तटों तक पहुँचने की आशा खण्डित न कर और इस दुःखी प्राणी को अपने वैभव की अपारता से न रोक और इस विनम्र को अपनी कृपा और अपनी उदारता और अपने अनुदानों के द्वारों से दूर न कर। अतः, दया कर इस अकिंचन और परित्यक्त पर जिसने तेरे सिवा अन्य कोई मित्र, तेरे सिवा अन्य कोई सखा, तेरे सिवा अन्य कोई सांत्वनादाता, तेरे सिवा अन्य कोई प्रियतम नहीं चाहा है और न ही तेरे सिवा अन्य कोई अभिलाषा रखी है।

22. अतः, हे ईश्वर! मुझ पर अपनी कृपा भरी दृष्टि डाल और मेरे तथा उनके उल्लंघनों को क्षमा कर जो तुझे प्रिय हैं, और उसे भी जो हमारे और तेरी विजय और तेरी करुणा के प्रकटीकरण के मध्य आता हो। और फिर, हमारे उन पापों को निरस्त कर जिन्होंने हमारे मुखड़ों को तेरी कृपाओं के ’दिवानक्षत्र’ की आभाओं से दूर कर दिया है। तू जो भी चाहे करने में समर्थ है। तू जो चाहता है, निर्धारित करता है और तू जो कुछ भी अपनी सम्प्रभुता की शक्ति के माध्यम से करना चाहता है उसके लिए तुमसे कोई सवाल नहीं कर सकता और न ही तू अपने अकाट्य निर्णय के माध्यम से जो कुछ अनुशंसित करना चाहता है उसे कोई विफल ही कर सकता है। तुझ सर्वशक्तिमान, परम सामर्थ्‍यमय, सदा-जीवन्त, परम दयालु के सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है।

## 23

## सूरा-ए-कलम

## (लेखनी का सूरा)

यह लेखनी का सूरा है जो कि अनन्तता के स्वर्ग से उनके पास भेजा गया है जिन्होंने ’उसके सिंहासन’ पर अपनी दृष्टि केन्द्रित की है।

ईश्वर के नाम पर जो है परम विलक्षण, परम महिमाशाली!

1. हे सर्वोच्च की लेखनी! तू अपने आप में यह साक्षी बन कि वस्तुतः ‘वह’ ईश्वर है और कि मेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, संकटों में सहायक, स्वयंजीवी! अतः तू अपने ही सार-तत्व में यह साक्षी बन कि वस्तुतः मैं ही ईश्वर हूँ और ‘उसके’ सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, यह कि सब ‘मेरी’ आज्ञा से सृजित किए गए हैं और यह कि सब मेरी आज्ञा से बंधे हुए हैं। और फिर अपने ही अंतः अस्तित्व में तू यह साक्षी बन कि यह ईश्वर का वह ’सौन्दर्य’ है जो अगोचर के क्षितिज पर जगमगाया है, वह ’सौन्दर्य’ जो स्वयं अपने सिवा अन्य सबके लिए सदा अविज्ञात रहा है और सदा अविज्ञात रहेगा। वह, वस्तुतः, सर्वशक्तिमान है, सर्वमहिमाशाली, परम प्रियतम। उसकी एक ही प्रभा मात्र से महिमा और भव्यता के ’दिवानक्षत्र’ जगमगा उठे हैं, अनन्त साम्राज्य के निवासियों के हृदय और रहस्यमय आवरण में छिपे निगूढ़ पावन यथार्थों को अस्तित्व प्रदान किया गया है और उन सबके रहस्यों को उजागर कर दिया गया है जो अस्तित्व में थे और जो अस्तित्व में आएँगे।

2. हे लेखनी! कुछ भी तुझे निराश न करने पाए, क्योंकि तेरे लिए हमने अपनी सर्वभौम शक्ति और सामर्थ्‍य की अनुल्लंघनीय सुरक्षा सुनिश्चित की है और तेरे अन्दर हमने फूँक दी है चेतना की एक साँस, जिसका एक उच्छवास यदि सम्पूर्ण अस्तित्व पर प्रवाहित कर दिया जाए तो वे सब अपनी शैय्या से उठ खड़े होंगे, उनकी वाणी मुक्त हो उठेगी, बोल उठेंगे वे और अपने अंतरतम अस्तित्व में यह साक्ष्य देंगे कि मुझ शक्तिमान, उदात्त, सामर्थ्‍यमय, अनुपम, सर्व-वशकारी, स्वयंजीवी के सिवा और कोई ईश्वर नहीं है।

3. हे आज्ञा की लेखनी! तू स्वयं में आश्वस्त रह और तब सभी प्राणियों के समक्ष उसके एक अंश प्रकट कर जो ईश्वर ने शब्दों और अक्षरों की सृष्टि और सभी वस्तुओं की रूप-रचना से पहले और नामों एवं गुणों के साम्राज्य की स्थापना और अपनी सामर्थ्‍यमय एवं संरक्षित पाती के प्रकटीकरण से भी पूर्व, तुझे प्रदान किया था। कह: यह वह ’शक्ति’ है जो अनन्तकाल से चिर अनन्तकाल तक सर्वोपरि रही है, बशर्ते कि तू इसे जाने, हे चेतना के समुदाय, और यह वह ’सौन्दर्य’ है जो अनादिकाल से चिर अनादिकाल तक से अद्वितीय रहा है, काश कि तुम यह जान पाते। कह: जो कोई भी इस लेखनी का सामना करने की, इसका साझेदार बनने की, इससे अंतरंगता प्राप्त करने की और जो कुछ भी इससे निःसृत होता है उसे पूर्णतया समझने की जरा भी योजना रचता है, तू यह निश्चित जान कि उसके हृदय में शैतान ने कानाफूसी की है। इस तरह दिव्य आज्ञा जारी कर दी गई है, काश कि तुम यह समझ पाते! कह: ईश्वर की सौगन्ध! सम्पूर्ण सृष्टि में कोई भी मेरा प्रतिद्वंद्वी न कभी हुआ है न कभी हो सकेगा। इस तरह अंकित किया गया है दिव्य प्रकटीकरण की लेखनी द्वारा, बशर्ते कि तुम समझ पाते। कह: ’मेरी’ वाणी के एक अक्षर ने, वस्तुतः, इस सम्पूर्ण सृष्टि को अस्तित्व प्रदान किया है, सभी वस्तुओं के यथार्थ को रचा है और उन समस्त संसारों को जिनकी थाह सर्वशक्तिमान, परम प्रकट परमेश्वर के सिवा और कोई नहीं पा सकता।

4. हे लेखनी! अविश्वासियों ने तुझ पर जो आरोप लगाए हैं उसे ध्यान से सुन। कह: हे विद्वेषियों के समूह! अपनी घृणा, अपनी ईर्ष्‍या और अपने अविश्वास में ही नष्ट हो जा! उसकी सौगन्ध जो है ’अनन्त सत्य’! यह वह लेखनी है जिसकी इच्छा की सूचना मात्र से उच्च लोक के सहचरों की आत्माएँ और अनन्तलोक के निवासियों के यथार्थ और मानव हृदयों व मस्तिष्क के सार-तत्व इन सबकी रूप-रचना की गई थी। यह वह लेखनी है जिसके स्पंदन मात्र से शक्ति और गरिमा का सूर्य, तथा उच्चता एवं पावनता का चन्द्र और कृपा एवं अनुग्रह के नक्षत्र, इन सबको अस्तित्व प्रदान किया गया था। यह वह लेखनी है जिसके माध्यम से सृजित किए गए थे उच्चतम स्वर्ग और वे सब जो उसमें निवास करते हैं और स्वर्गिक उद्यान और वह सबकुछ जो उससे सम्बंधित है, बशर्ते कि तू समझ पाता। कह: इसको एक बार चलाने मात्र से उन सबका ज्ञान प्रकट कर दिया गया है जो अस्तित्व में था और जो अस्तित्व में होगा और जिससे अतीत एवं भविष्य की सभी वस्तुओं की सृष्टि की गई। अतः अपनी आँखें खोल ताकि तू इस सत्य का साक्षी बन सके।

5. हे लेखनी! अभी तक तूने इस विश्व को अपनी शक्ति और सम्प्रभुता के बारे में जितना कुछ बताया है उसी से संतुष्ट रह क्योंकि विद्वेषियों के वक्ष फटने को तैयार हैं। अतः, अपने धर्म को आवरण में रख और इससे अधिक प्रकट न कर क्योंकि तेरे शब्दों से प्राचीन महिमा के स्वर्ग फट पड़ेंगे और स्वयं पावनता की धरती के दो टुकड़े हो जाएँगे और भव्यता के लोक के अंतःवासी मूर्च्छित हो जाएँगे। अपने मन में धीरज धर क्योंकि दुनिया के लोग तेरे साम्राज्य को निरखने या तेरे अगणित संकेतों को समझने में सक्षम नहीं हैं, तो फिर वे उसे क्या पहचान सकेंगे जिसने अपने उच्चार के एक शब्द मात्र से तेरा सृजन और तेरी रूप-रचना की है! जो कुछ भी तूने अतीत में प्रकट किया है या जो तू भविष्य में प्रकट करेगी, तेरा प्रभु उन सबसे कहीं ज्यादा महान है। उसके निष्ठावान और सत्कृपा-प्राप्त सेवकों ने जो भी समझा है या कभी समझ सकेंगे, वह उन सबसे कहीं ज्यादा महान है। अतः, तूने अभी तक जो कुछ भी प्रकट किया है उसी से संतुष्ट रह। मैं एकमेव सत्य ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, जो कुछ भी स्वर्गों में और धरती पर तथा इन दोनों के बीच है - चाहे वे पेड़ हों, फल, पत्तियाँ, टहनियाँ, शाखाएँ, नदियाँ, महासागर या पर्वत - यदि उनका सामना तेरी घोषणा के एक शब्द से भी हो जाए तो वे निश्चित रूप से वह बोल उठेंगे जो दिव्य प्रकटीकरण की माटी से उत्पन्न ’ज्वलन्त झाड़ी’ ने उस पावन एवं आशीर्वादित घाटी में मूसा से कहा था।

6. हे लेखनी! ईश्वर ने कृपापूर्वक तुझे जो विलक्षण वृतान्त प्रदान किया है उस पर ध्यान दे। तब, तेरे पास जो कुछ भी है उन सबसे स्वयं को अनासक्त कर ले और इस शक्तिशाली ’प्रकटीकरण’ में ’परम उदात्त शब्द’ के प्रकट होने का आनन्ददायक समाचार लोगों को सुना, ताकि वे कदाचित अपने ’सृष्टा’ को पहचान सकें और ‘उसके’ सिवा अन्य सबकुछ त्याग सकें। और तब यह कहते हुए उच्च लोक के सहचरों को आनन्द मनाने के लिए आमंत्रित कर “हे महिमा के शिविर तले आश्रय पाने वाले भव्यता के व्याख्याकार! हे गौरव के वितान तले निवास करने वाले शक्ति-साम्राज्य के निवासियों! हे अनन्तता के महासिंधु के उस पार सुदूर परिसरों में स्थित गोचर और अगोचर के साम्राज्य में रहने वालों! हे उच्चतम स्वर्ग में दिव्य नामालंकरणों के प्रत्यक्ष स्वरूपों! इस ’महानतम उत्सव’ में अपने हृदयों को आनन्द-विभोर कर लो - वह उत्सव जिसमें स्वयं परमात्मा ऐसे लोगों को अपना पवित्रतम प्याला प्रदान करता है जो उसके समक्ष प्रत्यक्ष अकिंचनता और विनम्रता से खड़े हैं। अतः, अपनी आत्माओं को निश्चयात्मकता के रेशमी आवरण से सुसज्जित कर लो और अपनी कायाओं को ‘सर्वदयालु’ के कसीदा कढ़े परिधान से क्योंकि, देखो, मेरे भवों से एक प्रकाश का अरुणोदय हुआ है और वह जगमगा उठा है जिसके प्रकटीकरण के समक्ष वे सब जो स्वर्गों में और धरती पर हैं, आराधना में विनत हो उठे हैं, काश कि तुम इसे समझ पाते!

7. कह: मैं एकमेव सत्य ईश्वर की सौगन्ध खाता हूँ कि समस्त सृष्टि में ’उसके’ जैसा अन्य कोई कभी प्रकट नहीं हुआ है। जो कोई भी इसके सिवा कुछ और कहता है उसने ईश्वर के प्रमाण की निंदा की है और परमेश्वर की शक्तिशाली और सुसंरक्षित पाती में उसकी गिनती निष्ठाहीनों में की गई है। कहः यह वह ’प्रकाश’ है जिसके माध्यम से दिव्य जगत के निवासियों और उनके आंतरिक यथार्थों को प्रत्यक्ष किया गया है, और जिसके माध्यम से स्वर्गिक लोक के मूर्तिमान स्वरूपों और उनके अन्तरतम सार-तत्वों का सृजन किया गया है। यह वह ’प्रकाश’ है जिसके माध्यम से ईश्वर ने उन लोकों की रचना की है जिनका न आदि है न अंत, उन लोकों का जिनके बारे में किसी को जरा भी भान नहीं है सिवाय उनके जिन्हें ईश्वर ने उनका भान कराना चाहा है। इस तरह हम तेरे समक्ष निगूढ़ रहस्यों को प्रकट करते हैं ताकि तू कदाचित परमेश्वर के संकेतों पर विचार कर सके। कह: यह वास्तव में वह ’प्रकाश’ है जिसकी प्रभा के समक्ष प्रत्येक सिर विनम्रता से नतमस्तक हुआ है, और जिसके प्रकटीकरण के सामने ईश्वर की सत्कृपा-प्राप्त जनों के हृदय और उसके पावन जनों की आत्माएँ और उसके सच्चे आराधकों के अन्तरतम यथार्थ और उससे भी बढ़कर उसके सम्मानित सेवक स्तुति में नत हुए हैं।

8. हे पावन अभयारण्य के अंतःवासियों! मैं ईश्वर की सौगन्ध खाता हूँ! सत्य ही वह तुम्हारे बीच ’ईश्वर का अभय-स्थल’ है और तुम्हारे मध्य उसका पावन ’परिसर’, तुम्हारे नेत्रों के समक्ष ’चेतना का पवित्र-स्थल’ और आंतरिक एवं बाह्य दोनों ही प्रकार की शांति और सुरक्षा का ’स्थान’। सावधान कि कहीं तुम उसके ज्ञान के आश्रय-स्थल से स्वयं को वंचित न कर लो। उसकी ओर बढ़ने की शीघ्रता कर और विलम्ब न कर। यह वह ’अभय-स्थल’ है जिसकी परिक्रमा ’दिव्य अस्तित्व के प्रकटावतार’ और ’उसके’ अनन्त ’यथार्थ’ के ’मूर्तिमान स्वरूप’ किया करते हैं, और जिसका दरबार बहिष्कृत एवं अधर्मी जनों की पहुँच से दूर, पावन बनाया गया है। यह, वस्तुतः, वह ’अभय-स्थल’ है जिसकी सेवा का आशीर्वाद पाने का प्रयत्न करती हैं ’स्वर्ग की अप्सराएँ’ और वे जो निवास करते हैं ’महानतम सिंधु’ की गहराइयों में और वे जो रहते हैं पवित्रता के अधिवास और पुनर्मिलन के लोक में - और फिर भी ज्यादातर लोग समझते ही नहीं।

9. हे धरती और स्वर्ग के निवासियों! अपनी शैय्याओं को त्याग दो और इस पवित्र एवं प्रभासित ’सौन्दर्य’ के निमित्त ’महानतम तीर्थयात्रा’ के लिए निकल चलो। यदि ईश्वर ऐसा कर पाने में तुम्हें असमर्थ देखेगा तो वह तुम्हें इससे मुक्त कर देगा और उसके बदले तुम्हें अपने हृदय और आत्मा से ‘उसके’ पास पहुँचने का आदेश देगा। और इसे सिर्फ वे ही प्राप्त कर सकेंगे जो उन सभी वस्तुओं को जो स्वर्गों में और धरती पर हैं एक ऐसे दिवस के रूप में देखते हैं जिसमें किसी को भी उल्लेख के योग्य नहीं समझा गया9 ये वे लोग हैं जिन्हें उनका प्रभु अपने ही हाथों से पवित्रता की विशुद्ध मदिरा पान करने को देगा। सत्य ही, जो कोई भी इस अत्यंत आशीर्वादित और ज्योतिर्मय ’स्थल’ की ओर उन्मुख होगा, उसकी परिक्रमा करेंगे वे ज्योतिर्मय सूर्य जिनकी प्रभा का न आदि है न अंत और उसके हृदय रूपी क्षितिज के ऊपर सूर्यों के उस ’सूर्य’ का अरुणोदय होगा जिसके प्रकाश के आगे सासांरिक नामों के वृत्त अंधेरे से ढंके होते हैं, बशर्ते कि तुम उन लोगों में से हो जो समझते हैं।

10. हे लेखनी! यह कहते हुए अनन्तता के समूहों के समक्ष घोषणा कर: हे तुम अमरता के क्षेत्रों में भ्रमण करने वालों! हे तुम भव्यता के चंदोवे तले निवास करने वालों! हे तुम रत्न-सदृश यथार्थों, जो सृष्टि की आँखों से ओझल हैं! आनन्द-समारोह मनाने के लिए और अनन्त जीवन के उस प्याले से पान करने के लिए जो ’सर्वमहिमाशाली’ द्वारा इस दिवस में प्रस्तुत किया जा रहा है, अपने उच्च कक्षों से नीचे उतर कर आओ। सत्य ही, यह वह दिवस है जिसके समान समस्त सृष्टि में कभी देखा नहीं गया, वह दिवस जिसमें सर्वातीत महिमा के आसन पर ’भव्यता का नयन’ उत्फुल्ल हुआ है। हे परमेश्वर के सिंहासन को ढोने वालों! इस दिवस में परम महान सिंहासन को सुसज्जित करो, क्योंकि अगोचर ’सौन्दर्य’ उजागर हुआ है - वह जिसका सान्निध्य प्राप्त करने में अब तक परम उच्च ‘स्वर्ग’ के अंतःवासी और विश्रान्ति के उद्यान के निवासी भी असमर्थ रहे हैं। कह: ईश्वर की सौगन्ध! ’निगूढ़ रहस्य’ अपनी महिमा के प्राचुर्य के साथ प्रकट हो चुका है और अपने सौन्दर्य से उसने सभी दृश्य-अदृश्य वस्तुओं की आँखों को चैन दिया है और उनसे भी बढ़कर उनकी आँखों को जिन्होंने अपने प्रभु, उस ’परम प्रत्यक्ष’ के ‘नाम’ रूपी महासिंधु से प्रवाहित होती पावन जलधाराओं से अपनी आत्माओं को पवित्र कर लिया है।

11. कह: यह वह दिवस है जब परमात्मा ने स्वयं अपने ’स्व’ का ज्ञान कराया है और उसे उन सबके समक्ष प्रकट किया है जो स्वर्गों में और धरती पर हैं, वह दिवस जिसमें उसने प्रकटीकरण और सृष्टि के साम्राज्यों के ऊपर अपने सार्वभौम प्रभुत्व की स्थापना की है। तब फिर यह पवित्र, परम आशीर्वादित और परमप्रिय कृपा कितनी महान है! और फिर, यह वह दिवस है जब ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ ऐसी साज-सज्जा के साथ प्रकट हुए हैं जिससे सभी पर्दे छिन्न-भिन्न हो गए हैं और रहस्य प्रकट हो उठे हैं और सुफल फूट पड़े हैं और सभी वस्तुएँ अपने प्रभु, उस अप्रतिबाधित, के गुणगान करने लगी हैं - वह दिवस जब कि धरती और इस पर की सभी वस्तुएँ और स्वर्ग तथा उनमें जो कुछ भी हैं, और पर्वत तथा जो कुछ भी उनमें छिपे पड़े हैं और महासागर तथा उनकी गहराइयों में जो भी निधियाँ हैं, इन सबने अपने रहस्यों को खोल दिया है, हालाँकि लोग एक पर्दे से उससे ढंके पड़े हैं। यह वह दिवस है जब कि अविश्वास और सांसारिक लालसा की प्रतिमाओं को तोड़ दिया गया है और ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ अपने शक्तिशाली सिंहासन पर विराजमान हो गए हैं। महिमा की ’चेतना’ ने अनन्तता के परिसरों से और ’पवित्रतम चेतना’ ने ’दिव्य कल्पवृक्ष’ से और आज्ञा की चेतना ने उस ’तरुवर’ से, जिसके आगे कोई राह नहीं, और फिर शक्ति की ’चेतना’ ने उदात्त साम्राज्य से और निष्ठावान ’चेतना’ ने ’ज्वलंत झाड़ी’ की दाहिनी भुजा से, यह कहते हुए पुकार लगाई है कि “पावन हो करुणा का प्रभु, जो इस अस्तित्व के संसार में उन विभूषणों से सज्जित होकर प्रकट हुआ है जिसे नाशवान नेत्रों ने पहले कभी नहीं देखा!” कह: ‘वह’ ‘वही’ है जो अपनी अँगुली के किंचित स्पंदन मात्र से धरती और स्वर्ग के रचित जीवों को विनष्ट कर देता है, जो अपने मुख से निकले एक शब्द से उनमें पुनर्जीवन का संचार कर देता है, और जो अपनी झलक के संकेत मात्र से समस्त सृष्टि को ईश्वर की ओर उन्मुख कर देता है - (जो है संकटों में सहायक, सर्वशक्तिमान, परम प्रियतम)

12. कह: हे मठधारियों के समूह! त्याग दो उन मठों को जहाँ तुमने अपने प्रभु का महिमा-मण्डन किया है, क्योंकि वह जो स्वर्ग की ओर आरोहण कर गया था वह सत्य ही पुनः लौट आया है और ’ईश्वर के सिंहासन’ की परिक्रमा में निरत है। मैं एकमेव सत्य ईश्वर की सौगन्ध खाता हूँ! इस दिवस में (’मेरे’ स्मरण में) घंटियों का नाद हो रहा है, ’तुरही’ मेरा ही गुणगान ध्वनित कर रही है और ’बिगुल’ मुझ संकटों में सहायक, स्वयंजीवी के नाम की घोषणा कर रहा है। स्वयं को इस दिवस की कृपा से वंचित न करो; बल्कि ’सिंहासन’ स्थली की ओर शीघ्रता से बढ़ो, जो कुछ भी तुम्हारे पास है उसे त्याग दे और ’ईश्वर की डोर’ को दृढ़ता से थाम जो उठ खड़ा हो और जिसने स्वयं को प्रकट किया है और बोल उठा है ताकि सब सुन सकें।

13. हे दृश्य और अदृश्य लोकों के निवासियों! ’ईश्वर के उत्सव’ के अवसर पर गान करो, ओह .... गान करो उस परम आनन्दमय स्वर माधुर्य का, उस उत्सव पर जो कि सत्य की शक्ति से प्रकट हुआ है और जिसे पहले एवं बाद की पीढ़ियों ने कभी प्राप्त नहीं किया था, बशर्ते कि तुम जान पाते! यह वह दिवस है जब ’ईश्वर की लेखनी’ ने उन सबको दोषमुक्त कर दिया है जो स्वर्गों में और धरती पर हैं। इस तरह चमक उठा है उसका अनन्त आदेश उसकी ’लेखनी’ के दिवास्रोत से, ताकि तुम अपनी आत्मा में आनन्द-विभोर हो सको और उन लोगों में से बन सको जिनके हृदय प्रफुल्लित हैं।

14. हे लेखनी! ’स्वर्ग की परी’10 के समक्ष घोषणा कर दे: “ईश्वर की सौगन्ध! यह दिवस तेरा दिवस है। जैसे भी तुम्हारी इच्छा हो, आओ और जैसे तुम चाहो वैसे स्वयं को नामों के कशीदा कढ़े वस्त्र और अमरता के रेशमी परिधान से सुसज्जित करो। और तब अपने अनन्त अधिवास से वैसे ही बाहर निकल आओ जैसे वह सूर्य जो कि ‘बहा’ की मुखमुद्रा से उदित होता है। अपनी उत्तुंग ऊँचाइयों से नीचे उतर और, धरती और स्वर्ग के बीच खड़े होकर, अपने ज्योतिर्मय मुखड़े पर से आवरण हटा और गहरे नेत्रों वाली अप्सरा की तरह सृष्टि के क्षितिज पर अपनी कांति बिखेर, ताकि कदाचित इन लोगों की आँखों के आगे से घोर पर्दा छिन्न-भिन्न हो जाए और वे सर्वातीत महिमा का ’दृश्य’ निहार सकें, उसका जो कि ’ईश्वर का सौन्दर्य’ है, परम पावन, परम शक्तिमान, परम प्रियतम है।“

15. “हे प्राचीनतम सौन्दर्य! अविश्वासी लोग सत्य ही निरर्थक कल्पना की जड़ता में निमग्न हैं और अपनी आँखों को परम पवित्र ’दरबार’ की ओर उन्मुख कर पाने में असमर्थ हैं। अपनी अनुल्लंघनीय सुरक्षा की सार्वभौम सामर्थ्‍य के माध्यम से, तूने ज्योति के आवरणों तले मुझे रक्षित किया है और मेरे सौन्दर्य को अपने शत्रुओं के दृष्टिपात से बचाया है। आज्ञा देने की शक्ति तुझमें है; तू जैसा चाहे वैसा निर्धारित करता है - अपने एक शब्द ’भव’ (हो जाओ) के द्वारा और वह हो जाता है।’

16. “हे ‘बहा’ की ‘सेविका’! अनन्तता के दरबार से बाहर कदम बढ़ा, लेकिन तेरी परम पवित्र दृष्टि नाशवान मनुष्यों के मुखड़ों पर न पड़ने दे। एकमेव सत्य ईश्वर की सौगन्ध खाता हूँ! इस परम उच्च दर्शन में उनके सिवा कोई भी तुझे देख पाने की कभी आशा नहीं कर सकते जो सच्ची अंतर्दृष्टि से सम्पन्न हैं। अपनी दाहिनी ओर स्थित नामों के साम्राज्य और बाईं ओर स्थित विभूषणों के साम्राज्य को त्याग दे और मेरी आज्ञा से मेरी अनुल्लंघनीय सुरक्षा के क्षितिज पर जगमगा, उन सबसे विमुक्त होकर जिसे ’प्रकटीकरण’ के लोक में रचा गया है, और उन सबसे विच्छेदित होकर जो कि सृष्टि के साम्राज्य में प्रकट हुआ है, ताकि तू हर जगह ईश्वर की सौन्दर्यमय छवि प्रकट कर सके। और तब धरती और स्वर्ग के बीच मधुरतम आलाप छेड़, ताकि समस्त अस्तित्व तेरे प्रभु, उस परम पावन, परम भव्य, परम प्रियतम - के मुखड़े के सिवा अन्य सबसे अनासक्त हो जाए। सर्वदयालु के सौन्दर्य से सुसज्जित तू रिज़वान के क्षितिज पर जगमगा और अपनी सुगन्धित लटों को अपने वक्षस्थल पर लहराने दे, ताकि तेरे परम भव्य प्रभु के परिधान की सुरभि सम्पूर्ण विश्व में फैल सके। अपने ज्योतिर्मय स्वरूप को ’प्रकटीकरण’ के समुदाय के नेत्रों से न छुपा और पावनता के अपने स्वर्गिक आवरण को लोगों की दृष्टि से न रोक। अतः, अपने लहराते हुए केशों के साथ, अपने हाथों को आभूषण से अलंकृत किए हुए, मुखमुद्रा पर लज्जा के भाव लिए, गालों पर चमक बिखेरे, आँखों को विभूषित किए हुए, ’सिंहासन’ के समक्ष स्वयं को उपस्थित कर और मेरे परम उदात्त ‘नाम’ पर हिमधवल प्याले को थाम। और तब अनन्तता के लोक के निवासियों को मेरे सर्वमहिमाशाली ’सौन्दर्य’ की अरुणाभ मदिरा प्रदान कर, ताकि कदाचित इस विशुद्ध घूंट के दम पर ’प्रकटीकरण’ के समुदाय इस परम भव्य ‘उत्सव’ में अपनी आत्माओं को पावन कर लें और मेरी सर्वशक्तिमान एवं सर्वसामर्थ्‍यमय, मेरी सर्ववशकारी और स्वयंजीवी सम्प्रभुता की शक्ति से वे छिपाव के पर्दे के पीछे से आकर प्रकट हो सकें।“

17. “ईश्वर की सौगन्ध! मैं स्वर्ग के हृदय-मध्य में निवास करने वाली, ‘सर्वदयालु’ के आवरण के पीछे गुप्त और लोगों के नयनों से ओझल, ‘स्वर्ग’ की ‘परी’ हूँ। अनादि काल से ही मैं ‘भव्यता’ के ‘तम्बू’ तले पवित्रता के आवरण के परदे में निगूढ़ थी। मुझे अपने प्रभु, उस परम उदात्त, के सिंहासन की दाहिनी भुजा से एक मधुरतम स्वर सुनाई पड़ा, और मैंने स्वयं स्वर्ग को प्रेरित और इसके सभी निवासियों को सर्व-महिमाशाली ईश्वर का सान्निध्य पाने की उत्कंठा में चंचल होते देखा। तभी एक और आह्वान सुनाई पड़ा: “ईश्वर की सौगन्ध! लोकों के प्रियतम का आगमन हो चुका है! धन्य है वह जिसने ‘उसका’ सान्निध्य प्राप्त किया है और ‘उसके’ मुखड़े को निहारा है और ‘उसकी’ परम पवित्र, ‘उसकी’ परम महिमाशाली भव्य, प्रिय वाणी को ध्यान से सुना है। ’ईश्वर की वाणी’ ने उच्च लोक के समूहों की आत्माओं और अनन्तता के लोक के निवासियों के हृदयों को आनन्द-विभोर कर दिया है और सबको पराभूत कर देने वाले प्रेम के आनन्दातिरेकों ने उन्हें उत्कंठा से कम्पायमान कर दिया है और उनकी दृष्टि को पावनता के दरबार, अगम्य महिमा के पद, पर जमा दिया है। ’यदि मैं सबकी जिह्वाओं से बोल पाती तो भी मैं उसका वर्णन करने में अक्षम होती जिसे मैंने उस दशा में देखा। और, फिर भी, सबको आच्छादित करने वाली इस कृपा और उन सबको जो नामों के महासिंधु में निमग्न हैं विह्वल कर देने वाले इस हर्ष के बावजूद, देखो, मैंने ’बयान’ के लोगों को परदे से ढंका और असावधान और विस्मृति की कब्रों में मुर्दों की तरह सोया हुआ पाया। हे बयान के लोगों! इस ’प्रकटावतार’ को अस्वीकृत कर देने के बाद भी तुम सब स्वयं को चेतना के पथ के अनुगामी समझते हो? नहीं, मेरे ’सौन्दर्य’ की सौगन्ध! जिसे ईश्वर ने पहले और बाद की सभी पीढ़ियों के बीच स्वयं अपने सौन्दर्य का प्राकट्य निरूपित किया है!”

18. “हे पवित्रता की ‘सेविका’! भूल जा ऐसे लोगों के उल्लेख को, क्योंकि निरर्थक कल्पनाओं के उकसावों के सिवा उनके हृदय सभी बातों के प्रति पत्थरों की तरह जड़ और अभेद्य हैं। क्योंकि ईश्वर के धर्म में वे परिपक्व नहीं हैं और पथभ्रष्टता की छाती पर वे अज्ञान का दुग्ध-पान करने में निरत हैं। उन्हें धूल पर ही पड़े रहने दे और तू ‘मेरे’ माधुर्य का गान अनन्तता के लोक में कर। अतः, सृष्टि के साम्राज्य में जो प्रकट हुआ है उसके बारे में स्वर्ग के निवासियों को बता। इस तरह वे तेरे मधुर स्वर की ओर आकर्षित हो सकेंगे, इस पवित्र और प्रतिज्ञापित ‘सौन्दर्य’ की ओर बढ़ने की शीघ्रता करेंगे और इस दिवस के बारे में पूरी तरह जान सकेंगे - वह ‘दिवस’ जब सभी वस्तुओं को नामों के अलंकरणों से विभूषित कर दिया गया है, वह ‘दिवस’ जब हर दरिद्र को सच्चे वैभव का स्रोत मिल गया है और हर वंचित एवं पाप-मग्न आत्मा को क्षमा प्राप्त हो गई है।“

19. हे लोगों! इन दिनों में तुम ईश्वर की कृपा और सबको समेट लेने वाली उसकी करुणा पाने का प्रयत्न करो और सावधान कि तुम कहीं परदे से ढंके, असावधान लोगों का अनुसरण न कर बैठे।

20. और इस तरह इस आशीर्वादित और नियत वृतान्त के बारे में, इस पाती में, ’लेखनी’ के आह्वानों की पूर्णाहुति होती है।

## 24

## वह है सदा रहने वाला

1. यह है रिज़वान का उत्सव, वह बसन्ती ऋतु जिसमें धरती और स्वर्ग के बीच ’सर्व-महिमाशाली का सौन्दर्य’ प्रकट किया गया था। इस विलक्षण दिवस में उसकी आज्ञा से जो है, सर्वप्रशंसित, स्वर्ग के द्वारों को सभी लोगों के समक्ष मुक्त रूप से खोल दिया गया था और अस्तित्व के संसार में ’उसके’ अनगिनत मूर्तिमंत स्वरूपों और प्रकटीकरणों पर स्वर्गिक कृपा के बादलों से दिव्य कृपा की फुहारें बरसाई गई थीं।

## 25

1. तुम्हारा एक अन्य पत्र प्राप्त हुआ जिसमें रिज़वान के पवित्र एवं आशीर्वाद दिनों का उल्लेख किया गया है। ईश्वर की स्तुति हो, उससे सच्चे ज्ञान और आंतरिक अर्थ की गुलाब-वाटिका की मोहक सुरभियाँ प्रवाहित हुईं। यदि दुनिया के एक-एक और सभी लोग उन दिनों के गुणगान का संकल्प कर लें जो दिन हमने नजीब पाशा के उद्यान में बिताए थे, जिसे रिज़वान का ‘उद्यान’ कहा गया, तो वे ऐसा कर पाने में स्वयं को बिल्कुल ही असमर्थ महसूस करेंगे और अपनी शक्तिहीनता स्वीकार करेंगे।

2. वस्तुतः, सृष्टि के नयन ने उन दिनों के प्रकाश को कभी नहीं देखा है, न ही मानवजाति की दृष्टि ने उन जैसे अन्य दिनों को कभी निहारा है। ‘उसका’ आगमन जो विश्व की ’अभिलाषा’ है, उस उद्यान में उसका प्रवेश, वाणी के सिंहासन पर ‘उसका’ विराजमान होना और उस क्षण ‘उसकी’ इच्छा के मुख से जो शब्द प्रवाहित हुए, वे सदा-सर्वदा प्रत्येक सांसारिक उल्लेख से परे रहेंगे। उनके लिए चाहे जिस किसी गुणालंकार का प्रयोग किया जाए, प्रशंसा के चाहे जिन वचनों से उनकी स्तुति की जाए, वे उस धूल के साथ भी न्याय करने में विफल रहेंगे जो ’उसके’ चरणों से पावन की गई थी, तो फिर ‘उसके’ शक्तिशाली सिंहासन, उस पर प्रकट रूप से ‘उसके’ विराजमान होने और ‘उसके’ सर्वव्यापी, सबको आच्छादित करने वाले वचनों की तो बात ही क्या है। सत्य ही, उस ‘दिवस’ की आभाएँ इस दुनिया के लोगों के बोध और उनकी समझ से परे हैं।

3. उस बगीचे का नाम उसके रखवाले के नाम पर रखा गया, जिसे रिज़वान कहा गया। ये वे दिन थे जब सर्वदयालु ने उन सबके ऊपर जो उसके स्वर्ग में और ‘उसकी’ धरती पर हैं, अपने सभी नामों की आभा बिखेर दी। उसके चुने हुए जनों में से कुछ को उन दिनों के साक्षी बनने और उन दिनों में जो प्रकट किया गया उसे देख पाने का सम्मान प्राप्त हुआ। ’प्राचीनतम सौन्दर्य’ के आगमन और प्रस्थान में ईश्वर के संकेत और चिह्न स्पष्ट और प्रत्यक्ष किए गए थे, और ’प्रकटीकरण’ के प्रकाश को उसकी महिमा की प्रचुरता के साथ जगमगाया गया था। सत्य ही, ’उसकी’ गरिमा को उन्नत किया गया था, ‘उसकी’ शक्ति को महिमान्वित किया गया था और उसकी सम्प्रभुता प्रकट की गई थी।

4. इस सेवक11 ने अपने प्रभु से अपने चुने हुए जनों के लिए इस ‘दिवस’ और उस दिवस के जो हमारे सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ स्वामी की इच्छा के क्षितिज के ऊपर जो जगमगा उठा था, पुरस्कार अंकित करने की याचना की थी। तुम्हारे पत्र को पढ़ने के बाद मैंने स्वयं को ’उसके’ सिंहासन के समक्ष प्रस्तुत किया और ’उसकी’ उपस्थिति में उसे पूर्णतया पढ़ा। उसने उसे उदारतापूर्वक सुना और कहा, उदात्त और आशीर्वादित हो उसकी वाणी: “मेरे नाम पर जिसने उन सब पर अपनी कांति बिखेरी है जो स्वर्ग में और धरती पर हैं। हे अली! तुझ पर ‘मेरी’ महिमा और ‘मेरी’ स्नेहिल दया विराजमान हो। तुमने पहले भी ‘मेरा’ उल्लेख और ‘मेरी’ कृपा, और ’महासिधु’ और उसकी लहरें, और ’प्रकाश’ एवं उसकी प्रभा और ’कल्पवृक्ष’ तथा उसके फल और ’सूर्य’ तथा उसकी किरणें प्राप्त की हैं और आगे भी प्राप्त करते रहोगे। अपने विधान और अपनी उदारता के स्वर्ग से हमने तुम्हारे पास वे श्लोक भेजे हैं जिसके अभिप्राय को समझने में अत्यंत बुद्धिमान और ज्ञानवान लोग भी सक्षम नहीं हैं। हम ईश्वर से याचना करते हैं, उस पर महानता और महिमा विराजे, कि वह हर समय अपने सेवकों के बीच ‘उसके’ धर्म की सेवा में तुम्हें सहायता दे और हर परिस्थिति में तुम्हें, अपनी कृपा के प्याले से, अपने अभिज्ञान के जीवन्त जल प्रदान करता रहे ताकि सब लोग ‘उसकी’ पवित्रता के दरबार और उसकी महिमा के सिंहासन तक पहुंच सकें। वह, सत्य ही, सर्वशक्तिमान है, सर्वसमर्थ है।

5. “तुमने रिज़वान के दिनों का उल्लेख किया है और उनका तुम्हारे घर में तथा अन्य घरों में ईश्वर के स्मरण के लिए एकत्रित हुए, वह जो उच्च लोक और इस धरती के सिंहासन का ‘स्वामी’ है, जो इस अनुपम दिवस का सम्राट है। धन्य है वह घर जो मेरी कृपा से अलंकृत है, जिसकी दीवारों के भीतर मेरे स्मरण को महिमावन्त किया गया है, और जो मेरे ऐसे प्रियजनों की उपस्थिति से सम्मानित हुआ है, जिन्होंने मेरा गुणगान किया है, मेरे विधान की डोर को थाम रखा है, और मेरे श्लोकों का पाठ किया है। वे, वस्तुतः, ऐसे सम्मानित सेवकों में से हैं जिन्हें परमात्मा ने ’कय्यमुल-अस्मा’ तथा अन्य ‘पवित्र ग्रन्थों’ में प्रशंसित किया है। सत्य ही, ‘वह’ सबकी सुनने वाला है, ‘वह’ सबको देखता है, और जो उत्तर देने में तत्पर है।

6. “हमने, वस्तुतः, उनके स्मरण और इस ’घोषणा’ सम्बंधी स्तुति को सुना है जिसके बारे में उच्च लोक का समूह पुकार उठा है: ईश्वर की सौगन्ध! यह वही महान ’घोषणा’ है जिसका उल्लेख कुरान में और ईश्वर, लोकों के स्वामी, द्वारा प्रकटित पिछले ग्रंथों में हुआ है। वह, सत्य ही, उनकी ओर से अपनी स्तुति करता है और उनकी वाणियों के द्वारा अपना उल्लेख करता है। वह, सत्य ही, परम उदार है, असीम कृपा का स्वामी। आशीर्वादित है वह दृढ़ आत्मा जो शत्रुओं द्वारा उत्पन्न किए गए संदेह के झंझावातों में अडिग रही है। और आशीर्वादित है वह निष्ठावान जो अत्याचारियों के समूह के आक्रमण और नास्तिकता के व्याख्याकारों के अभ्युदय से अविचलित रहा है, उनसे जो स्वयं अपनी ही कपोल कल्पनाओं के शिकार हुए हैं और ’उसे’ ही अस्वीकार कर दिया है जिसके प्रति वे निष्ठा का दावा करते हैं। निश्चय ही इन्हें ‘मेरे’ प्रकट ‘ग्रंथ’ में नष्ट लोगों में गिना गया है।

7. “हे अली! मेरी ओर से मेरे प्रियजनों का आह्वान करो। उन्हें मेरी प्रशंसा कहो, मेरा स्मरण और मेरी शुभकामनाएँ दे ताकि तुम्हारे प्रभु की कृपा की सुमधुर सुरभि उन्हें आकर्षित कर सके और उन्हें सर्वशक्तिमान, सर्व-प्रशंसित ईश्वर के निकट खींच ला सके। और हम अपनी सेविकाओं और अपनी पत्तियों का भी स्मरण करते हैं जिन्होंने मेरे ’वृक्ष’ को दृढ़ता से पकड़ा है और जो मेरे शक्तिमान एवं ज्योतिर्मय परिधान से चिपकी रही हैं। तुम पर और उन पर, स्त्री-पुरुष दोनों पर ही, परमात्मा की महिमा विराजे, वह जो है करुणावान, सदा-क्षमाशील, परम दयालु।“

# 

# बाब की घोषणा

## 26

## लौह-ए-नाकूस

## (घंटी की पाती)

## वह है सर्व-महिमाशाली!

1. यह स्वर्ग का उद्यान है जिसमें संकटों में सहायक, स्वयंजीवी परमेश्वर के गान गुंजरित होते हैं; जहाँ आरोहण करते हैं दिव्य कल्पवृक्ष की टहनियों के ऊपर ’अनन्तता के कोकिल’ द्वारा गाए गए आत्मा को आह्लादित कर देने वाले माधुर्य, जहाँ; निवास करती हैं स्वर्ग की परियाँ, जिनका स्पर्श सर्वमहिमाशाली, परम पावन ईश्वर के सिवा अन्य किसी ने नहीं किया है; और जहाँ वह प्रतिष्ठापित निहित है जो आवश्यकताग्रस्त जनों को सच्ची सम्पदा के महासिंधु के तटों की ओर आकर्षित करता है और लोगों को ईश्वर की वाणी का मार्ग दिखाता है। और यह, वस्तुतः, स्पष्ट सत्य के सिवा और कुछ नहीं है।

2. तेरे नाम ’वह’ की सौगन्ध! तू सत्य ही ’वह’ है, हे तू जो ’वह’ है!12

3. हे ‘दिव्य एकता’ के ‘संन्यासी’! घण्टानाद करो क्योंकि ’प्रभु’ का ‘दिवस’ आ चुका है और सर्वमहिमाशाली का ’सौन्दर्य’ उसके आशीर्वादित एवं ज्योतिर्मय सिंहासन पर विराजमान हो चुका है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

4. हे हूद, हे दिव्य निर्णय के अवतार! सर्वमहिमाशाली, परमेश्वर के नाम पर तूर्यनाद कर, क्योंकि पावनता का ’मन्दिर’ दैवी महिमा के आसन पर स्थापित किया जा चुका है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

5. हे अमरता की मुखाकृति! चेतना की अँगुलियों से पवित्र एवं विलक्षण तारों को छेड़, क्योंकि प्रकाश के रेशमी परिधान से सुसज्जित ’दिव्य सारतत्व’ का सौन्दर्य प्रकट हो चुका है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

6. हे ज्योति के देवदूत! इस ‘प्रकटीकरण’ के आविर्भाव के उपलक्ष्य में उच्च स्वर में अपनी तुरही बजा, क्योंकि ’हा’ अक्षर पुरातन महिमा के अक्षर से जा मिला है।13 गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

7. हे स्वर्ग-कोकिल! ’प्रियतम’ के नाम पर इस स्वर्गिक उद्यान की शाखाओं पर कलरव कर, क्योंकि एक अभेद्य आवरण के पीछे से ’गुलाब’ का सौन्दर्य प्रकट हुआ है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

8. हे स्वर्गलोक के गायक! इन विलक्षण दिवसों में शाखाओं पर मधुर गुंजार कर, क्योंकि परमात्मा ने सभी रचित वस्तुओं के ऊपर अपनी ज्योतिर्मय किरणें बिखेर दी हैं। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

9. हे अनन्तता के पखेरू! इन गहन ऊँचाइयों पर विचरण कर क्योंकि निष्ठा के ’पंछी’ ने दिव्य निकटता के अंतरिक्ष में उड़ान भरी है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

10. हे स्वर्ग के निवासियों! गीत गाओ और अपने मधुरतम स्वरों में गायन करो, क्योंकि अनुपम पवित्रता के शिविर तले ईश्वर का माधुर्य गुंजरित किया गया है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

11. हे ’साम्राज्य’ के अंतःवासियों! ’प्रियतम’ के नाम का मधुर गायन करो क्योंकि ज्योतिर्मय चेतना से विभूषित ‘उसके धर्म’ का सौन्दर्य पर्दों के पीछे से चमक उठा है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

12. हे नामों के साम्राज्य के निवासियों! स्वर्ग के सुदूरतम छोरों को सुसज्जित कर दो क्योंकि अलौकिक भव्यता के बादल पर सवार होकर ’महानतम नाम’ का आगमन हो चुका है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

13. हे ’महिमा के लोक’ में दिव्य विभूषणों के ’साम्राज्य’ में निवास करने वालों! परमात्मा के सत्संग में आने को तैयार हो जा क्योंकि ’दिव्य सारतत्व’ के अभयारण्य से पावनता की मधुर बयारें प्रवाहित हो उठी हैं और यह, वस्तुतः, एक सुस्पष्ट कृपा है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

14. हे दिव्य एकता के स्वर्ग! अपने भीतर आनन्द से भर जा क्योंकि परम उदात्त, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ परमेश्वर का स्वर्ग प्रत्यक्ष हो उठा है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

15. हे भव्यता के स्वर्ग! अपने अंतर्तम अस्तित्व में ईश्वर के प्रति आभार प्रकट कर क्योंकि एक निर्मल पावनता के हृदय रूपी आकाश में पवित्रता का स्वर्ग खड़ा कर दिया गया है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

16. हे सांसारिक साम्राज्य के सूर्य! अपने मुखड़े को ढंक ले क्योंकि एक ज्योतिर्मय प्रभात के क्षितिज के ऊपर अनन्तता के ’दिवानक्षत्र’ की किरणें प्रभासित हो उठी हैं। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

17. हे ज्ञान की वसुंधरा! अपना ज्ञान अपने भीतर समेट ले क्योंकि वह जो सर्वमहिमाशाली, सर्वदयालु, परमोच्च परमात्मा का ’स्व’ है, उसके माध्यम से सच्चे ज्ञान की वसुधा पसार दी गई है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

18. हे पार्थिव साम्राज्य के दीप! बुझा ले अपना प्रकाश क्योंकि अनन्तता के आले में ’ईश्वर का प्रदीप’ जला दिया गया है और उसने उन सबको प्रकाशित करके रख दिया है जो स्वर्ग में और इस धरती पर हैं। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

19. हे संसार के सागरों! थाम लो अपनी लहरों का हुंकार क्योंकि एक परम विलक्षण धर्म ने ’अरुणाभ सिंधु’ को गर्जमान कर दिया है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

20. हे ’दिव्य एकता के मयूर’! स्वर्गिक विश्व की झाड़ी के मध्य अपना दारुण स्वर सुना क्योंकि हर ओर, ईश्वर की मधुरता निकट से गूंज उठी है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

21. हे अनन्तता के योद्धा! स्वर्गिक साम्राज्य के वनों में अपनी आवाज गुंजित कर क्योंकि ईश्वर का आह्वानकर्ता हर उत्तुंग ऊँचाई से पुकार उठा है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

22. हे उत्कंठ प्रेमियों के समूह! अपनी आत्माओं में आह्लाद से भर जाओ, क्योंकि वियोग का दिन समाप्त हो चुका है और संविदा पूरी हो चुकी है और उदात्त एवं भव्य सुन्दरता से विभूषित ’प्रियतम’ प्रकट हो चुका है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

23. हे रहस्यमय ज्ञाताओं के समूह! अपने हृदयों को आनन्द से भर जाने दो क्योंकि दूरस्थता का समय बीत चुका है और निश्चयात्मकता की चेतना प्रकट हो चुकी है और उस ’सर्वशक्तिमान’ के नाम के स्वर्ग में पवित्रता के अलंकरण से विभूषित स्वर्गिक ’युवा’ की मुखमुद्रा प्रभासित हो उठी है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

24. महिमाशाली है तू, हे प्रभो, मेरे परमेश्वर! मैं तेरे उस ’दिवस’ के नाम पर याचना करता हूँ जिसके माध्यम से तूने अन्य सभी दिवसों को प्रकट किया है और जिसके एक क्षण मात्र में तूने उन सबका नियत समय तय कर दिया जो अस्तित्व में आ चुके हैं और जो आएंगे - गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

25. और तेरे उस नाम से याचना करता हूँ जिसे तूने नामों के साम्राज्य का सम्प्रभु और उन सबका अधिनायक बनाया है जो स्वर्ग में और धरती पर हैं - गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है! -

26. कि अपने सेवकों को तू उदारतापूर्वक सहायता दे कि वे तेरे सिवा अन्य सब से मुक्त हो जाएँ, तेरे निकट आएँ, और तेरे सिवा अन्य सभी वस्तुओं से अनासक्त हो जाएँ। तू, सत्य ही, शक्ति का, सामर्थ्‍य और दया का परमेश्वर है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

27. अतः उन्हें सक्षम बना, हे मेरे ईश्वर, कि वे तेरी एकता के साक्षी बन सकें और इस तरह से तेरी एकता को प्रमाणित कर सकें कि तेरे सिवा वे अन्य कुछ भी न देख सकें और अन्य सभी वस्तुओं से अपनी आँखें मूंद लें। तू, वस्तुतः, जो भी चाहे करने में समर्थ है। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

28. अतः, हे मेरे प्रियतम, उनके वक्षों में अपने प्रेम की अग्नि जला दे ताकि वह अन्य किसी भी वस्तु के उल्लेख को भस्म कर दे और वे अपने भीतर यह प्रमाणित कर सकें कि तू अनादिकाल से अपनी अनन्तता की अगम्य ऊँचाइयों में निवास करता आया है, कि तू अकेला और निःसंग था, और यह कि तू अनन्तकाल तक वैसा ही रहेगा जैसा तू सदा रहता आया है। तेरे सिवा और कोई ईश्वर नहीं है, सामर्थ्‍य और कृपालुता का प्रभु। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

29. क्योंकि तेरे वे सेवक जो तेरी ऊँचाइयों तक उड़ान भरना चाहते हैं, यदि वे तेरे सिवा अन्य किसी की कामना करें तो उन्हें ऐसे लोगों में कभी नहीं गिना जाएगा जिन्होंने सचमुच तुझमें विश्वास किया है और न ही उनमें तेरी एकलता का चिह्न ही देखने को मिलेगा। गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

30. महिमावन्त है तू, हे प्रभो! ऐसा होने के कारण मैं तुझसे याचना करता हूँ कि अपनी दया के मेघों से ‘तू’ वह भेज जो तेरे उत्कट प्रेमियों के हृदयों को पावन बना दे और उनकी आत्माओं को पवित्र कर दे जो ‘तेरी’ आराधना करते हैं। अतः अपनी सर्वातीत शक्ति से उनका पालन कर और उन्हें धरती के सभी निवासियों पर विजयी बना। वस्तुतः, यही है वह जिसका तूने अपने प्रियजनों को वचन दिया है, अपने सत्य की इस वाणी के माध्यम सेः “और हम उनके प्रति कृपा दर्शाना चाहते हैं जिन्हें धरती पर अधमता प्रदान की गई और उन्हें लोगों के बीच आध्यात्मिक नेता बनाना चाहते हैं, और उन्हें हम अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते हैं।“14 गुणगान हो तेरा, हे तू जो ’वह’ है, हे तू जिसके अलावा ’वह’ के सिवा अन्य कोई नहीं है!

## 27

## लौह-ए-ग़ुलाम-उल-खुल्द

## (अमर्त्‍य युवा की पाती)

## यह उसका स्मरण है जिसे ईश्वर के दिनों में वर्ष साठ में प्रकट किया गया था - वह जो है सर्वशक्तिमान, संकट में सहायक, सर्वमहिमाशाली, सर्वज्ञ

1. देखो, स्वर्ग के द्वार खोल दिए गए और सर्वधारित पवित्र ’युवा’ प्रकट हुआ।15 आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो स्फटिक-स्वच्छ जल के साथ आया है।

2. उसके मुखड़े पर शक्ति और सामर्थ्‍य की अंगुलियों से बुना हुआ एक आवरण था। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो सामर्थ्‍यमय नाम के साथ आया है।

3. उसके ललाट पर एक सुन्दर मुकुट जगमगा रहा था जिसने उन सब पर अपनी आभा बिखेर दी जो स्वर्ग में और धरती पर हैं। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो एक सामर्थ्‍यमय धर्म के साथ प्रकट हुआ है।

4. उसके कंधों पर चेतना की लटें ऐसे बिखरी हुई थीं जैसे श्वेत, कांतिमान मोतियों के ऊपर काली कस्तूरी झुकी हो। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो एक सर्वोत्कृष्ट धर्म के साथ आया है।

5. उसके दाहिने हाथ में विशुद्ध और आशीर्वादित रत्न से विभूषित एक अँगूठी थी। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो सामर्थ्‍यमय चेतना के साथ अवतरित हुआ है।

6. उसके ऊपर एक गुप्त और प्राचीन लिपि में अंकित थे ये शब्दः “ईश्वर की सौगन्ध! यह एक परम कुलीन ’देवदूत’ है।“16 और अनन्त लोक के अंतःवासियों के हृदय पुकार उठेः “आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो पुरातन प्रकाश लेकर आया है।“

7. उसके दाहिने गाल पर एक चिह्न था जिसे देखने मात्र से हर बोध-सम्पन्न व्यक्ति अपनी आस्था से विचलित हो उठता और जो ’अगोचर’ के आवरण के पीछे निवास करते हैं, यह कह उठे: “आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो सामर्थ्‍यमय रहस्य के साथ आया है।“

8. यह वह ’बिंदु’ है जिससे पिछली और बाद की पीढ़ियों का ज्ञान उजागर हुआ है। और ’साम्राज्य’ के निवासी गा उठे: “आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो सामर्थ्‍यमय ज्ञान के साथ प्रकट हुआ है।“

9. वस्तुतः, यह ’चेतना का अश्वारोही’ है जो अनन्त जीवन के स्रोत की परिक्रमा करता है। और वे लोग जो उच्चतम स्वर्ग के आश्रयों में गुप्त हैं, पुकार उठे: “आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो एक सशक्त अनावरण के साथ आया है।“

10. वह सौन्दर्य के चंदोवे से नीचे उतरा और स्वर्ग के मध्य में स्थित सूर्य की तरह और अनुपम एवं सर्वातीत सुषमा से विभूषित, खड़ा हुआ। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो अत्यंत उल्लासमय सुसमाचारों के साथ आया है!

11. स्वर्ग के बीचों-बीच खड़ा होकर, दिव्य सौन्दर्य के आसन को अपने सामर्थ्‍यमय नाम से आलोकित करते हुए वह वैसे ही दमक उठा जैसे सूर्य अपनी मध्याह्न आभा के साथ दमक उठता है। इस पर ’मुनादी करने वाला’ पुकार उठा: “आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो सशक्त चेतना के साथ आया है!”

12. और स्वर्ग की अप्सराएँ अपने स्वर्गिक कक्षों से पुकार उठीं: “पावन हो परमात्मा, सभी रचयिताओं में सर्वश्रेष्ठ!” और कोकिल का मधुर आलाप छिड़ा: “आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जिसके जैसा स्वर्ग के कृपा प्राप्त जनों ने कभी नहीं देखा है।“

13. और देखो, स्वर्ग के द्वार एक बार फिर उसके ’महान नाम’ की कुंजी से खुल गए। “आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो एक सामर्थ्‍यमय नाम के साथ आया है।“

14. और सुन्दरता की परी उसी तरह कांतिमान हो उठी जैसे उषाकाल में अरुण प्रकाशमय प्रभात के क्षितिज पर प्रभासित हो उठता है। आनन्द मनाओ! यह दिव्य ’परी’ है जो उत्कृष्टतम सौन्दर्य के साथ पधारी है।

15. वह ऐसे अलंकरण के साथ अवतरित हुई कि वे जो ईश्वर के सन्निकट हैं उनके मनो-मस्तिष्क उत्कट अभिलाषा से भर उठे। आनन्द मनाओ! यह दिव्य ’परी’ है जो लुब्ध कर देने वाले आकर्षण के साथ पधारी है।

16. अनन्तता के कक्षों से नीचे उतरती हुई वह कुछ ऐसे स्वरों में गा उठी कि निष्ठावानों की आत्माएँ आनन्द-विह्वल हो गईं। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य सुन्दरता है जो एक शक्तिशाली रहस्य के साथ पधारी है।

17. हवा में तैरती हुई, उसने अपने प्रकाशित आवरण के तले से अपने बालों की एक लट को नीचे गिर जाने दिया - आनन्द मनाओ! यह स्वर्ग की ’परी’ है जो एक विलक्षण चेतना के साथ पधारी है -

18. और उसने समस्त सृष्टि पर उस लट की सुरभि फैल जाने दी। तदुपरांत, पवित्र जनों के मुखड़े म्लान हो गए और उत्कट प्रेमियों के हृदय वेदना के रक्त से भर गए। आनन्द मनाओ! यह स्वर्ग की ’परी’ है जो मधुरतम सुरभि के साथ पधारी है।

19. ईश्वर की सौगंध ! जो कोई भी उसकी सुन्दरता से आँखें फेरता है वह घोर छल एवं स्पष्ट भूल का शिकार हुआ है। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’सुन्दरता’ है जो कांतिमय प्रकाश के साथ पधारी है।

20. वह मुड़ी और इहलोक एव परलोक के निवासी दोनों ही उसकी परिक्रमा करने लगे। आनन्द मनाओ! यह स्वर्ग की ’परी’ है जो एक सामर्थ्‍यमय धर्मयुग के साथ पधारी है।

21. दुर्लभ एवं भव्य अलंकरण के साथ वह आगे बढ़ी जब तक कि वह ’युवा’ के बिल्कुल समक्ष नहीं खड़ी हो गई। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’सुन्दरता’ है जो मंत्रमुग्ध कर देने वाली कृपा के साथ पधारी है।

22. अपने आवरण के भीतर से उसने अपना हाथ बाहर निकाला - सुनहले रंग वाला जैसेकि किसी निर्मल दर्पण पर सूर्य की किरणें पड़ रही हों। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’सुन्दरता’ है जो कांतिमान अलंकरण के साथ पधारी है।

23. माणिक जैसे उसकी अनुपम अंगुलियों ने उस आवरण के छोर को थाम लिया जो उस ’युवा’ के मुखड़े को ढंके हुआ था - आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’सुन्दरता’ है जो एक सशक्त झलक के साथ पधारी है -

24. और फिर उसे पीछे खींच लिया और तब उच्च लोक के ’सिंहासन’ के स्तम्भ हिल उठे। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो एक सामर्थ्‍यमय धर्म के साथ आया है।

25. उसके बाद सभी रचित वस्तुओं की चेतनाएँ उनके शरीरों से अलग हो गईं। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो एक सामर्थ्‍यमय धर्म के साथ आया है।

26. और स्वर्ग के अंतःवासियों ने जैसे ही उसकी पुराचीन और ज्योतिर्मय मुखमुद्रा की एक झलक मात्र देखी, उन्होंने अपने परिधान छिन्न-भिन्न कर डाले। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो एक ज्योतिर्मय प्रकाश के साथ आया है।

27. उस क्षण एक मधुर और मनमुग्धकारी पुकार के साथ, बादलों के आवरण के पीछे से, ’अनन्त की ध्वनि’ सुनाई पड़ी। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो एक सामर्थ्‍यमय सम्मोहन के साथ आया है।

28. और परमात्मा के अकाट्य निर्णय के स्रोत से ’अगोचर की वाणी’ ने घोषणा की: “ईश्वर की सौगन्ध! पिछली पीढ़ियों ने इस ’युवा’ जैसे किसी अन्य को कभी नहीं देखा।“ आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो एक सामर्थ्‍यमय धर्म के साथ आया है।

29. और उदात्त साम्राज्य के कक्षों से पावनता की परियाँ पुकार उठीं। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो एक स्पष्ट प्रभुसत्ता के साथ आया है।

30. ईश्वर की सौगन्ध! यह वह ’युवा’ है जिसका सौन्दर्य स्वर्गिक समूहों की उत्कट अभिलाषा है। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो एक सामर्थ्‍यमय धर्म के साथ आया है।

31. और तब उस ’युवा’ ने स्वर्गिक देवदूतों के समूह के समक्ष अपना सिर उठाया - आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो एक सशक्त चेतना के साथ आया है।

32. और उसने एक ही शब्द का उच्चार किया जिससे स्वर्ग के एक-एक निवासी एक नया जीवन प्राप्त कर उठ खड़े हुए। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो एक सशक्त बिगुल की ध्वनि के साथ आया है।

33. तब उसने एक विलक्षण दृष्टि के साथ धरती के निवासियों की ओर देखा। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो एक सशक्त झलक के साथ आया है।

34. और उस झलक से उसने उन सबको एकत्रित कर डाला। आनन्द मनाओ! यह अमर्त्‍य ’युवा’ है जो एक सामर्थ्‍यमय धर्म के साथ आया है।

35. एक अन्य दृष्टि से उसने कुछ चुनिन्दा लोगों को छांटा और तब अनन्त स्वर्ग में अपने निवास में विश्राम करने चला गया। और यह सत्य ही एक सामर्थ्‍यमय धर्म है।

36. बादलों से आवृत्त सिंहासन से ’अनन्तता का अग्रदूत’ घोषणा करता है: हे लोगों जो धैर्य और निष्ठा की घाटी में आशा लिए प्रतीक्षारत हो! हे लोगों जो निकटता और पुनर्मिलन के वातावरण में उड़ान भरना चाहते हो! अभी तक ईश्वर के अनुल्लंघनीय कोषालयों में निगूढ़ स्वर्गिक ’युवा’, सर्वशक्तिमान के आभूषण और सर्व-प्रशंसित के सौन्दर्य से अलंकृत, अपरिवर्तनीय आभा के उदय-स्थल से ’यथार्थ के सूर्य’ और ’अनन्त चेतना’ की तरह, अब प्रकट हो चुका है। जो लोग भी स्वर्ग में और धरती पर हैं उन सबको उसने मृत्यु और विनाश के संकटों से उबारा है, उन्हें सच्चे और अनन्त अस्तित्व का परिधान पहनाया है और उन्हें एक नया जीवन प्रदान किया है।

37. वह निगूढ़ ’शब्द’ जिस पर ईश्वर के सभी संदेशवाहकों और उसके चुने हुए जनों की आत्माएँ निर्भर रही हैं, उसने अदृश्य संसार से स्वयं को दृश्य धरातल पर प्रकट कर दिया है। जैसे ही यह निगूढ़ शब्द धरती के लोगों को आलोकित करने अंतर्तम अस्तित्व और पूर्ण एकलता के लोक से प्रकाशित हुआ वैसे ही उससे करुणा की एक बयार उठी जिसने सभी वस्तुओं को पाप की दुर्गन्ध से मुक्त कर दिया और असंख्य प्रकार के अस्तित्वों और मानव के यथार्थ को क्षमाशीलता के परिधान से सुसज्जित कर दिया। सभी वस्तुओं को परिव्याप्त कर देने वाली वह कृपा ऐसी विलक्षण थी कि “भ” और “व” अक्षरों के उच्चारण से इस क्षणभंगुर संसार के कोषालयों में गुप्त रत्न उजागर और प्रत्यक्ष कर दिए गए’’ गोचर और अगोचर इस तरह से एक ही परिधान में शामिल हो गए और प्रत्यक्ष एवं निगूढ़ एक ही वस्त्र से विभूषित हो गए। इस तरह निरी शून्यता को अनन्तता का लोक प्राप्त हुआ और वह जो बिल्कुल क्षणभंगुर था उसे अनन्त जीवन के दरबार में प्रवेश प्राप्त हुआ।

38. अतः, हे ’सर्वमहिमाशाली’ के सौन्दर्य के प्रेमियों! हे तू जिन्हें उत्कंठा से उस सर्वशक्तिमान की उपस्थिति के दरबार की तलाश है! यह निकटता और पुनर्मिलन का दिन है, न कि विवाद और निरर्थक शब्दों का। यदि तुम निष्ठावान प्रेमी हो तो सच्चे प्रभात की तरह स्पष्ट और प्रभासित रूप से चमकते हुए ’परम प्रियतम’ का सौन्दर्य निहारो’’ तुम्हारे योग्य यह है कि तुम सभी आसक्तियों से - चाहे वह स्वयं के प्रति हो या औरों के प्रति - मुक्त हो जाओ नहीं, बल्कि तुम्हें अस्तित्व एवं अनस्तित्व, प्रकाश और अंधकार, गौरव और तुच्छता सबको एक समान त्याग देना चाहिए। अपने हृदय को सभी नाशवान वस्तुओं, सभी व्यर्थ के खयालों और कपोल कल्पनाओं से वियुक्त कर लो ताकि शुद्ध और निर्मल रूप से तुम चेतना के लोक में प्रवेश कर सको और प्रकाशित हृदय से अनन्त पावनता की आभाओं से अपना अंश ग्रहण कर सको।

39. हे मित्रों! अनन्त जीवन की मदिरा प्रवाहित हो रही है। हे प्रेमियों! ’प्रियतम’ का मुखड़ा प्रकट और अनावृत्त हो चुका है। हे साथियों! ’सिनाय’ के प्रेम की अग्नि दीप्ति एवं प्रखरता से प्रज्‍वलित हो रही है। इस संसार के प्रति प्रेम और उसके प्रति हर आसक्ति का बोझ उतार फेंको और ज्योतिर्मय स्वर्गिक पक्षियों की तरह दैवीय अलका के अंतरिक्ष में उड़ान भर एवं अनन्त निविड़ की ओर उड़ चलो। क्योंकि इससे वंचित होकर स्वयं जीवन का कोई मोल नहीं है और ‘प्रियतम’ से रहित होकर हृदय मूल्यहीन है।

40. हां, सर्वमहिमाशाली के प्रेमी परवाने हर क्षण उस ’मित्र’ की भस्म कर देने वाली ज्वाला के चारों ओर अपना जीवन कुर्बान कर देते हैं और ‘उसके’ सिवा अन्य किसी का ध्यान नहीं करते। परन्तु हर पक्षी उन ऊँचाइयों तक पहुँचने की इच्छा नहीं कर सकता। सत्य ही, ईश्वर उसका मार्गदर्शन करता है जिसे वह अपने सामर्थ्‍यमय और महान पथ पर ले जाना चाहता है।

41. इस तरह हम रहस्यमय लोक के निवासियों को वह प्रदान करते हैं जो उन्हें अनन्त जीवन की दाहिनी भुजा के निकट ले जा सके और उन्हें वह पद प्राप्त करने में समर्थ बना सके जिसे पवित्रता के स्वर्ग में सृजित किया गया है।

## 28

## वह है चिर शाश्वत, परम उदात्त, परम महान

1. देखो, ’महिमा की वाणी’ उच्च स्वर में पुकार उठी है और ’ईश्वर का शब्द’ यह घोषणा कर उठा है: “साम्राज्य ईश्वर का है जो रचयिता है स्वर्गों का और स्वामी सभी नामों का!” और तिस पर भी ज्यादातर लोग असावधान बने बैठे हैं। सर्वकरुणामय की मधुरता सम्पूर्ण सृष्टि में प्रतिगुंजित है, पवित्रता के लोक उसके परिधान की सुरभि से व्याप्त हैं, और ’महानतम नाम’ ने धरती के सभी निवासियों पर उसकी महिमा की आभा बिखेर दी है और फिर भी लोग हैं कि एक स्पष्ट आवरण में लिपटे हुए हैं।

2. हे महिमा की लेखनी! भव्यता के गान गुनगुनाओ क्योंकि हमने उस दिन के आगमन के साथ ही पुनर्मिलन की सुरभि बिखेर दी जबकि नामों का ‘साम्राज्य’ हमारे इस उदात्त, परम उच्च नामालंकरण से अलंकृत किया गया। जैसे ही ’सिंहासन’ के समक्ष इस ’दिवस’ का उल्लेख किया गया वैसे ही स्वर्ग की अप्सराओं ने एक विलक्षण माधुर्य का गायन किया, ’कोकिल’ ने अपना स्वर्गिक आलाप छेड़ा और ’सर्वदयालु’ ने वह मुखरित किया जिससे परमात्मा के संदेशवाहकों, उसके चुने हुए जनों और उन सबकी आत्माएँ आनन्द-विभोर हो गईं, जिन्हें ‘उसकी’ निकटता प्राप्त है।

3. यह उस ’दिवस’ की पूर्वसंध्या है जिसके क्षितिज से पुरातन ’प्रभात’ उस प्रकाशित क्षितिज से जगमगाती ज्योति की आभा लेकर प्रकट हुआ है। कहः यह वह ’दिवस’ है जबकि ईश्वर ने ‘उसके’ सम्बंध में संविदा स्थापित की जो ‘सत्य’ की आवाज17 है - ‘उसे’18 भेजकर जिसने मानवजाति को ’महान घोषणा’ के सुसमाचार सुनाए। यह वह ’दिवस’ है जबकि ’महानतम चिह्न’ प्रकट हुआ और इस सामर्थ्‍यमय ‘नाम’ की घोषणा की और इस माध्यम से उसने सभी रचित वस्तुओं को परमात्मा के श्लोकों की नवजीवनकारी बयारों से मंत्रमुग्ध कर दिया। धन्य है वह जिसने अपने प्रभु को पहचान लिया है और उसकी गिनती उन लोगों में की जाती है जो उसका सत्संग प्राप्त कर चुके हैं।

4. कह: सत्य ही, ‘वह’ राष्ट्रों के बीच स्थापित सबसे परिपूर्ण ’तराजू’ है जिसके माध्यम से ‘उसके’ द्वारा जो सर्वज्ञ एवं सर्वप्रज्ञ है सभी वस्तुओं के पैमाने प्रकट किए गए हैं। वही है वो जिसने अपनी वाणी की मदिरा से हर बोध-सम्पन्न हृदय को उन्मत्त कर दिया है और जिसने लोकों को आच्छादित करने वाले ‘मेरे नाम’ की शक्ति से सभी आवरणों को छिन्न-भिन्न कर दिया है। उसने, सत्य ही, ’बयान’ को इस ’उद्यान’ की एक पत्ती निर्धारित किया है और उसे इस अतुलनीय ‘स्मरण’ के उल्लेख से विभूषित किया है। उसने सभी लोगों को चेतावनी दी है कि वे स्वयं को पुरातन महिमा के ’दिवास्रोत’ से दूर न रखें और न ही ‘उसके’ प्रकटीकरण की बेला में ऐसी दंतकथाओं और परम्पराओं से चिपके रहें जो उन लोगों के बीच व्याप्त हैं। उसने जो प्रकट किया है उसके अनुसार ऐसा ही निर्णय दिया गया है और इसका साक्षी है ’वह’ जो सत्य कहता है। मुझ सर्वशक्तिमान, परम उदार के सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है।

5. जो लोग भी उसके पश्चात के ’प्रकटावतार’ से विमुख हुए हैं वे, वस्तुतः, उस पहले वाले अवतार को पहचानने में भी विफल रहे हैं। इस सामर्थ्‍यमय विभूषण में सभी धर्मों के ’प्रणेता’ द्वारा ऐसा ही निर्णय दिया गया है। कहः उसने, सत्य ही, तुम्हारे समक्ष इस ’मूल’ की घोषणा की, इसलिए जो लोग केवल एक शाखा के कारण पीछे रह गए हैं वे वास्तव में मृतकों में गिने जाते हैं। अफसोस कि लोग शाखा से चिपके बैठे हैं और परमात्मा से दूर हो गए हैं - उससे जो है सम्राट, महिमावन्त, सर्वप्रशंसित। उसने जो कुछ भी प्रकट किया उन सबको उसने मेरी स्वीकृति पर निर्भर किया और उसने हर विषय को इस प्रकट एवं अबाधित धर्म पर आश्रित किया। यदि मैं नहीं होता तो उसने एक शब्द भी नहीं कहा होता और न ही उसने स्वयं को उन सबके समक्ष प्रकट किया होता जो स्वर्ग में और धरती पर हैं। न जाने कितनी बार मेरे निर्वासन, मुझे कैद किए जाने और मेरी यातनाओं पर उसने विलाप किया! ’बयान’ में जो कुछ भी भेजा गया है वह इसका साक्षी है, काश कि तुम समझ पाते। सचमुच सामर्थ्‍यशाली है वह जिसने, परमात्मा की शक्ति के माध्यम से, उसके सिवा अन्य सभी वस्तुओं से अपने बन्धन काट डाले हैं और शक्तिहीन है वह जो प्रत्यक्ष प्रभुसत्ता के साथ ’उसके’ प्रकट होने के बावजूद उससे विमुख हो गया है।

6. हे धरती के लोगों! इस ’दिवस’ में जबकि ’चेतना’ ने अपने वचन उचारे हैं और उन सबके यथार्थ जो शक्तिमान, उदात्त परमात्मा की वाणी द्वारा सृजित किए गए थे ’उस’ तक आरोहण कर चले हैं, परमात्मा का उल्लेख कर। इस दिवस में प्रत्येक के लिए यही उपयुक्त है कि वह अतिशय आनन्द से भर उठे, स्वयं को अपने सुन्दरतम परिधान से विभूषित कर ले, अपने प्रभु की स्तुति का समारोह मनाए और इस परम महान कृपा के लिए ‘उसका’ आभार प्रकट करे। धन्य हैं वे जो ईश्वर के उद्देश्य को जान गए हैं और जो असावधान हैं उन पर विपत्ति टूटे।

7. इस रात यह ‘पाती’ प्रकट करने के बाद, अपनी कृपा के प्रतीकस्वरूप ‘हम’ इसे तुम्हारे पास भेजना चाहते हैं ताकि तुम उन लोगों में से हो सको जो कृतज्ञ हैं। इसे प्राप्त करने के बाद, ईश्वर के प्रियजनों की उपस्थिति में इसका पाठ करो, ताकि वे उस पर ध्यान दे सकें जिसे ’भव्यता की वाणी’ ने प्रकट किया है और उन लोगों में से बन सकें जो इसके परामर्श के अनुसार कार्य करते हैं। इस तरह हमने तुम्हें विशेष रूप से चुना है और तुम्हें उस परिधान से विभूषित किया है जिससे हमने पावन हृदय जनों को विभूषित किया है। स्तुति हो परमात्मा की, लोकों के प्रभु की!

# बहाउल्लाह का स्वर्गारोहण

## 29

## सूरा-ए-ग़ुस्न

## (’शाखा’ की पाती)

## यह वह है जो सदासर्वदा ’महिमा के साम्राज्य’ में निवास करता है

1. ईश्वर का धर्म वाणी की मेघमाला पर चढ़कर नीचे उतरा है जबकि वे जो ’उसके’ साथ भागीदारी करने चले हैं घोर यंत्रणा से उत्पीड़ित हुए हैं। स्वर्गिक प्रेरणा की ध्वजाएँ धारण किए हुए, सर्वशक्तिमान, परम सामर्थ्‍यशाली परमात्मा के नाम से, ’दिव्य प्रकटीकरण’ के सैन्य-समूह उसकी पाती के स्वर्ग से उतर पड़े हैं और वे जो निष्ठावान हैं उसकी विजय और उसके साम्राज्य से हर्षित हो उठे हैं, जबकि उसे अस्वीकार करने वाले खिन्नता से भर गए हैं।

2. हे लोगों! जबकि परमात्मा की दया ने उन सबको परिव्याप्त कर दिया है जो स्वर्ग में और धरती पर हैं उसके बाद भी क्या तुम उससे भाग रहे हो? ईश्वर ने तुम्हें जो दया प्रदान की है उसका सौदा न करो, न ही स्वयं को उससे रोको, क्योंकि जो उससे विमुख होते हैं वे वास्तव में घोर क्षति की अवस्था में हैं। ईश्वर की दया उन श्लोकों की तरह है जो एक ही स्वर्ग से यहाँ भेजे गए है: सच्चे अनुयायी उससे अनन्त जीवन की मदिरा का पान करते हैं जबकि नास्तिक पीते हैं एक तपती हुई घूँट। और जब कभी भी ईश्वर के श्लोकों का उनके समक्ष उच्चारण किया जाता है, उनके वक्षों में घृणा की आग सुलग उठती है। इस तरह वे उस कृपा का सौदा करते हैं जो परमात्मा ने उन्हें प्रदान की है और असावधानों में गिने जाते हैं।

3. हे लोगों, प्रयास करो कि तुम ’ईश्वर की वाणी’ की शरणदायिनी छाँह तले प्रवेश कर सको। अतः उससे आंतरिक अर्थ और व्याख्या की उत्तम मदिरा का पान करो, क्योंकि यह ’सर्वमहिमाशाली’ की जीवन्त जलधाराओं का भण्डार है और अनुपम आभा के साथ ’सर्वदयालु’ की इच्छा के क्षितिज से प्रकट हुआ है। कहः इस ’महानतम सिंधु’ से ’पूर्व-अस्तित्ववान सागर’ की शाखा फूटी है; धन्य है वह जिसने इसके तटों को पाया है और वहाँ आश्रय प्राप्त किया है।

4. इस ’सद्रतुल-मुन्तहा’ से यह पावन और महिमाशाली ‘जीव’, यह ’पवित्रता की शाखा’ फूटी है; धन्य है वह जिसने ’उसकी’ शरण पाने की चेष्टा की है और जो ’उसकी’ छाया तले निवास करता है। सत्य ही, इस ’मूल’ से जिसे ईश्वर ने दृढ़तापूर्वक अपनी ’इच्छा की स्थली’ में रोपा है और जिसकी ’शाखा’ इतनी ऊपर उठाई गई है कि वह समस्त सृष्टि को आच्छादित करती है, ’ईश्वर के विधान का अंग’ प्रस्फुटित हुआ है। अतः, महिमा हो ‘उसकी’ इस महान, इस आशीर्वादित, इस सामर्थ्‍यमय हस्तशिल्प के लिए! उसके निकट आओ, हे लोगों और विवेक एवं ज्ञान के उन फलों का आस्वाद प्राप्त करो जो ’उससे’ प्रस्फुटित हुए हैं जो सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञ है। जो कोई भी उनके आस्वाद से विफल रहा है वह ईश्वर की कृपा से वंचित है, भले ही वह धरती द्वारा उत्पन्न की जा सकने वाली सभी वस्तुओं का आस्वाद क्यों न चख ले, काश कि तुम यह समझ पाते!

5. हमारी कृपा के संकेतस्वरूप, ’परम महान पाती’ से एक ’शब्द’ निस्सृत हुआ है - वह ’शब्द’ जिसे परमेश्वर ने अपने ही ’स्व’ के अलंकरण से विभूषित किया है और उसे धरती एवं उस पर स्थित सभी वस्तुओं का अधिनायक, और उसके लोगों के बीच ’उसकी’ महानता और शक्ति का चिह्न नियत किया है, ताकि उस माध्यम से सब अपने प्रभु - उस शक्तिमान, सर्वसामर्थ्‍यमय, सर्वप्रज्ञ - को महिमान्वित कर सकें और अपने सृष्टिकर्ता और ’परमेश्वर की आत्मा’ की पावनता का स्तुति-गान कर सकें जिसका प्रभाव सभी रचित वस्तुओं पर है। यह, वस्तुतः, उस ’शब्द’ के सिवा और कुछ नहीं है जिसे ’उसने’ भेजा है जो सर्वज्ञ है, दिवसाधिक प्राचीन है।

6. हे लोगों, धन्यवाद करो परमात्मा का ‘उसके’ प्रकट होने के लिए क्योंकि वस्तुतः ‘वह’ तुम्हारे लिए महानतम ’कृपा’ है, तुम पर परिपूर्ण उदारता है; और उसके माध्यम से हर जर्जर होती अस्थि में नवजीवन का संचार होता है। जो कोई उसकी ओर उन्मुख होता है, वह ईश्वर की ओर उन्मुख हुआ है और जो कोई उससे मुंह फेरता है वह मेरे ’सौन्दर्य’ से विमुख हुआ है, उसने मेरे ’प्रमाण’ को अस्वीकार किया है और मेरे विरुद्ध उठ खड़ा हुआ है। वह तुम्हारे बीच ’ईश्वर का न्यास’ है, तुम्हारे बीच ‘उसका’ अभिरक्षक, तुम्हारे प्रति ‘उसका’ प्रकटावतार और ’उसके’ कृपाप्राप्त सेवकों के बीच ’उसका’ प्रकट स्वरूप।

7. इस तरह मुझे तुम्हें ईश्वर, तुम्हारे सृष्टिकर्ता, का संदेश देने को कहा गया और मुझे जो आदेश दिया गया मैंने उसे पूरा कर दिया है। इसके साक्षी हैं ईश्वर और उसके देवदूत, और उसके संदेशवाहक और उसके पावन सेवक। अतः इसके गुलाबों से स्वर्ग की मोहक सुरभियाँ ग्रहण कर और उनमें से न बन जो वंचित हैं। ईश्वर ने तुम्हें जो कृपा प्रदान की है उसका अंशभाग ग्रहण करने की शीघ्रता करो और स्वयं को उससे ओझल न रखो।

8. हमने उसे मानव-मन्दिर के रूप में धरती पर भेजा है। धन्य और पावन हो परमेश्वर जो अपने अनुल्लंघनीय और अचूक निर्णय से जो चाहे वह सृजित करता है। जो लोग स्वयं को इस ’शाखा’ की छाया से वंचित करते हैं वे भूल के बियावान में भटकते हैं, सांसारिक कामनाओं के ताप से भस्मीभूत हैं और ऐसे लोगों में से हैं जो निश्चित ही नष्ट हो जाएँगे।

9. हे लोगों! ईश्वर की छाया तले प्रवेश करने की शीघ्रता करो ताकि वह तुम्हें इस ’दिवस’ के प्रदाहकारी ताप से बचा सके जिसमें उस सदा-क्षमाशील, परम करुणावान के नाम की छाया के सिवा किसी को अन्यत्र कहीं शरण या आश्रय नहीं मिलेगा। हे लोगों, स्वयं को निश्चयात्मकता के परिधान से विभूषित कर लो ताकि वह व्यर्थ खयालों और कोरी कल्पनाओं की बरछियों से तुम्हारी रक्षा कर सके और इन दिनों में तुम्हारी गिनती निष्ठावानों में की जा सके - वे दिन जिसमें उनको त्यागे बिना जो लोगों के बीच प्रचलित हैं और इस पावन एवं ज्योतिर्मय ’सौन्दर्य’ की ओर उन्मुख हुए बिना किसी को भी निश्चयात्मकता की प्राप्ति नहीं हो सकती और न ही ईश्वर के धर्म में स्थिरता ही प्राप्त हो सकती है।

10. हे लोगों! क्या ईश्वर के सिवा तुम किसी झूठे देव को अपना सहायक मान लोगे? क्या तुम अपने प्रभु - उस सर्वशक्तिमान, परम सामर्थ्‍यमय - के आगे ’महानतम प्रतिमा’ का अनुगमन करोगे?19 त्याग दो उनका उल्लेख, हे लोगों, और अपने सर्वदयालु परमेश्वर के नाम पर जीवन का प्याला थाम लो। ईश्वर की सच्चरित्रता की सौगन्ध! इस प्याले की एक घूँट भी समस्त मानवजाति को स्फूर्ति से भर देती है, काश कि तुम यह जान पाते!

11. कह: इस ’दिवस’ में कोई भी परमात्मा के आदेश से प्रतिरक्षित नहीं रहेगा, उसके सिवा अन्य किसी में किसी को शरण प्राप्त नहीं होगा। यह, वस्तुतः, सत्य है और इसके सिवा सबकुछ स्पष्ट रूप से भूल है। ईश्वर ने हर किसी को यह दायित्व सौंपा है कि वे अपनी क्षमता भर उसके धर्म का शिक्षण करें। ऐसा ही है वह आदेश जिसे शक्ति और सामर्थ्‍य की ’अंगुली’ ने स्वर्गिक महिमा की ’पातियों’ में अंकित किया है। यदि कोई व्यक्ति किसी एक को भी इस प्रकटीकरण में स्फूर्त कर सके तो उसने मानों समस्त मानवजाति को स्फूर्त बना दिया है। उसे परमेश्वर - वह सम्प्रभु संरक्षक, सर्वशक्तिमान, सर्वदयामय - स्वयं अपने ’स्व’ के परिधान से सुसज्जित होकर, ’न्याय दिवस’ में अपनी एकमेवता के स्वर्ग में नवजीवन प्रदान करेंगे। तुम सब अपने प्रभु को जो सहायता प्रदान कर सकते हो उसकी ऐसी ही प्रकृति है और परमात्मा, तुम्हारे और तुम्हारे अतीत के पूर्वजों के प्रभु, की उपस्थिति में, इस ‘दिवस’ में और कुछ भी उल्लेख के योग्य नहीं है।

12. जहाँ तक तेरा प्रश्न है, हे सेवक! उस पर ध्यान दे जिसके बारे में इस ’पाती’ में हमने तुझे सम्मति दी है और सदा अपने प्रभु की कृपा प्राप्त करने का प्रयत्न कर। इस ’पाती’ को उन लोगों के बीच संवितरित कर जिन्होंने परमात्मा और उसके चिह्नों में आस्था रखी है, ताकि वे इसके आदेशों का पालन कर सकें और सच्चरित्रों में गिने जाएँ।

13. कहः हे लोगों! धरती पर अव्यवस्था मत फैलाओ और न ही अपने बंधुओं से विवाद करो, क्योंकि यह उनके योग्य नहीं है जो अपने प्रभु की छाया तले ऐसे व्यक्तियों के रूप में अपना दर्ज़ा रखते हैं जो एकमेव सत्य परमात्मा के प्रति निष्ठावान हैं। जब कभी तुम्हें कोई तृषित व्यक्ति मिले तो उसे अनन्त जीवन के प्याले से पान करने दो; और जब कभी भी तुम्हें कोई सुनने को उत्सुक व्यक्ति मिले तो उसके लिए शक्तिमान, सामर्थ्‍यमय, करुणावान परमेश्वर के श्लोकों का गायन करो। तुम्हारी वाणी मनोहर शब्दों से भरी हो और यदि तुम्हें ऐसे लोग मिलें जो ’ईश्वर के अभय-स्थल’ में अभिरुचि रखते हों तो सत्य की ओर उनका आह्वान करो; यदि नहीं तो उन्हें उनकी हालत पर छोड़ दो जोकि अतल लोक की अग्नि का यथार्थ है। सावधान कि कहीं तू आभ्यंतरिक अर्थ के मोतियों को अंधों और बंजर हृदय वाले लोगों के सामने न रख दे; क्योंकि वे प्रकाश को देख पाने से वंचित हैं और मूल्यहीन कंकड़ एवं मूल्यवान, चमकते हुए, मोती के बीच अन्तर कर पाने में असमर्थ हैं। यदि तुम हजार सालों तक भी किसी पत्थर के सामने विलक्षण महिमा के श्लोकों का गायन करे तो क्या वह उनसे प्रभावित हो सकेगा या उनका महत्व समझ सकेगा? नहीं, उस सर्वदयालु, परम करुणामय प्रभु की सौगन्ध! यदि तुम किसी बहरे के समक्ष ईश्वर के सभी श्लोकों का गायन करो तो भी क्या वह उसका एक अक्षर भी सुन सकेगा? नहीं, उसके पुरातन और भव्य ’सौन्दर्य’ की सौगन्ध!

14. इस तरह हमने तुम्हें दिव्य प्रज्ञा और वाणी के रत्न प्रदान किए हैं ताकि तुम अपने प्रभु पर अपनी दृष्टि केन्द्रित कर सके और स्वयं को संसार की सभी आसक्तियों से मुक्त कर सके। ’उसकी’ चेतना तुम पर विराजे और उन सब पर जो पावनता के आवास में निवास करते हैं और जो अपने प्रभु के धर्म में सच्ची अडिगता से विभूषित हैं।

## 30

## लौह-ए-रसूल

## (रसूल की पाती)

## वस्तुतः, मैं वह हूँ जो इस विश्व के चंदोवे तले खिन्नता से निवास करता है

1. हे रसूल! यदि तुम आंतरिक अर्थ के स्वर्ग के ’सूर्य’ के बारे में पूछना चाहो तो यह जान लो कि उस पर ईर्ष्‍या के बादलों का ग्रहण लग गया है; और यदि तुम अनन्त पावनता के लोक के ’चन्द्रमा’ के बारे में जानना चाहो तो यह जान लो कि उसे घृणा के आवरणों से ढंक दिया गया है; और यदि तुम अदृश्य यथार्थ के आकाश के ’नक्षत्र’ की तलाश करना चाहो तो यह समझ लो कि वह वैमनस्य के क्षितिज तले डूब चुका है। देखो, एक अकेले हुसैन पर सैकड़ों-हजारों घातक शत्रुओं के आक्रमण! देखो, असंख्य आततायी राजाओं से घिरा हुआ एक अकेला अब्राहम!20 देखो, एक निष्कलुष ’आत्मा’ जिस पर असंख्य-असंख्य घात लगाए बैठे हैं! देखो, एक अकेला ’गला’ जिसे काट डालने के लिए असंख्य छुरे तैयार हैं!

2. अपने इस पार्थिव जीवन में मुझे एक रात भी विश्राम नहीं मिला, एक भी दिन मुझे आराम नहीं मिल सका। एक समय मेरे कटे हुए सिर को एक जगह से दूसरी जगह एक पुरस्कार के रूप में भेजा गया, दूसरे समय मुझे हवा में लटका कर रख दिया गया। एक समय मेरे सहायक साथी के रूप में वह था जिसने मुझ पर घातक प्रहार किया और दूसरे समय मेरा घनिष्ठ सहयोगी वह था जिसने मेरे अवशेषों को दूषित किया। हर सुबह, अपनी शैय्या से उठने पर एक नई यातना मेरी बाट जोहती रही; और हर संध्या जब मैं कक्ष के एकान्त में लौटता, एक घोर संकट मेरे इंतजार में था। एक के बाद एक मेरे इन कष्टों से कहीं कोई मुक्ति नहीं थी और मुझ पर ढाए गए इन दुःखों के क्रम में कहीं कोई विराम नहीं था।

3. इन सबके बावजूद, अपने शत्रुओं के विरुद्ध मैं सूर्य की तरह स्पष्टता के साथ उठ खड़ा हुआ और स्वर्गिक साम्राज्य के निवासियों के समक्ष चन्द्रमा की तरह प्रखर होकर प्रकट हुआ। एक क्षण के लिए भी मैंने अपना जीवन बचाने का प्रयत्न नहीं किया और एक पल के लिए भी मैं अपने सुख-चैन के पीछे नहीं भागा। अपने ’प्रियतम’ के पथ पर मैंने अपनी आत्मा न्योछावर कर दी और उसके निमित्त अपना जीवन उत्सर्ग कर डाला। मेरा दुर्ग था ईश्वर पर मेरी निर्भरता और मेरी ढाल थी उस अनुपम ’मित्र’ के प्रति मेरी आसक्ति; मेरा रक्षा-कवच था ‘’उसमें’ मेरा अचूक भरोसा, और मेरी सेनाएँ ‘उसकी’ करुणा के प्रति मेरी उत्कट आशा।

4. अंततः, मेरे प्रकटीकरण ने मेरे शत्रुओं के मन में ईर्ष्‍या भड़का दी और दुष्ट जनों के विद्वेष को प्रकट किया। हे मेरे रसूल! यदि तुम तेज और बोध-सम्पन्न नेत्र से देखते, तो तुम सभी वस्तुओं को - हाँ, वस्तुतः उच्च लोक के निवासियों को भी - मेरे दुःख और मेरी पीड़ा में भागीदार बने देखते। हे रसूल! शैतानी ईर्ष्‍या के अन्यायपूर्ण अंधकार ने चेतना के प्रकाशमय ’प्रभात’ को छुपा दिया है और द्वेष के अंधकारमय आवरणों ने अनन्त पावनता के ’दिवानक्षत्र’ की ज्योतिर्मय किरणों को ढंक दिया है।

5. इस वर्तमान घड़ी में ’पुरातन सम्राट’ ने इन दिग्भ्रमित जनों से छुटकारा पाना तय किया है। तथापि, जैसाकि ‘उसके’ पहले निर्वासन के बाद स्पष्ट रूप से देखा गया था, यह कोई नहीं जानता कि इस प्रस्थान के बाद भी ’ईश्वर की करुणा के सारतत्व’ को इन जहरीले सांपों के दंश से मुक्त किया जाएगा या नहीं।

6. हे रसूल! क्या तुम इस प्रवंचित और निर्वासित आत्मा की दशा नहीं समझ सकते जो स्वयं को दो संघर्षरत राष्ट्रों द्वारा बुरी तरह उत्पीड़ित किया जाता देख रहा है, और जिसे न तो अपने शत्रुओं की दया प्राप्त है और न ही अपने मित्रों की करुणा? मैं अपने ’सौन्दर्य’ की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि अपने दुश्मनों के हाथों मैं जिन यातनाओं का शिकार हो रहा हूँ उन्हें सह लेना लाख गुणा सरल है! ईश्वर का धन्यवाद कर कि तू उसकी दशा से पूरी तरह अवगत नहीं है जो ’अनन्त समाट’ है और उसे जो कुछ भी भोगना पड़ा है। ये वास्तव में ऐसे दिन हैं जैसेकि सृष्टि के नेत्र ने पहले कभी नहीं देखे।

7. अतः प्रयास कर कि तू भ्रम और अनुकरण के पथ का परित्याग कर सके और आंतरिक दृष्टि के लोक एवं आध्यात्मिक अन्वेषणों के साम्राज्य में प्रवेश पा सके। क्योंकि इन दिनों में सभी लोग अज्ञान की मदमस्ती में उलझे पड़े हैं, सिवाय उनके जिन्हें तेरे परमेश्वर ने उससे बचाए रखने की कामना की है। कुछ लोग धूमिल होती मृग-मरीचिका को तरंगित समुद्र मान बैठे हैं और अभेद्य अंधकार को प्रकाशमय प्रभात समझे हुए हैं। अन्य लोग, अनन्त जीवन की सरिता को त्याग कर, स्वयं को एक सूखती हुई बूंद से ही संतुष्ट किए हुए हैं। लोगों की स्थिति और दशा ऐसी ही हैः “इस तरह हमने आत्माओं को विविध दशाओं में सृजित किया है।“21

8. जहां तक तेरा प्रश्न है, हे रसूल! यदि तू मेरे प्रेम के वातावरण में उड़ान भरना चाहे तो तेरे लिए यह उपयुक्त है कि तू धरती और स्वर्ग के साम्राज्यों, और जो कुछ भी उनमें निहित है, से ऊपर उठ ताकि तू ’सर्वमहिमाशाली’ की सत्कृपा का स्वर्ग प्राप्त कर सके। धन्य हैं वे जिन्होंने वहां प्रवेश पा लिया है!

## 31

## लौह-ए-मरयम

## (मरयम की पाती)

## उद्विग्न है वह मेरे दुःखों से

1. ओ मरयम! जो दुःख मैं झेल रहा हूँ वे उन दुःखों को भी सोख गए हैं जो ‘मेरे प्रथम नाम’22 को सृष्टि की ’पाती’ से झेलने पड़े थे। दिव्य आदेश के बादलों ने इस प्रत्यक्ष ’सौन्दर्य’ के ऊपर प्रतिक्षण यातनाओं की घोर वर्षा की है। मेरी गृहभूमि से मेरा निर्वासन और किसी निमित्त नहीं बल्कि मेरे ’प्रियतम’ के लिए था; मेरा निष्कासन और किसी पथ पर नहीं बल्कि उसकी सत्कृपा के पथ पर था। दैव द्वारा भेजी गई इन परीक्षाओं के दरम्यान मैं एक मोमबत्ती की तरह प्रखरता से जलता रहा और दिव्य-निर्धारित यातनाओं के सम्मुख मैं एक पर्वत की तरह अविचल खड़ा रहा। ’उसकी’ कृपा की फुहारों को प्रकट करते हुए मैं एक उदार बादल की तरह रहा और अनुपम ’सम्राट’ के शत्रुओं पर शिकंजा कसते हुए मैं एक जलती हुई लपट की तरह था।

2. मेरी शक्ति के स्पष्ट संकेतों ने मेरे शत्रुओं के मन में ईर्ष्‍या पैदा की और मेरे विवेक के बाध्यकारी प्रमाणों ने दुष्ट लोगों की घृणा भड़का दी: एक रात भी मैं चैन से नहीं सो सका न ही एक सुबह भी कभी शांति से जाग सका। मैं ईश्वर के सौन्दर्य की सौगन्ध खाता हूँ कि मैंने जिन कष्टों को सहा उनके लिए हुसैन23 ने शोक के आँसू बहाए थे और मैंने जिन यातनाओं को झेला उनके लिए अब्राहम ने स्वयं को आग की लपटों में झोंक दिया। यदि तुम बोध-सम्पन्नता के साथ देख पाते तो तुम ’भव्यता के नयन’ को पवित्रता के चंदोवे तले फूट-फूट कर रोते और ’भव्यता के सारतत्व’ को उच्चता के लोकों में विलाप करते देख पाते। इसकी साक्षी है सत्य और महिमा की ’वाणी’।

3. ओ मरयम! ’ता’24 की भूमि से, असंख्य यातनाओं के बाद, हम फारस के आततायी25 के आदेश पर इराक पहुँचे जहाँ अपने दुश्मनों की बेड़ियों के बाद हमें अपने मित्रों के विश्वासघात से संतप्त होना पड़ा। उसके बाद मुझ पर क्या गुजरा, ईश्वर उसे जानता है। अंततः, अपना घर-बार और सर्वस्व छोड़ कर और अपने जीवन और उसमें निहित सभी वस्तुओं का परित्याग करने के बाद, मैं बिना किसी सहचर के अकेला ही रह गया। मैं त्याग के बियावान में भटकता रहा, इस तरह यात्रा करते हुए कि मेरे उस निर्वासन के दौरान हर नेत्र ने मुझ पर घोर क्रन्दन किया और सभी सृजित वस्तुओं ने मेरी वेदना के कारण खून के आँसू बहाए। हवा में विचरण करते पँछी ही मेरे सहचर थे और मैदानों में चरने वाले जानवर मेरे साथी। इस तरह, चेतना की एक झलक की मानिन्द, मैं इस नाशवान संसार से होकर गुजरा। दो वर्षों या उससे कुछ कम समय के लिए, मैंने ईश्वर के सिवा सबकुछ को त्याग दिया और ‘उसके’ सिवा अन्य सभी से अपनी आँखे मूंद लीं, ताकि कदाचित घृणा की आग बुझ जाए और ईर्ष्‍या की तपिश कम हो जाए।

4. ओ मरयम! स्वर्गिक भेदों का उद्घाटन उपयुक्त नहीं होगा और दिव्य रहस्यों को प्रकट करना समीचीन नहीं रहेगा। “भेदों” से और कुछ भी तात्पर्य नहीं है सिवाय मेरे अपने ही ’अस्तित्व’ में संचित कोष। ईश्वर की सच्चरित्रता की सौगन्ध! मैंने वह झेला है जिसे अतीत या भविष्य के किसी भी व्यक्ति ने न झेला है न कभी झेलेगा।

5. इस एकाकीपन की अवधि में किसी भी व्यक्ति ने, चाहे वह मेरे भाइयों में से हो या अन्य कोई व्यक्ति, विषय को जानने का प्रयत्न नहीं किया, उसके महत्व को समझना तो दूर रहा, हालाँकि उसका अभिप्राय धरती और स्वर्ग की सृष्टि से भी परे जाता है। और फिर भी, मैं ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, मेरी यात्रा के दौरान ली गई हर साँस दोनों लोकों की सेवा से कहीं अच्छी थी और मेरी वह एकान्त विश्रान्ति सबसे सशक्त प्रमाण और सर्वाधिक परिपूर्ण एवं निर्णायक साक्ष्य थी। हाँ, यदि कोई सर्वातीत महिमा का ’दृश्य’ निहारना चाहे तो सच्ची दृष्टि आवश्यक है क्योंकि जो अंधा है वह तो स्वयं अपनी मुखमुद्रा भी नहीं निहार सकता, अनन्त पावनता की मुखमुद्रा निहार पाना तो दूर की बात है। भला एक निरी छाया उसे कैसे समझ सकती है ‘जिसने’ उसे सृजित किया है? एक मुट्ठी भर माटी हृदय के सूक्ष्म यथार्थ को कैसे समझ सकती है?

6. अंततः, दिव्य आदेश से प्रेरित होकर कुछ आध्यात्मिक लोगों ने ’कैनान के इस युवा’26 को याद किया। कई लोगों द्वारा याचना किए जाने के बाद, उन्होंने हर जगह तलाश की और हर व्यक्ति से पूछा और अंततः एक पर्वत की गुफा में इस लापता का पता ढूँढ़ निकाला। वह, सत्य ही, सभी वस्तुओं को ’सीधा मार्ग’ दिखाता है।27 मैं अनन्त सत्य के ’दिवानक्षत्र’ की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि इन लोगों के आगमन से मुझ बेचारे और निर्वासित व्यक्ति को इतना आश्चर्य और अचम्भा हुआ कि मेरी लेखनी उसका वर्णन कर पाने में असमर्थ है। कदाचित कोई इस्पात-सी धारदार लेखनी अनन्तता के लोक से प्रकट होगी, पर्दों को छिन्न-भिन्न कर देगी और पूर्ण सत्य एवं परम ईमानदारी से इन रहस्यों का उद्घाटन करेगी; या फिर कदाचित कोई प्रवाहपूर्ण वाणी मुखरित होगी और खामोशी की सीपी से निकाल कर चेतना के मोतियों को बाहर ले आएगी। और, वास्तव में, ऐसा कर पाना ईश्वर के लिए कठिन नहीं होगा। संक्षेप में, वह जो कि ’अप्रतिबाधित’ है उसके हाथों ने रहस्यों का अनावरण किया - परन्तु इसे कोई नहीं समझ सकता सिवाय उनके जो सच्चे बोध से सम्पन्न हैं, नहीं, बल्कि वे जिन्होंने स्वयं को सभी वस्तुओं से अनासक्त कर लिया है।

7. तो इस तरह संसार का ’नक्षत्र’ लौटकर इराक आया, जहाँ हमने कुछ शिथिल एवं मायूस, बल्कि पूर्णतः अचेत एवं मृतप्राय हो चुके चंद लोगों के सिवा और किसी को नहीं पाया। ईश्वर के धर्म का नाम किसी भी होठ पर नहीं था और न ही कोई हृदय उसके संदेश के प्रति ग्रहणशील था। तब ईश्वर के धर्म की रक्षा और उसके संवर्द्धन के लिए यह विनम्र ‘सेवक’ ऐसी स्फूर्ति के साथ उठा कि मुझे लगता है एक नए जीवन का संचार हुआ। प्रभुधर्म की महिमा प्रत्येक शहर में प्रकट हुई और इसके शुद्ध नाम की महत्ता हर नगरी में फैल गई, इस कदर कि सभी शासकों ने इसके साथ सहिष्णुता और उदारता का व्यवहार किया।

8. ओ मरयम! हर समूह और हर कोटि के ’उसके’ शत्रुओं के आक्रमण का प्रतिरोध करने के लिए इस ’सेवक’ ने जिस दृढ़ता का परिचय दिया उससे उनका विद्वेष इतना बढ़ गया कि उसका वर्णन या उसकी कल्पना करना कठिन है। शक्ति और सामर्थ्‍य के प्रभु द्वारा ऐसा ही नियत किया गया था।

9. ओ मरयम, ’दिवसाधिक प्राचीन’ की लेखनी घोषणा करती है: सबसे प्रथम कर्तव्य यह बताया गया है कि ईश्वर के सिवा अन्य सभी बातों से अपने हृदय को मुक्त एवं निर्मल कर ले। उसके बाद अपने हृदय को अपने उस ’मित्र’ के सिवा अन्य सबसे परिष्कृत कर लो ताकि तुम प्रभु के साथ वार्तालाप के दरबार में प्रवेश करने योग्य बन सके।

10. ओ मरयम! स्वयं को अंधानुकरण की बेड़ियों से मुक्त कर ताकि तू अनासक्ति के आनन्दमय लोक में प्रवेश कर सके। अपने हृदय को इस संसार और इसकी सभी वस्तुओं के बन्धनों से अलग कर ले, ताकि तू आस्था की सार्वभौम सत्ता तक पहुंच सके और तुझे सर्वदयालु के अभय-स्थल से रोका न जा सके। त्याग की शक्ति के माध्यम से, कपोल कल्पना के पर्दे को छिन्न-भिन्न कर दे और निश्चयात्मकता के पावन आश्रयों में प्रवेश कर।

11. ओ मरयम! भले ही कोई पेड़ अनगिनत के फलों और पत्तियों से क्यों न लदा हो किन्तु पतझड़ की बयार का एक झोंका उन सबको मिटा देने के लिए पर्याप्त है। अतः, अपनी दृष्टि ’दिव्यता के तरुवर’ की जड़ और स्वर्गिक महिमा के ’कल्पवृक्ष’ की शाखा से परे न कर। समुद्र के बारे में विचार करो, वह कितना शांत पड़ा होता है, अपने आगार में वह कितने शानदार ढंग से सोया होता है। किन्तु अनन्त ’प्रियतम’ की इच्छा के समीर उसकी सतहों पर अनगिनत लहरों और असंख्य ज्वारों को उत्पन्न कर देते हैं, और हर तरंग अन्य तरंगों से बिल्कुल अलग और भिन्न होती है। आज दुनिया के सभी लोग इन लहरों के ज्वार-भाटों के प्रवाहों में निमग्न हैं और ’सागरों के महासागर’ की अद्भुत सामर्थ्‍य को भुलाए बैठे हैं जिसकी हर हलचल ’उसके’ संकेतों को अनावृत करती है जो ’अप्रतिबाधित’ है।

12. ओ मरयम! ’सर्वदयालु की चेतना’ से वार्तालाप कर और ’दुष्ट’ का साथ और उससे आत्मीयता त्याग कर उदारता के प्रभु की अदम्य सुरक्षा में शरण पाने का प्रयास कर, ताकि कदाचित उसकी स्नेहिल दयालुता का हाथ तुझे स्वार्थमय लक्ष्यों के पथ से मुक्त कर सके और तेरे कदमों को अलौकिक महिमा के लोक की दिशा दिखा सके।

13. त्याग दे इन चलायमान छायाओं को, ओ मरयम, और कभी धूमिल न होने वाली आभा के ’दिवानक्षत्र’ की ओर उन्मुख हो। हर छाया का अस्तित्व और उसकी गति सूर्य की उपस्थिति पर निर्भर है, क्योंकि यदि सूर्य एक क्षण के लिए भी अपनी कृपा रोक दे तो सभी वस्तुएँ अनस्तित्व के पर्दे में विलीन हो जाएँगी। सचमुच यह कितने दुःख और अफ़सोस की बात है कि कोई व्यक्ति इस संसार की नाशवान चीजों में व्यस्त रहे और अनन्त पावनता के ’दिवास्रोत’ से वंचित रह जाए!

14. ओ मरयम! इन दिनों के महत्व को समझ, क्योंकि शीघ्र ही वह समय आएगा जब इस क्षणभंगुर लोक में तुम ’स्वर्गिक युवा’ को नहीं देख पाओगी, बल्कि सभी रचित वस्तुओं में तुम्हें दुःख के संकेतों का बोध होगा। बहुत ही जल्द, तुम्हें पश्चात्ताप में हाथ मलना होगा क्योंकि भले ही तुम धरती और स्वर्ग के दूर दिगन्त तक खोज डाले किन्तु यह ’युवा’ तुम्हें नहीं मिलेगा। अलौकिक महिमा के लोक से ऐसा ही आदेश दिया गया है। हाँ, बहुत ही जल्द तुम समस्त अस्तित्व को इस ’युवा’ के वियोग में हाथ मलते देखोगी और समस्त धरती और हर स्वर्ग में मानो वे उसकी तलाश करेंगे किन्तु वे ‘उसकी’ उपस्थिति तक आने में असमर्थ होंगे।

15. संक्षेप में, हालात ऐसे बन गए हैं कि इस ’सेवक’ ने इन दयनीय लोगों से पृथक अलग ही विश्रान्ति पाने का संकल्प ले लिया है। घर की महिलाओं को छोड़कर जिन्हें मेरे साथ रहना आवश्यक है, मैं किसी को भी अपने संग नहीं रहने दूँगा, यहाँ तक कि अपनी पत्नी की सेविकाओं को भी नहीं। अतः देखना है कि ईश्वर ने क्या उद्दिष्ट किया है। मैं प्रयाण करता हूँ और मेरे साथी हैं बस मेरे आँसू और मेरे सहयोगी मेरी आहें, मेरी सांत्वना है मेरी लेखनी और मेरी आत्मा का आनन्द बस मेरा ही सौन्दर्य है; मेरे सहचर हैं ईश्वर पर मेरा विश्वास और मेरी सेना है उसमें मेरी आस्था। इस तरह हमने तेरे समक्ष इस विषय के रहस्यों का एक अंश प्रकट किया है ताकि, तू उन लोगों में से हो सके जो समझते हैं।

16. ओ मरयम! संसार की सभी जलधाराएँ और इसकी नदियाँ इस ’युवा’ के नेत्रों से प्रवाहित हुई हैं और, बादलों की तरह, उन्होंने उन कष्टों के लिए अपने आँसू बरसाए हैं जो ’उसने’ झेले हैं। संक्षेप में, ’प्रियतम’ के पथ पर हमने अपना जीवन और अपनी आत्मा न्योछावर कर दी है और हम पर चाहे जो भी गुजरे उसके लिए हम आभारी और उनसे संतुष्ट हैं। एक समय मेरे सिर को भाले की नोंक पर उठाया गया और दूसरे समय वह मेरे घोर शत्रु के हाथों में पड़ा। एक समय मुझे आग में झोंक दिया गया और दूसरे वक्त मुझे हवा में टांग दिया गया। वास्तव में नास्तिकों ने ‘हमसे’ ऐसा ही व्यवहार किया है।

17. ओ मरयम! इस ’पाती’ को हमने “विलापों में सर्वोत्तम” कहा है और “आँसुओं का बसन्ती सैलाब”। हमने इसे तेरे पास भेजा है ताकि तू जी भर रुदन कर सके और ’पुरातन सौन्दर्य’ के कष्टों और उत्पीड़नों को जान सके।

## 32

## किताब-ए-अहद

## (संविदा की पुस्तक)

1. हालाँकि ’महिमा के लोक’ में इस संसार का कोई भी मिथ्याभिमान नहीं है, किन्तु विश्वास और त्याग के कोषालय में हमने अपने उत्तराधिकारियों के लिए एक उत्कृष्ट और अमूल्य ’विरासत’ छोड़ी है। हमने पार्थिव धन-सम्पदा नहीं छोड़ी है और न ही ऐसी चिन्ताओं को बढ़ावा दिया है जो उनके परिणामस्वरूप उत्पन्न होती हैं। ईश्वर की सौगन्ध! पार्थिव धन-सम्पदा में एक भय छिपा हुआ है, उसमें संकट निहित है। सर्वदयावान ने ’कुरान’ में जो प्रकट किया है उस पर विचार करो और उसका स्मरण करो: “विपत्ति टूटे हर निंदा और अवमानना करने वाले पर, उस पर जो धन एकत्रित करता है और उसे गिनता है।“28 संसार की धन-सम्पदा चलायमान है; जो कुछ भी नाशवान और परिवर्तनशील है वह, एक खास सीमा तक छोड़कर, कभी भी ध्यान दिए जाने योग्य न रहा है न रहेगा।

2. दुःखों और यातनाओं को झेलने, ‘पवित्र श्लोकों’ को प्रकट करने और प्रमाणों को झलकाने में इस ’प्रवंचित’ का उद्देश्य और कुछ नहीं बल्कि घृणा और शत्रुता की लपटों को बुझाना था, ताकि लोगों के हृदय के क्षितिज सद्भाव के प्रकाश से आलोकित हो सकें और सच्ची शांति और शांतचित्तता प्राप्त कर सकें। दिव्य पाती के उदय-स्थल से इस वाणी का दिवानक्षत्र प्रखर रूप से चमक रहा है और हर किसी के लिए यही उपयुक्त है कि वह इस पर अपनी दृष्टि केन्द्रित करे: हम तुमसे आग्रह करते हैं, हे दुनिया के लोगों, कि उसका पालन करो जिससे तुम्हारा स्थान ऊँचा हो सके। ईश्वर के भय का दामन दृढ़ता से थाम और जो सही है उस पर अडिग रहो। मैं सत्य ही कहता हूँ कि यह जीभ जो अच्छा है उसका उल्लेख करने के लिए है, इसे अयोग्य बातों से दूषित न करो। परमात्मा ने जो बीत चुका है उसे क्षमा कर दिया है। अब आगे से हर किसी को वही बोलना चाहिए जो सौम्य और समीचीन हो और निंदा, अपशब्द एवं ऐसी किसी भी बात से बचना चाहिए जो व्यक्तियों को खिन्न कर दे। मनुष्य का दर्ज़ा बहुत ऊँचा है! बहुत दिन नहीं हुए जब यह उदात्त ’शब्द’ हमारी ’महिमा की लेखनी’ से फूटा था: महान और आशीर्वादित है यह युग - वह युग जिसमें वह सब कुछ जो मनुष्य के भीतर निहित है उसे प्रकट कर दिया गया है और प्रकट किया जाएगा। महान है मनुष्य का दर्ज़ा, काश कि वह सत्य और सच्चरित्रता का दृढ़ता से दामन थाम ले और धर्म में स्थिर एवं अडिग रहे। सर्वदयालु की दृष्टि में सच्चा मनुष्य एक आकाश की तरह प्रतीत होता है, उसके सूर्य और चन्द्र उसकी आँख और कान हैं और उसका प्रखर ज्योतिर्मय चरित्र उसके तारे। उसका स्थान उच्चतम स्थान है और उसके प्रभाव से अस्तित्व के संसार को शिक्षा मिलती है।

3. हर ग्रहणशील आत्मा जिसने इस युग में ’उसके’ परिधान की सुरभि ग्रहण की है और जिसने शुद्ध हृदय से अपना मुखड़ा सर्वमहिमाशाली क्षितिज की ओर उन्मुख किया है उसे ’अरुणाभ ग्रंथ’ में बहा के लोगों में गिना गया है। मेरे नाम पर, तू मेरी स्नेहिल दयालुता की प्याली थाम ले और तब मेरे महिमाशाली एवं विलक्षण स्मरण के नाम से छक कर पी।

4. हे धरती पर रहने वालों! ईश्वर का धर्म प्रेम और एकता के लिए है; उसे शत्रुता और विरोध का कारण मत बनाओ। अंतर्दृष्टि से सम्पन्न लोगों और उनकी दृष्टि में जो ’परम महान छवि’ को देखने वाले हैं, मानव-सन्तानों की प्रसन्नता और उनके कल्याण को सुरक्षित रखने व बढ़ावा देने के लिए जो कुछ भी प्रभावी साधन हैं उन्हें ’महिमा की लेखनी’ द्वारा पहले ही प्रकट किया जा चुका है। लेकिन धरती पर रहने वाले जो मूढ़ जन हैं, वे अपनी दुष्टतापूर्ण लालसाओं और कामनाओं से सम्पोषित होने के कारण ’उसके’ परम विवेक से असावधान रहे हैं जो सत्य ही सर्वप्रज्ञ है और उनकी कथनी और करनी व्यर्थ विचारों और कोरी कल्पनाओं से उत्प्रेरित हैं।

5. हे ईश्वर के प्रियजनों और उसके न्यासियों! राजा लोग ईश्वर की शक्ति के प्रकटीकरण और उसकी सामर्थ्‍य और समृद्धि के दिवास्रोत हैं। उनकी ओर से तुम प्रार्थना करो। उसने उन्हें धरती का शासन सौंपा है और एकमात्र मानव के हृदयों को अपने साम्राज्य के रूप में चुना है।

’6. उसके ग्रंथ’ में संघर्ष और विवाद का स्पष्ट रूप से निषेध किया गया है। इस ’परम महान प्रकटीकरण’ में यह ईश्वर का एक आदेश है। इसे निरस्तीकरण से दिव्य सुरक्षा प्राप्त है और ’उसके’ द्वारा उसे ’उसकी’ पुष्टि से विभूषित किया गया है। वह सत्य ही सर्वज्ञ है, सर्वप्रज्ञ है।

7. यह हर किसी का कर्तव्य है कि सत्ता के उन दिवास्रोतों और आज्ञा के उद्गमों की सहायता करें जो समता और न्याय के विभूषण से विभूषित हैं। बहा के लोगों के बीच जो शासक और ज्ञानी हैं वे धन्य हैं। मेरे सेवकों के बीच वे मेरे न्यासी हैं और मेरे लोगों के बीच मेरी आज्ञाओं के मूर्तिमान रूप। उन पर मेरी महिमा, मेरे आशीर्वाद और मेरी कृपा विराजे जिन्होंने अस्तित्व के संसार को व्याप्त कर रखा है। इस सम्बंध में ’किताब-ए-अकदस’ में प्रकटित वाणियाँ ऐसी हैं कि उनके शब्दों के क्षितिज से दिव्य कृपा का प्रकाश प्रखरता और दीप्ति के साथ चमकता है।

8. हे मेरी शाखाओं! अस्तित्व के संसार में एक परम शक्ति, एक चरम सामर्थ्‍य छुपी हुई है। उस पर तथा उसके एकताकारी प्रभाव पर अपनी दृष्टि केन्द्रित करो, उससे प्रकट होने वाले विभेदों पर नहीं।

9. दिव्य ‘वसीयतकर्ता’ का ‘वसीयत’ और ‘इच्छा’ यह है: अग़सान, अफ़नान और मेरे परिवार के लोगों का यह कर्तव्य है कि वे, सब के सब, अपने मुखड़ों को ’परम महान शाखा’ की ओर उन्मुख करें। अपनी ’परम पावन पुस्तक’ में हमने जो प्रकट किया है उसपर विचार करो: “जब मेरी उपस्थिति का महासागर शांत हो जाए और मेरे ’प्रकटीकरण का ग्रंथ’ समाप्त हो जाए तो अपने मुखड़े उसकी ओर उन्मुख कर जो ईश्वर द्वारा उद्दिष्ट है, जो इस ’प्राचीन मूल’ की शाखा बनकर फूटा है।“ इस पवित्र श्लोक का ध्येय और कोई नहीं बल्कि ’परम शक्तिशाली शाखा’ (अब्दुल बहा) है। इस तरह हमने कृपापूर्वक तुम पर अपनी सामर्थ्‍यमय ’वसीयत’ प्रकट की है और मैं वस्तुतः करुणावान, सर्वकृपालु हूँ। वास्तव में परमात्मा ने ’महत्तर शाखा’ (मिर्ज़ा मुहम्मद अली) का स्थान ’परम महान शाखा’ (अब्दुल बहा) के तले निर्धारित किया है। वह सचमुच नियंता है, सर्वप्रज्ञ है। ’वह’ जो कि सर्वज्ञ है, सर्वसूचित है, उसके निर्णयानुसार हमने “महत्तर” को “परम महान” के बाद चुना है।

10. यह हर किसी का कर्तव्य है कि वह अग़सान के प्रति प्रेम प्रकट करे, किन्तु ईश्वर ने उन्हें दूसरों की सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं दिया है।

11. हे मेरे अग़सान, मेरे अफ़नान और मेरे परिवारजनों! हम तुम्हें आदेश देते हैं कि ईश्वर से डरो, प्रशंसनीय कार्य करो और वह करो जो सौम्य और समीचीन हो और जिससे तुम्हारा स्थान ऊँचा होता हो। मैं सत्य ही कहता हूँ कि ईश्वर का भय सबसे बड़ा सेनापति है जो ईश्वर के धर्म को विजय दिला सकता है और वे सेनाएँ जो इस सेनापति के लिए सबसे सुयोग्य हैं और सदा रहे हैं वे हैं एक उदात्त चरित्र एवं शुद्ध तथा अच्छे कर्म।

12. कहो: हे सेवकों! व्यवस्था के साधनों को उलझन पैदा करने के कारण और एकता के उपकरण को विवाद का माध्यम मत बनने दो। हम यह सहर्ष आशा करेंगे कि बहा के लोग इन आशीर्वादित शब्दों से मार्गदर्शित होंगे: “कहो: सभी वस्तुएं ईश्वर की हैं।“ लोगों के हृदयों और वक्षों में सुलग रही घृणा और शत्रुता की अग्नि को बुझाने के लिए यह उदात्त वाणी पानी की तरह है। इस एक ही वाणी के माध्यम से आपस में विवाद करने वाले लोगों और परिवारजनों को सच्ची एकता का प्रकाश मिल सकेगा। वस्तुतः, ’वह’ सत्य कहता है और मार्ग दिखाता है। वह सर्वशक्तिमान है, महान है, कृपालु है।

13. हर किसी का यह कर्तव्य है कि वे, अग़सान, के प्रति सौजन्यता दर्शाएँ और उनके प्रति आदर रखें ताकि इससे ईश्वर का धर्म महिमावन्त हो और उसके ’शब्द’ की महत्ता बढ़े। यह आदेश ’पवित्र लेख’ में बार-बार उल्लिखित और अंकित किया गया है। धन्य है वह जो उसे प्राप्त करने में सक्षम बनाया गया है जिसे ’विधाता’, ’दिवसाधिक प्राचीन’ ने उसके लिए आदेशित किया है। और फिर तुम्हें ’पवित्र परिवार’ के सदस्यों, अफ़नान और उनके बान्धवों के प्रति भी सम्मान दर्शाने का आदेश दिया गया है। आगे हम तुम्हें यह आदेश देते हैं कि सभी राष्ट्रों की सेवा करो और विश्व की बेहतरी के लिए प्रयास करो।

14. वह जो कि विश्व के पुनर्निर्माण और लोगों तथा धरती के बंधुओं की मुक्ति के लिए लाभदायक है, उसकी वाणी के स्वर्ग से भेजा जा चुका है जो ’विश्व की अभिलाषा’ है। ’महिमा की लेखनी’ के परामर्शों पर ध्यान दो। यह तुम्हारे लिए धरती पर की सभी वस्तुओं से ज्यादा अच्छा है। इसका साक्षी है मेरा महिमाशाली और विलक्षण ’ग्रंथ’।29

## 33

## तीर्थयात्रा की पाती

1. वह स्तुति जो तेरे परम भव्य आत्मतत्व से उदित हुई है, और वह महिमा जो तेरे परम तेजोमय सौन्दर्य से उद्भासित हुई है, तुझ पर विराजमान है, हे तू जो भव्यता का प्रकटावतार, चिरन्तनता का सम्राट और उन सबका प्रभु है जो स्वर्ग में और धरती पर हैं! मैं साक्षी देता हूँ कि तेरे द्वारा ही परमेश्वर की प्रभुसत्ता और उसका साम्राज्य और परमात्मा का प्रताप और उसकी भव्यता प्रकटित हुई थी और पुरातन आभा के दिवानक्षत्रों ने तेरी अनुल्लंघनीय आज्ञा के स्वर्ग में अपनी कांति बिखेरी है और उस ’अगोचर का सौन्दर्य’ सृष्टि के क्षितिज पर जगमगाया है। मैं यह भी साक्षी देता हूँ कि अपनी लेखनी के स्पंदन मात्र से तेरा यह आदेश “तू हो जा” क्रियान्वित हुआ है और परमेश्वर के गुप्त रहस्य प्रकट किए गए हैं, तथा सृष्टि की सभी वस्तुओं को अस्तित्व दिया गया है, और सभी ‘धर्मप्रकाशन’ यहाँ भेजे गए हैं।

2. इसके अतिरिक्त, मैं यह भी साक्षी देता हूँ कि तेरे सौन्दर्य के द्वारा ही उस ’आराध्य’ का सौन्दर्य उद्भासित हुआ है और तेरे मुखड़े से ही उस ’अभिलषित’ का मुखड़ा जगमगाया है और अपने एक शब्द के द्वारा ही तूने सभी सृजित वस्तुओं के बीच निर्णय किया है, कि जो तेरे प्रति भक्तिभाव रखते हैं उन्हें महिमा के शिखर पर पहुँचाया गया है और अविश्वासियों को गहनतम गर्त में गिराया गया है।

3. मैं साक्षी देता हूँ कि जिसने ‘तुझे’ जाना है उसने परमात्मा को जाना है और जिसने तेरा सान्निध्य प्राप्त किया है उसने परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त किया है। अतः महान सौभाग्य है उसका जिसने तुझमें और तेरे चिह्नों में विश्वास किया है और स्वयं को तेरी प्रभुसत्ता के सम्मुख अवनत किया है और तुझसे भेंट करके सम्मानित हुआ है और तेरी इच्छा की सुप्रसन्नता प्राप्त की है और तेरे चारों ओर परिक्रमा की है और तेरे सिंहासन के सम्मुख खड़ा हुआ है। दुर्भाग्य होगा उसका जिसने तेरे विरुद्ध अपराध किया है और तुझे अस्वीकार किया है और तेरे चिह्नों का खण्डन किया है और तेरी प्रभुसत्ता का विरोध किया है और तेरे विरुद्ध उठ खड़ा हुआ है और तेरे मुखड़े के सम्मुख अभिमान से फूला है और तेरे प्रमाणों पर विवाद किया है, और तेरे शासन एवं अधिराज्य से दूर भागा है, और उन अविश्वासियों में गिना गया है जिनके नाम तेरे आदेश की अँगुलियों के द्वारा तेरी पावन पातियों पर अंकित हुए हैं।

4. अतः मुझ पर, हे मेरे प्रभु और मेरे प्रियतम, अपनी दया के दाहिने हाथ और अपनी स्नेहमयी कृपालुता से अपनी कृपाओं के पावन उच्छ्वास प्रवाहित कर, कि वे मुझे स्वयं मुझसे और इस संसार से परे करके तेरी निकटता और तेरे सान्निध्य के दरबारों तक ले आएँ। तू जैसा चाहे वैसा करने में समर्थ है। तू, सत्य ही, सभी वस्तुओं से सर्वोपरि रहा है।

5. प्रभु का स्मरण और उसकी स्तुति, और परमेश्वर की महिमा और उसकी आभा तुझ पर विराजती है, हे तू जो उसका ’सौन्दर्य’ है! मैं साक्षी देता हूँ कि इस सृष्टि के नयन ने तेरे जैसे अन्य अत्याचार-पीड़ित पर दृष्टि नहीं डाली है। तू अपने जीवन के सभी दिनों में विपदाओं के महासिंधु के तल में पड़ा रहा। एक बार तू जंजीरों और बेड़ियों में था; दूसरी बार तेरे शत्रुओं का खंग तेरे सर पर तना हुआ था। फिर भी, यह सब होते हुए भी, तूने सभी मानवों को वह पालन करने का आदेश दिया जो तेरे प्रति उस सर्वज्ञाता, सर्वप्रज्ञ ने विहित किया था।

6. काश कि मेरी चेतना बलिदान हो जाए उन अत्याचारों पर जो तूने सहे, और मेरी आत्मा बंधक बन जाए उन उन विपदाओं के बदले जो तूने भोगीं। मैं याचना करता हूँ प्रभु से, तेरे नाम से और उनके नाम से जिनके मुखड़े तेरी मुखछवि के प्रभापुंजों की ज्योति से आलोकित हुए हैं और जिन्होंने तेरे प्रेम के कारण उन सबका पालन किया है जिनका उन्हें आदेश दिया गया था, कि वे पर्दे उठा दे जो तेरे और तेरे प्राणियों के बीच में पड़े हैं और मुझे इहलोक एवं परलोक के शुभ एवं मंगल प्रदान कर। तू सत्य ही सर्वशक्तिमंत, परम उदात्त, सर्वमहिमामय, सदा क्षमाशील, परम करुणामय है।

7. सौभाग्य से मंडित कर तू, हे मेरे परमेश्वर, इस दिव्य कल्पतरु और इसके पातों को और इसकी शाखाओं को, इसकी डालियों को और इसकी टहनियों को और इससे फूटी प्रतिशाखाओं को, तब तक के लिए जब तक तेरी परम श्रेष्ठ उपाधियाँ बनी रहें और तेरे परम भव्य गुण विद्यमान रहें। अतः रक्षा कर इसकी आततायी की दुष्टता और अत्याचारियों के समूहों से। तू सत्य ही सर्वशक्तिमंत है, परम सामर्थ्‍यमय। हे प्रभो, मेरे परमेश्वर! आशीर्वादित कर अपने ऐसे सेवकों और सेविकाओं को भी जिन्होंने तेरा सान्निध्य प्राप्त किया है। तू सत्य ही सर्वकृपालु है, जिसका अनुग्रह अनन्त है। तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, सदा क्षमाशील, परम उदार।

# बाब की शहादत

## 34

1. हे मेरे सेवक, ध्यान दे उस पर जो तेरे प्रभु, उस अगम्य, परम महान के सिंहासन से तेरे पास भेजा जा रहा है। उसके सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है। उसने अपनी सृजित वस्तुओं को अस्तित्व दिया है ताकि वे ‘उसे’ जान सकें जो है करुणामय, सर्वदयालु। सभी राष्ट्रों के नगरों में उसने अपने संदेशवाहकों को भेजा है, जिन्हें उसने यह दायित्व सौंपा है कि वे लोगों को ‘उसकी’ सत्कृपा के स्वर्ग के शुभ समाचार सुनाएँ और उन्हें शाश्वत सुरक्षा के अभयस्थल, अनन्त पावनता एवं अलौकिक गरिमा के आसन के निकट लाएँ।

2. कुछ ऐसे थे जिन्हें परमेश्वर के प्रकाश द्वारा मार्गदर्शन दिया गया, जिन्होंने ‘उसकी’ उपस्थिति के दरबार में प्रवेश प्राप्त किया और त्याग के हाथों जिन्होंने अनन्त जीवन के जल का पान किया और जिनकी गिनती ऐसे लोगों में की गई जिन्होंने सचमुच ‘उसको’ पहचाना है और उसमें विश्वास किया है। कुछ अन्य ऐसे थे जो उसके विरुद्ध उठ खड़े हुए और जिन्होंने ईश्वर - उस परम सामर्थ्‍यमय, सर्वशक्तिमान, सर्वप्रज्ञ - के संकेतों को अस्वीकार कर दिया।

3. युग बीतते गए जब तक कि सभी दिवसों के इस ’प्रभु’ में उन युगों ने अपनी पूर्णाहुति नहीं प्राप्त कर ली, वह ‘दिवस’ जिसमें ’बयान’ के ‘दिवानक्षत्र’ ने स्वयं को करुणा के क्षितिज पर प्रकट किया, वह ’दिवस’ जिसमें ‘सर्वमहिमाशाली का सौन्दर्य’ अली मुहम्मद अर्थात दिव्यात्मा बाब के उदात्त व्यक्तित्व में जगमगा उठा। उन्होंने जैसे ही स्वयं को प्रकट किया, वैसे ही सभी लोग उनके विरुद्ध उठ खड़े हुए। कुछ लोगों ने यह कहकर ‘उन्हें’ नकार दिया कि उसने सर्वशक्तिमान, दिवसाधिक प्राचीन परमात्मा की निंदा की है। कुछ अन्य लोगों ने उन्हें पागलपन का शिकार मान लिया, एक ऐसा आरोप जिसे मैंने स्वयं एक धर्मगुरु के मुंह से सुना है। और भी कुछ अन्य लोगों ने परमात्मा का प्रवक्ता होने के ‘उनके’ दावे पर विवाद खड़ा किया और उन पर एक ऐसा व्यक्ति होने का कलंक लगाया जिसने सर्वशक्तिमान परमेश्वर की वाणी को चुराकर अपनी वाणी बताया, जिसने उन शब्दों के अर्थ विकृत किए और उनमें अपने गढ़े हुए अर्थों की मिलावट की। उन लोगों के मुख से जो बातें निकली हैं उनके लिए ‘भव्यता का नेत्र’ घोर विलाप करता है जबकि वे लोग अभी भी अपने आसनों पर आनन्दित हैं।

4. ‘उसने’ कहा, “परमात्मा मेरा साक्षी है, हे लोगों! मैं तुम्हारे पास प्रभु - तुम्हारे परमेश्वर, तुम्हारे पूर्वजों के प्रभु - की ओर से एक ’धर्मप्रकाशन’ लेकर आया हूँ। हे लोगों, तुम अपनी सम्पदाओं पर दृष्टि मत डालो। बल्कि उन चीजों को निहारो जो ईश्वर ने तुम्हारे पास भेजी हैं। निस्संदेह, यह तुम्हारे लिए समस्त सृष्टि से कहीं बेहतर होगा, काश कि तुम यह समझ पाते! हे लोगों, पुनः दृष्टि डालो और ईश्वर के कथन और उसके उस प्रमाण के बारे में विचार करो जो तुम्हारे पास हैं और फिर उनकी तुलना उस ‘प्रकटीकरण’ से करो जो इस युग में तुम्हारे पास भेजा गया है, ताकि सत्य, अकाट्य सत्य, निर्विवाद रूप से तुम्हारे समक्ष प्रकट हो सके। हे लोगों, ‘दुष्ट’ के पद-चिह्नों पर मत चलो; बल्कि सर्वदयालु के धर्म का अनुसरण करो और उन लोगों में से बनो जो सचमुच आस्थावान हैं। यदि मनुष्य ईश्वर के प्रकटावतार को पहचानने से चूक जाए तो उससे उसका क्या भला होगा? कुछ भी नहीं। इसका साक्षी होगा स्वयं मेरा आत्मतत्व, सर्वशक्तिमान, सर्वदर्शी, सर्वप्रज्ञ।’’

5. ‘उन्होंने’ जितना उन्हें समझाया उनकी शत्रुता उतनी ही बढ़ती गई - तब तक जब तक कि उन सबने शर्मनाक निर्दयता के साथ उन्हें मौत के घाट नहीं उतार दिया। उन अत्याचारियों पर ईश्वर का श्राप टूटे!

6. कुछ लोगों ने उन पर आस्था रखी; हमारे कुछ सेवक कृतज्ञ हैं। इन लोगों को उन्होंने अपनी सभी पातियों - नहीं, बल्कि अपने विलक्षण लेखों के हर अनुच्छेद में-यह समझाया कि वे प्रतिज्ञापित अवतार के दिनों में स्वर्ग या पृथ्वी की किसी भी वस्तु के बदले उसका परित्याग न करें। उन्होंने कहा: “हे लोगों! ‘उसके अवतरण’ के लिए ही मैंने स्वयं को प्रकट किया है और उसके धर्म की सत्यता स्थापित करने के सिवा अन्य किसी भी उद्देश्य से अपनी पुस्तक ‘बयान’ को तुम्हारे समक्ष प्रकट नहीं किया है। ईश्वर से डरो और जैसे कुरान के लोगों ने मुझसे विवाद किया है वैसे ही तुम ‘उसके’ साथ विवाद न कर बैठो। तुम जिस वक्त भी उसके बारे में सुनो, उसकी ओर शीघ्रता से बढ़ चलना और जो कुछ भी वह तुम्हारे समक्ष प्रकट करे उसका दामन थाम लेना। उसके सिवा अन्य कुछ भी तुम्हारे लिए लाभदायक नहीं होगा, नहीं, तब भी नहीं जब तुम शुरू से अंत तक उन सबके कथन क्यों न प्रस्तुत कर दो जो तुमसे पहले यहाँ आए थे।’’

7. और जब कुछ वर्षों के बीतने पर दिव्य निर्णय का स्वर्ग फट पड़ा और एक नए परिधान के साथ जब ईश्वर के नामालंकरणों के बादलों से ‘बाब का सौन्दर्य’ प्रकट हुआ, तो ये ही लोग विद्वेषपूर्वक ‘उसके’ विरुद्ध उठ खड़े हुए ‘जिसका’ प्रकाश सभी सृजित वस्तुओं को आच्छादित किए हुए है। उन्होंने उसकी संविदा भंग की, उसके सत्य को अस्वीकार किया, उसके साथ विवाद खड़ा किया, उसके संकेतों की नुक्ताचीनी की, उसके प्रमाण को झूठ समझा और उस पर अविश्वास करने वालों की संगत में खड़े हो गए। अंत में वे उसकी जान लेने पर उतारू हो गए। ऐसी दशा है उनकी जो घनघोर त्रुटि के शिकार हैं!

8. और जब उन्हें अपने इस उद्देश्‍य को पूरा कर सकने में अपनी असमर्थता की अनुभूति हुई तो वे उसके ‘खिलाफ’ षडयंत्र करने उठ खड़े हुए। देखो कि कैसे वे हर क्षण उसे क्षति पहुँचाने के लिए एक नई युक्ति तैयार करते हैं ताकि वे ईश्वर के धर्म को हानि पहुँचा सकें और उसे अवमानित कर सकें। कहो: अफसोस है तुम पर! ईश्वर की सौगन्ध! तुम्हारे षडयंत्र तुम्हें शर्म से सराबोर करने वाले हैं। तुम्हारा प्रभु, वह दया का परमात्मा, सभी सृजित वस्तुओं के बिना काम चला सकता है। कोई भी वस्तु उसकी सम्पदाओं में कमी या वृद्धि नहीं ला सकती। यदि तुम आस्था रखते हो तो तुम अपने ही निमित्त आस्था रखोगे; और यदि तुम आस्था नहीं रखोगे तो तुम स्वयं कष्ट भुगतोगे। अविश्वासियों के हाथ कभी भी ‘उसके’ परिधान के छोर को मलिन नहीं कर सकते।

9. हे परमात्मा में विश्वास करने वाले मेरे सेवक! सर्वशक्तिमान की सच्चरित्रता की सौगन्ध! यदि मैं तुझे उन बातों का वृत्तान्त सुनाता जो मुझ पर बीती हैं, तो लोगों के मस्तिष्क और उनकी आत्माएँ उसके बोझ को सह पाने में समर्थ नहीं होतीं। ईश्वर स्वयं मेरा साक्षी है। अपना ध्यान रखना और इन लोगों के पद-चिह्नों पर मत चलना। अपने प्रभु के धर्म पर गहनता से मनन कर। ‘उसे’ स्वयं ‘उसके आत्मतत्व’ के माध्यम से जानने का प्रयास कर, न कि दूसरों के माध्यम से। क्योंकि स्वयं ‘उसके’ सिवा अन्य कोई भी तेरे लिए लाभदायक नहीं हो सकता। इसकी साक्षी होंगी सभी सृजित वस्तुएँ, काश कि तुम समझ पाते।

10. अपने सर्वमहिमाशाली, परम सामर्थ्‍यमय प्रभु की अनुमति से, पर्दे के पीछे से बाहर आ और उन सबके नेत्रों के सम्मुख जो स्वर्गों में और धरती पर हैं, अपने उस प्रभु - उस अगम्य, परमोच्च - के नाम पर अमरता की प्याली थाम ले और छक कर पी और उनमें से न बन जो विलम्ब करते हैं। मैं परमात्मा की सौगन्ध खाता हूँ! जिस क्षण तू इस ‘प्याले’ का अपने अधरों से स्पर्श करेगा, उच्च लोक के ‘दिव्य-समूह’ यह कहते हुए तेरी प्रशंसा करेंगे, “हे मानव जिसने सचमुच परमात्मा में आस्था रखी है, प्रचुर आनन्द के साथ पान कर!”, और ’अमरता की नगरियों’ के निवासी पुकार उठेंगे, “आनन्द मिले तुझे, हे तू जिसने ’उसके’ प्रेम की प्याली से पान किया है” और भव्यता की वाणी तेरा अभिवादन करेगी, “महान है वह सौभाग्य जो तेरी प्रतीक्षा में है, हे मेरे सेवक, क्योंकि तूने उसे प्राप्त किया है जिसे किसी ने भी प्राप्त नहीं किया है, सिवाय ऐसे जनों के जिन्होंने स्वयं को उन सभी वस्तुओं से अनासक्त कर लिया है जो स्वर्गों में और धरती पर है, और जो सच्ची अनासक्ति के प्रतीक हैं।“

## 35

## सूरा-ए-नुश से एक अंश

## (परामर्श के सूरा)

1. घोषणा कर दो ‘मेरे’ सेवकों के समक्ष उसके अवतरण की जो उनके पास अली30 का नाम धारण किए हुए सत्य की शक्ति के साथ आविर्भूत हुआ, जो पावनता के क्षितिज के ऊपर भव्य गरिमा की आभाओं के साथ उदित हुआ और जिसके दाहिने हाथ से, एक निगूढ़ ज्ञान के विस्मयों को उद्घाटित करते हुए, चेतना की स्फटिक-स्वच्छ जलधाराएँ प्रवाहित हुईं।

2. ‘उसने’ घोषणा की, “हे लोगों! विवेक के बादलों को उठा दिया गया है और परमेश्वर ने अपना धर्म प्रकट कर दिया है। यह वही है जिसका वचन तुम्हें सभी धर्मग्रंथों में दिया गया था। ईश्वर से डरो और मेरी ओर आने की शीघ्रता करो। हे लोगों, मैं तुम्हारे पैगम्बर का वंशज हूँ। मैं ऐसे श्लोक लेकर आया हूँ तुम्हारे पास जो बोध-सम्पन्न लोगों के मस्तिष्क को विस्मित करके रख देते हैं और यह ईश्वर के सबूत और प्रमाण के प्रतीक के सिवा और कुछ नहीं। अपनी कोरी कल्पनाओं के इशारे पर उन्हें अस्वीकार मत करो और अपने निर्णय में निष्पक्ष बनो। वे, वस्तुतः, ईश्वर के धर्म से व्युत्पन्न हैं जिसे सत्य की शक्ति के माध्यम से तेरे पास भेजा गया है, काश कि तुम यकीन कर पाते!

3. मैं ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, हे लोगों! मेरी इच्छा तुम्हारे धर्मों को सिर्फ उन बातों से मुक्त करना है जो आजकल विवाद के कारण बन गए हैं। हे लोगों, ये श्लोक तुम्हारे ऊपर प्रवाहित होतीं चेतना की बयारें हैं और जो तुम्हारी नाशवान दशा को अनन्त जीवन में बदल देंगी, बशर्ते कि तुम उन पर अपनी दृष्टि केन्द्रित कर सको। हे लोगों! ज्ञान के वृक्ष ने इस अक्षुण्ण ’कल्पतरु’ पर अपने फल उत्पन्न किए हैं; ’आदि-बिंदु’ को प्रकट कर दिया गया है और परमात्मा, संकटों में सहायक, स्वयंजीवी, की वाणी पूर्ण की जा चुकी है। हे लोगों! उसकी मुखमुद्रा का सौन्दर्य प्रकट किया जा चुका है, पर्दों को हटा दिया गया है, ‘कोकिल’ अपना मधुर आलाप सुना चुका है, पवित्रता के ‘पर्वत’ को ज्योतिर्मय बना दिया गया है और वे सब जो स्वर्गों में और धरती पर हैं प्रकाशित किए जा चुके हैं, बशर्ते कि तुम चेतना के नयन से देख पाओ!”

4. लेकिन लोगों ने यह कहते हुए उत्तर दियाः “हम तुम्हें झूठ बोलने वाला मानते हैं; हम तुम्हारे कृत्यों में नहीं देखते जिनका वचन हमें अपने पूर्वजों के ग्रंथों में दिया गया था। हम कभी भी तुम्हारा अनुसरण नहीं करेंगे, तब भी नहीं जबकि तुम हमारे लिए संसार के सभी चिह्नों को दर्शा दोगे।“

5. ‘उसने’ घोषणा की, “हे लोगों के समुदाय! ईश्वर से डरो और उस पर विचार करो जिसे ‘उसने’ उन सबके लिए जो स्वर्गों में और धरती पर निवास करते हैं अपना अपरिवर्तनीय साक्ष्य और शाश्वत प्रमाण नियत किया है, काश कि तुम यह जानते! हे लोगों! तुम जिन-जिन बातों की प्रतीक्षा कर रहे हो और जिन-जिन बातों को तुमने अपने पूर्वजों और अपने धर्मगुरुओं से सुना है, उन सबका सत्य केवल इन्हीं श्लोकों के माध्यम से संस्थापित कर दिया गया है। और ये, वस्तुतः, पवित्रता के श्लोक हैं जो उन सबके लिए प्रतिज्ञापित किए गए हैं जो स्वर्गों में और धरती पर निवास करते हैं, जैसा कि तुम स्वयं भी देख सकते हो।

6. “यदि तुम इन श्लोकों में विश्वास नहीं करते तो इस युग में तुम अपने ही धर्म के सत्य के बारे में भला कैसे आश्वस्त हो सकते हो या उसे अन्यों के सम्मुख कैसे स्थापित कर सकते हो? वह दिन निकट आ रहा है जब यह संसार और इसकी तमाम चीजें नष्ट हो चुकी होंगी और जब तुम ’उसकी’ उपस्थिति के पावन दरबार में खड़े होगे। सावधान, हे लोगों, कि कहीं तुम अपने धर्मगुरुओं की अलंकृत बातों से डिग न जाओ या तथ्य की सत्यता को लेकर भ्रम न पाल बैठो। मेरे परामर्शों पर ध्यान दो और ईश्वर के आदेशों को अस्वीकार न करो।“

7. ‘उसने’ ईश्वर के स्मरण का जितना ही गुणगान किया, अपने अत्याचार में वे उतना ही अधिक प्रवृत्त हुए, जब तक कि सभी धर्मगुरुओं ने मिलकर उसके खिलाफ सजा नहीं सुना दी, सिवाय उनके जो सर्वमहिमाशाली, परम प्रियतम परमात्मा के उपदेशों से परिचित थे। स्थिति उस मुकाम तक पहुँची कि वे सब मिलकर ‘उसकी’ जान लेने के लिए एकजुट हो गए। उन्होंने उसे हवा में टांग दिया और अविश्वासियों की सेनाओं ने उस पर द्वेष और घृणा के गोले दागे और ‘उसके’ शरीर को छलनी कर दिया ‘जिसका’ ‘पवित्र चेतना’ एक विनम्र सेवक है, ‘जिसके’ चरणों की धूल उच्च लोक के समूहों की आराधना का ध्येय है और ‘जिसकी’ चरण-पादुकाओं से ‘स्वर्ग’ के अंतःवासी आशीर्वाद की याचना करते हैं। इस पर अदृश्य लोक के निवासी अनन्तता के चंदोवे तले फूट-फूट कर रो पड़े, ‘सिंहासन’ के स्तम्भ थर्रा उठे, सभी वस्तुओं के आंतरिक यथार्थों में हलचल मच गई और दिव्य ‘तरुवर’ को धरती पर बहाए गए ‘उसके’ चमचमाते हुए खून का पूर्ण अंश प्राप्त हुआ।

8. बहुत ही जल्द ईश्वर इस ’तरुवर’ का रहस्य प्रकट करेगा, सत्य की शक्ति से उसे पल्लवित करेगा और उससे यह गान कराएगा: “वस्तुतः मैं परमात्मा हूँ, ’उसके’ सिवा और कोई परमात्मा नहीं है। सभी मेरे सेवक हैं जिन्हें मेरे आदेश को पूरा करने के लिए ही हमने रचा है, और मेरे आदेश से वे सत्य ही बंधे हुए हैं।“

9. यह, सत्य ही, वह है जिसे पूरा करने का वचन हमने पूर्व समय में दिया था: उनके प्रति कृपा दर्शाना जिन्हें इस भूमि पर अधम बना कर रखा गया और उन्हें अवनत करना जो घमंड से फूल रहे हैं। हमने कभी भी ऐसा कोई धर्मदूत, पैगम्बर या ईश-प्रतिनिधि नहीं भेजा जिनका इन दुष्टों ने विरोध नहीं किया, जैसा कि तुम साक्षी हो कि कैसे ये अन्याय की करतूत करने वाले आज भी अपनी आपत्तियाँ उठा रहे हैं।

10. और न ही कभी लोगों ने सत्य को तब तक अस्वीकार किया जब तक कि उनके धर्मगुरुओं ने उसे अस्वीकार न कर दिया और ईश्वर के सम्मुख घमण्ड से न फूल गए और ‘उसके’ श्लोकों पर विवाद न खड़ा कर दिया। इस तरह नेताओं की अस्वीकृति ने उन लोगों की अस्वीकृति को जन्म दिया जो अपनी स्वार्थ भरी इच्छाओं के कारण उनका अनुगमन करते रहे। इनमें से किसी भी धर्मगुरु ने कभी नए ’धर्म-प्रकाशन’ के प्रति अपनी निष्ठा नहीं जताई, सिवाय उनके जो पवित्रता की दृष्टि से देख सकते थे, जिनके हृदयों को परमात्मा द्वारा परखा गया था और ‘उसके’ अभिज्ञान के लिए सच्चा प्रमाणित किया गया था, जिन्हें ‘उसने’ चेतना की कस्तूरी से सीलबंद करके पवित्रता के उस प्याले से पान करने को दिया था और जो निश्चयात्मकता की उस मदिरा से मस्त थे जिसे उन्होंने उस प्याले से पिया था। वस्तुतः वे ऐसे जन हैं जिन्हें स्वर्ग के देवदूत अनन्तता की वाटिका में महिमा-मंडित करेंगे और जो हर क्षण ईश्वर से व्युत्पन्न हर्ष-उल्लास से आनन्दित रहेंगे।

11. हमने ऐसा कोई भी प्रभुदूत नहीं भेजा ‘जिसे’ धर्मगुरुओं की अस्वीकृति का सामना न करना पड़ा और वे अपने ज्ञान के अभिमान में वैसे ही फूले रहे जैसे कि आज फूले हुए हैं। कहो: हे धर्मगुरुओं के समुदाय! क्या तुम ‘बछड़े’ की पूजा करते हो और उसे ही त्याग देते हो जिसने तुम्हें रचा है और तुम्हें वह ज्ञान दिया है जो तुम नहीं जानते थे?

12. हे धरती के लोगों! इन अत्याचार करने वालों की दशा पर विचार करो कि उन्होंने अतीत में क्या कुछ किया है और वे आज क्या कर रहे हैं। कहो: वह जो कि तेरे पास स्पष्ट श्लोकों के साथ अवतरित हुआ है यदि वह ईश्वर से आया हुआ सच्चा दूत नहीं है, जैसा कि तुम आज सांसारिक प्रतिष्ठा के आसनों से घोषित कर रहे हो, तो फिर तुम किस प्रमाण से मुहम्मद के सत्य को स्थापित कर सकते हो, जिसे हमने पहले भेजा था? हे बुरा चाहने वालों के समुदाय! अपने निर्णय में निष्पक्ष रहो।

## 36

## सूरा-ए-मुलूक से एक अंश

## (राजाओं के सूरा)

1. हे इस नगर में शाह के मंत्री,31 क्या तुम यह कल्पना करते हो कि ईश्वर के धर्म की अन्तिम नियति मेरे हाथों में है? क्या तुम यह सोचते हो कि मेरे कारावास, या मुझे जिस लज्जा का सामना करना पड़ा, या यहाँ तक कि मेरा निधन और घोर प्रलय भी इसकी धारा को मोड़ सकता है? दुःखद है वह जो तुमने अपने हृदय में सोच रखा है। तुम वास्तव में उन लोगों में से हो जो अपनी मनगढ़न्त निरी कल्पनाओं के पीछे भाग रहे होते हैं। ‘उसके’ सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है। वह अपने धर्म को प्रकट करने और अपने प्रमाण को उदात्त बनाने और अपनी इच्छानुसार कुछ भी स्थापित करने और उसे इतने महान स्थान तक ऊँचा उठाने में समर्थ है कि न तो तुम्हारे हाथ और न ही उनके हाथ जो उससे विमुख हो गए हैं, उसे कभी छू भी सकेंगे या कोई हानि पहुँचा सकेंगे।

2. क्या तुम यह यकीन करते हो कि तुम्हारे पास उसकी इच्छा को रोक सकने, उसे अपने निर्णय को कार्यान्वित करने में बाधित कर सकने की शक्ति है, या फिर उसे अपनी सम्प्रभुता का इस्तेमाल कर सकने से रोक सकने की ताकत? क्या तुम यह दिखाना चाहते हो कि स्वर्गों में या धरती पर कुछ भी ‘उसके धर्म’ को रोक सकता है? नहीं, उसकी सौगन्ध जो है ’अनन्त सत्य’! सम्पूर्ण सृष्टि में कुछ भी ‘उसके’ उद्देश्‍य को पूरा होने से नहीं रोक सकता। अतः अपने निरे अहंकार को त्याग दो, क्योंकि निरा अहंकार कभी भी सत्य का स्थान नहीं ले सकता। तुम उनमें से बनो जिन्होंने सचमुच पश्चात्ताप किया है और परमात्मा के पास वापस लौट आए हैं, उस परमात्मा के पास जिसने तुम्हें रचा है, जिसने तुम्हारा पोषण किया है और जो लोग तुम्हारे धर्म का अनुसरण करते हैं उनके बीच तुम्हें एक मंत्री बनाया है।

3. और तुम यह भी जान लो कि ’उसी’ ने अपनी आज्ञा से उन सभी वस्तुओं का सृजन किया है जो स्वर्गों में और धरती पर हैं। तो फिर जिस वस्तु को उसी ने सिरजा है वह भला उस पर विजयी कैसे हो सकती है? ईश्वर उन सभी वस्तुओं से उदात्त है जिनकी तुमने उसके बारे में कल्पना कर रखी है, हे विद्वेषी लोगों! यदि यह ईश्वर का धर्म है तो कोई भी मनुष्य उस पर विजय हासिल नहीं कर सकता; और यदि यह ईश्वर का नहीं है, तो तुम्हारे बीच के धर्मगुरु, और वे जो उनकी भ्रष्ट अभिलाषाओं का अनुगमन करते हैं और वे जो ‘उसके’ विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं वे अवश्य ही इस पर विजय हासिल करने के लिए पर्याप्त होंगे।

4. क्या तुमने नहीं सुना है कि फ़राओ के परिवार के एक व्यक्ति, एक आस्थावान, ने अतीत के बारे में क्या कहा था और जिसका उल्लेख परमेश्वर ने अपने उस धर्मदूत के समक्ष किया था ‘जिसे’ ‘उसने’ सभी मनुष्यों से बढ़कर चुना था और उसे अपना संदेश सुपुर्द किया था और धरती के सभी निवासियों के लिए उसे अपनी दया का स्रोत बनाया था? ‘उसने’ कहा था और ‘वह’, वस्तुतः, सत्य कहता है: “क्या तुम किसी व्यक्ति को इसलिए मार डालोगे क्योंकि वह यह कहता है कि मेरा प्रभु ही मेरा परमेश्वर है, जबकि वह पहले ही उसके मिशन के प्रमाणों के साथ तुम्हारे पास आया है? और यदि वह झूठा होगा, तो उसका झूठ उसी पर टूटेगा, लेकिन यदि वह सच्चा होगा तो उसने जो धमकी दी उसका कम से कम एक अंश तुम पर टूटेगा।’’32 ईश्वर ने अपने अचूक ‘ग्रंथ’ में अपने ‘प्रिय’ के समक्ष यही प्रकट किया है।

5. और इसके बावजूद, तुम ‘उसके’ आदेश पर ध्यान देने में विफल रहे हो, ‘उसके’ विधान की तुमने अवहेलना की है, ‘उसके’ ’ग्रंथ’ में अंकित ‘उसके’ परामर्श को अस्वीकार किया है और उन लोगों में से हो गए हो जो ‘उससे’ बहुत दूर भटक चुके हैं। न जाने कितने हैं ऐसे जो तुम्हारे कारण हर साल, हर महीने, मौत के घाट उतार दिए गए हैं! न जाने कितने अन्याय किए हैं तुमने - ऐसे अन्याय जैसे इस सृष्टि के नयन ने कभी देखे नहीं, जिन्हें किसी भी इतिहास में कभी दर्ज़ नहीं किया जा सका! तुम्हारी क्रूरता के कारण, असंख्य शिशुओं और दूध पीते बच्चों को अनाथ कर दिया गया, कितने पिताओं ने अपने बच्चों को खो दिया! हे अन्याय के कारिन्दों! न जाने कितनी बार कोई बहन अपने भाई को लेकर बिलखी है, विलाप किया है और न जाने कितनी बार कोई पत्नी अपने पति, अपने एकमात्र आसरा, के कारण रुदन कर उठी है!

6. तुम्हारा अन्याय बढ़ता गया, बढ़ता गया, जब तक कि तुमने उसे नहीं मार डाला जिसके नेत्र कभी परमेश्वर - उस परम उदात्त, परम महान - के मुखड़े से नहीं हटे थे।33 और तुमने इस तरह उसे मारा होता जैसे लोग एक-दूसरे को मौत देते हैं! लेकिन तुमने तो उसे ऐसी परिस्थितियों में मारा जैसा किसी मनुष्य ने कभी देखा नहीं। स्वर्ग ‘उसके’ ऊपर चीत्कार कर उठे और उनकी आत्माएँ जो ईश्वर के निकट हैं उसके कष्टों पर क्रन्दन कर उठीं। क्या ‘वह’ तुम्हारे पैगम्बर के पुरातन ’घर’ का ही वंशज नहीं था? प्रभुदूत का प्रत्यक्ष वंशज होने के बारे में क्या ‘उसकी’ कीर्ति दूर-दिगन्त तक तुम्हारे पास नहीं पहुँची थी? तब फिर तुम लोगों ने क्यों दी उसे ऐसी यातनाएँ जैसी, चाहे तुम अतीत में दूर-दूर तक निगाह डाल लो, किसी मनुष्य ने अन्य किसी भी मनुष्य को नहीं दीं? ईश्वर की सौगन्ध! सृष्टि के नेत्र ने तुम जैसे को कभी नहीं देखा। तुम उसी की हत्या कर देते हो जो तुम्हारे पैगम्बर के परिवार का वंशज हैं और फिर अपनी प्रतिष्ठा के आसन पर बैठकर खुश होते और आनन्द-मग्न होते हो! तुम अपने से पहले के लोगों को कोसते हो जिन्होंने वही कुकर्म किए जो तुम लोगों ने किए हैं और फिर हर वक्त अपनी ही दुष्टता से अनभिज्ञ बने रहते हो!

7. अपने निर्णय में निष्पक्ष बनो। जिन लोगों को तुम कोसते हो, जिन्हें तुम दुष्ट कहते हो, क्या उनकी करनी तुमसे भिन्न थी? क्या उन्होंने अपने पैगम्बर के वंशज34 को उसी तरह नहीं मार डाला जैसे तुमने अपने पैगम्बर के वंशज की हत्या कर दी? क्या तुम्हारा आचरण भी उन्हीं जैसा नहीं है? तब फिर तुम लोग उनसे अलग होने का दावा भला क्यों करते हो, हे लोगों के बीच कलह के बीज बोने वालों?

8. और जब तुमने ‘उसकी’ जान ले ली तो उसके अनुयायियों में से एक ‘उसकी’ मृत्यु का प्रतिशोध लेने उठ खड़ा हुआ। उसे कोई भी नहीं जानता था और उसने जो योजना बनाई उस पर किसी का ध्यान नहीं था। अंततः उसने वही कर डाला जो पूर्वनियत था। इसलिए, तुम्हारे योग्य यही है कि जो कुछ तुम लोगों ने किया है उसके लिए स्वयं अपने सिवा अन्य किसी पर आक्षेप मत लगाओ, बशर्ते के तुम निष्पक्ष न्याय करने वाले हो। इस पूरी धरती पर ऐसा कौन है जिसने तुम्हारे जैसा कारनामा किया हो? सौगन्ध उसकी जो प्रभु है सभी लोकों का, ऐसा कोई नहीं है।

## 37

## लौह-ए-सलमान (प्रथम) से एक अंश

## (सलमान प्रथम को पाती)

1. हे सलमान! कहो: हे लोगों! तुम एकमेव सत्य ईश्वर के पथ पर चलो और ‘उसके’ तरीकों और शब्दों पर गहन विचार करो जो ‘उसके’ पुरातन ‘अस्तित्व’ का प्रकटावतार है, ताकि कदाचित तुम ‘सर्वमहिमाशाली’ की जीवन्त जलधाराओं के ‘निर्झरस्रोत’ को पा सको। यदि आस्थावानों और अविश्वासियों का पद एक समान होता, यदि परमात्मा के लोक इस क्षणभंगुर धरती में समा पाते, तो मेरे विगत अवतरण ने अपने शत्रुओं के हाथों स्वयं को कदापि समर्पित नहीं किया होता, या अपने जीवन का बलिदान न किया होता। मैं इस धर्म के अरुणोदय के प्रकाश की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि यदि लोगों को उस उमंग और उत्कंठा का तनिक भी भान हो पाता जिसने उस सम्प्रभु ‘सौन्दर्य’ को अभिभूत कर दिया था जब ‘उसका’ स्वर्गिक ‘मन्दिर’ हवा में लटका दिया गया था, तो अपनी अदम्य अभिलाषा के प्रबल आवेग में सब आकर वे इस अलौकिक महिमा के ‘अवतार’ के पथ पर अपनी आत्माओं को न्योछावर कर देते। सही है, तोते के हिस्से में मिठास आती है और कीड़े के भाग में गोबर; कोकिल के मधुर आलाप में कौए की कोई भूमिका नहीं है, और चमगादड़ सूर्य की रोशनी से भाग जाता है।

## 38

## सूरा-ए-ज़िक्र से एक अंश

## (स्मरण के सूरा)

**यह दया के संकेतस्वरूप भेजा गया ’स्मरण का सूरा’ है, ताकि कदाचित ‘बयान’ के लोग उन्हें त्याग सकें जो उनके पास है, न्याय की दाहिनी भुजा की ओर उन्मुख हो सकें, दिग्भ्रमित इच्छाओं की निद्रा को झटक सकें और सत्य की शक्ति के माध्यम से अपने प्रभु - उस परम उदात्त, सर्वमहिमाशाली - का पथ तलाश सकें।**

## ईश्वर के नाम पर जो है परम पवित्र, परम उदात्त, परमोच्च

1. यह ’आदि-बिंदु’35 की ओर से उन्हें भेजा गया पत्र है जिन्होंने परमात्मा में वह जो है एकमेव, अनुपम, सर्वसामर्थ्‍यमय में आस्था रखी है और जिसमें उसने ‘बयान’ के लोगों के बीच में उन्हें सम्बोधित किया है जिनकी इस धर्म में आस्था विचलित हुई है, ताकि कदाचित वे ईश्वर के विलक्षण शब्दों को समझ सकें और इस प्रकाशित एवं ज्योतिर्मय प्रभात में असावधानी की शैय्या छोड़कर जाग सकें।

2. कहो:36 हम, वस्तुतः, ‘अपने ग्रंथ’ में तुम्हें यह आदेश देते हैं कि स्वयं को उनके समक्ष बढ़ा-चढ़ा कर मत दिखाओ जिनके बीच से ‘वह’ प्रकट होगा जो हर बोध-सम्पन्न हृदय का ‘प्रियतम’ है और धरती एवं स्वर्ग के निवासियों की आराधना का ‘ध्येय-बिंदु’ है। और हमने तुम्हें यह भी आदेश दिया कि यदि तुम प्रभु की उपस्थिति पा सके तो उसके समक्ष खड़े होना और मेरी ओर से ये सशक्त एवं उदात्त वचन कहना: “हे परमेश्वर की महिमा! तेरे ऊपर और तेरे स्वजनों के ऊपर परमात्मा का स्मरण और ‘हीन’37 के पहले और उसके बाद हर क्षण सभी वस्तुओं की स्तुति विराजे।’’ हमने ‘बयान’ के लोगों को इन शब्दों से सम्मानित किया है ताकि उसके द्वारा वे पावनता की ऊँचाइयाँ चढ़ सकें और उनकी गिनती आशीर्वादित लोगों में की जा सके। इसके बावजूद, हमारी आज्ञा को उन्होंने इस बुरी तरह अस्वीकार कर दिया है कि उनमें से एक भी उसकी उपस्थिति के सम्मुख नहीं जा सका जिसके लिए हमने अपनी पातियों में आदेशित किया था। नहीं, बल्कि उन्होंने हर ओर से उस पर विद्वेष की बरछियाँ फेंकी हैं। और इस बात पर मैंने और भव्यता के ‘साम्राज्य’ के निवासियों और उनसे भी बढ़कर ‘निष्ठावान चेतना’ ने, घोर रुदन किया है।

3. कहो: हे लोगों! ‘मेरे सौन्दर्य’ के सम्मुख लाज की भावना रख। वह जो सत्य की शक्ति से प्रकट हुआ है, वस्तुतः लोकों का गौरव है, बशर्ते कि तुम पहचान पाते। वह, सत्य ही, ईश्वर की महिमा है, उस पर परमात्मा का स्मरण और उसकी स्तुति और उच्च लोक के समूहों की स्तुति और उनकी स्तुति जो अनन्त लोक के निवासी हैं और सदा-सर्वदा सभी वस्तुओं की स्तुति विराजे। सावधान कि स्वर्ग में या धरती पर जो भी रचा गया है वे तुम्हारे लिए ओझल करने वाले पर्दे न बन जाएँ। उसकी सत्कृपा के स्वर्ग की ओर बढ़ने की शीघ्रता कर और उन लोगों में स न हो जो निद्रामग्न हैं।

4. कहो: ‘उसका’ सौन्दर्य सचमुच ‘मेरा’ सौन्दर्य है और ‘उसका आत्मतत्व’ ‘मेरा आत्मतत्व’ है और मैंने ‘बयान’ में जो कुछ भी प्रकट किया है वह ‘उसके’ विलक्षण एवं अप्रतिबाधित धर्म के लिए ही है। ईश्वर से डर और ‘उससे’ विवाद न कर जिसके अवतरण का मैं अग्रदूत हूँ और जिसके प्रकटीकरण की हमने तेरे समक्ष घोषणा की। इसके पहले कि मैंने स्वयं अपने मिशन के बारे में तेरे साथ संविदा स्थापित की, मैंने उसके मिशन के सम्बंध में तेरे साथ संविदा स्थापित की थी और इसकी साक्षी हैं सभी वस्तुएँ, भले ही तू इससे इन्कार कर दे। ईश्वर की सच्चरित्रता की सौगन्ध! उसके स्वर-माधुर्यों में से बस एक ही माधुरी से सभी वस्तुओं के यथार्थों का पुनर्जन्म हो गया और उसकी दूसरी माधुरी से उसके कृपाप्राप्त जनों के हृदय आनन्दातिरेक से भर उठे। सावधान रह कि कोई भी वस्तु तुझे उससे प्रतिबाधित न कर दे जिसकी उपस्थिति वही है जो कि मेरी उपस्थिति है। उसने मेरे पथ पर अपना बलिदान दे दिया, ठीक वैसे ही जैसे उसके भव्य और अतुलनीय सौन्दर्य के प्रति प्रेम के निमित्त मैंने स्वयं को उसके पथ पर कुर्बान कर दिया।

5. कहो: वह नहीं होता तो “प्रेम” शब्द कभी नहीं लिखा जाता, न ही ‘प्रियतम’ के नाम के अक्षर परस्पर संयुक्त हो पाते,38 न ही स्वयं सृष्टि को अस्तित्व दिया गया होता, काश कि तुम समझ पाते! वह नहीं होता तो मैं स्वयं को अधर्मियों के हाथों कदापि समर्पित नहीं करता, न ही हवा में लटकाए जाने की सहमति देता। ईश्वर की सौगन्ध! उसके प्रति अपने प्रेम और अपनी उत्कंठा के कारण मैंने वह सहा है जो अन्य किसी भी अवतार या संदेशवाहक ने नहीं सहे और मैं स्वयं ही यह सबकुछ झेलने को राजी हुआ ताकि उसे कदापि वह सबकुछ न झेलना पड़े जो उसके परम दयालु एवं मृदुल, अत्यंत पावन एवं निर्मल हृदय को खिन्न कर दे। मैंने सम्पूर्ण ‘बयान’ में तुझे यह चेतावनी दी कि तू किसी भी हृदय के लिए दुःख का कारण न बने, ताकि कदाचित ‘उसे’ कोई भी दुःख न सहना पड़े। अन्यथा, हे अस्थिर लोगों के समुदाय! मैं भला तुझे क्यों समझाता और क्योंकर तेरी चिन्ता में स्वयं को व्यस्त करता? ‘बयान’ में मेरा अभिप्राय ‘उसके’ सिवा अन्य किसी से न था, मैंने ‘उसके’ सिवा अन्य किसी का गुणगान नहीं किया और मैंने उसके परम आशीर्वादित एवं परम उदात्त नाम, उसके परम पावन और परम विलक्षण नाम के सिवा अन्य किसी का नाम नहीं लिया।

6. मैं अपने जीवन की सौगन्ध खाकर कहता हूँ! यदि मैंने “प्रभुता” का उल्लेख किया है तो मेरा अभिप्राय सभी वस्तुओं के ऊपर सिर्फ ‘उसकी’ प्रभुता से रहा है। यदि मेरी लेखनी से कभी “दिव्यता” शब्द प्रस्फुटित हुआ है तो मेरा अभिप्राय संसार के सापेक्ष ‘उसकी’ दिव्यता के सिवा अन्य कुछ भी नहीं रहा है; और यदि उससे “अभिलषित” शब्द संकेतित हुआ है तो ‘उसके’ सिवा अन्य कोई भी मेरे मनो-मस्तिष्क में नहीं था। इसी तरह, “प्रियतम” शब्द के संदर्भ में, वस्तुतः ‘वही’ मेरा और सभी बोध-सम्पन्न हृदयों का ‘प्रियतम’ है। यदि मैंने “नतमस्तक” होने की बात कही है तो मेरा आशय केवल उसकी उदात्त, महिमाशाली और भव्य मुखमुद्रा के समक्ष नतमस्तक होने से रहा है। यदि मैंने किसी भी व्यक्ति की प्रशंसा की है तो मेरा उद्देश्‍य सिर्फ ‘उसकी’ स्तुति का समारोह मनाना रहा है। और यदि मैंने लोगों को कार्य करने की आज्ञा दी है तो मेरा सम्पूर्ण उद्देश्‍य यह रहा है कि वे ‘उसके प्रकटीकरण’ के दिवस में ‘उसकी’ सत्कृपा के अनुसार कार्य करें। इसका साक्षी है वह सबकुछ जो मेरे प्रभु, उस सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ, के साम्राज्य से मेरे पास भेजा गया था।

7. मैंने सभी वस्तुओं को ‘उसकी’ स्वीकृति और मर्जी पर निर्भर किया है। सत्य ही, वही है जो कि लोकों का स्वामी है और खोज में निरत प्रत्येक आत्मा की अभिलाषा का ‘ध्येय’। यदि तुम सब अपनी आँखें खोल पाते तो वास्तव में तुम यह देखते कि “वह जैसा चाहता है वैसा करता है” के प्रत्यक्षावतार, ‘उसी’ की छाया में आराधना-रत हैं। फिर भी तुम लोगों ने ‘उसके’ साथ वह किया है जो कि कुरान के लोग भी मेरे साथ करने की हिम्मत न कर सके और न ही यहूदी जन ईसा मसीह के प्रति। अफसोस, अफसोस! मेरा हृदय घोर वेदना से उद्विग्न है और अविश्वासियों के हाथों मेरे ‘प्रियतम’ पर जो विपदाएँ टूटी हैं उससे मेरी आत्मा कराह उठी है। तुम्हारी निष्ठाहीनता के लिए वज्रपात हो तुम पर, हे अत्याचारियों के समूह! हमने, सत्य ही, निष्ठा और सौजन्य की रचना ‘उसी’ के लिए की थी, ताकि कदाचित तुम ‘उसके’ आविर्भाव के समय ऐसी कोई करनी नहीं करोगे, जो मेरे आंतरिक यथार्थ और सभी वस्तुओं के यथार्थों को विलाप करने पर विवश कर दे। लेकिन उस राजाधिराज, परम उदात्त, परम महान परमात्मा के ’ग्रंथ’ में जो कुछ भी अंकित था उनका तुमने उल्लंघन किया है। तुमने मर्यादा के पर्दे को छिन्न-भिन्न कर डाला और औचित्य के परिधान को उठाकर परे रख दिया और तुमने ऐसी करतूत की है कि सृष्टि की ‘लेखनी’ धरती और स्वर्ग के निवासियों के सम्मुख उसका वर्णन करने में लज्जित है।

8. अफसोस, अफसोस है उस पर जो तुमने इस प्रवंचित, इस निर्वासित और परित्यजित आत्मा को भुगताए हैं! न ही मुझे यह पता है कि अभी के बाद तुम ‘उसे’ क्या यातनाएँ दोगे। नहीं, सौगन्ध मेरी, मुझ सर्वज्ञ की! मैं वस्तुतः जानता हूँ, क्योंकि मेरे पास सभी वस्तुओं का ज्ञान उस ‘पाती’ में है जिसे परमात्मा ने उनकी दृष्टि से बचाकर रखा है जो उसके भागीदार बने फिरते हैं। हमने पहले ही ‘उसे’ उन विपदाओं के बारे में सूचित कर दिया था जो उस पर टूटी हैं या उस पर टूटेंगी, हालाँकि ‘वह स्वयं’ ही उन सभी बातों से भली-भाँति वाकिफ़ है जो मनुष्य के हृदयों ने छुपा रखी हैं। क्योंकि कोई भी बात ‘उसके’ ज्ञान से बच नहीं सकती और जो कुछ भी उसके मुख के एक शब्द मात्र से सृजित किया गया है वह कभी भी उसकी पकड़ से मुक्त नहीं हो सकता। उसके सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है - वह जो अनुपम है, सृजनहार है, स्फूर्तिदाता है, प्रलयंकर है।

9. कहो: हे लोगों! यदि उसकी यह इच्छा हो कि धरती और स्वर्ग के सभी निवासी उसके सत्य के स्थायी प्रमाण बन जाएँ, तो ऐसा कर पाना निश्चित रूप से उसकी शक्ति के अधीन होगा। और यह, वस्तुतः, उसके लिए सरल और सम्भव होगा। उसी ने स्वयं अपने निमित्त ‘बयान’ के स्वर्ग का सृजन किया है। सभी वस्तुओं का आरम्भ उसी से है और वे सब उसी के पास लौट जाएंगी, काश कि तुम जान पाते! तथापि, मैं उसकी सौगन्ध खाता हूँ जिसके हाथ में सृष्टि का साम्राज्य है, कि तुम सब उसे दिव्य नामों में से एक से भी स्वयं को अभिहित करने के अधिकार से इन्कार करते हो, हालाँकि सभी नामालंकरण और उनके साम्राज्य उसी की सामर्थ्‍यमय और उदात्त आज्ञा से रचे गए थे!

10. अफसोस, अफसोस है तुम्हारी अवहेलना पर, हे ‘बयान’ के लोगों! अफसोस, अफसोस है तुम्हारे अंधेपन पर, हे अविश्वासियों के समुदाय! क्योंकि आत्म-प्रवंचना और व्यर्थाभिमान से प्रेरित होकर, तुमने उसके शत्रुओं में से एक को उत्तराधिकारी का दर्ज़ा दे दिया है और उस माध्यम से तुमने परमात्मा से ही विवाद खड़ा कर दिया है, जो प्रणेता है उन सभी धर्मों का जो अतीत में थे और जो आगे भी होंगे। इस तरह तुम कुरान के लोगों की दलीलों पर वापस लौट आए हो, बावजूद इसके कि हमने तुम्हें उसकी अनुमति के बिना उसकी उपस्थिति में एक शब्द भी उचारने से मना किया था। मेरे शब्दों की सत्यता परमात्मा को ज्ञात है और वह साक्षी है उनका। अतः, विचार कर, अपनी दशा पर और अपने ज्ञान के पैमाने पर। वज्रपात हो तुम पर और तुम्हारे विचारों पर और तुम्हारे निर्णय पर, हे तुम जो घोर विफलता की स्थिति में हो! क्या तुम सबको यह नहीं पता कि जो कुछ भी लोगों के पास है वह सब हमने समेट लिया है, और उसके बदले एक नई व्यवस्था का प्रसार कर दिया है? अतः, सौभाग्य हो परमात्मा का, उस सार्वभौम सम्राट, उस उद्घाटक, सर्वशक्तिमान, परम उदार का।

11. कहो: हे लोगों, रुक जाओ मेरी अवनिंदा करने से। इस ’प्रकटीकरण’ की स्तुति के सिवा मैंने और कुछ भी नहीं कहा है; मैंने ऐसी एक भी सांस नहीं ली है जो इसके ‘प्रणेता’ के प्रेम के लिए न हो, और उसकी प्रकाशित एवं जगमगाते हुए मुखमण्डल के सिवा मैंने अपने मुखड़े को और कहीं भी उन्मुख नहीं किया है। ‘बयान’ और उसमें जो कुछ भी प्रकटित है उसे मैंने उस स्वर्गिक उद्यान की एक पत्ती बनाई हैं जिसका स्वामी ‘वह’ है - वह संरक्षक, महिमाशाली, सर्वशक्तिमान। सावधान कि कहीं तुम इसे तदुपयुक्त बनाकर उसे न समर्पित कर बैठो जो, अपने स्वार्थ और अपनी लालसा के वशीभूत फिर से मेरा खून बहाना चाहता है और जो परमात्मा से विवाद करता है। हमने, वस्तुतः, एक ही शब्द से ‘बयान’ को प्रकट किया और उसे पुनः उसी शब्द के पास वापस लौटा दिया और उसे यह आदेशित किया कि वह उसके ‘सिंहासन’ के समक्ष प्रकट हो जो सर्वज्ञ है, सर्वप्रज्ञ है, ताकि ‘वह’ अपनी पूर्ववर्ती सृष्टि को निहार सके और उससे आनन्दित हो सके। अतः, अपने न्याय में निष्पक्ष बन: उस शब्द का स्वामित्व ग्रहण करना उसके ‘प्रणेता’ का विषेशाधिकार है, या किसी अन्य व्यक्ति का? हे पर्दे से ओझल लोगों के समुदाय! आखिर तुम्हें इतना अन्धा किसने बनाया?

12. हमने, सत्य ही, ’बयान’ के लोगों को रेशमी वस्त्र पहनने और अपने व्यक्तित्व एवं परिधान में पूर्ण रूप से शुद्धता बरतने का आदेश दिया था, ताकि ‘उसकी’ दृष्टि ऐसी किसी वस्तु पर न पड़े जो ‘उसे’ अप्रसन्न कर दे। इसी तरह, हमारे सुबोध ‘ग्रंथ’ में जिन-जिन विधानों के बारे में बतलाया गया है वे सब ‘उसी’ के निमित्त हैं, बशर्ते कि तुम सही निर्णय कर पाओ। हमने स्वर्गों और धरती और उनके मध्य की सभी वस्तुओं की सृष्टि उसके प्रियजनों के लिए की, तो फिर स्वयं उसके परम ज्योतिर्मय, परम भव्य और कांतिमान सौन्दर्य के लिए तो कहना ही क्या। इसके बावजूद तूने उसका अधिग्रहण कर लिया जो हमने उसके लिए निर्धारित किया है और मेरे ‘प्रियतम’ को अस्वीकार करने के लिए उन्हें हथिया लिया है। हे विद्वेषी जनों! आखिर कैसे हो गए तुम इतने असावधान? और हे विद्रोह के कारिन्दों, इस युग में और क्या-क्या करके तुम संतोष का अनुभव करोगे?

13. तुमने ‘उसका’ और ‘उसने’ जो कुछ भी प्रकट किया उन सबका विरोध किया, हालाँकि हमने अपनी पातियों में तुम्हें यह चेतावनी दी कि जो कोई भी उसके परम महान और परम विलक्षण ‘नाम’ का स्मरण करे वह अपनी जगह से उठ खड़ा हो और उन्नीस बार यह दोहराए: “महिमाशाली हो परमात्मा, धरती और स्वर्ग के साम्राज्यों का स्वामी!” और पुनः उन्नीस बार: “महिमाशाली हो परमात्मा, समस्त महिमा और साम्राज्य का प्रभु”, और इसी तरह, जैसाकि हमने एक अत्यंत सामर्थ्‍यमय पाती39 में प्रकट किया है। परन्तु फिर भी तुमने ‘उसमें’ और ‘उसके’ श्लोकों में अविश्वास किया है। नहीं, बल्कि इतने ही से संतुष्ट न होकर, तुम परमात्मा के अधिकारों को अस्वीकार किया है जिसका स्वामी है वह और ईश्वर की उस आज्ञा पर कोई ध्यान नहीं दिया है जो स्वयं उसके आत्मतत्व से सम्बंधित है - वह जो है परम उदात्त, सर्वज्ञ। एक के बाद एक, तुमने ‘उसके’ सभी कार्यों को अस्वीकार कर दिया और उसकी खिल्ली उड़ाने में प्रसन्नता का अनुभव करने लगे। तुम लोगों के बीच में से एक वह है जो कहता हैः “वह चाय पीता है!”, जबकि दूसरे का उपालंभ हैः “वह भोजन ग्रहण करता है!” एक अन्य उसकी पोषाक पर आपत्ति जताता है, यद्यपि उस पोषाक का एक-एक धागा यह प्रमाणित करता है कि ‘उसके’ सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है और यह कि ‘वही’ उन सबकी आराधना का ध्येय-बिंदु है जो ईश्वर के निकट हैं। मैं इस बात का साक्ष्य देता हूँ कि कई बार ‘पुरातन सौन्दर्य’ के लिये अपने वस्त्र बदल पाने का भी अभाव था। इस तरह प्रमाणित करती है सत्य और ज्ञान की ‘वाणी’। ऐसी कई रातें थीं जब वे अपने स्वजनों को भोजन तक देने में सक्षम नहीं थे। फिर भी परमात्मा के शक्तिमान एवं अपराक्रम्य धर्म की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए उन्होंने अपनी स्थिति के बारे में किसी को नहीं बताया, और यह सब तब हुआ जबकि सभी वस्तुओं का सृजन ‘उन्हीं’ के निमित्त किया गया था और यह कि धरती और स्वर्ग के कोषालयों की कुंजी उनकी मुट्ठी में है।

14. वज्रपात हो तुम पर तुम्हारी बेहयाई के लिए, हे ‘बयान’ के लोगों! ईश्वर मेरा साक्षी है! तुम्हारी करतूतों के कारण ग्लानि है मुझे और मैं तुम सबको अस्वीकार करता हूँ, हे दुष्टों के समूह! अफसोस है उन यातनाओं पर जो ‘उन्हें’ तुम्हारे हाथों सहनी पड़ीं। अफसोस है उन विपदाओं पर जो ‘उन’ पर टूटीं और जो अभी भी लगातार उन्हें कष्ट पहुँचा रही हैं। हे लोगों! निष्पक्षता से न्याय करो और जरा क्षण भर के लिए सोचो: यदि तुम सब ऐसे से पर्दों से ढंके अंधे बने रहो, तो फिर क्योंकर मैंने स्वयं को प्रकट किया और मेरे प्रकटीकरण का भला क्या सुफल उत्पन्न हुआ, हे पाखण्डियों के समुदाय? ईश्वर ने इसलिए मेरा आह्वान किया है कि ‘उसके’ प्रकटीकरण के पूर्व मैं सारे पर्दों को छिन्न-भिन्न कर डालूँ और तुम्हारे हृदयों को पावन कर दूँ। फिर भी तुमने ऐसी कारगुजारी की है जिससे मेरे और पवित्र जनों के आँसू निकल पड़े हैं। पिछली पीढ़ियों के मुखमण्डल तुम्हारी इन करतूतों से म्लान पड़ गए हैं, क्योंकि तुम सब पर उनसे भी बड़ा पर्दा पड़ा हुआ है, और तुम ‘टोरा’, ‘इवैंजेल’ या अन्य किसी भी ग्रंथ के अनुयायियों से भी अधिक असावधान हो।

15. हे धोखेबाजों! काश कि मैं कभी जन्मा ही नहीं होता और कभी भी स्वयं को तुम्हारे समक्ष प्रकट नहीं किया होता। मैं उसकी सौगन्ध खाता हूँ जिसने सत्य की शक्ति से मुझे यहाँ भेजा है! मैंने सभी वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त किया है और मुझे वह सब कुछ ज्ञात है जो परमात्मा के अनुल्लंघनीय कोषालयों में निहित एवं मनुष्य की दृष्टि से ओझल हैं, लेकिन तुमसे अधिक दुष्ट एवं दिग्भ्रमित लोगों से मेरा कभी सामना नहीं हुआ। क्योंकि अपनी पातियों में जिन समस्त बातों की हमने व्याख्या की है और उनके प्रत्येक पृष्ठ में हमने तुम्हें सम्बोधित करके जो चेतावनियाँ दी हैं, उन्हें दृष्टिगत रखते हुए हम यह सोच पाने में असमर्थ हैं कि धरती पर का कोई भी व्यक्ति परमात्मा का विरोध करने का साहस करेगा, जिसके हाथों में है बागडोर धरती और स्वर्ग के साम्राज्य की। तुम्हारी रचना से हम हैरान हैं और पता नहीं कि किस शब्द से तुम्हारी रचना की गई, हे तुम सब जिनकी प्रकृति और जिनके कार्य उच्च लोक के स्वर्गिक समूहों के हृदयों को स्तब्ध किए हुए हैं और उन्हें भी जो परमात्मा के प्रति समर्पित हैं और उन्हें जिन्हें ‘उसके’ सामीप्य की निकटता का आनन्द प्राप्त है!

16. हे सेवक! इस तरह इस पाती में हम तुझे वह वृतान्त सुनाते हैं जो कि ‘बयान का कपोत’ इस क्षण अपने प्रभु - उस सर्वशक्तिमान, सर्वप्रशंसित - के सिंहासन के समक्ष गा रहा है। अतः, उसमें जो प्रकट किया गया है उसे ध्यान से पढ़, किन्तु उसके आभ्यंतरिक अर्थ के मोतियों को ’दुष्ट’ के समूहों के बीच बैठे चोरों और निष्ठाहीनों के हाथों से बचा। यदि तुझे कोई विवेकवान व्यक्ति मिले तो इस पाती को उसके नेत्रों के सम्मुख रख ताकि वह इसे देख सके और उन लोगों में से बन सके जो उपलब्धि प्राप्त करते हैं। कदाचित वे लोग जो हमारे सच्चरित्र सेवकों के बीच अंतर्दृष्टि से सम्पन्न हैं इन बातों से अवगत हो सकें कि इन लम्पट लोगों के हाथों, स्वर्गिक ‘सौन्दर्य’ के ऊपर क्या विपत्तियाँ टूटीं, जिन्होंने प्रभु परमात्मा के बदले ‘बछड़े’ की पूजा करना पसन्द किया है और सुबहो-शाम उसके सम्मुख अवनत हुए हैं और ऐसा करके खुश हुए हैं।

17. हमारी विपत्तियों से व्यथित न हो बल्कि ठीक वैसे ही धैर्य रख जैसे हमने रखा। वह वस्तुतः सर्वोत्तम सहायक है। दिन में और रात को अपने प्रभु का स्मरण कर और ‘उसके’ सेवकों के बीच ‘उसका’ गुणगान कर। कदाचित इससे उसके प्रेम की अग्नि सच्चरित्र लोगों के हृदयों में प्रदीप्त हो सके, और सब ईश्वर, अपने प्रभु गोचर और अगोचर के स्वामी और तुम्हारे समस्त पूर्वजों के स्वामी, के गुणगान के लिये उठ खड़े हो सकें।

## 39

## सूरा-ए-अहज़ान से एक अंश

## (दुःखों के सूरा)

1. काश कि इस क्षण तुम ’सिंहासन’ के समक्ष खड़े होते और सुन पाते कि ‘बहा के मन्दिर’ से किस तरह अनन्तता के माधुर्य बिखर रहे हैं। एकमेव सत्य ईश्वर की सौगन्ध! यदि उसके सृजित जीव अपने कानों को निर्मल कर लेते और यदि वे इन मधुरताओं की एक तान भी सुन लेते तो वे सब के सब मानों विस्मित-विमुग्ध होकर अपने प्रभु उस सर्वमहिमाशाली, परम उदार, के समक्ष जमीन पर गिर पड़ते। किन्तु उन्होंने चूंकि ईश्वर के साथ विवाद खड़ा किया है इसलिए ‘उसने’ उन्हें अपनी कृपा प्रदान करना अस्वीकार कर दिया है और अपनी दृष्टि में उनकी गिनती ऐसे लोगों में की है जो फेंके हुए माटी के ढेलों की तरह हैं। परमात्मा की सौगन्ध! यदि उनके शब्दों पर विचार कर पाते तो तुम वह सुन पाते जिसे कभी यहूदियों से भी नहीं सुना गया था जब हमने एक सुबोध ’ग्रंथ’ के साथ ‘चेतना’ को उनके पास भेजा था, और न ही ‘गॉस्पेल’ के समुदायों से जब हमने अनन्तता के ‘दिवानक्षत्र’ को मक्का के क्षितिज पर उदित किया था और न ही कुरान के लोगों से जब दिव्य ज्ञान के स्वर्गों को छिन्न-भिन्न कर दिया गया था और परमात्मा ने, सत्य की शक्ति के द्वारा अपने ‘सर्वदयालु नाम’ की छाया में, ‘अली’40 के सौन्दर्य में, स्वयं को प्रकट किया था।

2. इस सौभाग्यशाली, इस पवित्र, इस उदात्त और अगम्य रूप से विलक्षण ‘नाम’, वास्तव में परम विलक्षण ‘नाम’, का उल्लेख करने मात्र से मेरे भीतर दो दशाएँ उत्पन्न होती हैं। कुरान के लोगों के हाथों ‘सर्वदयालु के सौन्दर्य’ पर जो विपदाएं टूटीं उनके कारण मेरा हृदय दुःख की आग से दहक उठता है। ऐसा लगता है जैसे मेरे शरीर का हर अंग किसी भस्म कर देने वाली ऐसी ज्वाला की चपेट में है, जिसे यदि रोका न गया तो वह पूरी दुनिया को धधका कर रख देगी। इसका साक्षी स्वयं परमात्मा है। इसी तरह, उन दुष्टों द्वारा जिन्होंने ईश्वर को मार डाला और उसे पहचाना तक नहीं और जिन्होंने, हालाँकि वे उस परमात्मा के एक ‘नाम’ के प्रति निष्ठावान होने का दम्भ भरते थे, ‘उसे’ हवा में टांग दिया और उसके वक्ष को घृणा की गोलियों से छलनी कर दिया, ‘उस पर’ जो कहर बरपाए गए उनके लिए मैं अपनी आँखों और अपने अंग-प्रत्यंग और यहाँ तक कि अपने सिर के एक-एक बाल से, आँसू बहते हुए देखता हूँ।

3. काश कि इस ब्रह्माण्ड को अस्तित्व ही नहीं दिया गया होता! काश कि इस संसार की रचना ही नहीं की गई होती! काश कि कभी किसी को पैगम्बर नहीं बनाया जाता, कोई प्रभुदूत नहीं भेजा जाता और लोगों के बीच किसी धर्म की संस्थापना नहीं की जाती! काश कि धरती और स्वर्ग के बीच ईश्वर के नाम को कभी प्रकटित नहीं किया जाता और न ही किन्हीं पुस्तकों, पातियों और धर्मग्रंथों को ही प्रकाशित किया जाता! काश कि ‘पुरातन सौन्दर्य’ को इन अत्याचारियों के बीच कभी रहना ही नहीं पड़ता, न ही उनके हाथों दुःख झेलने होते जिन्होंने ईश्वर में खुलेआम अविश्वास किया और जिन्होंने उसके विरुद्ध ऐसे पाप किए जिन्हें करने की कल्पना धरती पर का कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता था! एकमेव सत्य ईश्वर की सौगन्ध! हे अली!41 यदि तू मेरे अंग-प्रत्यंग, मेरे हृदय और जीवन-रक्षक अवयवों की जांच कर पाता तो तुझे उन्हीं गोलियों के निशान मिलते जिनसे उस ‘परमात्मा के मन्दिर’ को विदीर्ण किया गया। अफसोस, अफसोस! इस तरह ‘श्लोकों के प्रकटकर्ता’ को उन्हें प्रकट करने और इस ‘महासागर’ को उमड़ने और इस ‘तरुवर’ को सुफल उत्पन्न करने और इस ‘बादल’ को वर्षा करने और इस ‘सूर्य’ को प्रकाश देने और इस ‘स्वर्ग’ को उन्नत होने से रोका गया। तथापि, इस युग में यह अकाट्य रूप से निर्णीत था।

4. काश कि मैं कभी होता ही नहीं और मेरी माँ ने मुझे कभी उत्पन्न ही नहीं किया होता! काश कि मैंने उस बारे में कभी नहीं सुना होता जो-जो ‘उस’ पर उन लोगों के हाथों गुजरा जिन्होंने ‘ईश्वर के नामालंकरणों’ की आराधना की और फिर भी ‘उसी’ की जान ले ली जो उनका ‘प्रणेता’ है, सर्जक है, रूप-रचयिता और उनका प्रकटकर्ता है! वज्रपात हो उन पर स्वार्थ और लालसा की कुप्रेरणाओं का अनुगमन करने के लिए और वे पाप करने के लिए जिनके कारण ‘स्वर्ग की परियों’ को उनके स्वर्गिक कक्षों में मूर्च्छित हो जाना पड़ा और इन भेड़ियों द्वारा ‘प्रभुओं के प्रभु’ को दिए गए उत्पीड़नों के लिए जिनके लिए ‘चेतना’ को धूल में अपना मुँह छुपाना पड़ा। उसके लिए बहाए जाने वाले मेरे आँसुओं पर सभी वस्तुएँ रुदन कर उठी हैं; हमारे इस बिछोह पर मेरे द्वारा भरी गई आहों के लिए सभी वस्तुएँ विलाप करने लगी हैं। सचमुच ऐसी है मेरी वेदना कि अनन्तता के माधुर्य अब कभी मेरे होठों से प्रवाहित नहीं होंगे और न ही चेतना की बयारें कभी मेरे हृदय से उठ सकेंगी। और यदि मैंने अपनी रक्षा का प्रयत्न नहीं किया होता तो मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गए होते और मेरा जीवन समाप्त हो चुका होता।

5. देखो, मेरा पिछला ‘प्रकटावतार’ भी क्रन्दन कर उठा है और यह कहते हुए तुझे सम्बोधित करता है, “हे अली! एकमेव सत्य ईश्वर की सच्चरित्रता की सौगन्ध! यदि तुम मेरे हृदय, मेरे अंग-प्रत्यंग का निरीक्षण कर पाते और मेरे आंतरिक एवं बाह्य अस्तित्व पर निगाह डाल पाते तो तुम्हें घृणा की उन बरछियों के निशान मिलते जिनसे मेरे उस परवर्ती ‘प्रकटावतार’ को आहत किया गया जो मेरे, मुझ सर्वमहिमाशाली के ‘नाम’ के साथ प्रकट हुआ था। इस तरह विलाप करता हूँ मैं, और उच्च लोक के समूह मेरे इस रुदन पर विलाप करते हैं। इस तरह रुदन करता हूँ मैं, और नामों के ‘शिविर’ के निवासी मेरे इस क्रन्दन पर बिलखते हैं। इस तरह कराहता हूँ मैं वेदना में और अनन्तता की नगरियों के निवासी, इस ‘प्रवंचित’ के लिए, जो स्वयं को ‘बयान’ के लोगों के बीच देख रहा है, भरी गई मेरी आहों पर आँसू बहा रहे हैं। परमेश्वर की सौगन्ध! उन्होंने ‘उसे’ वे कष्ट दिए हैं जो कुरान के अनुयायियों ने कभी मुझे नहीं दिए। अफसोस है उन आपदाओं पर जो उनके हाथों उसे भोगनी पड़ी! उस ‘सौन्दर्य’ को जो दिव्य निकटता के सिंहासन पर विराजमान था जो कष्ट भोगने पड़े उनके कारण धरती और स्वर्ग के निवासी शोकाकुल होकर धराशायी हो गए हैं। वज्रपात हो उन पर और जो उनके हाथों ने सुबहों-शाम कारगुजारियाँ की हैं उन पर कहर टूटे!”

6. देखो, ‘पुरातन सौन्दर्य’ पुकार उठा है: “हे सर्वोच्च की लेखनी! इस विषय से परे हट जिसने अस्तित्व के परिधान पहने हुए सबको व्यथित कर दिया है और उच्च लोक के समूहों के प्रति दयास्वरूप अन्य विषय का ज़िक्र कर। एकमेव सत्य ईश्वर की सौगन्ध! अपनी गरिमा और उच्चता के बावजूद उसका ‘सिंहासन’ बहुत हद तक अभिभूत हो चुका है।’’

7. जब हमने यह पुकार सुनी, तो हमने इन दुःखों का वृत्तान्त बंद कर दिया और अपने पिछले विषय पर लौट आए ताकि तू उनसे पूर्णतः परिचित हो सके। हे अली, हमारे पिछले और बाद वाले प्रकटावतारों को जो विपदाएँ झेलनी पड़ी हैं उनके बारे में हमारे द्वारा सुनाए गए वृत्तान्त से खिन्न न हो। ईश्वर के धर्म की सहायता के लिए अपनी कमर कस ले, और निष्ठा एवं अडिग संकल्प के साथ इस पथ पर उठ खड़े हो।

# बाब का जन्मदिवस

## 40

## ‘उसके’ नाम पर जिसका आज के दिन जन्म हुआ था, ‘वह’ जिसे ईश्वर ने ‘अपने नाम’ - उस सर्वशक्तिमान, सर्वस्नेही - का अग्रदूत बनाया है!

1. यह वह ‘पाती’ है जिसे हमने उस रात्रि को सम्बोधित किया है जबकि समस्त स्वर्ग और पृथ्वी एक ऐसे ‘प्रकाश’ से आलोकित हो उठे थे जो सम्पूर्ण सृष्टि पर अपनी प्रभा बिखेरता है।

2. सौभाग्यशाली है तू, हे रात्रि! क्योंकि तेरे माध्यम से ’ईश्वर के दिवस’ का जन्म हुआ था - वह ‘दिवस’ जिसे ‘हमने’ नामों के नगरों के निवासियों के लिए मुक्ति का प्रदीप, अनन्तता की कर्मभूमि के शूरवीरों के लिए विजय का प्याला और समस्त सृष्टि के लिए हर्ष और आनन्द का उदयस्थल नियत किया है।

3. अपरिमेय रूप से आनन्दित है परमेश्वर, वह जो कि स्वर्गों का रचयिता है, जिसने इस ’दिवस’ को वह ’नाम’ उच्चरित करने दिया है जिससे निरर्थक ख्यालों के आवरण छिन्न-भिन्न हो गए हैं, निरर्थक कल्पनाओं के कुहासे फट गए हैं, और ‘उसका’ नाम - “स्वयंजीवी” - निश्चयात्मकता के क्षितिज पर उदित हो उठा है। तेरे माध्यम से अनन्त जीवन की उत्तम मदिरा का विमोचन किया गया है, धरती के लोगों के समक्ष ज्ञान और वाणी के द्वार खोल दिए गए हैं और ’सर्वदयालु’ की बयारें सभी क्षेत्रों पर प्रवाहित कर दी गई हैं। सर्वगरिमा हो उस घड़ी की जबकि परमात्मा - उस सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ - का ’खजाना’ प्रकट हुआ है!

4. हे धरती और स्वर्ग के समूहों! यह वह प्रथम रात्रि है जिसे ईश्वर ने उस द्वितीय रात्रि का संकेत बनाया है जब ‘उसका’ जन्म हुआ था ‘जिसकी’ कोई भी प्रशंसा उसका पर्याप्त गुणगान नहीं कर सकती और कोई भी गुणालंकार ‘उसका’ विवरण प्रस्तुत नहीं कर सकता। धन्य है वह जो उन दोनों के बारे में विचार करता है: वस्तुतः वह उनके बाह्य यथार्थ को उनके आंतरिक सार-तत्व के अनुरूप पाएगा और उन दिव्य रहस्यों से सुपरिचित होगा जो इस ‘प्रकटीकरण’ में निहित हैं - एक ऐसा ‘प्रकटीकरण’ जिसके माध्यम से अविश्वास की आधारशिलाओं की नींव हिलाकर रख दी गई हैं, अंधविश्वास की मूर्तियों को चकनाचूर कर दिया गया है और वह पताका फहरा दी गई है जो यह घोषणा करती है: “उस शक्तिमान, उदात्त, अनुपम, संरक्षक, सामर्थ्‍यमय, अगम्य के सिवा और कोई ईश्वर नहीं है।“

5. इस रात्रि में निकटता की सुरभि प्रवाहित की गई, दिनों के अंत में पुनर्मिलन के द्वार उन्मुक्त खोल दिए गए थे, और सभी सृजित वस्तुएँ यह अभिव्यक्त करने को विह्वल हो उठी थी: “साम्राज्य ईश्वर का है, वह जो सभी नामों का प्रभु है, जो पूरे विश्व को समेट लेने वाले प्रभुत्व के साथ अवतरित हुआ है!” इस रात्रि को उच्च लोक के सहचरों ने अपने प्रभु - उस उदात्त, परम भव्य - की स्तुति का समारोह मनाया था और दिव्य नामों के यथार्थ ने उसका गुणगान किया था जो आदि का सम्राट है और इस ’प्रकटीकरण’ का अंत - वह ‘प्रकटीकरण’ जिसकी क्षमता के माध्यम से पर्वत उसकी ओर बढ़ने की शीघ्रता कर उठे हैं जो है सर्वपर्याप्त है, सर्वोच्च, और हृदय अपने ‘परम प्रियतम’ की मुखमुद्रा की ओर उन्मुख हुए हैं, और पत्तियाँ उत्कंठा की बयारों से स्पंदित हो उठी हैं और वृक्षों ने ‘उसके’ आनन्ददायक प्रत्युत्तर में अपनी आवाज बुलन्द की है ‘जो’ ’अप्रतिबाधित’ है और उस ’अनन्तता के सम्राट’ से पुनर्मिलन की उत्कंठ अभिलाषा में सम्पूर्ण पृथ्वी कांप उठी है और इस शक्तिशाली ’नाम’ में प्रकटित उस प्रच्छन्न ’शब्द’ के माध्यम से सभी वस्तुओं में नवजीवन का संचार हो उठा है।

6. हे उस ’सर्वकृपालु’ की रात्रि! वस्तुतः हम तुझमें ’मातृग्रंथ’ के दर्शन करते हैं। यह एक ‘ग्रंथ’ है या कोई नवजात शिशु? नहीं, ‘मेरी’ सौगन्ध! ऐसे शब्दों का सम्बंध नामों के लोक से है जबकि परमात्मा ने इस ‘ग्रंथ’ को सभी नामों से परे, पावन बनाया है। इसके माध्यम से ’निगूढ़ भेद’ और ’संचित रहस्य’ प्रकट किया गया है। नहीं, मेरे जीवन की सौगन्ध! जो कुछ भी उल्लेखित किया गया है वह सब विभूषणों के लोक से सम्बंधित है जबकि ’मातृग्रंथ’ इन सबसे ऊपर है। इसके माध्यम से उन सबके ऊपर “ईश्वर के सिवा और कोई ईश्वर नहीं है” के प्रकटीकरण प्रत्यक्ष हुए हैं। नहीं, हालाँकि ऐसी बातों की घोषणा सबके समक्ष की गई है लेकिन परमेश्वर के आकलन में उन्हें सुन सकने की क्षमता ’उसके’ श्रवणेंद्रिय के सिवा अन्य किसी में नहीं है। सौभाग्यशाली हैं वे जो अच्छी तरह आश्वस्त हैं!

7. इस पर, विस्मित-विमुग्ध होकर, ’सर्वोच्च की लेखनी’ पुकार उठी: “हे तू सभी नामों से परे उदात्त! मैं तुझे तेरी उस सामर्थ्‍य की सौगन्ध देता हूँ जिसने स्वर्गों और धरती को परिव्याप्त कर रखा है कि मुझे तेरा उल्लेख करने के कार्य से मुक्त कर, क्योंकि स्वयं मेरा अस्तित्व ही ‘तेरी’ सृजनात्मक शक्ति के दम पर है। तो फिर मैं उसका वर्णन कैसे कर सकती हूँ जिसका वर्णन करने में सभी रचित वस्तुएँ असमर्थ हैं? और इसके बाद भी, मैं तेरे प्रताप की सौगन्ध खाकर कहती हूँ, यदि मैं उसकी घोषणा कर देती जिसकी प्रेरणा तूने मुझे दी है तो यह समस्त सृष्टि आनन्द और हर्षोन्माद से भर उठती, तो फिर इस परम ज्योतिर्मय, परम उदात्त और अलौकिक ’स्थल’ पर तेरी वाणी के महासिंधु की उत्ताल लहरों के समक्ष यह कितनी अधिक भावाभिभूत हो उठती! हे प्रभो! इस कांपती हुई लेखनी को ऐसे परम भव्य पद के महिमा-विस्तार के दायित्व से मुक्त कर और हे मेरे स्वामी और मेरे सम्राट, मेरे साथ दया का व्यवहार कर। अतः तेरी उपस्थिति में मेरे द्वारा किए गए उल्लंघनों को न देख। तू, सत्य ही, कृपा का प्रभु है, सर्वशक्तिशाली है, सदा क्षमाशील, परम उदार है।“

## 41

## वह अनन्त है, एकल, एकमेव, सर्व-सम्पदामय, परम उदात्त।

1. सर्वस्तुति हो तेरी, हे मेरे परमात्मन! क्योंकि तूने इस लोक को उस प्रभात की आभा से अलंकृत किया है जो उस रात्रि के बाद आया है जबकि ’उसका’ जन्म हुआ था जो तेरी सर्वातीत सम्प्रभुता के ’प्रकटावतार’, तेरे दिव्य सार-तत्व को ’दिवास्रोत’ और तेरी सर्वश्रेष्ठ प्रभुता को प्रत्यक्षावतार का अग्रदूत था। मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे स्वर्गों के रचयिता और नामों के सृजनहार, कि उन सबकी कृपापूर्वक सहायता कर जिन्होंने ‘तेरी’ अपार करुणा की छाँह तले शरण पाई है और जिन्होंने ‘तेरे नाम’ को गौरवान्वित करने के लिए दुनिया के लोगों के बीच अपनी आवाज बुलन्द की है।

2. हे मेरे परमेश्वर! तू देखता है, समस्त मानवजाति के प्रभु को इस ’महानतम कारागार’ में बन्दी, उच्च स्वर से तेरा नाम लेते हुए, तेरे मुखड़े पर दृष्टि केन्द्रित किए हुए, वह घोषणा करते हुए जिससे प्रकटीकरण और सृष्टि के साम्राज्यों के निवासी आनन्द-विभोर हो उठे हैं। हे मेरे ईश्वर! मैं स्वयं अपने ’स्व’ को तेरे सेवकों के हाथों में कैद देख रहा हूँ, फिर भी तेरी सम्प्रभुता का प्रकाश और तेरी अजेय शक्ति के प्रकट रूप उसके मुखड़े पर दमक रहे हैं, जिससे सब लोग सुनिश्चित रूप से यह जानने में सक्षम हैं कि तू परमेश्वर है और तेरे सिवा और कोई परमेश्वर नहीं है। न तो शक्तिशाली जनों की शक्ति ही तुझे पराजित कर सकती है और न ही शासकों के अभ्युदय ही तुझे पराभूत कर सकते हैं। अपनी उस सम्प्रभुता के बल पर तू जो चाहता है करता है जिसने सभी सृजित वस्तुओं को परिव्याप्त कर रखा है, और इस सम्पूर्ण सृष्टि को आच्छादित करने वाली अपनी आज्ञा के दम पर तू जैसा चाहता है वैसा नियत करता है।

3. तेरे प्रकटीकरण के प्रताप और तेरी सामर्थ्‍य की शक्ति, तेरी सम्प्रभुता और तेरी महानता के नाम पर मैं याचना करता हूँ तुझसे कि उन्हें विजयी बना जो तेरी सेवा करने के लिए उठ खड़े हुए हैं, जिन्होंने तेरे धर्म को सहायता प्रदान की है और जो तेरे मुखड़े के प्रकाश की आभा के समक्ष अवनत हुए हैं। अतः, हे मेरे ईश्वर, उन्हें अपने शत्रुओं के ऊपर विजय प्रदान कर और उन्हें अपनी सेवा में सुदृढ़ बना, ताकि उनके माध्यम से तेरे सभी लोकों में तेरे साम्राज्य के प्रमाण संस्थापित हो सकें और तेरे भूभागों में तेरी अदम्य शक्ति के संकेत प्रकट हो सकें। सत्य ही तू जो चाहे वह करने में समर्थ है, तेरे सिवा और कोई ईश्वर नहीं है, संकटों में सहायक, स्वयंजीवी।

4. यह महिमाशाली ‘पाती’ जन्म की वार्षिकी42 पर प्रकट की गई है ताकि तू विनम्रता और याचना के भाव से इसका पाठ कर सके और अपने प्रभु के प्रति कृतज्ञ बने, वह जो है सर्वज्ञाता, सर्वसूचित। परमात्मा की सेवा के लिए तू हर प्रयास कर ताकि तुझसे वह झलक सके जो उसके महिमाशाली, महान स्वर्ग में तेरे स्मरण को अमर बना सके।

5. कहोः महिमावन्त है तू, हे मेरे परमेश्वर! मैं याचना करता हूँ तुझसे तेरे संकेतों के ’उदय-स्थल’ के नाम पर और उसके नाम पर जो तेरे स्पष्ट संकेतों का ’प्रकटकर्ता’ है कि मुझे यह वर दे कि मैं, सभी स्थितियों में, तेरे स्नेहमय विधान की डोर दृढ़ता से थामे रहूँ और तेरी उदारता के आंचल की छोर को सख़्ती से पकड़े रहूँ। अतः मेरी गणना उन लोगों में से कर जिन्हें इस संसार के परिवर्तन और परिस्थितियाँ तेरी सेवा करने और तेरे प्रति निष्ठावान बने रहने से रोक नहीं पाए हैं, जिन्हें लोगों के आक्रमण तेरे नाम का महिमा-मण्डन करने और तेरी स्तुति का समारोह मनाने से बाधित नहीं कर पाए हैं। हे मेरे प्रभो, तू जो कुछ भी चाहता है और जो कुछ भी तुझे प्रिय है वह करने में उदारतापूर्वक मेरी सहायता कर। अतः मुझे वह पूरा करने में सक्षम बना जिससे ‘तेरा नाम’ उदात्त हो सकेगा और जिससे तेरे प्रेम की अग्नि सुलग उठेगी।

6. तू, सत्य ही, क्षमाशील है, परम कृपालु है।43

# बहाउल्लाह का जन्मदिवस

## 42

## लौह-ए-मौलूद

## (जन्म की पाती)

1. हे गोचर और अगोचर लोक के समूह! अपने हृदयों और अपनी आत्माओं में अत्यधिक आनन्द से भर उठो, क्योंकि युगों की फसल काटने और विगत चक्रों को एकत्रित करने वाली रात्रि आ चुकी है, वह रात्रि जिसमें सभी दिनों और रातों को अस्तित्व दिया गया था और ‘उसके’ आदेश से जो कि शक्ति और सामर्थ्‍य का प्रभु है, इस ‘धर्म प्रकाशन’ के पूर्व-निर्धारित समय की पूर्णाहुति की गई। ऐसी महिमाशाली, ऐसी विलक्षण ’चेतना’ के प्रत्यक्ष होने पर सर्वआनन्द प्राप्त हो उच्च लोक के समूहों को!

2. यह वह रात्रि है जबकि ‘स्वर्ग’ के द्वार उन्मुक्त खोल दिए गए थे और ‘नरक’ के दरवाजों को सख़्ती से बंद कर दिया गया था, वह रात्रि जिसमें सृष्टि के हृदय-मध्य में ‘सर्वदयालु’ का स्वर्ग प्रकट किया गया था, क्षमाशीलता के विश्रांति-स्थलों से परमेश्वर की मृदुल बयारें प्रवाहित की गई थीं और सत्य की शक्ति से ‘अन्तिम घड़ी’ का समारम्भ किया गया था, बशर्ते कि तुम वह जान पाते। सर्वआनन्द प्राप्त हो इस रात्रि को जिसके माध्यम से सभी दिनों को प्रकाश से भर दिया गया है, हालाँकि इसे कोई नहीं समझ सकता सिवाय उनके जो निश्चयात्मकता और सच्चे विवेक से सम्पन्न हैं!

3. यह वह रात्रि है जिसकी परिक्रमा ‘शक्ति की रात्रियों’44 ने की है, जबकि देवदूत और ईश्वरीय ‘चेतना’ स्वर्ग के स्रोतों से भरी हुई प्यालियाँ लिए नीचे अवतरित हुए हैं, वह रात्रि जबकि स्वयं ‘स्वर्ग’ को उस सर्वशक्तिमान, सर्वमहिमाशाली, परम कृपालु परमेश्वर के अलंकरण से विभूषित किया गया, जबकि हर सृजित वस्तु में जीवन का संचार किया गया और धरती के सभी लोग ‘उसकी’ कृपा से आच्छादित हो उठे। इस प्रत्यक्ष एवं ज्योतिर्मय कृपालुता के लिए ‘चेतना’ के सहचरों को सर्वआनन्द प्राप्त हो!

4. यह वह रात्रि है जबकि ‘जिब्त’ के अंग-प्रत्यंग को प्रकम्पित कर दिया गया था और ‘परम महान प्रतिमा’ धराशायी हो उठी थी और अन्याय की आधारशिलाएँ चरमरा उठी थीं और ‘मनात’ अपने अंतर्तम अस्तित्व में रो उठा था और ‘उज़्जा’ की रीढ़ तोड़ दी गई थी और उसके मुख पर कालिख पोत दी गई थी45 क्योंकि दिव्य ‘प्रकटीकरण’ का ‘प्रभात’ फूट चुका था और वह प्रकट हो चुका था जिससे महिमा और भव्यता की आँखों को सुकून मिला और उससे भी बढ़कर ईश्वर के सभी अवतारों और संदेशवाहकों के नेत्रों को। अतः सर्वमहिमा प्राप्त हो इस ‘प्रभात’ को जो परम प्रभासित महिमा के दिवास्रोत के ऊपर उदित हुआ है!

5. कहोः यह वह ’प्रभात’ है जबकि दुष्टों को सामर्थ्‍य और भव्यता के लोक तक पहुँचने से रोक दिया गया और जब उन लोगों के हृदयों को पंगु बना दिया गया जिन्होंने सर्वशक्तिमान, सर्वमहिमाशाली, अप्रतिबाधित परमात्मा से विवाद खड़ा किया। यह वह ‘प्रभात’ है जबकि दुष्टों के चेहरों पर कालिख पोत दी गई और धर्मपरायण लोगों के मुखड़े इस ‘सौन्दर्य’ की प्रभा से जगमगा उठे - वह ‘सौन्दर्य’ जिसके आगमन की सभी गोचर और अगोचर वस्तुएँ और उनसे भी बढ़कर, उच्च लोक के सहचरों के समूह, व्यग्रता से प्रतीक्षा करते आ रहे हैं। सर्वस्वागत हो इस ‘चेतना’ के प्राकट्य का जिसकी क्षमता के माध्यम से मृतकों को उनकी कब्रों में हिला दिया गया है और हर जर्जर अस्थि में नवजीवन का संचार कर दिया गया है!

6. कहो: हे अन्याय के स्रोत! अपनी दुःखद दशा पर विलाप कर; और हे अत्याचार के मूलाधार! अतल पाताल की आग में अपने घर जा, क्योंकि अस्तित्व के क्षितिज के ऊपर ‘सर्वदयालु’ का सौन्दर्य ऐसी दीप्ति से जगमगा उठा है कि ‘उसके’ लोकों के सभी निवासी उसके प्रकाश की आभा से द्युतिमान हो उठे हैं, और सर्वशक्तिमान, सर्वमहिमाशाली, परम कृपालु परमेश्वर की ‘चेतना’ को अस्तित्व प्रदान किया गया है। इसके प्राकट्य के माध्यम से ‘उसकी इच्छा’ की भुजा भव्यता की आस्तीन से बाहर आई है और ‘उसकी’ सर्वोच्च, अनुपमेय, सर्वबाध्यकारी एवं महान प्रभुसत्ता की शक्ति से उसने संसार के आवरणों को छिन्न-भिन्न कर दिया है। अतः, सर्वमहिमा प्राप्त हो इस ‘प्रभात’ को जबकि ‘प्राचीनतम सौन्दर्य’ को उस सर्वशक्तिमान, उस परम महान के नाम के राजसिंहासन पर विराजमान किया गया है!

7. यह वह प्रभात है जब ‘उसका’ जन्म हुआ था जो न जन्मता है न उत्पन्न किया जाता है। धन्य है वह जो स्वयं को इस वाणी के अन्दर तरंगित होने वाले आंतरिक अर्थ के महासिंधु में निमज्जित करता है और परमेश्वर - उस सम्राट, उदात्त, सामर्थ्‍यमय, शक्तिवंत - के वचनों में छुपे हुए ज्ञान एवं विवेक के मोतियों को निकाल लाता है। सर्वमहिमा प्राप्त हो उसे जो सत्य का बोध करता है और जिसकी गिनती उन लोगों में की जाती है जो समझ से सम्पन्न हैं!

8. कहो: यह वह ‘प्रभात’ है जब स्वर्ग के समूहों के संगी और पावनता के देवदूतों के समूह स्वर्ग से अवतरित हुए थे और जिनके बीच ‘वह’ था जिसे परम महिमाशाली परमेश्वर के ‘सौन्दर्य’ की बयारों पर, परम उदात्त समूह के पद तक उठाया गया। इन्हीं बयारों पर वाहित, देवदूतों का एक अन्य समूह अवतरित हुआ, जिनमें से प्रत्येक ने अनन्त जीवन का प्याला थाम रखा था और जिसे वे उन्हें प्रदान कर रहे थे जो श्रद्धापूर्वक उस ‘स्थल’ की परिक्रमा करते हैं जहाँ ‘पुरातन अस्तित्व’ ने स्वयं को अपने सर्वमहिमाशाली और परम उदार नाम के सिंहासन पर विराजमान किया था। सर्वआनन्द प्राप्त हो उन्हें जिन्होंने उसकी उपस्थिति प्राप्त की है, ‘उसके’ सौन्दर्य को निहारा है, ‘उसके’ माधुर्य को तत्परता से सुना है और जो उस ‘वाणी’ से स्फूर्त हुए हैं जो ‘उसके’ पावन एवं महान, ‘उसके’ महिमाशाली और कांतिमान अधरों से स्फुरित हुई है!

9. कहो: यह वह प्रभात है जब ‘परम महान वृक्ष’ को रोपा गया और उसने अपने महान एवं अनुपम फल उत्पन्न किए। ईश्वर की सच्चरित्रता की सौगन्ध! इस ‘वृक्ष’ के प्रत्येक फल में असंख्य माधुर्य के बीज विद्यमान हैं। अतः, हे ‘चेतना’ के समुदाय! तुम्हारी क्षमता के अनुसार हम तुम्हें उसके कुछ स्वर्गिक गानों से सुपरिचित कराएँगे ताकि वे तुम्हारे हृदय को आकर्षित कर सकें और तुम्हें ईश्वर के निकट खींच ला सकें - वह जो बल, सामर्थ्‍य और शक्ति का स्वामी है। सर्वमहिमा प्राप्त हो इस प्रभात को, जिसके माध्यम से दिव्य ज्योतिर्मय ‘नक्षत्र’ उस सर्वशक्तिमान, अगम्य, परमोच्च परमेश्वर की आज्ञा से पावनता के क्षितिज के ऊपर जगमगा उठे हैं!

10. कहो: यह वह ‘प्रभात’ है जब निगूढ़ ‘सार-तत्व’ और अदृश्य ‘खजाने’ को प्रकट किया गया, वह ‘प्रभात’ जब ‘प्राचीनतम सौन्दर्य’ ने महिमा के हाथों अमरता के प्याले को थामा और, पहले स्वयं उससे घूंट लेने के बाद, उसे धरती के सभी लोगों, उच्च और निम्न सबको एक समान, प्रदान कर दिया। अतः, सर्वमहिमा हो उसकी जो इस प्याले तक पहुँचा है, उसे थामा है और अपने प्रभु - उस सर्वशक्तिमान, सर्वोच्च - के प्रेम के निमित्त उसका पान किया है!

11. उस ‘वृक्ष’ के एक फल ने वह घोषणा की जो कि ‘प्रज्‍वलित झाडी’ ने पूर्व काल में उस पावन एवं हिमधवल स्थल पर की थी, वे वचन जिन्हें मूसा ने ध्यान से सुना था और जिनके कारण सभी रचित वस्तुओं का परित्याग करके उन्होंने पवित्रता एवं भव्यता के आश्रयों की ओर अपने कदम बढ़ा दिये थे। अतः, सर्वमहिमा प्राप्त हो उस महान आनन्द को जो उस परम शाक्तिशाली परम उदात्त, परम महान ईश्वर से उत्पन्न है!

12. उसके दूसरे फल ने वह अभिव्यक्त किया जिसने ईसा मसीह को आनन्द-विभोर कर दिया था और ‘उन्हें’ प्रकट आभा के स्वर्ग तक ले गया। अतः, सर्वमहिमा प्राप्त हो इस ‘चेतना’ को जिसकी उपस्थिति में, ईश्वर के चुने हुए देवदूतों के साथ, ‘आस्थावान चेतना’ खड़ी है!

13. उसके एक अन्य फल ने वह प्रकट किया है जिसने ईश्वर के दूत मुहम्मद के हृदय को मुग्ध कर दिया ‘जो’, उच्च लोक से आने वाली ‘आवाज’ के मधुर स्वर से विमोहित होकर, ‘दिव्य कल्पतरु’ की ऊँचाइयों तक पहुँच गए और उन्होंने भव्यता के चंदोवे से आती हुई ‘परमात्मा की आवाज’ को ‘मेरे’ पावन, ‘मेरे’ उदात्त और सामर्थ्‍यमय ‘नाम’ के रहस्य का बयान करते सुना। अतः, सर्वमहिमा प्राप्त हो इस ‘वृक्ष’ को जिसे सत्य की शक्ति से खड़ा किया गया है, ताकि दुनिया के सभी लोग इसकी छाँह तले आश्रय पा सकें!

14. हे सर्वोच्च की ‘लेखनी’! अब और कुछ भी न लिख; क्योंकि, ईश्वर की सौगन्ध! यदि तू इस स्वर्गिक ‘वृक्ष’ के फलों के सभी मधुर स्वरों को प्रस्तुत कर पाती, तो तू स्वयं को धरती पर परित्यक्त रूप में देखती, क्योंकि तेरे सान्निध्य से सभी भाग खड़े होते और तेरी पावनता के दरबार से चले गए होते। और, निस्संदेह, यह असंदिग्ध सत्य है। अतः, सर्वमहिमा हो उन रहस्यों की जिन्हें ईश्वर के सिवा और कोई भी नहीं सह सकता, वह जो सार्वभौम शासक है, सर्वशक्तिमान है, परम दयालु है!

15. हे ‘लेखनी’, क्या तुमने नहीं देखा कि समस्त भूभाग में पाखण्डियों ने कैसा कोलाहल मचा रखा है, और दुष्टों और अविश्वासियों ने कैसा उपद्रव उकसाया है? और वह भी तब सहन न कर पाये जब तूने अपने प्रभु, उस परम उदात्त, उस परम महिमाशाली के रहस्यों में से बस एक हल्की-सी झलक दिखलाई है। अतः, नियंत्रित कर स्वयं को और लोगों की आँखों से छुपा ले उसे जिसे परमात्मा ने अपनी उदारता के संकेत स्वरूप तुझे प्रदान किया है। और यदि तेरी यही इच्छा है कि सभी रचित वस्तुओं को तू उस स्फटिक स्वच्छ जलधारा से पान करने दे जो वस्तुतः जीवन है और परमात्मा ने तुझे जिसका ‘मूल स्रोत’ बनाया है, तो अपनी स्याही को केवल उनकी क्षमता के अनुसार ही प्रवाहित कर। इस तरह आदेशित करता है तुझे ‘वह’ जिसने ‘अपनी’ आज्ञा की शक्ति से तुझे अस्तित्व दिया है। अतः वैसा ही कर जैसा कि तुझे आदेश दिया गया है और उनमें से न बन जो विलम्ब करते हैं। सर्वमहिमा प्राप्त हो इस प्रबल आदेश को जिसका शासन सभी सृजित वस्तुओं की शक्ति पर है और जिसने ‘परमोच्च’ की ‘लेखनी’ को दुनिया के लोगों के समक्ष वह प्रकट करने से रोका है जिससे उन्हें ओझल रखा गया है! वस्तुतः, ‘उसकी शक्ति’ सभी वस्तुओं के समतुल्य है।

## 43

## वह है परम पावन, परम उदात्त, परम महान

1. ‘जन्मदिवस का उत्सव’ आ गया है, और ‘वह जो’ सर्वशक्तिमान, सर्व-बाध्यकारी, सर्वप्रेमी ईश्वर का सौन्दर्य है, वह ‘अपने’ सिंहासन पर विराजमान हुआ है। धन्य है वह जिसने इस दिवस में ‘उसका’ सान्निध्य प्राप्त किया है और जिसकी ओर संकटों में सहायक, स्वयंजीवी परमात्मा की दृष्टि गई है। कहो: हमने ‘महानतम कारागार’ में इस ‘उत्सव’ को तब मनाया है जब धरती के राजा लोग ‘हमारे’ विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं। फिर भी अत्याचारी का अभ्युदय कभी भी हमें निराश नहीं कर सकता, न ही दुनिया भर के समूह हमें व्याकुल कर सकते हैं। इस परम प्रतापी पद में, इसका साक्षी स्वयं सर्वदयालु ईश्वर है।

2. कहो: वह जो कि आश्वस्ति का सार-तत्व है, क्या उसे दुनिया के लोगों के कोलाहल के कारण व्याकुल हो जाना चाहिए? नहीं, ‘उसके’ सौन्दर्य की सौगन्ध जो उन सभी वस्तुओं पर अपनी प्रभा बिखेरता है जो अस्तित्व में आ चुके हैं और जो अस्तित्व में आएँगे! वस्तुतः, यह प्रभु की भव्यता है जिसने सम्पूर्ण सृष्टि को आच्छादित कर रखा है और यह ‘उसकी’ अलौकिक शक्ति है जिसने उन सबको परिव्याप्त कर रखा है जो देखते हैं और वह सब जो दृष्ट है। ‘उसकी’ सार्वभौम सम्प्रभुता का दामन दृढ़ता से थाम और इस उषाकाल में जिसके आलोक ने सभी गुप्त रहस्यों को उजागर कर दिया है, अपने ‘अप्रतिबाधित प्रभु’ का उल्लेख कर। इस तरह ‘दिवसाधिक प्राचीन की वाणी’ ने इस ‘दिवस’ में अपने वचन उचारे हैं - उस दिवस में जबकि उत्तम मदिरा का विमोचन किया गया है। सावधान रह कि कहीं उन लोगों की कपोल कल्पनाएँ तुम्हें बाधित न कर दें जिन्होंने ईश्वर में अविश्वास किया है, अथवा उनके निरर्थक विचार तुम्हें इस विस्तीर्ण पथ पर चलने से रोक न दें।

3. हे बहा के लोगों! अनासक्ति के डैनों पर सवार होकर अपने उस सर्वदयालु प्रभु के प्रेम के वातावरण में उड़ान भरो। तब उसे विजयी बनाने के लिए उठ खड़े हो, जैसाकि ‘संरक्षित पाती’ में तुम्हें आदेश दिया गया है। सावधान कि कहीं तुम मेरे किसी सेवक से विवाद न कर बैठो। उन्हें परमात्मा और ‘उसके’ पावन उच्चारों का सुमधुर आस्वाद प्रदान करो, क्योंकि उनकी शक्ति के माध्यम से सभी मनुष्य ‘उसकी’ ओर उन्मुख होने में सक्षम हो सकेंगे। जो लोग इस ‘दिवस’ में ईश्वर के प्रति लापरवाह बने बैठे हैं वे सचमुच अपनी लालसाओं की सुरा पीकर मत्त हैं और वे समझ ही नहीं रहे। धन्य है वह जिसने विनीत एवं विनम्र भाव से, अपना मुखड़ा अपने प्रभु के श्लोकों के ‘दिवास्रोत’ की ओर उन्मुख किया है।

4. तुम्हारे लिए उचित यह है कि तुम उठ खड़े हो और लोगों को उससे परिचित कराओ जो कि उनके प्रभु सर्वशक्तिमान, अप्रतिबाधित के ‘ग्रंथ’ में अंकित किया गया है। कहो: तुम ईश्वर से डरो और उन लोगों की निरर्थक कल्पनाओं पर ध्यान मत दो जो संदेह और अन्याय के पथ पर चलते हैं। प्रकाशित हृदयों के साथ तुम अपने प्रभु, सभी नामों के उस अधीश्वर, के सिंहासन की ओर उन्मुख हो। वह, वस्तुतः, सत्य की शक्ति से तुम्हारी सहायता करेगा। उसके सिवा और कोई ईश्वर नहीं है, सर्वशक्तिमान, परम उदार।

5. क्या तब भी तुम एक निरे जलाशय की ओर दौड़ोगे जबकि ‘महानतम सिंधु’ तुम्हारे नेत्रों के समक्ष विस्तृत खड़ा है? तुम पूर्ण रूप से इसकी ओर उन्मुख हो और प्रत्येक निष्ठाहीन अविश्वासी का अनुगमन न करो। इस तरह ‘अनन्तता का पक्षी’ ‘हमारे दिव्य कल्प-वृक्ष’ की टहनियों पर अपना सुमधुर आलाप सुना रहा है। ईश्वर की सौगन्ध! इसके माधुर्यों में से एक माधुरी भी उच्च लोक के सहचरों को और उससे भी बढ़कर नामों के नगरों के निवासियों को और उससे भी बढ़कर उन सबको आह्लाद से भर देने के लिए पर्याप्त है जो सुबह और शाम ’उसके’ सिंहासन की परिक्रमा करते हैं।

6. इस तरह वाणी की फुहारें तुम्हारे सर्वदयालु प्रभु की इच्छा के स्वर्ग से तुम पर बरसाई गई हैं। हे लोगों, उनके निकट जाओ और त्याग दो उन सबको जो ईश्वर द्वारा प्रकटित श्लोकों के बारे में व्यर्थ विवाद करते हैं और जिन्होंने अपने उस प्रभु में अविश्वास किया है जबकि वह प्रमाणों और साक्ष्यों से सुसज्जित होकर अवतरित हुआ है।

## 44

## वही परमेश्वर है

1. हे उत्कट प्रेमियों के समूह! ईश्वर की धर्मपरायणता की सौगन्ध, यह वह रात्रि है जिसके समान इस सृष्टि के लोक में कभी कोई रात्रि देखी नहीं गई। और यह, वस्तुतः, सर्वमहिमाशाली, परम कृपालु परमात्मा की कृपा से है।

2. यह वह रात्रि है जबकि ‘चेतना’ ने एक ऐसा माधुर्य छेड़ दिया कि जिससे सभी मनुष्यों के आंतरिक यथार्थों में खलबली मच गई, यह घोषणा करते हुए: “हे उच्च लोक के समूहों, स्वर्ग के अपने विश्रांति-स्थलों में आनन्द-मग्न हो जाओ!”

3. और तब पवित्रता और उदारता के चंदोवे से ‘ईश्वर की वाणी’ ने यह आह्वान किया: “वस्तुतः, यह वह रात है जबकि ‘उसका’ जन्म हुआ है जो कि ‘सर्वदयालु’ का यथार्थ है, वह रात जब सर्वमहिमाशाली की लेखनी से हर अनन्त आज्ञा की व्याख्या कर दी गई है। अतः, हे ‘बयान’ के समूहों, अत्यधिक प्रसन्नता से आनन्द मग्न हो जाओ!”

4. यह वह रात्रि है जबकि ‘रहस्यमय कपोत’ ने यह कहते हुए स्वर्ग की शाखाओं और टहनियों पर अपना आलाप सुनाया: “आनन्द-मग्न हो जाओ, हे स्वर्ग के निवासियों!”

5. कहो: यह वह रात्रि है जबकि आश्वस्ति के जनों की आँखों के समक्ष से महिमा के पर्दे हटा दिए गए और ‘स्वर्ग के पक्षी’ ने स्वर्गिक लोक के बीचोंबीच अपना सुमधुर आलाप छेड़ दिया। अतः, आनन्द-मग्न हो जाओ, हे ‘अनन्त नगरी’ में पवित्रता के मूर्तिमान स्वरूपों!

6. यह वह रात्रि है जबकि परमात्मा ने दूर दिगन्त तक अपने सभी परम उत्कृष्ट नामों की सुरभि का संचार किया और स्वयं को प्रत्येक शुद्ध एवं प्रकाशमय हृदय के सिंहासन पर विराजमान किया। अतः, आनन्द मनाओ, हे ‘बयान’ के समूहों!

7. यह वह रात्रि है जबकि क्षमाशीलता के महासिंधु तरंगित हो उठे और कल्याण-भावना की बयारें दूर-दूर तक प्रवाहित कर दी गईं। अतः, आनन्द मनाओ, हे सर्वदयालु के सहचरों!

8. यह वह रात्रि है जबकि धरती पर रहने वाले सभी लोगों के उल्लंघनों को क्षमा कर दिया गया। यह, वस्तुतः उन सब लोगों के लिए एक आनन्ददायक समाचार है जो इस क्षणभंगुर लोक में रचे गए हैं!

9. कहो: यह वह रात्रि है जबकि सामर्थ्‍य और आश्वस्ति के पत्रों पर कृपा और अनुकम्पा के निर्धारित अंश अंकित कर दिए गए, ताकि उसके द्वारा सभी वस्तुओं से, सदा-सदा के लिए, दुःख का नामो-निशान मिट जाए। अतः, आनन्द मनाओ तुम सब जिन्होंने अस्तित्व के लोक में अपने कदम रखे हैं!

10 इस क्षण ‘चेतना का अग्रदूत’ अनन्तता के हृदय-मध्य, उच्चता और उदात्तता के आसन से, पुकार उठा - और यह कृपा, वस्तुतः, ईश्वर की ओर से है, वह जो है परम उदात्त, परम उदार।

11. यह कहते हुए: वह जो कि शक्ति और सम्प्रभुता का स्रोत है उसके सामर्थ्‍यमय हाथ से कस्तूरी-सुगन्ध वाली मदिरा का पात्र खोल दिया गया है। और यह कृपा, वस्तुतः, ईश्वर की ओर से है, वह जो है परम उदात्त, परम उदार।

12. और दिव्य जोसेफ के हाथों सर्वमहिमाशाली के सौन्दर्य के समक्ष अरुणाभ मदिरा के प्याले अर्पित किए जा रहे हैं। और यह कृपा, वस्तुतः, ईश्वर की ओर से है, वह जो है परम उदात्त, परम उदार।

13. अतः, हे लोगों के समूह, शीघ्रता करो और अनन्त जीवन के इस स्रोत से छक कर पीओ! और यह कृपा, वस्तुतः, ईश्वर की ओर से है, वह जो है परम उदात्त, परम उदार।

14. कहो: हे सच्चे प्रेमियों के समूह! उस ‘इष्ट’ का सौन्दर्य अपनी स्पष्ट महिमा के साथ प्रकाशित हो उठा है। और यह कृपा, वस्तुतः, ईश्वर की ओर से है, वह जो है परम उदात्त, परम उदार।

15. हे उसके प्रेमियों के समुदाय! ‘परम प्रियतम’ का मुखमण्डल पावनता के क्षितिज पर उदित हो चुका है। हे ‘बयान’ के लोगों! स्वयं को स्फूर्त कर लो और अपने सम्पूर्ण हृदय से इसकी ओर शीघ्रता से बढ़ो। और यह कृपा, वस्तुतः, ईश्वर की ओर से है, वह जो है परम उदात्त, परम उदार।

16. प्रमाण पूरा किया जा चुका है और साक्ष्य संस्थापित कर दिया गया है, क्योंकि स्वयं अपने, उस सदा अस्तित्ववान, के आत्मतत्व में परमात्मा के प्रकटीकरण के माध्यम से ’मृतोत्थान’ घटित हो चुका है। और यह कृपा, वस्तुतः, ईश्वर की ओर से है, वह जो है परम उदात्त, परम उदार।

17. युग बीत गए हैं और धर्मचक्रों को हिला दिया गया है और प्रत्येक नक्षत्र आनन्द से ज्योतित हो चुका है, क्योंकि परमात्मा ने हरी-भरी टहनियों से सुसज्जित प्रत्येक वृक्ष पर अपनी महिमा की आभा बिखेर दी है। और यह कृपा, वस्तुतः, ईश्वर की ओर से है, वह जो है परम उदात्त, परम उदार।

18. हे ईश्वर के चुने हुए लोगों, स्वयं को स्फूर्त कर लो क्योंकि आत्माओं को एक साथ एकत्रित किया जा चुका है, दिव्य समीर प्रवाहित हो गए हैं, कल्पनाओं की चंचल छायाओं को छिन्न-भिन्न कर दिया गया है और हर फलित वृक्ष से अनन्तता के स्वर उभर उठे हैं। और यह कृपा, वस्तुतः, ईश्वर की ओर से है, वह जो है परम उदात्त, परम उदार।

19. ईश्वर की सौगन्ध! पर्दों को भस्म कर दिया गया है, बादलों को छिन्न-भिन्न किया जा चुका है, संकेतों को प्रकट कर दिया गया है और भ्रमों को उधेड़ दिया गया है, उसके द्वारा जिसकी शक्ति सभी वस्तुओं के समतुल्य है। और यह कृपा, वस्तुतः, ईश्वर की ओर से है, वह जो है परम उदात्त, परम उदार।

20 अपने हृदयों को आनन्द से उत्फुल्ल हो जाने दो, किन्तु इस अत्यंत ही संरक्षित, परम निगूढ़ रहस्य, को छुपा कर रखो ताकि तुमने परम आनन्द और प्रफुल्लता प्रदान करने वाली जिस मदिरा का पान किया है, कहीं अजनबी लोग उससे अवगत न हो जाएँ। और यह कृपा, वस्तुतः, ईश्वर की ओर से है, वह जो है परम उदात्त, परम उदार।

21. हे ‘बयान’ के समुदाय! परमात्मा मेरा साक्षी है कि ‘उसकी’ कृपा पूर्ण हो गई है, ‘उसकी’ करुणा की पूर्णाहुति हो चुकी है, और ‘उसका मुखमण्डल’ हर्ष और कांति से दीप्त है। और यह कृपा, वस्तुतः, ईश्वर की ओर से है, वह जो है परम उदात्त, परम उदार।

22. हे मेरे साथियों, इस उज्ज्वल एवं आलोकित स्रोत से छककर पी लो, और आनन्दित हो जाओ, हे मेरे मित्रों! और यह कृपा, वस्तुतः, ईश्वर की ओर से है, वह जो है परम उदात्त, परम उदार।

## 45

## वह है परम पावन, परम महान

1. यह वह महीना है जब ‘उसका’ जन्म हुआ था जो ‘महानतम नाम’ का धारणकर्ता है, जिसके प्राकट्य ने मानवजाति के अंग-प्रत्यंगों को प्रकम्पित कर दिया है और उच्च लोक के सहचरों एवं नामों के नगरों के निवासियों ने आशीर्वाद के रूप में जिसके चरणों की धूल की कामना की है। इस पर उन्होंने परमात्मा का स्तुति-गान किया और अत्यंत हर्ष एवं आनन्द-विभोरता से पुकार उठे। ईश्वर की सौगन्ध! यह वह महीना है जिसके माध्यम से अन्य सभी महीने प्रकाशित हुए हैं, वह महीना जिसमें ‘वह’ जो कि ‘गुप्त रहस्य’ और ‘सुसंरक्षित खजाना’ है, प्रकट कर दिया गया है और वह समस्त मानवजाति के बीच उच्च स्वर से पुकार उठा है। समस्त साम्राज्य इस नवजात ‘शिशु’ का है जिसके माध्यम से सृष्टि के मुखड़े पर मुस्कान बिखेरी गई है, और वृक्ष लहरा उठे हैं, और समुद्र तरंगित हुए हैं और पर्वतों ने उड़ान भरी है और स्वर्ग ने अपनी आवाज बुलन्द की है और ‘चट्टान’ पुकार उठा है और सभी वस्तुएँ यह कह उठी हैं, “हे सृष्टि के समुदाय! अपने उस दयालु, करुणावान प्रभु के मुखमण्डल के उदयस्थल की ओर शीघ्रता से बढ़ो!”

2. यह वह महीना है जब स्वयं ‘स्वर्ग’ को उसके सर्वदयालु स्वामी के मुखमण्डल की आभाओं से सुसज्जित किया गया और स्वर्ग-कोकिल ने ‘दिव्य कल्पतरु’ के ऊपर अपना मधुर आलाप छेड़ दिया और कृपा प्राप्त जनों के हृदयों को परम आनन्द से भर दिया गया। किन्तु, अफसोस, ज्यादातर लोग असावधान हैं। सौभाग्य हो उसका जिसने ‘उसे’ पहचान लिया है और उसे समझ लिया है जिसे सर्वशक्तिमान, सर्वप्रशंसित ईश्वर के ग्रंथों में प्रतिज्ञापित किया गया; और दुर्भाग्य हो उसका जो उससे विमुख हो गया है जिस पर उच्च लोक के सहचरों ने अपनी दृष्टि केन्द्रित की है, ‘वह जिसने’ हर दिग्भ्रमित अविश्वासी को हतप्रभ करके रख दिया है।

3. इस ‘पाती’ को प्राप्त कर लेने के बाद इसे मधुरतम स्वर में गा और कह: स्तुति हो तेरी, हे मेरे परम दयालु प्रभु, कि तूने इस ‘पाती’ में मुझे याद किया है - वह पाती जिसके माध्यम से ‘तेरे’ ज्ञान के परिधान की सुरभि बिखेरी गई और ‘तेरी’ कृपा के महासिंधु तरंगित किए गए। मैं साक्षी देता हूँ कि तू जैसा चाहे वैसा करने में समर्थ है। तेरे सिवा अन्य कोई ईश्वर नहीं है, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वप्रज्ञ।

# टिप्पणियाँ

**भूमिका**

1. 2 कोरिंथियन्स 5:17

2. किताब-ए-इकान 51

**रिज़वान**

चयनिका 9

3. अर्थात ज़िहाद

चयनिका 10

4. वह देवदूत जो मृतोत्थान के दिन बिगुल बजाएगा

चयनिका 16

5. ईसा मसीह

6. बाब

चयनिका 17

7. चाय की ओर संकेत

8. हाइफा

चयनिका 23

9. तुलना करें: कुरान 76:1.

10. यहाँ बहाउल्लाह और स्वर्ग की अप्सरा के बीच बातचीत आरम्भ होती है, जिसमें एक अनुच्छेद में बहाउल्लाह और दूसरे में अप्सरा बोलती है।

चयनिका 25

11. मिर्ज़ा आका जान, बहाउल्लाह के श्रुतिलेखक जिनकी आवाज में इस पाती का प्रथम अंश प्रकट किया गया था

**बाब की घोषणा**

चयनिका 26

12. तफ़सीर-ए-हू में बहाउल्लाह बताते हैं कि ‘वह’ नाम (अथवा हूवा जिसमें ’हा’ और ’वाव’ अक्षर मिले हुए हैं) ईश्वर का महानतम नाम है, क्योंकि यह वह दर्पण है जिसमें ईश्वर के सभी नाम और गुण एक साथ प्रतिबिम्बित होते हैं।

13. अर्थात “बहा” नाम “ब” अक्षर

14. कुरान 28:5.

चयनिका 27

15. देखें कुरान 7:107.

16. तुलना करें: कुरान 12:31.

चयनिका 28

17. बहाउल्लाह

18. बाब

**बहाउल्लाह का स्वर्गारोहण**

चयनिका 29

19. देखें कुरान 4:51.

चयनिका 30

20. “घातक शत्रु” (शाब्दिक अर्थः “शिमर”) और “आततायी राजे” (शाब्दिक अर्थ “नमरूद”) : शिमर ने वह आघात पहुँचाया जिससे इमाम हुसैन की मृत्यु हुई और नमरूद अब्राहम को परेशान करने वाला अत्याचारी था।

21. तुलना करे: कुरान 71:14.

चयनिका 31

22. बाब

23. इमाम हुसैन

24. तेहरान

25. नसीरुद्दीन शाह

26. जोसेफ

27. तुलना करें: कुरान 22:54.

चयनिका 32

28. कुरान 104:1-2.

29. ‘किताब-ए-अहद’ का यह अनुवाद सबसे पहले ‘बहाउल्लाह की किताब-ए-अकदस के बाद प्रकटित पातियां’ में प्रकाशित हुआ था

**बाब की शहादत**

चयनिका 35

30. बाब

चयनिका 36

31. कॉन्स्टैंटिनोपल

32. कुरान 40:28.

33. बाब

34. इमाम हुसैन

चयनिका 38

35. बाब

36. अनुच्छेद 2-15 में बहाउल्लाह बाब के स्वर में बोल रहे हैं

37. ’हीन’ शब्द के अक्षरों का सांख्यिक मूल्य 68 है। अतः “हीन के बाद” से संदर्भित वर्ष है हिज़री 1268 के बाद का वर्ष अर्थात 1269 (1852-3 ईस्वी), वह वर्ष जब बहाई प्रकटीकरण का जन्म होता है।

38. ‘हा’ और ’बा’ अक्षर मिलकर ‘हब’ (प्रेम) बनता है जबकि ‘हा’ और ‘वाव’ के मिलने से ‘हूवा’ (वह) बनता है।

39. ये आह्वान ‘वह जिसे ईश्वर प्रकट करेगा’ के बारे में बाब द्वारा मुल्ला बाकिर-ए-तबरीजी को सम्बोधित एक पाती से हैं

चयनिका 39

40. बाब

41. सूरा-ए-अहज़ान मिर्ज़ा अली-ए-शेख-ए-मरागिही के लिए प्रकट किया गया था

**बाब का जन्मदिवस**

चयनिका 41

42. बाब का

43. आह्वान वाले हिस्से को छोड़कर यह पूरा चयन सबसे पहले ‘बहाउल्लाह की किताब-ए-अकदस के बाद प्रकटित पातियाँ’ में प्रकाशित हुआ था

**बहाउल्लाह का जन्मदिवस**

चयनिका 42

44. तुलना करे: कुरान सूरा 97.

45. जिब्त, मनात और उज्जा उन मूर्तियों के नाम हैं जो बुतपरस्त अरबों के समय में पूजी जाती थीं और जिनका कुरान में उल्लेख है (4:51 और 53:19-20).

# शोग़ी एफ़ेन्दी द्वारा अनूदित अंशों की कुंजिका

## संक्षिप्ताक्षर

GWB ग्लीनिंग्स फ्रॉम दि राइटिंग्स ऑफ बहाउल्लाह (बहाउल्लाह के लेखों से चयन)

GPB गॉड पासेज बाइ- विलमेट बहाई पब्लिशिंग ट्रस्ट, 1974

KI किताब-ए-इकान निश्चयात्मकता की पुस्तक

PBM प्रेयर्स ऐंड मेडिटेशन्स ऑफ बहाउल्लाह

WOB दि वल्र्ड ऑर्डर ऑफ बहाउल्लाह: चुने हुए पत्र। विलमेट: बहाई पब्लिशिंग ट्रस्ट 1991

**चयन**

1 आवाह्न वाले हिस्से को छोड़कर पूरी पाती (PMXLVI)

4 पूरी पाती (PBM LVII और LVIII)

6 आह्वान वाले हिस्से को छोड़कर पूरी पाती (GWB XIV)

21 आह्वान वाले हिस्से को छोड़कर पूरी पाती (GWB CLI)

22 आह्वान वाले हिस्से को छोड़कर पूरी पाती (PBM CLXXXIV)

26.30 “और हम अपने उत्तराधिकारियों” से लेकर “अभिलाषा करते हैं” तक (¶155)

29.4 “शाखित हुआ है” से लेकर“ यह महान हस्तशिल्प” तक (WOB, 135)

29.5 “एक विश्व” से लेकर “उसके लोगों के बीच” तक (WOB, 135)

29.6 “आभार प्रकट कर” से लेकर “उसके कृपा प्राप्त सेवक” तक (WOB, 135) (WOB, 135)

29.8 “हमने प्रेषित किया है” से लेकर “निश्चय ही नष्ट हो जाएगा” तक (WOB, 135)

31.1 “पाप” से लेकर “सृष्टि की पाती” तक (GPB, 118)

31.3 “ओ मरयम” से लेकर “उसके बाद” तक (GPB, 118)

31.3 “मैं भटकता रहा” से लेकर “मेरा सहयोगी” तक (GPB, 120)

31.3 “दो वर्षों तक” से लेकर “ईर्ष्‍या कम हो जाने” तक (GPB, 119)

31.4 “मैंने सहा है” से लेकर “या सहूँगा” तक (GPB, 118)

31.7 “हमने पाया” से लेकर “इसके संदेश के प्रति” तक (GPB, 125)

32.9 “यह अगसानों का कर्तव्य है” से लेकर “सर्वदयालु” तक (WOB, 134)

33 पूरी पाती (PBM CLXXX)

34 पूरा चयन (GWB LXXVI)

36 पूरा चयन (GWB CXIII ¶¶1–8)

\*\*\*\*